पुरुषोत्तम

लक्ष्मीनारायण लाल

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र, जाति या समाज के इतिहास में विजय के क्षणों का कीर्तिगान तो होता है किन्तु पराजय के क्षण का एक अलग ही महत्व होता है। यही वह क्षण है जिसे आधारविन्दु बनाकर उस समाज के बाहरी ढाँचे और आन्तरिक संकटग्रस्त मानसिकता का गहन विश्लेषण किया जा सकता है। विजय–विरुद–गायन के मुकाबले यह पराजय–विश्लेषण कहीं ज्यादा कठिन और चुनौती भरा काम है।

डा0 लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने इस नये उपन्यास पुरुषोत्तम में इस कठिन चुनौती को स्वीकारा है। आज जब अनेक कथालेखक बने बनाये चिन्तन–चौखटों और सतही (बहुधा परायी) दृष्टि–सीमाओं में बँध कर सन्तुष्ट हैं, उस समय बँधे बँधाये ढाँचों को छोड़ कर एक अलग इतिहास दृष्टि खोजने का प्रयास बड़े जीवट का काम है। सफलता–असफलता की बात दीगर, यह साहस ही डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल को बधाई का पात्र बनाता है।

पराजय का क्षण है, 1857 के सिपाही विद्रोह की असफलता। कथाभूमि है राजा रामचन्द्र का अवध जिस पर उस समय शासन कर रहे हैं वाजिद अली शाह और जिसकी रही भरी सम्पन्न भूमि पर कुटिल लोलुप निगाह है अंग्रेजों की। अंग्रेज संख्या में कम थे, हिन्दुस्तानी सैनिक वीरता और पराक्रम में अद्वितीय थे, फिर भी हिन्दुस्तानी हारे। यह क्यों ? क्या इसके पीछे केवल दोषपूर्ण रणनीति थी या कोई और गहरा कारण ? क्या मानवीय इतिहास, नियति का कोई चक्र उस समय गोरी उपनिवेशवादी शक्तियों के पक्ष में घूम रहा था ? क्या जय और पराजय के पीछे आचार और मर्यादा के कुछ चिरन्तन मूल्य रहा करते हैं जिनको तत्कालीन हिन्दुस्तानी समाज पहचान नहीं पाया था ? इन प्रश्नों का उत्तर अनेक बार वह इतिहासकार नहीं दे पाता जो जय और पराजय को केवल राजनीतिक घटनाचक्र मात्र मानता है। इन प्रश्नों को बहुधा सृजनात्मक दृष्टि वाले लेखक ने ही उठाया है और अधिक गहरे सन्दर्भों में इनके अर्थ ढूँढने की कोशिश की है।

खास तौर से उपन्यास विधा इस प्रकार की गहरी तलाश का माध्यम रही है। दो ही उदाहरण यथेष्ट होंगे। तॉल्स्तॉय ने अपने विश्वविख्यात उपन्यास युद्ध और शान्ति में यही प्रश्न उठाया था कि सर्वदा अपराजेय रूस छोटे से देश फ्रांस के समक्ष इतना अक्षम कैसे हो गया। कि नेपोलियन की सेनाएँ उसे रौंदती हुई मास्को के द्वार तक आ पहुँचीं। देशी उदाहरण लें तो बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने अनेक उपन्यासों, विशेषतया आनन्द मठ में यही प्रश्न उठाया है कि संन्यासी शक्ति की पराजय क्यों हुई ? अंग्रेजी राज्य इस देश में क्यों आया ?

वह कौन–सी सामयिक प्रेरणा रही होगी जिसने डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल को अब बीसवीं सदी के आठवें, नवें दशक में पुनः इस प्रश्न को इस तीव्रता से उठाने के लिए उकसाया होगा ? जहाँ तक मुझे स्मरण आता है। 'आपात्काल' के घोर आतंकमय वातावरण में डॉ0 लाल गुजरात की यात्रा पर जाते हुए बम्बई में मिले थे। वे उस समय अनेक लेखकों की भाँति उद्विग्न थे और चिन्ताग्रस्त भी। गुजरात की यात्रा क्यों ? तो उन्होंने बताया कि वे स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित सामग्री और स्थलों की खोज में जा रहे हैं।

मुझे लगता है कि आपातकाल में जिस तरह विशाल जनान्दोलन सहसा विलीन विलुप्त हो गया था, सामान्य लोगों से लेकर क्रान्ति की कसमें खाने वाले वामपक्षी बुद्धिजीवियों तक ने जिस तरह सर झुका कर गलत मूल्यों के समक्ष हथियार डाल दिये थे उस पराजय की कचोट ने कहीं उनके कथाकार को एक समानान्तर परिस्थिति को तलाशने और उसका विश्लेषण करने के लिए प्रेरित किया होगा। उन्नीसवीं शताब्दी की सिपाही क्रान्ति की यह असफलता उनके ध्यान में पहले आयी और उसके सन्दर्भ में वे स्वामी दयानन्द की ओर उन्मुख हुए या स्वामी दयानन्द की जीवन सामग्री का विवेचन करते हुए सिपाही विद्रोह की ओर उनका ध्यान गया, यह मुझे ज्ञात नहीं। किन्तु इतना अवश्य है कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वामी दयानन्द एकमात्र ज्वलन्त व्यक्तित्व थे जिनमें कर्म की प्रखरता और दृष्टि का पैनापन था। वे 1857 की घटनाओं में सहभागी थे, लेकिन वे उस पराजय से निराश नहीं हुए थे। बल्कि उन्होंने क्रान्ति का एक व्यापक स्थायी आधार स्थापित किया था। सामाजिक समानता का, हिन्दुस्तानी समाज के पिछड़े वर्गों,

अछूतों, स्त्रियों, विधवाओं, अनाथों, अशिक्षितों को समान मानवीय अधिकार देकर भारतीय समाज को अन्दर से स्वथ्य और ठोस बनाने का, ताकि एक दिन वह विदेशियों की गुलामी से मुक्त हो सके, उसे फिर पराजय न झेलनी पड़े।

इस उपन्यास में वयोवृद्ध राना बाबा एक प्रकार से स्वामी दयानन्द की विचारछाया हैं। वे घटनाक्रम के पीछे सामाजिक मूल्यों के शाश्वत ह्रास को स्पष्ट देख रहे हैं। वे स्वीकार भी करते हैं किउनकी भेंट स्वामी दयानन्द से हुई थी और तभी से वे इतिहास–चक्र को इस नयी दृष्टि से देखने लगे हैं। वही क्या, वास्तव में इस उपन्यास के सभी प्रमुख पात्र एक बड़े रूपक को चरितार्थ करते प्रतीत होते हैं। लखनऊ और वाजिद अली शाह मानो वह ह्रासोन्मुख मध्ययुग है जो अतीत के कगार पर खड़ा अतीत बन जाने को नियतिबद्ध हैं। राना बेनीमाधव अतीत और वर्तमान के बीच का संक्रमण हैं जिनमें उस भोगविलासी संस्कृति के प्रति समर्पण भी है और बाद में एक राजपूती आन–वान से फिरंगियों के दाँत खट्टे कर देने की महान वीरता भी। वे अपने जीवन–काल में ही किम्वदन्ती बन जाते हैं अवध के लोकमानस और लोकगीतों के महान नायक। सूरज सिंह उनका विलोम है, अंग्रेजों का नया पिट्ठू, जमीन्दार वर्ग का प्रतीक। अतीत और वर्तमान के समक्ष भविष्य के प्रतीक हैं रधुवीर, युवा निर्वासित राजकुमार, सूरज सिंह के दामाद, राना बेनीमाधो के उत्तराधिकारी पुत्र जिन्हें उत्तराधिकार में मिले हैं पराजय और निर्वासन।

राना बाबा इन सबसे परे, कालचक्र में एक आरे की तरह जड़े, लेकिन काल–चक्र को तटस्थ दृष्टि से आर–पार देखते हुए, उसका अर्थ समझते हुए। पराजय क्षण में जब ऊपर महल में अंग्रेज लूट–पाट और हत्याएँ कर रहे हैं उस समय अँधेरे तहखाने में इस अँधेरे का अर्थ निर्वासित युवा राजकुमार रघुवीर को समझाते हुए।

शायद हजारों वर्ष से एक निर्वासित, संयमी, शीलवान, युवा राजकुमार की छवि अवध की वेदनाग्रस्त विद्रोही मानसिकता की आश्रय छवि बन गयी है। शायद उसी दिन से जब राम को चौदह वर्ष का वनवास मिला था अयोध्या उनके बिना सूनी लगने लगी थी। जातीय इतिहास की वह चिरसंचित वेदना बार–बार इस उपन्यास में फूट पड़ी है। जब–जब देशी या विदेशी अत्याचारी का मूल्य न सह पाने के कारण अवध का शीलवान मर्यादा–निर्वाह कान्यकुब्ज ब्राहम्ण, या निम्न वर्ग का दस्तकार या अकालपीड़ित किसान अपने घर से बेधर होता है, मजबूरी में पवित्र अवध–भूमि छोड़ कर जाना चाहता है तो वह इसी लोकगीत को प्रतिध्वनित करता है : जननी बिनु राम, हम ना अवध माँ रहिबे। और इस अत्याचार और पराजय के दौरान वह बार–बार गुनगुनाता है : आज मोहि रघुवर कीं सुधि आई। सावन गरजे, भादों बरसे पौन बहे पुरवाई। कौन बिरछ तर भीजत होइ हैं राम लखन दोउ भाई। सामाजिक और राजकीय अन्याय से ग्रस्त हो कर अपनी मातृभूमि और अपनी विचार–भूमि से सर्वहारा निर्वासन यह मानो अवध की स्थायी नियति बन गयी है। 1857 में भी अवध हारा ही इसलिए कि वहाँ सब कुछ था केवल ''राम'' नहीं था। (यानी शील नहीं था मर्यादा नहीं थी, समृद्धि नहीं थी।) राना बेनीमाधो का पुत्र रघुवीर पुनः उस मर्यादा भूमि में लौटने और समस्त प्रयोजनों को लौटाने के प्रति कृत–संकल्प होता है। उसका एकमात्र अस्त्र है ''हरि'' या ''राम–राम'' जिसकी प्रेरणा उसे मिलती है तुलसी के रामचरितमानस से सूफी परम्परा, अवध की दन्तकथाएँ, बौद्धों के उपरान्त भारशिवों द्वारा आयोजित नेमिषारण्य की ऋषिगोष्ठी से ले कर अवध के गाँवों में डीह बाबा की पूजा तक, इन तमाम लोकतत्वों को डॉ0 लाल ने बड़े उत्साह से इस उपन्यास की संरचना में पिरोया है।

लेकिन जैसा मैंने कहा कि इस उपन्यास का गठन रूपक कथा (एलीगरी) के रूप में अधिक हुआ है। यह रूपक तत्व कथारस को बाधित करता है, या उसे गहरे अर्थ देता है ? पात्र कल्पना और चरित्र–चित्रण पूर्व निर्धारित लगते हैं या स्वाभाविक ? कथाक्रम का प्रवाह बना रहता है या नहीं ? घटनाएँ अति नाटकीय तो नहीं हो जातीं–इसका निर्णय तो रस सिद्ध पाठक या जागरूक समीक्षक करेंगे। मैं तो केवल स्वयं एक अवधीजन होने के नाते लेखक के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा हूँ कि उसने अवध के घटनाचक्र के बहाने इस समूचे देश के ऐतिहासिक चरित्र के एक आन्तरिक विघटन की ओर ध्यान आकर्षित किया है। न मेरा यह वक्तव्य किसी प्रकार की भूमिका माना जाय। क्योंकि इस उपन्यास की वास्तविक भूमिका है डॉ0 लाल का इससे पहले लिखा चर्चित ग्रन्थ निर्मूल वृक्ष का फल जिसमें उन्होंने उन्नीसवीं शती

के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध के इतिहासचक्र का विवेचन किया है और इन्हीं बुनियादी प्रश्नों को पैने ढंग से उठाया है।

धर्मवीर भारती

बम्बई : कार्तिक शुल्क प्रतिपदा
29.10.81

अवध मुगल सल्तनत का एक सूबा था। यहाँ नवाबों का राज कायम हुए अभी कुल अड़तीस साल ही बीते थे। इस थोड़े से समय में पाँच नवाब अवध की गद्दी पर बैठ चुके थे। इन नवाबों के पुरखे फारस से आये शिया मुसलमान थे।

अवध राज का संस्थापक मुगल दरबार का सामन्त था। मुगल राज के पतन के दिनों में वजीर के पद पर उसके वंश के लोगों का वंशगत अधिकार हो गया और अवध का सूबा इन लोगों की जागीर बन गया। बहुत समय तक ये लोग स्वतन्त्र होते हुए भी हर तरह से मुगल साम्राज्य की अधीनता मानते रहे थे।

दिल्ली के वजीर शहजादा शाह आलम ने 1764 ईस्वी में अवध के नवाब शुजाउद्दौला को अपने साथ ले कर बिहार पर आक्रमण किया। बक्सर की लड़ाई में सर हेक्टर मोनरो ने उन्हें बुरी तरह से हराया। इस जीत का इस्तेमाल लार्ड क्लाइव ने एक सन्धि के रूप में किया। उस सन्धि के अनुसार दिल्ली के बादशाह ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के संयुक्त सूबा की दीवानी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सौंप दी ओर यह कबूल किया कि उन्हें अंग्रेजों को छोड़ कर अन्य किसी विदेशी शक्ति से कोई भी राजनीतिक सन्धि करने का अधिकार नहीं रहेगा। इसी तरह की सन्धियाँ करती–करती कम्पनी ने 1837 में अवध के प्रबन्ध, सुरक्षा, सुशासन के नाम पर ऐसी सन्धि कर ली, कि वहाँ का असली मालिक कम्पनी का रेजिडेण्ट हो गया और नवाब महज दिखाने के नवाब रह गये।

अवध कहने को ही स्वतन्त्र रह गया था। कलकत्ता स्थित ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपनी बंगाल फौज के लिए अधिक से अधिक जवनों की भर्ती अवध से ही करती थी। कम्पनी की सेना में पचास हजार जवान केवल अवध के थे। और उस सेना का सारा खर्चा अवध का खजाना उठाता था।

अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह के जमाने की यह कथा है।

एक

तब पूरे अवध में कुल बारह जिले थे। इनमें एक जिला था लखनऊ का जिसमें एक ताल्लुका था शंकरपुर। शंकरपरु से चार मील दूर था तिलोई गाँव।

शंकरपुर के राजा बेनीमाधव के पिता राना बाबा ने जिनकी उम्र अब पैंसठ साल है तीस साल पहले आसपास ढूँढ–ढाँढ कर उस तिलोई गाँव से पण्डित दुलीराम के पिता सतीराम को अपनी पाठशाला में बिठा कर गुरु महिमा की प्रतिष्ठा की। शंकरपुर के राज बहीखाते में दर्ज हैं :

हालात शंकरपुर गुरु पाठशाला निमित्त पण्डित सतीराम वाके मौजा तिलोई परगना गढ़ी जिला रायबरेली को इखराजात के लिए पेश्तर राजे मौजा कंवरसली में बीस बीधे बाबत आराजी गोकुलदास की वरुदा असनाद संवत् 1875 सन् 1819 में अता की। फरायज। अलावा उन फरायज के जो तमहीद में बयान किये हैं––विद्या, श्रद्धा, संस्कार, दान, स्मृति, ज्ञान, चरित्रबल।

दुलीराम शंकरपुर पाठशाला के गुरु जी थे। उनके एक ही पुत्र था गंगादीन। शंकरपुर के ताल्लुकेदार राजा बेनीमाधव के भी एक ही पुत्र था रघुवीर। दोनों एक साथ शंकरपुर पाठशाला में पढ़ते थे।

1 दिसम्बर 1850।

गाँव की उस पाठशाला के दोनों बालक, गंगादीन और रघुवीर, सन्ध्या समय गुरु जी से विदा ले कर घर की ओर चले तो गाँव के बाहर उन्हें एक अजीबोगरीब हो–हल्ला सुनाई दिया। लोग बाग जैसे तमाशा देखने गाँव के बाहर चले जा रहे थे।

पता चला राना जी की बगिया में फिरंगी आये हुए हैं। कम्पनी सरकार का लस्कर ले कर रेजिडेण्ट कर्नल सलीमन मुआइना करने आया है।

रेजिडेण्ट साहब बहादुर के साथ पूरी एक कम्पनी गोरों की थी। दूसरी कम्पनी थी दसवीं रेजिमेन्ट नेटिव इनफैण्ट्री। नौकर, खानसामा, कुली। ऊँटगाड़ी, घोड़ागाड़ी। घोड़ों पर सवार अंग्रेज हाकिम। कर्नल स्लीमैन के आसपास कैप्टेन हार्डविक, लेफ्टिनेण्ट वेस्टन और मिसेज विलीज तथा लेडी स्लीमैन

इतना डर कम्पनी का। इतना रोबदाब। जिधर से वह लश्कर चलता, गाँव के गाँव खाली। लोग जंगल में जा छिपते।

आय रहा है। गोरा साहब है। बड़े–बड़े पेड़ों पर चिड़ियाँ अण्डे देती है। हाँ, पेड़ पर अण्डे। बाप रे इतने बड़े–बड़े अण्डे; उन्हीं में से पैदा होते है अंग्रेज !

बीच में नवाबी है। नवाबी के चारों ओर फिरंगी फौज है। जो अपने चारों ओर से घिरा है वह कब तक बचेगा ?

बहाना है मुआइनों का। अपने सिपाहियों की शिकायतें रफा–दफा करने का। पर असली मकसद...

साहब पूछता है, यह मेरा सिपाही है। इस का जमीन किसने छीना ?

यह मेरा आदमी है इसे किसने तकलीफ दी ? माफी मांगो !

याद रखो, एक ओर है नवाब और तालुकेदार का सिपाही; दूसरी ओर है कम्पनी का सिपाही। देखो कपड़े। देखो वर्दी। चमचम चमचम बूट। ये बटन। यह पग्गड़। यह तलवार। यह बन्दूक। मूँछ देखो और उस पर खिंचा हुआ ताव। हाँ, हाँ, जमीन आसमान का अन्तर है। हम पंचन पैदा होते हैं माँ के गर्भ से। अंग्रेज पैदा होते है चिरई के अण्डा से। एक पेड़ पर एक अण्डा।

देखो, देखो, मेम हँस रही है। खून का दरिया दिखाई दे रहा है।

सुनो सुनो।

इ अंग्रेज लस्कर हम पचन का इन्तजाम करने आयी है। न्याय होगा।

प्रबन्ध भी। हाँ, हाँ,। धन–व्यापार भी।

शंकरपुर की तालुकेदारी में ही तब रायबरेली एक कस्बा था। अंग्रेजों ने नया जिला बनाया रायबरेली। अंग्रेजी जिला ! अंग्रेज जिला अवध का स्वर्ग हो गया। नवाब के दरबार से, नवाब के हाकिमों से जान बची। बाजार खुल गया। खरीद–फरोख्त और हिसाब–किताब पक्का। पक्की रसीद, पक्की बही। कम्पनी का कागज। कम्पनी की मोहर। जै हो !

गोरखपुर, कानपुर और फर्रुखाबाद—यहाँ तक कि जौनपुर, फैजाबाद, बनारस के महाजनों, सेठों, उधारदाताओं के इज्जत—रुतबे बढ़ने लगे। लखनऊ, रायबरेली, बाराबंकी, बहराइच, गोण्डा, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़; मतलब पूरा अवध और खास कर बैसवाड़ा के तमाम लोगों ने जो नवाब, तालुकेदारों से पेन्शनयाफ्ता थे, अपना परमहित इसी में समझा कि उनकी पेन्शन की जिम्मेदारी कम्पनी ले ले।

कम्पनी हो गयी ट्रस्टी। वह तो ऐसे तमाम तरह के इन्तजाम करने आयी ही थी। 1837 की सन्धि में लिखा था कि अवध के नवाब अंग्रेज रेजिडेण्ट की सलाह से अवध में पुलिस, न्याय और माल विभागों की गलतियों को सुधारें। और अगर नवाबों ने अंग्रेज की सलाहों पर अमल करने में लापरवाही बरती और इस तरह अत्याचार, अन्याय, बदइन्तजामी बढ़ी तो रेजिडेण्ट प्रबन्ध अपने हाथ में ले लेगा। ऐसी हालात में कम्पनी सभी खर्चों को काट कर बाकी आमदनी, अगर बची तो, नवाब के खजाने में जमा कर देगी।

कर्नल स्लीमैन की लश्कर इसी काम के लिए चलती थी। इससे एक सहूलियत भी हुई। कम्पनी जब भी चाहती, नवाब से जी—चाहे रुपये उधार ले लेती थी। अब कम्पनी ने जिलेनामा निकाल दिया कि उधार के रुपये अब रियाया को सीधे देने, मदद करने, न्याय और हक दिलाने में अदा होते रहेंगे।

एक बात और भी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अपना स्वतन्त्र व्यापार चल रहा था; कलकत्ता से दिल्ली तक। व्यापार था कम्पनी के बॉण्ड का, जिस पर पाँच फीसदी सूद था उस समय। ये बॉन्ड प्रतिदिन रेजिडेण्ट के यहाँ से जारी होते और बिकते। दूर—दूर से लोग इस बॉण्ड को खरीदने आते। जो बॉण्ड खरीदता, वह अपने—आप को 'महाजन' मानता ! जो उस बॉन्ड की कीमत बढ़ाता वह 'बैंकर' कहलाता।

कर्नल स्लीमैन के हिसाब से उस समय अवध और बैसवाड़ा में ही कुल तीन करोड़ रुपये के कम्पनी बॉण्ड बिके थे। लखनऊ, गोरखपुर, बनारस, फर्रुखाबाद के कितने रईस और ऊँचे तबके के लोगों की शानें टिकी थीं उन बॉण्डों पर। और उन बॉण्डों की शानें इस बात पर टिकी हुई थीं कि अंग्रेज कम्पनी बहादुर की जीत पर जीत होती चली जाय।

जितनी जीत उतने चढ़ै दाम।
जितने बॉण्ड उतने बढ़ै नाम।

हाँ हाँ, सजरा मौजूद है। पढ़ि लेव ना। हालात पुश्तैनी में दर्ज है : मुसम्मात कस्तूरीबाई जौजे बक्षी प्रसाद कान्याकुब्ज ब्राह्मण साकीन सदर, जिला रायबरेली। कम्पनी बहादुर के बॉण्ड के लिए पेश्तर से रुपये दो सौ सालाना सूद मिलते थे और उसकी कीमत आराजी बीघा तीस के बराबर थी। साहब के ताकीद पत्र नकल नम्बर एक में इजरा फरमाया है, वक्त जरूरत काम आवे।

बॉण्ड क्या है, एक कागज है। कम्पनी की मोहर और तारीख, नीचे स्लीमैन साहब के नाम का ठप्पा। मूलधन कम्पनी के खाते में, सूद की थैलियाँ भरे एक अंग्रेज अफसर। कहीं कोई फैजाबाद की ओर रवाना होता, कोई ग्वालियर और कोई कानपुर की ओर।

कम्पनी बहादुर का बिगुल बजा। बजता चला गया। दूर गाँव के किनारे तम्बू गड़ गये। सिपाही कवायद करने लगे। साहब ने सलामी ली। भीड़ दूर बाग में डरी हुई खड़ी थी। दोनों बालक रघुवीर और गंगादीन कम्पनी की लश्कर को अपलक निहार रहे थे।

कभी सुख कभी दुःख।
अंग्रेज का नौकर।

यह गाना गाना नहीं बंगाल पैदल सेना का कूचगाना था और **लश्कर भई कूच उठि रे सिपहिया प्यारे;** यह गाना अवधवासी कम्पनी सिपाही का था। सुबह उठते ही वह गुनगुना पड़ता था।

''कभी सुख कभी दुःख अंग्रेज का नौकर''— यही 'कूचगाना' अकेले गाता हुआ कम्पनी सिपाही पण्डित हनुमान तिवारी कन्धे पर लम्बी लबलबी बन्दूक, सिर पर भब्बेदार रेशम की कलंगी लगी भारी भरकम पग्गड़ बाँधे, ताव दिये चला जा रहा था।

हाँ हाँ हो रामा !
कभी दुःख कभी सुख
कभी दुःख कभी सुख
अंग्रेज का नौकर
अंग्रेज का नौकर

कम्पनी बहादुर का नौकर
कभी दुःख कभी सुख हो रामा !

रघुवीर और गंगादीन कई दिनों से पाठशाला नहीं गये थे। गुरु जी से बोल दिया था हम अंग्रेज लश्कर देख रहे हैं। गुरु जी ने अनुमति दे दी थी। जाओ, देखना ही जानना है; जानना ही कर्म की भूमिका है।

दोनों बालक पैदल चले जा रहे थे। कर्नल स्लीमैन की लश्कर आज सिघोर परगना के गोलागंज में रुकेगी। वहीं तमाशा देखने। तभी अचानक खेत के मेड़ पर तेज चाल चलते हुए कम्पनी सिपाही को देख कर दोनों ठिठक गये।

सिपाही अपने–आप में मस्त था।

कभी सुख कभी दुःख
अंग्रेज का नौकर।

दोनों बालक मन्त्रमुग्ध कान लगाये उस सिपाही के पीछे–पीछे चले जा रहे थे। एक मोड़ पर सिपाही ने पूछा, कहाँ जा रहे हो ? दोनों विस्मय से अपलक निहारते रहे। सिपाही भी उन्हें देखने लगा।

रघुवीर के मुँह से निकला–आप बहुत अच्छे लगते हैं। आप कहाँ जा रहे हैं ?

सिपाही हो हो हो कर के हँस पड़ा। सामने आम के बाग में जा कर बोला, आराम से बैठ जाओ।

दोनों बालक पल्थी मार कर बैठ गये। सिपाही खड़ा रहा।

गंगादीन बोला, आप भी बैठो।

– नहीं बच्चा लोग, अण्टोन कम्पनी बहादुर का सिपाही कभी नहीं बैठता।

अच्छा !

– हाँ, ना कभी सोता है।

दोनों बच्चे आश्चर्यचकित।

– हाँ, वह हर वक्त खड़ा रहता है। हर समय जगा रहता है। मार्च करता रहता है, चलता रहता है।

रघुवीर ने पूछा, आप वही सिपाही हैं ?

– हाँ, कम्पनी बहादुर का सिपाही।

अच्छा, कम्पनी बहादुर के सिपाही ! कहाँ, जा रहे हो ?

– वह जो गाँव देख रहे हो, नरौरा, वहाँ मेरी ननिहाल है। मेरे मामा थे हीरामती अवस्थी। वह उस इलाके के पहले कम्पनी सिपाही थे, जो सिपाही से जमादार, जमादार से रिसालदार हुए। उसी मामा जी ने मुझे कम्पनी फौज में सिपाही बनाया। मैं ननिहाल की धूल माथे लगाने जा रहा हूँ।

आगे–आगे कम्पनी सिपाही पण्डित हनुमान तिवारी; पीछे–पीछे दोनों बालक, रघुवीर और गंगादीन। सिपाही अचानक सावधान हो कर बोला बच्चा लोग, मेरा नाम जमादार पण्डित हनुमान तिवारी, नम्बर 1322 बंगाल इनफैण्ट्री बटालियन, हम साक्षात् खुद है कम्पनी बहादुर। हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। नवाब वाजिद अली शाह क्या है कम्पनी बहादुर के सामने ? इस इलाके का तालुकेदार राना बेनीमाधव; वह भी कुछ नहीं कर सकता मेरा। ऊपर वही भगवान, नीचे कम्पनी बहादुर, बीच में सब तमाशा। बोलो बच्चा, तमाशा देखोगे। अच्छा। आइ जाव गाँवन में।

लो आइ गया नरौरा गाँव।

जै हो मामा बहादुर की ! पायँ लागौं मामी।

–अरे बेटवा कौन हो तुम ? पहिचान मा नाहीं आवा।

अरे मामी, बोलाय लेव गाँव–गढ़ी भर का। ढिंढोरा पिटवाई देव। आइ गवा वही मामा का हनुमान, हाँ हाँ, मामी तोहार वही उल्लू–मैनवा हनुमान तिवारी !

वह हनुमान ! वही पेड़चढ़वा बनरा। वही चिबिल्लवा आवा है कम्पनी बहादुर के सिपाही बन के ?

मामा हीरामनी अवस्थी के दुवारे पर भीड़ बढ़ती गयी। आम के पेड़ के नीचे माटी का चबूतरा। चबूतरे पर गाँव के बुजुर्ग लोग। चबूतरे से नीचे पूरा गाँव–जँवार, बैलगाड़ी में बैठे, पेड़ पर चढ़े, धक्का–मुक्का, किसी के हाथ में हुक्का, किसी के हाथ में लोटा, कोई गाय लिये खड़ा था; मतलब जो जैसा था, जिस हालत में, वैसे ही भागा हुआ आया था कम्पनी बहादुर के सिपाही, अपने गाँव–गढ़ी के भानजे हनुमान तिवारी को देखने।

उस मन्त्रमुग्ध भीड़ में, चबूतरे पर कम्पनी वीर–बहादुर हनुमान सिपाही के सामने बिल्कुल एकटक रघुवीर और गंगादीन बैठे थे।

कम्पनी सिपाही कभी अपने गलमोच्छे पर हाथ फेर कर कहता कि वाह क्या है अंग्रेज ! क्या है उसकी बहादुर कम्पनी ! कभी अपनी झोप्पेदार कोट के चमचमाते बटनों को छूता हुआ कहता–वाह ! अंग्रेज की दुनिया में कैसे–कैसे आश्चर्य हैं। क्या इन्तजाम, क्या सख्ती, मजाल है कि उसकी मर्जी के खिलाफ कोई मक्खी इधर से उधर उड़ जाय।

न किसी को भूख न प्यास। दिसम्बर के दिन। हड्डी छेद पछियाँव बह रहा था। मदमस्त सिपाही एक से एक आश्चर्यजनक बातें बता रहा था जिसे न आज तक किसी ने सुना था न सोचा था। 1814 का गोरखा युद्ध, पिण्डारी लड़ाई, मराठा युद्ध.... अंग्रेज का गुस्सा, कम्पनी बन्दूक, विलायती कारतूस, अंग्रेज मेम की हँसी, साहब बहादुर का दरबान ! मेमिन की चाल, खानसामा की बोल। अंग्रेज बहादुर की जबान। हुकुम। आर्डर। खामोशी। पहनावा। बहादुरी। दिलेरी। गुस्सा। आत्मसम्मान। अपने मुल्क इंग्लैण्ड की इज्जत। नाम। कर्नल साहब !

हनुमान जिस अन्दाज और मुद्रा में बातें कह रहा था, उस से स्पष्ट था कि वह कम्पनी का जमादार सिपाही था, पर अपने–आप को वह अवध के पुराने नवाब गाजिउद्दीन हैदर से जरा भी कम न समझ रहा था।

रात होने से पहले सिपाही को कर्नल की लश्कर में लौट कर हाजिरी देनी थी। सारा नरौरा गाँव देखता रह गया। सिपाही उसी उमंग और उत्साह से अंग्रेजी सलूट मार कर गाँव को छोड़ चला। दोनों बालक उसके पीछे–पीछे।

क्या समझा बच्चा लोग ?

रघुवीर ने कहा, समझ गया।

गंगादीन बोला, मैं कम्पनी बहादुर का सिपाही बनूँगा।

अच्छा ?

हाँ अच्छा ?

सिपाही जमादार हनुमान तिवारी ने कहा, तुम सुन लो बच्चा कान खोल कर, ई बात अपने माता–पिता से हर्गिज न बताना। हमारा इन्तजार करना। रेजिडेण्ट कर्नल की लश्कर इधर से जब लौटेगी, मैं खुद तुम्हें अपने साथ ले लूँगा और कम्पनी फौज में भर्ती करा दूँगा। अच्छा बच्चा लोग, अब जाओ !

रघुवीर ने कहा, यह सामने शंकरपुर हमारा गाँव है। हमारे यहाँ चलिए। वहाँ हम आप को एक घोड़ा दे देंगे जो लश्कर छावनी पहुँचा देगा।

शंकरपुर ! किसके बेटे हो ?

–राना बेनीमाधव के.....

राना बेनीमाधव, वाह ! और तुम ?

–मेरे पिता जी पण्डित दुलीराम अग्निहोत्री शंकरपुर पाठशाला के गुरु, आप पधारें, बड़ी कृपा होगी। सिपाही हनुमान तिवारी ने कहा, नाही बच्चा, तुम दोनों की कुशलता इसी में है कि मुझे अपने यहाँ ना ले चलो। हाँ बच्चा, मुझे देखते ही तुम्हारे पिता भड़क जायेंगे। फिर तुम्हारा कम्पनी सिपाही होना असम्भव हो जायेगा। हाँ बच्चा; सावधान, होशियार !

रघुवीर और गंगादीन दौड़े हुए शंकरपुर पहुँचे। घुड़सार से तीन घोड़े छाँट कर कुछ ही क्षणों में दोनों कम्पनी सिपाही को सलाम कर रहे थे। यह लीजिए यह घोड़ा आप की सेवा में।

सिपाही जब उस घोड़े पर सवार हुआ, तो दोनों बालकों ने अपने–अपने घोड़ों पर बैठे देखा जैसे सचमुच हनुमान आकाश में उड़ रहे हों। कर्नल स्लीमैन की लश्कर जब अगले दिन बैरामघाट उर्फ गनेशगंज से आगे घाघरा नदी के दायें घाट से आगे बढ़ी तो सिपाही हनुमान तिवारी ने देखा कि रघुवीर और गंगादीन भी उस काफिले के साथ–साथ चल रह हैं।

एक गाँव से दूसरे गाँव; गरीब, दरिद्र, उजड़े हुए गाँव। परती पड़ी हुई जमीन। सूने खेत। मिट्टी की दीवारों के घर; बिना छत और छप्पर के। कहीं बीस–पचीस में कोई एक घर जिस पर मिट्टी की या घास–फूस की छत हो।

दोहाई हो अंग्रेज बहादुर की ! दोहाई हो कम्पनी सरकार की। गाँव के डरे हुए लोगों के मुँह से इस तरह बोल फूटते जैसे वे विलाप कर रहे हों।

कर्नल स्लीमैन ने अपनी पालकी से बाहर निकल कर सब की सलामी ली।

हुजूर सरकार; दोहाई धर्मावतार की। इधर से आवैं नवाब के सिपाही तो लूट ले जावैं। फिर पीछे आवैं भरपासी। हैं तो वै राज के चौकीदार, तालुक के पहरेदार; मुला दोहाई सरकार; वे करते रात को पूरे गाँवन में चोरी, सीना जोरी ! जागा पड़ि जाय तो हो जाते डाकू लुटेरे। दोहाई सरकार की !

बूढ़ा किस तरह, किस भाव, किस भाषा में किस से कह रहा है ? एक अंग्रेज से। एक परदेशी से। वह जिससे कह रहा है वह बहादुर है, कम्पनी बहादुर।

बूढ़ा जैसे कोई कथा कह रहा है और सारी लश्कर सुन रही है और उस लश्कर के बहाने रघुवीर और गंगादीन सुन रहे हैं। सुन नहीं देख रहे हैं। ये पासी लोग साँझ होते ही तीर–कमान, गँड़ासा–कुदाल लेकर गाँवों में घुस जाते हैं। और सब–कुछ खा–पी, लूट–खसोट, मारमूर, फूँक–ताप कर रातों–रात चले जाते हैं। सारे तालुकेदार, सीरदार, चकलेदार के यहाँ भरपासी पलती है। उन्हीं के सिपाही और वे ही लुटेरे। इन्हें कोई तनख्वाह नहीं मिलती। कोई जमीन जायदाद नहीं। बस इन्हें छूट रहती है कि महीने में सिर्फ एक बार जहाँ जब चाहें गाँव–गढ़ी लूट लें। चूँकि ऐसा हर सीरदारी, तालुकेदारी, चकलेदारी और राजवारी में होता है इसलिए कहीं इस की सुनवाई नहीं।

अगला पड़ाव। 7 दिसम्बर 1850। गाँव हिसामपुर। घाघरा नदी के उस पार। गाँव के एक ओर हरे–भरे खेत। बाग–बगीचों से भरी जमीन। पर गाँव के दूसरी ओर सारी परती जमीन। बियाबान।

ऐसा क्यों ?

रेजिडेण्ट बहादुर ने पता लगाया। छेदवाड़ा के दो राजपूत परिवार हैं, पृथीपत और मृत्युंजय; घाघरा के उत्तर पृथीपत मालिक और दक्षिण मृत्युंजय मालिक। बैर–दुश्मनी है दोनों राजपूतों में।

और दुश्मनी भी किस बात पर !

घाघरा के मेला में पृथीपत के धोबी ने मृत्युंजय के धोबी से कह दिया था कि मेरे मालिक के कपड़े तुम्हारे मालिक के कपड़ों से ज्यादा साफ–सुथरे होते हैं। बस, तब से बात बढ़ते–बढ़ते कहाँ तक पहुँच गयी। दोनों एक–दूसरे के गाँवों को लूटते–मारते हैं। दोनों को समझाने वाला कोई नहीं। प्रजा की कोई सुनने वाला नहीं।

दस वर्ष से ज्यादा हो गये, यही दो राजपूत नहीं बल्कि इधर के चकलेदार, अमलदार, नाजिम, सीरदार, तालुकदारों ने अवध के नवाब को कोई मालगुजारी, रैय्यतवारी, नजराना, हरजाना, दामबन्दगी की अदायगी नहीं की।

सिपाही हनुमान तिवारी से बड़े साहब का बड़ा खानसामा बता रहा था और रघुवीर गंगादीन कान उटेरे बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

अभी एक साल पहले की बात है जनाब, बड़ा लाट साहब हेनरी लारेंस का एक सिपहसालार इधर से गोरखपुर जा रहा था, लखनऊ से गोरखपुर। सो जनाब, इधर अफवाह फैल गयी कि कम्पनी बहादुर जनाब की तरफ से रियासत वसूली करने आ रहा है। सो क्या हुआ जनाब कि ये पृथीपत और मृत्युंजय, ये दोनों जान–माल, लावलश्कर, घरबार ले कर बीहड़ जंगलों में चले गये। महीनों वहीं बीहड़ों में पड़े रहे। जानवरों की जिन्दगी बसर करते रहे। ये राजपूत हैं ! क्षत्री हैं ! जानवरों से भी बदतर हैं।

अचानक कहीं से एक गरजती हुई आवाज आयी, ठहरो कर्नल स्लीमैन, यहीं रुको !

–रुको।

कहारों ने पालकी को जमीन पर रख दिया।

—क्या है ? कौन हो ?

—मैं कुछ नहीं हूँ।

वह आगन्तुक कर्नल स्लीमैन के सामने ठहाका मार कर हँस पड़ा। मैं कुछ नहीं हूँ। मैं कथावाचक हूँ। खेवट।

गहरी नदिया अगम जल
जोर बहुत है धार !
खेवट से पहले मिलो
जो उतरा चाहो पार !!

कर्नल ने पूछा, कहाँ रहते हो ?

—शंकरपुर।

वही शंकरपुर, राना बेनीमाधव का....?

बालक रघुवीर को रोमांच हो गया, उसके पिताश्री का नाम और धाम याद किया जा रहा है।

कर्नल पालकी में बैठ गया। चलो कैम्प चलो, उधर बाग में।

हटो हटो। दूर हटो।

सिपाहियों ने खेवट को दुतकारा। खेवट हँसता रहा।

होंगे तुम्हारे लाट साहब ! हमारा बादशाह अभी दिल्ली में और हमारा नवाब अभी लखनऊ में मौजूद है। सुनो, सुनो कर्नल स्लीमैन। तुम्हारा ख्याल बिल्कुल गलत है कि मुसलमान नवाबों ने अपनी बदइन्तजामी से अवध को तबाह कर दिया। हमारे नवाबों के यहाँ बदइन्तजामी नहीं थी। झूठ इकट्ठा करने से क्या फायदा ?

कर्नल स्लीमैन ने डाँटा, जल्दी और जल्दी !

पालकी तेज जा रही थी। बहुत तेज।

बाग में लश्कर रुक गयी। अपने कैम्प में पहुँच कर कर्नल ने उस दिन की डाक देखी। कुद देर सोया। फिर पेचवान के कश लगाने के बाद अपने दफ्तर में जा बैठा।

कहाँ है वह खेवट ?

—यह रहा, सर !

दोनों ने जैसे पहली बार एक—दूसरे को देखा।

कर्नल ने पूछा, तुम कथावाचक हो ? कथा कहते हो ?

—सुनोगे साहब ?

नहीं। मैं सुनता नहीं, देखता हूँ।

—मैं भी देखने ही आया हूँ।

तो देखोगे ?

रात के ग्यारह बजे। कर्नल ने कहा, सिपाही हनुमान तिवारी, दस सिपाहियों को साथ ले कर इस खेवट को चार मील दूर महादेवा गाँव में ले जाओ, इसे दिखाओ, क्या सच है क्या झूठ ! बड़ा कथावाचक बनता है।

आधी रात। महादेवा गाँव। जाड़े की घनी काली रात कुहासे में लिपटी हुई। हनुमान तिवारी सहित ग्यारह कम्पनी सिपाही, खेवट और बालक रघुवीर और गंगादीन सब महादेवा गाँव के बाग में छिपे हुए खड़े रहे। गाँव के चारों ओर कितने पासी, सियार की बोली बोल रहे हैं। हुआँ हुआँ करते हुए सिवान से गाँव में बढ़ रहे हैं। गाँव के सारे कुत्ते बेतरह भूँक रहे हैं। गाँव के तीन घरों में एक साथ आग लग गयी। पूरे गाँव में गोहार मच गयी। लोग भागने चीखने लगे। कुदार, गँड़ासा, तीन—धनुख, भाला, गुलेल और फरसा से लैस पासी गिरोह बड़े इत्मीनान से गाँव के एक—एक घर—परिवार को लूटने लगा।

खेवट कथावाचक चिल्ला पड़ा, पकड़ लो, घेर लो इन लुटेरों को ! देखते क्या हो ? घेर लो हत्यारों को !

सिपाही हनुमान तिवारी ने कहा, सावधान, हमें हुक्म नहीं है।

किसका हुक्म ?
—कम्पनी बहादुर का ?
और हमारा नवाब ?
कथावाचक सब के मुँह देखता रहा।

दो

शंकरपुर में जिस क्षण खबर फैली कि दुलीराम अग्निहोत्री का पूत गंगादीन कम्पनी बहादुर की सेना में भर्ती होने जा रहा है, तो चारों ओर सनसनी फैल गयी।

खबर राना बाबा के पास पहुँची। उन के मुँह से निकला, गुलामी से नौकरी कहीं अच्छी और सिपाही की नौकरी, वह भी कम्पनी बहादुर की, वाह इस से अच्छा और क्या है !

सब से ज्यादा आश्चर्य की बात, गंगादीन के पिता दुलीराम को कोई शिकायत नहीं हुई अपने बेटे की इच्छा से। हाँ, जब खबर गंगादीन की माई के पास पहुँची तो वह बेहोश हो गयी। होश आते ही विलाप कर के रोने लगी।

बहरहाल माई ने गंगादीन को घर में बन्द कर लिया और कह दिया कि मेरा पूत अब न पाठशाला जायेगा, न लश्कर देखने। आग लगे कम्पनी की नौकरी में।

गंगादीन में भी कमाल की संकल्पशक्ति थी और चतुराई भी। दिन–रात घर में माई को समझाता कि वह कम्पनी की नौकरी नहीं है। वह सिपाहीगीरी है। कम्पनी बहादुर का सिपाही। जैसे सिपाही हनुमान जी थे राजा रामचन्द्र जी के, वैसा ही सिपाही। गंगादीन ने अन्त में माई को समझा लिया कि कम्पनी सिपाही क्या होता है।

गंगादीन लखनऊ रेजिडेन्सी के लिए रवाना हो रहा था। सबसे पहले उसने अपने परम सखा रघुवीर से विदा ली। फिर राना बाबा को प्रणाम करने गया। राना बाबा बहुत गम्भीर थे उस दिन। सिर्फ इतना कहा, गंगादीन, तू कम्पनी बहादुर का सिपाही बनेगा ! एक बात याद रखना, जिस अंग्रेज ने गंगा और सरजू नदी को पार किया है उस दिन उसने अपने मन में कहा है, मैं ऐसी आग अवध में लगाऊँगा... जिसे गंगा–सरजू का सारा पानी भी नहीं बुझा सकेगा, मैं ऐसी आग लगाऊँगा। इसे याद रखना, और इसे देखना।

पिता दुलीराम ने विदा लेते हुए कहा, ब्राह्मण को अपने जनेऊ की लाज रखना। यह लो गीता। यह लो, रामायण की पोथी। इसे पास रखना। धर्म ग्रन्थ में नहीं है, धर्म है अपने कर्म और आचरण में। सुबह का समय था। माध का महीना। गंगादीन और रघुवीर घोड़ों पर बैठे जा रहे थे। साथ में थे रानाबाबा के दो सिपाही।

माई ने एक सिले कपड़े में छः सोने की मोहरें सहेज कर बेटे को दिया था। गंगादीन धोती के ऊपर पूरे बदन का अचकन पहने था। कमर में तीन फेंटे का कमरबन्द, सिर पर बैसवारी पगड़ी। यही वस्त्र रघुवीर के थे, अन्तर इतना ही कि उसके वस्त्र राजसी थे।

रघुवीर अपने बाल्यकाल के मित्र को लखनऊ तक विदा करने जा रहा था। साथ ही राना बाबा की आज्ञा थी कि रघुवीर ने कर्नल स्लीमैन की लश्कर को देखा। अब लखनऊ जा कर नवाब वाजिदअली शाह के दरबार में अपने पिता राना बेनीमाधव को देखे।

लखनऊ में दिन चढ़े की नौबत बजने लगी। रघुवीर अपने मित्र को कम्पनी छावनी में विदा दे कर इधर आया था। छत्तरमंजिल, टेढ़ी कोठी, सिधार वाली कोठी, खुर्शीद मंजिल, हर जगह रौनक थी। सड़कों के किनारे साकिनी और तमोलियों ने दूकानें सजा रखी थीं। तिलंगे, झिलंगे, हब्शी सिपाही, कनौजिया सिपाही, कनपुरिया पहलवान, राजपूत ओहदेदार शाही महलों के पहरे पर मुस्तैद थे।

दोपहर की नौबत अब तक बज रही थी। महलों में भटियारने इधर उधर भाग रही थीं। दीवानखानों में दस्तरखान बिछे। बेगमों ने पर्दों के पीछे चौसर की बिसातें जमायीं। मेहरियाँ और कनीजें पावदान खोल कर बैठीं।

किसी ने पूछा, कौन हो बेटे, किसकी तलाश में हो ? रघुवीर चुपचाप देखता रहा। एक जगह से दूसरी जगह।

तीसरे पहर की नौबत बजी। दिन ढलना शुरू हुआ। मोतीमहल से इत्र की खुशबू का एक झोंका आया। गोमती के किनारे नावें बँधी खड़ी थीं। बजरे सज रहे थे। घाट के मन्दिर से अचानक वृन्दावनी सारंग के आलाप–स्वर गूँजे। फिर चौथा पहर आया। सूरज डूबने लगा। हवाओं में खुशबू उमड़ आयी।

शामे–अवध अपनी पूरी रंगीनियों के साथ सजने लगी। गन्धियों की दूकानों की महक– कन्नौज के बेले, जौनपुर के गुलाब और चमेली की खुशबू। मन्दिरों में से उठते हुए चन्दन, गुग्गुल और लोबान की लपट।

फिर किसी की आवाज आयी, क्या ढूँढ रहा है ? किसे तलाश रहा है ?

रघुवीर चुप देखता रहा। कहीं से एक बोल फूटा, **लोगों खुश हो लो कि दुनिया फानी है।** एक दूसरा संगीत स्वर सुनाई दिया, **कूच नगारा साँस का बाजत है दिन रैन !...**

अचानक किसी ने पहचान लिया, रघुवीर तुम यहाँ ? कैसे ?

टिकैतराय थे। पूछा, अपने पिता जी से मिले ?

कहाँ हैं पिता जी ?

–नवाब के पास !

नवाब कहाँ हैं ?

–किसी महल में !

तुम्हें पता नहीं, टिकैतराय। कैसे अंगरक्षक हो मेरे पिता के ?

टिकैतराय को हँसी आ गयी, पहली बार आये हो लखनऊ ? जाओ दिखाता हूँ।

देखो, परियों के शहर की तरह जगमगा रहा है। ये गलियाँ, ये सड़कें, ये मुहल्ले, गंज, कटरे, बाग, नाके, झूले....यह किला। यह मच्छी महल है। यह इमामबाड़ा है। यह ख्वाबगाह है। यह आलीखाँ की सराय है। यह आसिफुद्दौला के दोस्त राजा झाउमल का पुल है। वही आसिफुद्दौला जिसका नाम ले कर लोग अपनी दूकानें खोलते हैं, **जिसको न दे मौला, उसको दे आसिफुद्दौला।**

राना बाबा ने रघुवीर को बताया है, यह लखनऊ शहर नहीं है नगर है। यह नगर अयोध्या और काशी के संगीत का संरक्षक है। यहाँ की भैरवी का कमाल है। ब्रज के रासधारी, अवध के रामलीलाधारी, क्या लीलाएँ करते हैं। क्या–क्या स्वांग। शहंशाह आलमगीर ने कभी अयोध्या की यात्रा की थी। वापसी में लखनऊ में ठहरता हुआ मथुरा, वृन्दावन के रास्ते से वह दिल्ली पहुँचा। तभी से ये लीला, यह स्वांग, यह नौटंकी फैजाबाद और लखनऊ की रंगभूमि पर खेला जा रहा है। इस अवध भूमि पर जो भैरवी, चइती, ख्याल, रसिया, मर्सिया, कहरवा, कव्वाली, बिरहा, फाग, गजल, भजन, कसीदे और फकीरी गायी गयी है, इससे उस सतरंगी दुनिया की रचना हुई है, जिसका महत्व बाहर वाले नहीं समझ सकते। ब्राह्मण नर्तक कथक नाचता है, महाराज है। कत्थक, भाँड, जलतरंगिए, सारंगीबाज, वीणावादक, तबलिये वाजपेयी ब्राह्मण की कविता, कनौजियों की गप्पबाजी, दस्तानगी कायस्थ, फौजी, बाँके, मुरहा छैला, चण्डूबाज, नक्काल, बहुरूपिये, बैरागी और मदमस्त जोगी और भोगी, यह है सतरंगी अवध। टिकैत राय ने चलते–चलते टोका– भइया जी, इतने चुपचाप क्यों हो ? क्या सोच रहे हो ? टिकैत राय ने फिर कहा, अब चलो आप को राना जी के पास ले चलते हैं।

दोनों आगे बढ़े। शाही महल से पहले नाके पर नवाब अवध के सिपाही ने पूछा, कहाँ जाने का इरादा है, किब्ला ? टिकैत राय ने सिपाही को अपना परवाना–राहदारी दिखाया।

महल में घुसते ही आहाते में बेला चमेली के कुंज। कुंजों में मल्हार उडत्र रही है। आगे बारादरी। बारादरी में रामदीन महाराज कत्थक नाच रहे हैं। महफिल जमी है। नवाब वाजिद अली शाह बैठे हैं– मशरू का कलियोंदार पायजामा, शरबती का चुना हुआ अंगरखा, नुक्केदार टोपी और मन्दील पहने हुए। इस कदर इत्मीनान से गावतकिये के सहारे बैठे हैं। पास में ही बैठे हैं रघुवीर के पिता, राना बेनीमाधव।

रघुवीर ने देखा, फर्श पर सफेद चाँदनी खिंची थी। सफेद छतगीरी में झाड़ लटक रहे थे। ताकचों में कँवल और गिलास रोशन थे। चारों ओर बड़े–बड़े कद्दे–आदम आईने लगे थे।

रघुवीर क्षण भर के लिए शरमाया–सा दरवाजे के पास खड़ा देखता रहा। उसने खूबसूरत गुलबदन पहन रखा था और उसके सिर पर मन्दील थी। अपने निश्चित स्थान पर बैठे राना बेनीमाधव ने बेटे को बुला कर अपने पास बैठाया और कुशल–समाचार पूछने लगे।

रघुवीर की नजर नवाब पर जमी हुई थी। वह नृत्य का आनन्द ले रहे थे। साथ ही वह गंगा–जुमनी गुड़गुड़ी पीते थे। उन के शान्त चेहरे पर फानूस की रोशनी आँख मिचौनी खेल रही थी। अचानक नवाब के मुँह से निकला–वाह ! वाह ! खूव !!

सारी महफिल वाह–वाह कर उठी। रामदीन महाराज ने सिर्फ एक घुँघरू के बोल पर एक नयी तान दिखाई थी। वाह !

रात का पिछला पहर था। राना बेनीमाधव गहरी नींद में सो रहे थे। रघुवीर को नींद नहीं आ रही थी। शाही महल के उस कमरे से बाहर निकल आया।

हवा बन्द थी। रात भी गरम थी। पता नहीं क्यों, परियों के उस नगर लखनऊ में उसका दम घुटने–सा लगा। वह ऊपर से नीचे सहन में उतर आया। सहन से आँगन में। उस महल की फिजाँ में न जाने कैसी आवाज सुनाई दे रही थी। वह सोचने लगा, क्या ऐसी ही रातों में दुखी आत्माओं के अदृश्य में गुजरने की सनसनाहट सुनाई देती है।

वह उस धुँधलके अन्धेरे में देखने लगा। फूल–पौधे, पत्ते निश्चल खड़े थे। हौज के किनारे एक कुत्ता दुम टांगों में समेटे सो रहा था।

रघुवीर ने अपने आप से पूछा, क्या मेरे पिता ने कभी किसी कुत्ते को इस तरह सोते देखा है ? क्या वह तब सोचते कि यह कुत्ता कोई दुःखी आत्मा है ?

रघुवीर उस सन्नाटे में हौज के किनारे–किनारे टहलने लगा। अचानक उसे शुक्रतारा दिखा। सुबह होने वाली थी। रानाबाबा की बात याद आयी, शुक्रतारा बताता है कि यहाँ कुछ नहीं रहेगा, सिर्फ ईश्वर रहेगा ! वही, जो किसी समय भी अपनी अंगुली उठा कर कह सकता है कि बस, अब खेल खत्म !

रघुवीर अगले दिन सुबह ही सुबह शंकरपुर जाने लगा। नवाब के साथ पिता की व्यस्तता देख कर वह और गम्भीर हो गया था। टिकैत राय की बड़ी इच्छा थी कि वह कम से कम दो–चार दिन तो यहाँ रहे। पर वह कहता, क्या करूँ यहाँ रह कर ?

देखिए न, आप के पिता यहाँ क्या कर रहे है !

–वह देख लिया।

टिकैत राय ने कहा, कमाल है, अभी क्या देखा ? नवाब वाजिद अली शाह को देखा ? उनकी बेगमों को देखा ?

फिर टिकैतराय रघुवीर को अपने संग लिये महल के उस ओर गये जिधर चौक की ओर खुलने वाली सहनची थी। सहनची पर तरह–तरह के गुलाबों की बेल चढ़ी थी। वहीं टिकैतराय ने रघुवीर को बताना शुरू किया कि नवाब बादशाह वाजिद अली शाह शीया मुसलमान हैं और शीयों के मजहब में मुत्आ (एक निश्चित अवधि के लिए किया गया विवाह) बिना किसी रोकटोक के जायज है। मगर नवाब इतने मजहबी हैं कि वह किसी औरत की, जिस के साथ मुत्आ न हुआ हो, सूरत देखना भी पसन्द नहीं करते। यह एहतियात इस हद तक बढ़ी कि एक जवान भिश्तन को जो नवाब बादशाह के सामने जनाने में पानी लाती, भी मुत्आ कर के उसे नवाब आबरसाँ बेगम का खिताब दे दिया। एक जवान भंगन, जिस की हजूरी में आमदरफ्त रहती उसे भी मुत्आशुदा बेगमात में शामिल कर के नवाब मुसफ्फा बेगम का दर्जा दे दिया। नाच, गाना, संगीत का शौक भी मुत्आशुदा औरतों तक ही सीमित है। शायद ही ऐसा हुआ हो कि बादशाह हुजूर ने कभी किस्से बाजारी वेश्या–रण्डी का मुजरा देखा हो। अरे भइया, खुद मुत्आशुदा बेगमों की पार्टियाँ बना दी गयी हैं, जिन्हें तरह–तरह के नृत्य–संगीत, रास–गान की तालीम दी जाती है। अब देखो। वह देखो, वह है एक राधामंजिल वालियाँ, वह देखो एक झूमर वालियाँ, वह एक लटकनवालियाँ, वह एक शारदा मंजिलवालियाँ, वह एक तथवालियाँ, वह एक रासवालियाँ, वह एक नकलवालियाँ। और इस तरह के बीसों गिरोह हैं।

रघुवीर अपने पिता से विदा लेने गया। पता चला कि राना नवाब अबुल मंसूर कमालुद्दीन अली रजा बहादुर तुसरतगंज के साथ बैठे चौसर खेल रहे हैं।

रघुवीर महल से दूर रेजिडेन्सी की ओर बढ़ने लगा। रेजिडेन्सी के सिपाही ने रघुवीर को ध्यान से देखा। कम्पनी सरकार से कोई सिलसिला है ?

—हाँ, है।

सिपाही ने कहा, जाओ—जाओ अन्दर। खुदा किसी न किसी वसीले से हरेक को खिलाता है। फिरंगी सरकार ही सही।

रघुवीर धूम कर खड़ा हो गया।

सिपाही ने पहचान लिया, ओ हो, आप के ही संग वह लड़का आया था फौज में भरती होने। वह गया। कर्नल साहब की कोठी पर।

रघुवीर रेजिडेन्सी से लौट कर दोनों सिपाहियों के साथ अपने घोड़े पर शंकरपुर लौट गया।

सन्ध्या समय रघुवीर रानाबाबा से मिला। लखनऊ, नवाब वाजिद अली शाह, और अपने पिता राना बेनीमाधव के बारे में उसने जो कुछ कहा, उससे रानाबाबा को पता चल गया कि रघुवीर को वहाँ कुछ भी अच्छा नहीं लगा।

बाबा से बातें करते—करते उसके मुँह से निकला, बाबा, लखनऊ में जो कुछ देखा सुना, उससे लगा कि वह सब किसी प्राचीन शोकगीत का अन्तिम पद है। साहब बहादुर हैं जबर्दस्त और होशियार, और नवाब, ठीक साहब का उल्टा।

राना बाबा काफी देर चुप रहे। फिर रघुवीर से पूछा, बहादुर, जबर्दस्त और होशियार होना ही बड़ी बात है ? और स्वयं ही उत्तर देते हुए समझाने लगे, नहीं, केवल बहादुर, जबर्दस्त और होशियार होना कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है वह कालक्षण, वह समय, जिसे पकड़ कर उसी पर सवार हो जाना कहते हैं। सिखों और मराठों की हार क्यों हुई ? वे तो जबर्दस्त बहादुर और होशियार माने जाते हैं। दिल्ली में मुगल शहंशाही और बंगाल में नवाब नाजिमशाही का पतन क्यों हुआ, हालाँकि उनमें लखनऊ जैसा बचकना भी न था।

राना बाबा घायल शेर की तरह बरामदे में घूमने लगे। एकाएक अजीब स्वर में बोले, असल बात यह है कि जो समय आया है उसमें इधर तो हिन्दुस्तानियों की गफलत और जहालत का पैमाना छलकने को नहीं, बिल्कुल हाथ से गिर कर टूट जाने को है और उधर अंग्रेज साहब का चरित्र, आत्मविश्वास ! यही मुख्य है। यही सबसे बड़ी चीज है। अवध के लोगों ! तुम सब एक मकड़ी के अदृश्य जाल में फँस चुके हो। किसने कहा अमजदअली शाह को कि तू अपने पूत वाजिदअली शाह को ही अवध का नवाब बना ? जिसकी प्रवृत्ति विलासिता और ललित कलाओं की ओर थी, उसे हुकूमत करने से अलग रखना चाहिए था।

और क्या मैं कम अभागा हूँ ! मेरा एकलौता बेटा बेनीमाधव, बहादुर, नेक, सच्चरित्र, उसी नवाब की स्वामिभक्ति में डूबा है। अच्छा हुआ तुम लखनऊ हो आये। वहीं अपने पिता को देख आये। सुनो रघुवीर। वह समय बहुत पास है जब उन मिटने वालों में हम सब होंगे। मैंने अपनी जवानी में ही अंग्रेज साहब की वह आवाज सुन ली है, 'मैं ऐसी आग तुम्हारे मुल्क में लगाऊँगा कि जिसे गंगा—सरजू का सारा पानी भी न बुझा सकेगा। ऐसी आग लगाऊँगा.....।'

रघुवीर ने पूछा, बाबा, तब से आप ने क्या किया ?

तब से केवल देख रहा हूँ, और कुछ नहीं कर सका।

तीन

1 जनवरी 1850। अपनी लश्कर रायबरेली में छोड़ कर केवल पाँच अंगरक्षकों और धारूपुर के तालुकेदार हनुमन्त सिंह के साथ कर्नल स्लीमैन शंकरपुर जा रहा था।

राना बेनीमाधव का साग्रह निमन्त्रण था। कर्नल के घोड़े के साथ–साथ हनुमन्त सिंह का घोड़ा भी खरामा–खरामा चल रहा था। एक जगह घोड़े को रोक कर कर्नल ने कहा, हनुमन्त सिंह, मुझे जो रिपोर्टें मिली हैं उनके मुताबिक राना बेनीमाधव बड़े बहादुर और नवाब के जिगरी दोस्त हैं। नवाब के बड़े माफीदार हैं। इनकी बहादुरी और नवाब की खिदमत करने के खाज में इन्हें बड़ी जागीरें मिली हैं। मगर ये किसी उसूल के आदमी नहीं हैं। कमजोर जागीरदारों, पट्टीदारों, मालिकदारों की मौरुसी मिल्कियत जबर्दस्ती या धोखा–बेईमानी कर हड़पने में इनका भी कम नाम नहीं है।

हनुमन्त सिंह बोले, साहब, अवध में अगर आप किसी भी तालुकेदार, जागीरदार को इस कसौटी पर कस कर देखेंगे तो आप को सब बेईमान दिखेंगे। अपने से कमजोर की जमीन–जायदाद किसी भी तरह अपनी रियासत में मिला लेना, यह आम बात है। तालुकेदार का रुतबा, उस की नेकनामी और बहादुरी इसी से तो साबित होती है। अपनी जमीन जायदाद, राजपाट बढ़ाना हर क्षत्रिय, राजपूत का हक है। यह हक उसे ईश्वर से मिला है। राजपूत का माने ही है राज करने वाला पूत। जो असमर्थ है, कमजोर है, उसे मालिक बने रहने का कोई हक नहीं। और जो समर्थ है, ताकतवर है, वह कुछ भी करे, उस का कोई दोष या गुनाह नहीं।

समरथ को नहिं दोष गोसाई।
रवि पावक सुरसरि की नाई।।

कर्नल ने बड़ी हैरानी से पूछा, क्यों ? इस से हारे–लुटे हुए आदमी और उस की रियाया, उसके नौकर–चाकर, सिपाही, अमलेदारों को कोई परेशानी नहीं होती ? क्या ? वे चुपचाप सब कबूल कर लेते हैं ?

जी हाँ, जैसे एक की रियाया, वैसे अब दूसरे की रियाया। जैसे पहले की नौकरी–चाकरी, अमला–अमलेदारी वैसे अब दूसरे की। किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता।

कर्नल वहीं रास्ते पर घोड़ा रोके रहा। अपनी डायरी में लिखने लगा; ताज्जुब है, हिन्दुस्तान का आदमी अजीब है। हैरत अंग्रेज ! जो उसे जीत ले, वह उसी का हो जाता है। कोई भी राजा हो, उसे वह कबूल कर लेता है। इस से भी ज्यादा ताज्जुब की बात यह कि कोई भी हुकूमत हो, कोई भी ''सिस्टम'' हो, उसी के मुताबिक यह हिन्दुस्तानी अपने–आप को ढाल लेता है। कमाल है ! कितने साँचे हैं इसके पास–झट से अपने–आप को हुकूमत के हिसाब से उसी साँचे में ढाल लेता है। हूण, मंगोल, तुर्क, पठान, मुगल, डच, फ्रेंन्च, नवाब और अब अंग्रेज कम्पनी बहादुर.....।

आगे लिखता गया;.....कमाल है और कितना दिलचस्प ! अपना राज बढ़ाते चलो ! दूसरों को हटा कर ! हटा कर नहीं तो उसके सिपाहियों को खरीद कर। उसके अहलकारों को और बड़े वायदे दे कर। यह नहीं सही तो राजा, बादशाह नवाब के दरबार में चापलूसी जी–हुजूरी कर के दरबार से यह फरमान जारी करा लेना कि फलाँ की जागीर, फलाँ की तालुकेदारी, अब फलाँ को दी जाती है। यह भी न सही तो यह फरमान जारी करा लेना कि अब फलाँ तालुक, फलाँ तहसील, अब से 'हुजूर तहसील' मुकर्रर की गयी और इस की हुजूर तहसीली फलाँ राजा, फलाँ तालुकेदार, फलाँ जागीरदार करेगा।

जिस के दरबार से ऐसे ताल्लुक हो जाते–वही तो तालुकेदार होते। जो ऐसे तालुकेदार होते, उन्हें ही हक मिलता किला बनवाने का, अपनी सेना सिपाही, बन्दूक तोप रखने का। हर तरह से अपनी इतनी ताकत बढ़ाने का कि एक ओर अपने जैसे दूसरे तालुकेदारों, राजपूतों से अपनी हिफाजत कर सकें। दूसरी ओर राजदरबार पर भी यह रोब रख सकें कि वह राजदरबार से कम नहीं हैं। उसके अब 'हक' हैं, 'फर्ज' नहीं। वह 'खुद' 'हुजूर' है। अब अपने अलावा उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं। शंकरपुर के राना बेनीमाधव शायद ऐसे ही राजा हैं। तभी तो शंकरपुर में रायबरेली है, रायबरेली में शंकरपुर नहीं है।

आम बाग के पीछे नगारा, तुरही, धौंसा, शहनाई, ढोल, तासे, झाँस का ऊँचा संगीत सुनाई देने लगा। तोप बन्दूकों की सलामी।

राना बेनीमाधव पूरे राजसी साजबाज के साथ कर्नल स्लीमैन की अगवानी कर रहे थे।

शंकरपुर।

चारों ओर ऊँची मजबूत मिट्टी की दीवारों से घिरा हुआ किला। किले के चारों ओर गहरी खाई घने, कँटीले बाँस का अभेद्य जंगल, प्रवेश–फाटक बहुत ही मजबूत। अन्दर सभा भवन, दीवानखाना ओर जनानी हवेली। राजमहल के पिश्चम, उत्तर और पूर्व दिशा में दूर तक बसा हुआ शंकरपुर। उत्तर की बस्ती का नाम फुलवारी पुरवा, पूर्व की बस्ती का नाम शिवाली गढ़ी। पश्चिम की ओर देवी पुरवा।

राजमहल में कर्नल के स्वागत–सम्मान के बाद राना बेनीमाधव ने अपने वंश का परिचय देना शुरू किया, जिसे कर्नल बड़ी दिलचस्पी के साथ अपनी डायरी में लिखता रहा।

उनके पूर्वज बैस राजपूत थे। बहुत बड़ा खानदान था बैसों का। चौदहवीं सदी में राजपुताना, जोधपुर, सोजत से इधर आये थे। इधर आ कर हम सैंकड़ों की तादाद में पचास कोस के भीतर शान्त उपजाऊ सुरक्षित इलाका देख कर इधर–उधर बसे। अपने बाहुबल से जमीन जायदाद खड़ी की और इस बड़े इलाके को हमसे ही नाम मिला, बैसवाड़ा। हमसे पहले इस इलाके का नाम था कन्नौज, कनौजिया।

बीच ही में कर्नल ने पूछा, अपना देस छोड़ कर इधर कैसे आये ? राना ने कहा, अपने धर्म की रक्षा के लिए। उस समय सुलतान सूबेदार उधर हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बना रहे थे। हमारे पूर्वज अपने धर्म की रक्षा के लिए भाग कर इधर आये।

उसी क्षण राना बेनीमाधव के पिता राना बाबा, जिनका पूरा नाम था रामनारायण सिंह, बीच में बात काट कर बोले– यह झूठ है साहब ! धर्म की रक्षा भाग कर नहीं होती। हमारे पूर्वज धर्म की रक्षा के लिए नहीं भागे। वे कायर, घमण्डी और लुटेरे थे। वे डर के मारे भाग आये ?

कर्नल ने पूछा, किस चीज का डर ?

जिन्दा न रह पाने का डर।

चारों तरफ से लोग रानाबाबा का तमतमाया हुआ मुख देखने लगे। कर्नल स्लीमैन रानाबाबा के पास आ गया। राना बेनीमाधव चुपचाप किनारे पड़े रह गये थे। रघुवीर चुपचाप सारा दृश्य देख रहा था।

राना बाबा बोले, सुनो, सुनो ! हिम्मत से सुनो। साहब के बहाने से ही सुन लो अपनी सच्चाई ! बिना अपनी सच्चाई जाने कहीं कुछ न होगा। झूठ हमारी मदद नहीं कर सकता। जो है ही नहीं, वह होगा कहाँ से ?

रानाबाबा बताने लगे, जोधपुर में सोजत एक स्थान है। यहाँ हमारे पूर्वज दो भाई थे, गंगा और बीरम। ये दोनों सामन्त थे। इन दोनों भाइयों में भयंकर दुश्मनी थी, जैसी दुश्मनी सामन्तों में अत्यन्त स्वाभाविक है। सुलतान सूबेदार सामन्तों को आपस में लड़वाते थे। जो हार जाता उस पर सूबेदार अपना कब्जा कर लेता और उस की कीमत के नाम पर दूसरे सामन्त को इनाम के तौर पर कोई जागीर दे दी जाती। इस तरह दोनों भाइयों को सुलतान सूबेदार सिकन्दर खाँ ने जागीरदारी दी थी, बीरम को सोजत और गंगा को जोधपुर की। पर ये दोनों भाई दिल से यही चाहते थे कि एक–दूसरे की जागीर हड़प लें। इस तरह दोनों एक–दूसरे की जागीरदारी में लूटमार करने लगे। गंगा सोजत का एक गाँव लूटता तो बदले में बीरम जोधपुर के दो गाँव लूट लेता। इस तरह की लूटमार में लड़ाई भी हो जाती। लेकिन लड़ाई में सदा गंगा की ही हार होती।

गंगा ने सोचा कि बीरम को हराने के लिए सुलतान से किसी भी शर्त पर कोई मदद लेनी चाहिए। मदद ले कर राव गंगा ने बीरम को हराया। सोजत को लूटा। पराजित बीरम अपनी इस बेइज्जती को कभी नहीं भूल पाया। गंगा से बदला लेने के लिए वह कभी सुलतान से मिलता, कभी किसी सूबेदार या डाकू से। फिर उन दोनों में एक युद्ध हुआ। उस युद्ध में गंगा का एक हाथी भाग कर मेड़ता चला गया। मेड़तियों ने उस हाथी को अपने यहाँ रख लिया। उस हाथी के लिए गंगा और मेड़तियों में लड़ाई हुई.....।

यह सब कहते–कहते राना बाबा हँस पड़े, हमारे पूर्वजों की यही तवारीख है। हम में 'धर्म' था ही कहाँ, हम जिस लिए वहाँ से भाग कर यहाँ आये, उस का नाम है 'भय', 'डर', 'फियर'।

कर्नल स्लीमैन को ताज्जुब हुआ, आप अंग्रेजी जानते हैं ?

—हाँ, थोड़ी सी !

कैसे ? कहाँ से ?

रानाबाबा बिना कुछ बोले अन्दर चले गये। तब तक कर्नल को लोगों से पता चल चुका था कि रानाबाबा अब तक दो बार पूरे भारत वर्ष की यात्रा कर चुके हैं। कई भाषाएँ जानते हैं। कभी कोई बेइन्साफी नहीं की। सच्चाई और ईमानदारी की जिन्दगी जीते हैं। कभी किसी से डरे नहीं, कभी किसी को डराया नहीं।

दिन ढल रहा था। कर्नल स्लीमैन के घोड़े के दायें—बायें राना बेनीमाधव और हनुमन्त सिंह अपने—अपने घोड़ों पर बैठे चल रहे थे। एक गाँव के पास से गुजरते हुए कर्नल ने पूछा, बेनीमाधव, यह गाँव किस का है ? ये लोग किस के असामी हैं ?

—साहब मैं समझा नहीं।

कर्नल ने कहा, फर्ज करो, तुम सरकार—हुकूमत के खिलाफ जंग छेड़ देते हो तो इन गाँवों, असामियों की किस्मत इसी में है कि ये लोग तुम्हारा ही साथ दें।

बेनीमाधव ने खुलासा जवाब दिया, बेशक, इन सब की किस्मत, इज्जत, आबरू, धन—दौलत, सब मेरे साथ बंधे हैं। मैं किसी के साथ लड़ाई करता हूँ तो इन्हें मेरा साथ देना ही होगा या जमीन—जायदाद, घर—द्वारा, सब—कुछ यहीं छोड़ कर इन्हें यहाँ से भाग जाना होगा।

कर्नल ने फिर पूछा, मतलब अगर इन्होंने तुम्हारा साथ नहीं दिया तो तुम इसे बर्दाश्त नहीं करोगे और सीधे लुटवा लोगे ?

शंकरपुर के राना चुप रहे। पर हनुमन्त सिंह ने कहा, जी साहब, ऐसा ही होता है। सब ऐसा ही करते हैं। कर्नल ने चलते—चलते फिर पूछा, अच्छा जो लोग लड़ाई में साथ देते हैं, जो तुम्हारे सिपाही हैं, वे जब घायल हो जाते हैं, मर जाते हैं, फिर उन्हें क्या इनाम—इकराम, मदद मिलती है अपने मालिकों, तालुकेदारों से ?

दोनों चुप रह गये। पीछे घोड़े पर सवार कम्पनी सेना के एडजूटेण्ट भोपाल सिंह ने कहा, साहब बहादुर, ऐसा है कि इन के सिपाही चाहे मर जायें, चाहे घायल, अपंग हो जायें, उन्हें कोई पूछने वाला नहीं। हाँ कानून जरूर है—नवाब की सेना से लेकर इन सब तालुकेदारों की सेना तक कि घायल अपंग को एक महीना और मर जाने वाले सिपाही को दो महीने की तनख्वाह दी जाये मगर इन के अहलकार, अफसर, इतने बेईमान कि खुद ले लें। साहब बहादुर, इन के सिपाहियों की तनख्वाहें एक—एक साल, पाँच—पाँच छह—छह महीनों, दो—दो सालों की बकाया रहती हैं। मरने या अपंग होने के बाद वह बकाया ही मिल जाय तो बड़ी किस्मत।

राना बेनीमाधव ने घूर कर पीछे देखा।

तब तक कर्नल ने पूछा, सेनबंसी सूरजसिंह के तिरानबे गाँवों को तुम ने सिर्फ पाँच हजार में ले लिया।

राना बोले, साहेब, बात यह है कि तिरानबे गाँवों की वह रियासत सेनबंसी लक्ष्मणसिंह की थी जो लावारिस मर गये। उन की विधवा स्त्री ने अपने एक नाबालिग भान्जे को गोद लिया। लक्ष्मण सिंह के सगे सम्बन्धी सूरजसिंह ने आक्रमण करके उस रियासत को ले लिया। मामला गया नवाब के दरबार में। दरबार ने यह फैसला दिया कि पाँच हजार रुपये सालाना मालगुजारी और सूरतसिंह हुकुमत को देते रहें और सूरजसिंह नवाब को वफादारी में दो तोप, दस बन्दूक, बीस घोड़े और दो सौ सिपाहियों की एक टुकड़ी तैयार रख सकें तो यह रियासत उन्हीं के नाम कर दी जाती है। सूरजसिंह ने सब कबूल कर लिया। तीन साल तक नवाब के खजाने में पाँच—पाँच हजार रुपये पहुँचे। चौथे साल बकाया रह गया। तब तक दो सौ सिपाहियों की सेना तो बनी पर न कोई तोप न बन्दूक। हाँ, मिट्टी का किला जरूर बना और बीस घोड़े भी खरीदे गये।

दरबार ने मजबूर हो कर उसे पहले 'हुजूर तहसील' ऐलान कर दिया।

'हुजूर तहसील' मायने ?

हुजूर तहसील मायने मालगुजारी सीधे नवाब हुजूर के तहसीलदार नाजिम, अमीन, मुन्शी वसूल करें। तहसीलदार और नाजियों ने मिल कर पूरे तिरानबे गाँवों की वसूली जमोगदारों के हाथों में दे दी। मगर पाँच हजार क्या पाँच सौ रुपये साल भर में लखनऊ के खजाने में नहीं पहुँचते। फिर मैंने पाँच हजार रुपये में तिरानबे गाँव ले लिए।

कर्नल स्लीमैन हँस पड़ा 'सो रिपोर्ट्स आर करेक्ट। यू आर नॉट वेरी स्क्रुपुलस इन द एस्क्वीजीशन, बाई फ्राड, वाइलेन्स ऐण्ड कोल्यूजन।

धारूपुर के तालुकेदार हनुमन्त सिंह और शंकरपुर के राना बेनीमाधव दोनों चापलूसी में कर्नल स्लीमैन की हँसी में अपनी हँसी मिलाने लगे। दोनों अंग्रेजी भाषा नहीं जानते थे। जबकि स्लीमैन अंग्रेजी, फ्रैन्च, पुर्तगीज, स्पेनिश के अलावा हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत, अवधी, ब्रज और बांग्ला आदि कई भाषाएँ और बोलियाँ जानता था।

अगला गाँव ओनई, उर्फ गुरूबक्सगंज। गुरूबक्स ने जब से इसे 'गंज' बना दिया, ओनई नाम को लोग भूल रहे थे। गल्ला, कपड़ा का गंज। पर गंज अब नष्ट हो रहा है। लोग फिर वही पुराना नाम ओनई बोलने लगे हैं।

ओनई से 'दुलारे की गड़ही' गाँव। यहाँ कभी दुलारे नामक व्यक्ति का गढ़, किला रहा होगा। दुलारेगढ़ से दुलारे की गड़ही। गढ़ ढह कर गड़ही !

तीनों घोड़ों के पीछे दुलारे की गड़ही गाँव से तमाम कुत्ते भूँकते हुए चले आ रहे थे।

कर्नल ने पूछा, गाँवों में इतने कुत्ते कहाँ से आते हैं ? इन्हें कौन पालता हैं ? ये यहाँ क्या करते हैं ?

दोनों तालुकेदार एक–दूसरे को देख कर मुस्करा पड़े।

साहब ने फिर पूछा, ये कुत्ते इस तरह क्यों भूँकते हुए हमारे पीछे आ रहे हैं ?

तीनों एक–दूसरे को देखते रह गये।

चार

शंकरपुर के महल में अनेक ड्योढ़ियाँ थीं। उन्हें पार कर महल के अन्तःपुर में पहुँचना पड़ता। और अन्तःपुर से बाहर आने में भी कम वक्त नहीं लगता था। राना बाबा महल के बाहर बरामदे में ही रहते। राना बेनीमाधव या तो शंकरपुर महल में रहते या लखनऊ के दरबार में।

राना बाबा की आयु साठ साल की थी। गौर वर्ण, शरीर लम्बा, कन्धे तक लटकते हुए घुँघराले केश। तेजस्वी आँखों में गजब की गहराई। खामोश नजरें। भारी गले से जब पुकारते तो नौकरों की छाती थर–थर काँप उठती। पर बहुत कम बोलते थे राना बाबा। या तो घूमते रहते, नहीं तो पढ़ते रहते। या फिर चुपचाप कुछ देखते रहते, नहीं तो किसी से कुछ पूछते और बताते रहते।

राना बाबा के पुत्र राना बेनीमाधव की उम्र चालीस साल। गेहुँए रंग का भरापूरा शरीर, पहलवान रख कर नियमित रूप से कुश्ती लड़ने का अभ्यास। प्रतिदिन अपने सैनिकों, योद्धाओं सहित घोड़ा दौड़ाना, नदी, नाले, दीवार लाँघना और बन्दूक चलाना, तलवार चलाना, शंकरपुर के जंगलों में बने तीनों माटी के किलों में जिन्हें धोराहर कहते थे, चाँमारी करना, तोप गोले चलाना, छापामार लड़ाई का अभ्यास, यही राना की जिन्दगी थी। चाहे शंकरपुर हो, चाहे लखनऊ, राना अपने–आप को सदा तैयार रखते थे।

राना खुद पान नहीं खाते थे। पर पान भरे सोने के पनडब्बियों को हाथ में लिये हुए उनका एक सिपाही उनक साथ–साथ चलता। वह जहाँ भी रहते, दरवाजे के बाहर सदा तमगे लटकाये हुए अर्दली मौजूद रहते।

शंकरपुर महल के दरवाजे पर मुख्य द्वारपाल मोढ़े पर बैठ कर लम्बी दाढ़ी को दो हिस्सों में बाँट कर, बार–बार कंधी करता हुआ दोनों कोनों में लपेटता रहता। उसके सहायक जमादार तम्बाकू मलते और माँग घोटने में लगे रहते। सभी ड्योढ़ियों पर छोटे दरबान हाथ में नंगी तलवार लिये पहरा देते थे। ड्योढ़ी की दीवारों पर अनेक प्रकार की ढालें, तलवारें, बाबा दादा की बन्दूकें, बल्लम, बरछे लटके रहते।

राना बेनीमाधव का जीवन अवध के और तालुकेदारों, धनवानों की तरह घर–गृहस्थी और राजभोग, इन दो भागों में नहीं बँटा था। बल्कि नवाब के प्रति और अपने लोगों के प्रति यारी–दोस्ती और दुश्मनों से लड़ाई और इन्हें हराने की कोशिश, इन दो भागों में बँटी थी। राना के जीवन के दोनों भाग घर–गृहस्थी से बाहर के थे।

घर में थे इष्ट देवता और घर की गृहिणी, रघुवीर की माँ, राना बाबा की बहू। वहाँ पूजा–अर्चना अतिथि सेवा, प्रजापालन, गुरु–पुरोहित, घर–परिवार, हित–सम्बन्धी, सेवा, यह सब राना बाबा सम्भालते और भीतर के कामकाज राना बेनीमाधव की पत्नी, रानी रतन कुँवरि सम्भालतीं।

यारी–दोस्ती, युद्ध–लड़ाई, जिन्दगी के ये दोनों हिस्से शंकरपुर घर की सीमा के बाहर थे। वहाँ ये नवाबी कायदे। मजलिस और दरबार, सेना–कवायद, सिपाही बन्दूक, तोप और लश्कर। इन दो विरुद्ध हवाओं के दो अलग हिस्सों में रहने वालों को एक–दूसरे के लिए बहुत कुछ सहना–करना पड़ता था। उस बार यही हुआ।

फागुन मास, शुल्क चतुर्दशी रात के समय बड़ी भीड़ थी। खूब सजावट थी शंकरपुर में। राजा का महल रोशन चौकी और शहनाई के संगीत में गूँज रहा था। नवाब वाजिदअली शाह से 'राना' की उपाधि पाने के बाद से शंकरपुर महल के मुख्य प्रवेश–द्वार के संगमरमर पर नाम खोदा गया था 'राना महल'। उस महल के द्वार के ऊपर अलिन्द में आज नौबत बज रही है। द्वारा के माथे पर अर्द्ध चक्राकार गैस की रोशनी में लिखा हुआ है– श्री गणेशायनमः प्रजापतये नमः। मुख्य द्वारा से ले कर अक्षत–पुष्प बिछा हुआ जो रास्ता महल के दूसरे द्वार तक, जहाँ से अन्तुःपुर की पहली ड्योढ़ी शुरू होती है, उसके दोनों किनारों पर देवदार के पत्ते और गेंदे के फूलों की मालाओं की शोभा, सज्जा है। मृदंग, ढाक, ढोल, झाँझ, नौबत सब एक साथ बज रहे हैं। आज राना के पूत रघुवीर से सूरज सिंह की कन्या हंसगौरी के विवाह की बरछेक्की है।

गाजा–बाजा, भीड़–भाड़ में एक किनारे कथाबाँचू खेवट लोगों को बता रहा था कि जब राना ने इस तरह सूरज सिंह की रियासत खरीदी तो राना बाबा और राना बेनीमाधव में बड़ी कहासुनी हुई। राना बाबा पैदल चल कर खजूर गाँव गये। किसी से उन्हें पता चला कि सूरजसिंह की एकमात्र सन्तान उनकी बेटी है, हंसगौरी, जिसे वह विवाह के अपमान से बचने के लिए मार डालना चाहते हैं। राना बाबा ने जा कर

सूरजसिंह का हाथ पकड़ लिया, मैं राना बेनीमाधव का पिता, राम नारायन सिंह, अपने पौत्र रघुवीर का विवाह आप की बेटी से करने की प्रार्थना ले कर आया हूँ। आप की रियासत, राना की सारी रियासत की वही मालकिन होगी। सूरज सिंह को और क्या चाहिए था। वह राना बाबा के चरणों में अपना माथा दे कर बोले, यह मेरा अहोभाग्य है !

राना बाबा ने तब सूरजसिंह को ला कर शंकरपुर में बसाया। पश्चिम का देवी पुरवा सूरजसिंह का पुरवा है। राना बाबा ने सूरजसिंह को उनके तिरानवे गाँव की रियासत दे दी।

तो वर कन्या का आज बरछेक्का है ?

.....हाँ।

लेकिन राजा बेनीमाधव तो कहीं नहीं दीख रहे हैं।

.....ओ हो, तो उनसे क्या। राना बाबा और रघुवीर की माई रानी रतन कुँवरि तो हैं न ? तो बस।

तब तक उधर न जाने कितने कण्ठों से आवाज आयी.....जय हो राना बाबा की ! जय हो रानी माई की !!

पहले मैदान चल कर सूरजसिंह राना के घर आये। पूजा–पाठ के बाद रघुवीर के हाथ में उन्होंने एक अशरफी, एक तलवार, एक नारियल और लाल साफे का रेशमी वस्त्र दे कर अपनी बेटी के वर के रूप में रघुवीर के वरण का संकल्प संस्कार पूरा किया।

इसके बाद राना बाबा पैदल गये सूरजसिंह के घर। राना महल से निकली सोलह कहारों वाली सुखपाल। सुखपाल के दोनों दरवाजों पर एक–एक महरी उसका छटका पकड़े साथ–साथ भाग रही थी। कहारों की वर्दियाँ लाल रंग की और उनकी पीली पगड़ियों पर मछली के सुनहरे निशान। मछलियाँ अवध की नवाबी और तालुकेदारी की दो बाँहें हैं। नवाब की ताकत की निशानी। एक मछली गंगा जी की, एक मदली सरजू जी की।

सुखपाल में बैठी रानी रतन कुँवरि अपने होने वाली बहू हंसगौरी का मुँह मीठा करने जा रही हैं।

सूरजसिंह के घर में भी वही उत्साह दृश्य था। दरवाजे पर सुखपाल उतरते ही चारों तरफ पर्दा कर दिया गया। रानी की माँग में जितनी मोटी फाँक थी, उतना ही मोटा सिन्दूर वह भरे हुए थीं। चौड़ी लाल पाड़ की साड़ी, हाथों में सोने के मोटे कंगन।

नौकरानी चाँदी के घड़े में पानी ले कर आयी और रानी के पैरों पर छींटे डाल कर उसे आँचल से पोंछ दिया। घर में गयीं। हंसगौरी के मुख को देखते ही उन्होंने अपना रत्नजड़ित हार उसके गले में डाल दिया। बहू के मुँह में जरा सा शहद दे कर उसे अपने अंक में बाँध लिया। सामने से राना बाबा का स्वर सुनाई दिया– जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरी !

पूरे शंकरपुर में खुशियाँ मनायी गयीं। सबके यहाँ मिठाई बँटी। महल में फानूस जगमगाये। शंकरपुर में कन्दीलें जलीं। जगह–जगह स्वांग और लीलाएँ हुई। स्त्रियाँ सोहाग गाती रहीं। एक दिन नहीं, पूरे पाँच दिनों और रातों तक।

एक दिन दुलीराम अग्निहोत्री सुबह ही सुबह राना बाबा के पास आये। गुरू जी ने कहा, रघुवीर का चित्त अब पाठशाला में नहीं लगता।

राना बाबा बोले– आप का आशीर्वाद है, आप ने अपने शिष्य के चित्त को इतना निर्मल और जिज्ञासु कर दिय है कि अब उसे यथार्थ जीवन–जगत् की पाठशाला चाहिए।

गुरू जी बोले, जब से कर्नल स्लीमैन की यात्रा अवध में हुई है, रघुवीर भी देख रहा है कि.....। मेरा पुत्र गंगादीन, कर्नल की लश्कर देख कर कम्पनी का सिपाही हो गया।

राना बाबा हँस पड़े। बोले, महाराज, आप यही कहने आये हैं कि रघुवीर भी शंकरपुर छोड़ कर कलकत्ता जा सकता है। नहीं, ऐसी कोई आशंका नहीं है रघुवीर से। उसने मेरी अक्सर बातें होती हैं। वह अपने चारों ओर जीवन–जगत् की पाठशाला में पढ़ रहा है। यह उसके जीवन का परम सौभाग्य है। इसके लिए मैं कर्नल स्लीमैन की यात्रा का एहसानमन्द हूँ। आप का बेटा कम्पनी का सिपाही हुआ, यह भी एक सौभाग्य है।

गुरू जी से अब न रहा गया, ब्राह्मण पुत्र फिरंगी की नौकरी करे, यह कैसा सौभाग्य ?

राना बाबा बोले, सुनो महाराज, प्लासी की लड़ाई के बाद यहाँ की लक्ष्मी ने हिन्दुस्तानियों से रूठ कर फिरंगी कर घर देख लिया है। ये फिरंगी लोग इंग्लैण्ड के मामूली व्यापारी, गुण्डई–बदमाशी करने वाले लौण्डे ! मगर हिन्दुस्तान में आ कर इन्होंने देखा कि हिन्दुस्तान में सब–कुछ है, कोई इसका मालिक नहीं है। उन्हें लगा कि वे ही मालिक बनने के लिए ईसामसीह की तरफ से यहाँ भेजे गये हैं। ढाका, मुर्शिदाबाद, हुगली, पटना, बनारस, लखनऊ, ग्वालियर और दिल्ली के दरबारों में राय देने, हुक्म चलाने वाले, शासन का गुरुमन्त्र देने वाले, वही फिरंगी हैं। जिन्होंने अवध भर में नयी छावनियाँ बनायीं, वे फौजी अफसर, भी फिरंगी हैं। जो अपनी व्यापार बुद्धि से हमारे सारे व्यापार को अपने हाथों में लेते चले गये, जो अभी कल तक राजा–नवाबों की सेनाओं में तोपची–बन्दूकची बने सारी चीजों को समझ बूझ रहे थे, वे भी वही फिरंगी थे।.. ... तभी यहाँ की लक्ष्मी फिरंगी पर फिदा हो गयी। फिरंगी में चरित्र है, फिरंगी में व्यवस्था है। फिरंगी में अपने देश के लिए प्यार है ! फिरंगी का अपना ''गॉड'' है। अपनी निशानी है। बोलो, हमारे पास क्या है ? कर्नल स्लीमैन वही देख रहा है जो है, पर हम नहीं देखते। हमने देखना छोड़ दिया है। कर्नल स्लीमैन के साथ रघुवीर देख रहा है.....।

पण्डित दुलीराम ने टोक दिया, क्या वह आप के साथ नहीं देख सकता था ?

नहीं। मैं क्या विश्वास करने लायक रह गया हूँ ? क्या मेरी बात सच रह गयी है ? मैं क्या अपने–आप में एक झूठ बन कर नहीं रह गया हूँ ? मेरे अपने बेटे राना बेनीमाधव ने कभी मेरी बात नहीं सुनी। कभी हमारी आपस में बातें हुई ? आप ने यहाँ कभी देखा है महाराज, पिता और पुत्र में, राजा और प्रजा में कोई बातचीत होते हुए ?.....

एक गहरा सन्नाटा छा गया। राना बाबा न जाने कब से चुप थे, वे आज कुछ कहे बिना नहीं रह सकते थे।

राना बाबा, सलीमन साहब क्या देख रहा है ?

वह अवध में घूम–घूम कर देख रहा है कि क्या है अवध, जिसे हिन्दुस्तान का 'चमन', 'गुलिस्ताँ', 'गार्डेन आफ इण्डिया', 'फिरदौसे हिन्द' कहा जाता है ? क्या है अवध का नवाब, क्या है अवध का तालुकेदार, सेठ, साहूकार, तहसीलदार, कानूनगो, ठेकेदार, जमोगदार, चकलेदार, नाजिम ? क्या है आसामी, क्या है जमोग लगान ? क्या है जंजीरबन्दी ? क्या है किलाबन्दी, कहाँ है कायदा, कहाँ है कानून ? कहाँ है वह हिन्दू राजा सत्य, न्याय, सदाव्रत वाला जिसकी कहानियाँ उसने सुन रखी हैं ? कहाँ है वह मुसलमान बादशाह, नवाब जो मुसल्ला ईमान की बात करता है ? वह ग्राम कहाँ है ? वह पंचायत कहाँ है ?..... वह देख रहा है कि यहाँ हिन्दू–मुसलमान का फर्क कोई नहीं जानता। क्योंकि गढ़ी का ठाकुर और महल का नवाब, दोनो अवध की जागीरदारी के मजबूत रिश्ते में एक–दूसरे से बँधे हुए है। हिन्दू–मुसलमान और कुछ नहीं है, केवल आसामी है, किसान हैं, ठाकुर और नवाब के सिपाहियों की लाठियाँ उन्हें एक तरह पीटती हैं। उन्हें एक ही तरह लूटते हैं अवध के भर–पासी नवाब और ठाकुर के सिपाही, अमले, हाकिम, जमोगदार।

इस सबके बावजूद सलीमन साहब यह देख कर ताज्जुब करता है कि हिन्दू ताजियादारी करते हैं और मुसलमान दीवाली मनाते हैं। कैसे उल्टे दिमाग के लोग हैं। सारे अवध में तमाम हिन्दू राजाओं ने मस्जिदें और इमामबाड़े बना रखे हैं। मगर याद रखो महाराज, सलीमन साहब अपनी डायरी में लिखेगा, जरूर लिखेगा, कि यहाँ का हिन्दु–मुसलमान एक–दूसरे के खून का प्यासा है। ऐसे में कम्पनी बहादुर को चाहिए कि वह इन जंगली जातियों को अपनी जहालत, और एक–दूसरे के प्रति इतनी खौफनाक नफरत से छुटकारा दिलाने के लिए जल्द–से–जल्द नवाबी खत्म करे और अवध को अपने कब्जे में ले लें। इंग्लैण्ड की सरकार जल्दी से जल्दी, बड़ी तादाद में बन्दूकें भेजे।

दुलीराम अग्निहोत्री गम्भीर हो गये, ऐसा है राना बाबा ?

–बिल्कुल ! लखनऊ के नवाब को, मेरे बेटे माधव को और यहाँ के राजा, तालुकेदार, लुटेरों और प्रजा के कातिलों को नहीं मालूम कि इन बेचारे फिरंगियों के बन्दूकों, कारतूसों से लदे हुए जहाज, बड़ी–बड़ी नावें गंगा, सरजू, जमुना और गोमती में आ चुकी हैं।

यह कहते–कहते राना बाबा एकदम से चुप हो गये। दोपहर हुई। दुलीराम अग्निहोत्री ने कहा, राना बाबा, आप कुछ बोलते क्यों नहीं ? इस तरह चुप क्यों हो गये ? पर कोई जवाब नहीं। दुलीराम बैठे रहे।

शाम हो आयी। रात घिर आयी। बिल्कुल सन्नाटा छाया रहा। दुलीराम ने उठ कर राना बाबा को हिलाया, रात हो गयी। अब चलता हूँ। आप विश्राम कीजिए।

राना बाबा ने उठ कर दुलीराम के हाथ थाम लिये। बोले, सुनो महाराज ! ऐसी ही रातों में सत्यपीर सत्यनारायण माथे पर चन्दन का टीका लगाये, हाथ में बाँसुरी लिये, गेरुआ वस्त्र पहने, कमर की जंजीरें झनकाते हुए दिखाई दे जाते हैं।

यह सत्यपीर नारायण कौन हैं ?

सूफी देवता, जो मुसलमानों के लिए सत्यपीर नाम से और हिन्दुओं के लिए सत्यनारायण के नाम से जाने जाते हैं।

तभी एक झनझनाहट सुनाई पड़ी। एक सूफी फकीर, दुआशाह सामने– जै हो सत्यपीर सत्यनारायण !

राना बाबा ने पहचान लिया, यह वही फकीर है जिसने झोली में चावल–दाल डालते ही रघुवीर को दुआ दी थी कि इसका ब्याह एक ऐसी बेटी से होगा, जो पद्मिनी है, जो भाग्यवती है। इसी फकीर ने सूरजसिंह की बेटी हंसगौरी का पता दिया था।

राना बाबा बोले, आओ, इधर आओ, ऊपर चले आओ दुआशाह !

दुआशाह बोले, शंकरपुर की पंचायत बैठ चुकी है। आप लोग क्या भूल गये ?

हाँ, हम भूल गये थे। अच्छा हम साथ चलते हैं।

दुलीराम वहाँ से सीधे पाठशाला गये, फिर वहाँ नहा–धोकर गोपाल मन्दिर की ओर राना बाबा दुआशाह के साथ गाँव के पंचपुरी में आये। पीछे मुड़ कर देखा तो दुआशाह लापता।

पंचायत घर की दीवारें पक्की हैं। ऊपर छप्पर से छाया हुआ है। द्वारा पर पत्थर गड़ा हुआ है, जिस पर स्वस्तिक खुदा है। इस पंच घर का नाम है 'पंचपुरी'। गाँव का वृद्ध जिसे 'महत्तर' कहते हैं, सामने बीच में बैठा है। महत्तर के पास 'जेठकायस्थ' बैठा है जिसके पास कागज पत्तर हैं। दायीं ओर दोहसाध, दूत, खोल, गमागमिक, गाँव के इन्तजामकार बैठे हैं। बायीं ओर 'पंचपुरी' के पाँचों पंच बैठे हैं। राना बाबा आज एक फारिक हैं। मामला शंकरपुर गाँव बनाम राना बेनीमाधव है।

महत्तर ने ताँबे के गोल पात्र पर लकड़ी की हल्की–सी हथौड़ी का धीरे से प्रहार करके पंचपुरी का काम शुरू किया।

शंकरपुर गाँव। चार बीधे गेहूँ की तैयार फसल और तीन बीधे गन्ना के भरे–पूरे खेतों को राना और सलीमन साहब के घोड़ों और हाथियों ने बर्बाद किये।

राना के घुड़सवारों ने कहा कि इसमें इनकी गलती नहीं है। हाथियों को देख कर घोड़े काबू से बाहर हो गये। राना के पीलवानों ने कहा कि हाथी भूखे थे और गन्ने के खेत रास्ते में ही पड़ते थे। हाथियों पर कोई सवार न था। गर्मी पड़ने लगी थी.....।

सहसा राना बाबा ने हाथ उठा कर कहा, बस–बस, झुठ और बहानेबाजी यहाँ नहीं। जो सच है उसे कबूल करना होगा।

पंचपुरी के सामने सबको कबूल करना पड़ा। गाँव सम्पत्ति का नुकसान राना को भरना होगा।

पंच–फैसले को राना बाबा ने स्वीकार कर लिया। हिसाब जोड़ा गया। तीन अशरफी गाँव भण्डार में देना पड़ा।

दूसरे दिन जब राना बेनीमाधव ने पंचपुरी के फैसले की खबर सुनी तो उनके मुँह से निकला, शंकरपुर मेरा नहीं, मेरे बाप का है। राना बाबा ने तब सामने आ कर समझाते हुए कहा, शंकरपुर, शंकरपुर वालो का है। यह एक इन्तजाम, व्यवस्था, मर्यादा है; जब तक इस का पालन होगा हम तभी तक हैं।

राना बेनीमाधव पिता का मुँह देखने लगे। रघुवीर दोनों के मुँह देखता रहा।

राना बाबा कह रह थे, माधव, तुम्हारे कुल दो सौ उन्तालीस गाँव हैं। मेरे पास सिर्फ ऐसा एक गाँव है शंकरपुर, जो मेरा नहीं शंकरपुर के लोगों का है।

राना पिता के सामने से हट गये। रघुवीर सोचने लगा था, पिता लखनऊ की नवाबी सरकार में नाजिम थे। वाजिदअली शाह ने खुद अपनी जुबान से बनाया था। फिर ये नवाब की तरफ से जौनपुर और आजमगढ़ में लड़ने गये। नवाब की तरफ से बीड़ा लेकर गये और फतह किया। इस पर नवाब ने इन्हें

सिरमौर राना बहादुर दिलेर जंग का खिताब दिया। जौनपुर और आजमगढ़ में एक–एक तालुकेदारी देने का फरमान जारी किया। राना बाबा ने तब कहा था– नहीं, हर्गिज नहीं, यह लूट का सौदा है। यह तालुकेदारी नहीं, हरामदारी है !.....

राना बेनीमाधव ने पिता की बात नहीं मानी।

रघुवीर ने राना बाबा से पूछा, बाबा आप क्या सोच रहे हैं ?

बाबा ने उत्तर दिया, नवाब सफदरजंग से लेकर सुल्ताने आलम वाजिद अली शाह तक नौ शासकों ने अवधपुरी पर राज किया। मैं सोच रहा हूँ, सुल्ताने आलम के ही जमाने में सलीमन साहब क्यों आया ?

पाँच

रेजिडेण्ट कर्नल स्लीमैन ने कलकत्ता पहुँच कर 7 दिसम्बर 1853 को अवध के बारे में लॉर्ड डलहौजी को 372 पेजों की रिपोर्ट दी। अवध में उसकी यात्रा की डायरी के तमाम पन्नों में लिखा हुआ था :..... इस खूबसूरत जमीन में हर जगह जमीन की सतह से बीस फुट नीचे और कहीं दस फुट नीचे अथाह जल भरा हुआ है। राजपूतों, तालुकेदारों, उनकी सेवाओं द्वारा तमाम लूट–खसोट, बदइन्तजामी, नवाबी प्रशासन के लोप के बावजूद यह अवध देश बेहद खूबसूरत, मनोरम और वैभव पूर्ण है। उसमें लम्बे बासों के घने जंगल हैं। मैदानों में आम के असंख्य वृक्षों की शीतल छाया है। चारों ओर हरियाली है, इतनी लूट के बावजूद। लगता है, खुद प्रकृति ने अवध की भूमि को इतना सुन्दर, उपजाऊ और सतरंगी बनाया है। लोग इतनी तबाहियों, बदइन्तजामी, जुल्मों के बावजूद सीधे–सादे, पर हृष्ट–पुष्ट, ताकतवर, स्वाभिमानी हैं, खासकर कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कुरमी और आम लोग। बड़े–बड़े सेठ–साहूकारों और तालुकेदारों के घरों में इतना सोना–चाँदी है कि उसका अनुमान लगाना मुश्किल है।

.....ठाकुर राजपूत कौम सबसे ज्यादा बेरहम और घमण्डी है। अगर इनके यहाँ लड़की पैदा होती है तो उसे मार कर उसी जगह दफना देते हैं, जहाँ उसका जन्म होता है। उस खौफनाक हत्या के पाँचवे दिन राजपूत अपने घरों की शुद्धि और शान्ति के लिए पूजा–पाठ कराते हैं। ब्राह्मणों को भोज देते हैं। जो कान्यकुब्ज ब्राह्मण उस भोज में शामिल होने से मना करते हैं, उन्हें अपना घर बार छोड़ कर जाना पड़ता है।

.....यहाँ तीन तरह की तालुकेदारी, जागीरदारी या लगानदारी है। खैरख्वाहों और खानदानी रईसों को नवाब से मिली हुई तालुकेदारी, जहाँ तालुकेदार पूरे तालुके से ली हुई माल गुजारी का दसवें हिस्से से लेकर पाँचवाँ हिस्सा तक लगान देता है। जैसा ताकतवर या कमजोर तालुकेदार हो, उसी मुताबिक वह लगान का हिस्सा नवाब को देता है।.....दूसरे ठेकेदारी। ठेकेदार को चकलेदार कहते हैं। ताकतवर लोग नवाब के आला अफसरों से इलाके को ठेके पर ले लेते हैं कि इतनी रकम हर साल नवाब के खजाने में देंगे, बाकी सारी वसूली चकलेदार की। पूरे इलाके को तमाम छोटे–छोटे ठेकेदारों में बेच देते हैं। छोटे ठेकेदार गाँवों को जमोगदारों के हाथ दे कर उनसे मालगुजारी वसूलते हैं। तीसरे, हुजूर तहसील। यानी वे इलाके जो सीधे नवाब की हुकूमत की तहसीलदारी में आते हैं। यह हुजूर तहसीलदारी नवाब के अमले, हाकिम, नाजिम, चकलेदारों, सिपाहियों की लूट का सबसे बड़ा मैदान है। यह ऐसा खुला हुआ बाजार है जहाँ कोई कुछ भी खरीद–फरोख्त कर सकता है।

सेना चाहे नवाब की हो या तालुकेदार की, चाहे जमीन्दार की हो चाहे किसी शहजादे या राजा की, उन्हें बाकायदा न तनख्वाह मिलती है, न उनका हिसाब–किताब होता है। तनख्वाह और हिसाब के नाम पर उन्हें महीने में एक बार किसी इलाके की लूट की इजाजत मिल जाती है। एक दिन से तीन दिनों तक बराबर लूटने की इजाजत। डलहौजी के लिए इतनी रपट काफी थी। अवध के अपहरण की सारी जमीन तैयार थी।

राना बेनीमाधव जब से लखनऊ से लौटे हैं, आज दो रातें, बीत गयीं, उन्हें नींद नहीं आयी है। नवाब के साथ कर्नल स्लीमैन की जिस तरह की बातें हुई हैं वे काफी चिन्ताजनक हैं। राना की समझ में आ गया है कि अब कोई घटना होने जा रही है। लेकिन यह सब इतनी जल्दी हो जायेगा, यह राना नहीं समझ सके थे। इसी से नींद गायब है। नवाब की फौज में राना के काफी सिपाही हैं, जिनकी तनख्वाह सीधे राना देते हैं। उन्हीं सिपाहियों से सारी खबरें मिल रही हैं।

राना अन्दर रनिवास की ओर चल दिये। अभी–अभी रात शुरू हुई है। फिर भी बरसात की रात होने के कारण अँधेरा काफी गहरा लग रहा था। रानी रतन कुँवरि राना महाराज को आज इतनी जल्दी अन्दर आते देख कर आश्चर्य में पड़ गयीं। आज इतनी जल्दी सभी भंग हो गयी, राना ने गम्भीरता से कहा, नींद नहीं आ रही।

–आओ आज चौपड़ खेलूँगी।

राना अपलक रानी को निहारने लगे। तभी अचानक बाहर शोर सुनाई दिया। राना ड्योढ़ी में चले आये। बूढ़े नौकर सिपाही ने बताया, फिरंगी का सिपाही आया है। राना उसी साँस में बाहर निकले। बरामदे में भीड़ थी। दरवाजे तक लोग खड़े थे। राना को देखते ही सिपाही ने सलूट मारा। राना ने पूछा, क्या बात है ? कहाँ से आये हो ? उत्तर में उसने फिर सलूट मारा।

तब राना बाबा ने पूछा, बोलो ! क्या चाहते हो ?

सिपाही ने रघुवीर की ओर देखा। रघुवीर को हँसी आ गयी। अरे, यह कम्पनी बहादुर का सिपाही, वही गंगादीन है। दुलीराम अग्निहोत्री का पूत !

गंगादीन बोला, आप सब की, मुलुक की याद आयी, सो सीधे कम्पनी कर्नल साहब से छुट्टी ले कर आया। शंकरपुर में जैसे–जैसे यह खबर फैली कि गंगादीन कम्पनी सिपाही बन कर आया है सारा गाँव मानो उसे देखने उमड़ आया। उसका पहनावा, उसकी बोली देख बहुतों को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि सचमुच यह वही गंगादीन है।

दौड़े हुए दुलीराम अग्निहोत्री भी आये। पिता से भी वही सिपाही सलूट।

तब उस भीड़ में गबदू पाण्डे ने कहा, ज्यादा कपार मति कूटो भइया ! अरे गंगादीन, और द्याखो तोहार बाप आये हैं।

गंगादीन से पहले पण्डित दुलीराम बोल उठे, यह तो सिपाही का धर्म है।

गबदू पाण्डे बोले, ठीक कह्यो, धरम आप। पर अब द्याखो, कहाँ–कहाँ भटक रहा है।

रात का समय। राना का एकान्त कमरा। कमरे में राना बाबा, बेनीमाधव, रघुवीर के सामने वही गंगादीन।

गंगादीन कहता जा रहा था, कमाल है ! सिपाही न बनता तो मुझे क्या पता चलता कि कम्पनी के साथ अवध की नवाबी का सम्बन्ध सन् 1764 से – इतने पहले से – शुरू हुआ। क्या यह सही है कि शुरू–शुरू में अवध के नवाब को अपनी सल्तनत की रक्षा के लिए सल्तनत के अन्दर कम्पनी की सेना रखने की सलाह दी गयी ?

राना बाबा बोले, हाँ, इस सेना के खर्च के लिए सोलह लाख रुपये सालाना नवाब से लिये जाने लगे। धीरे–धीरे कम्पनी बहादुर अपनी इस सेना को बढ़ाती रही। जाहिर है, उसके खर्चे के लिए रकम भी बढ़ती चली गयी। यहाँ तक कि इस विशाल सेना के खर्च के लिए रूहेलखण्ड और दोआबा का इलाका, जिसकी बचत उस समय दो करोड़ रुपये सालाना थी, नवाब से ले लिया।

गंगादीन ने इधर–उधर देखा। बोला, शुक्र है, इस समय मैं सिपाही की वर्दी में नहीं हूँ। कम्पनी के सिपाही को कड़ा हुकम है कि वह कम्पनी, अंग्रेज बहादुर, और इंग्लैण्ड के खिलाफ न कुछ बोले, न सुने।

राना बाबा कहने लगे, सन् 1801 में अवध के नवाब और कम्पनी के बीच एक और नयी सन्धि हुई, जिसमें अंग्रेजों ने वाद किया कि नवाब का पूरा राज पीढ़ी–दर–पीढ़ी नवाब के शासन में कायम रहेगा और अंग्रेज उसमें कभी किसी तरह का दखल न देंगे। मगर इसी सन्धि की एक धारा यह भी थी कि अंग्रेज सरकार नवाब के पूरे इलाके की बाहर के आक्रमणों और भीतर के विद्रोहों से रक्षा करने का वादा करती है। और यही बात अवध की सारी मुसीबतों की जड़ साबित हुई।

गंगादीन ने कहा, बिल्कुल ठीक बात है। रघुवीर आज सिर्फ बाबा के मुख से आगे की सारी सच्चाई जानना चाहता था।

–इसके बाद समय–समय पर अंग्रेज गवर्नर जनरलों ने अपने भारतीय युद्धों, मसलन कर्नाटक की लड़ाई, प्लासी की लड़ाई, मराठा युद्ध, मैसूर की लड़ाई, बनारस की लड़ाई के लिए करोड़ों रुपये, कभी बतौर कर्ज के, कभी बतौर सहायता अवध के नवाबों से वसूल किये। दरअसल अवध और कर्नाटक इन दो राज्यों से धन चूस–चूस कर ही कम्पनी के बाल साम्राज्य ने भारत में अपने शरीर को हृष्ट–पुष्ट किया। आये दिन की नित्य नयी माँगों के कारण अवध के नवाब की आर्थिक कठिनाई बढ़ती चली गयी। एक अंग्रेज रेजिडेण्ट लखनऊ के दरबार में रहने लगा। शासन के छोटे से छोटे मामलों में नित्य हस्तक्षेप होने लगे। कई छोटे–छोटे इलाकों का शासन नवाब से कह कर अंग्रेज अफसरों को सौंप दिया गया। इन अंग्रेज अफसरों, नहीं अंग्रेज नवाबों ने जगह–जगह अपने कानून जारी कर दिये। फिर भी अवध की प्रजा की लूट

शुरू हुई। नीचे से अवध के हिन्दू, मुसलमान, तालुकेदार, राजपूत और पठान, उनकी सेनाएँ, भर–पासी, डाकू–लूटेरे और ऊपर से अंग्रेज, उसकी सेना और कानून कचहरी, यह अध्याय अवध के सीने पर एक कलंक है। अंग्रेज हैनरी लारेन्स ने लिखा है कि यदि कहीं पर भी कुशासन, पतन और विनाश कायम रखने के लिए कोई पक्की तरकीब की जा सकती है तो वह यह है कि नरेश नवाब देशी हों, वजीर देशी हों, दोनों को बनाये रखने के लिए विदेशी संगीनें हों जिनके पीछे चलाने वाला हो अंग्रेज रेजिडेण्ट।

गंगादीन कह रहा था, हाँ राना जी ! कम्पनी का सिपाही बनने के बाद यह पता चला कि इन अंग्रेज साहबों का एक मकसद यह भी है कि हिन्दू–मुसलमान सिपाहियों को ईसाई बनाया जाय। मैंने देखा है हाँ, बंगाल फौज में हैं मिसनरी करनल, पादरी लेफ्टीनेण्ट। ये हमें किताबें पढ़वाते हैं कि ईश्वर माने ईसामसीह। साहब लोग वाद करते हैं हर सिपाही जो हिन्दू–मुसलमान से ईसाई बनेगा, वह सिपाही से हवलदार और हवलदार से सूबेदार, फिर मेजर बना दिया जाएगा।.....

राना बाबा ने लम्बी साँस लेकर कहा, समय बदल रहा है ! आने वाले समय को पहचानो।

आधी रात हो गयी। राना बेनीमाधव ने पूछा, गंगादीन, कोई खास बात बताओ। कम्पनी बहादुर..... लॉर्ड डलहौजी स्लीमैन साहब की रिपोर्ट के बाद क्या सोच रहा है ? क्या खबर है ? डरो नहीं, तुम पहले इसी धरती के पूत हो, फिर कम्पनी के सिपाही हो।

गंगादीन बोला, अंग्रेज बड़ा साहब अवध को हड़पने की तरकीब बना रहा है। बहुत ही जल्दी बड़ा अंग्रेज साहब कानपुर में अंग्रेज सेना तैनात करेगा। नवाब से यह कह कर कि यह अंग्रेज सेना नेपाल पर नजर रखने के लिए है। फिर फिरंगी साहब अपने सारे वादों–सन्धियों को तोड़ कर पूरे अवध को हड़प कर लेगा। तालुकेदारों और जागीरदारों के अधिकार फिरंगी मानने से इन्कार कर देगा। जो तालुकेदार जागीरदार पक्के सबूत के जरिये अपने अधिकार साबित करने में नाकामयाब होगा, या कामयाब होगा तो उसे बदमाश और बेवकूफ करार देकर सब कुछ हड़प कर लेने की तरकीबें बन चुकी हैं।

सब कमरे से बाहर आ गये थे। केवल रघुवीर उसी कमरे में बैठा रह गया था। अन्तःपुॅर से रानी रतन कुँवरि के गाने का हल्का–हल्का स्वर सुनाई देने लगा।

मोको कछु न चाहिए राम !
तुम बिन सब ही फीके लगें नाना सुख धनधाम।
मोको कछु न चाहिए राम.....

माई का संगीत–स्वर सुन कर रघुवीर और सब भूल गया। उसके सामने केवल माँ की छवि उभर आयी थी। कैसी स्निग्ध शान्त छवि, कितना धैर्य, कितना दुःख, कितनी देव–पूजा ! अम्लान रूप है माँ का ! माई और राना बाबा, ये दोनों कितने पूरे–पूरे लगते हैं। इन्हें देख कर इनके जीवन से हर क्षण यही प्रमाणित होता है कि प्राणों की अपेक्षा सम्मान बड़ा है; धन की अपेक्षा ऐश्वर्य बड़ा है।

छह

अवध के किसानों का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा था जो देसी राजाओं, तालुकेदारों, नवाबों और जागीरदारों के यहाँ सिपाही का काम करता था। लड़ाई के समय सिपाही और खाली वक्त में खेती किसानी। ये सिपाही नहीं तिलंगे कहे जाते थे। जब से अंग्रेज साहब ने यह एलान कर दिया कि अवध की सल्तनत कम्पनी राज में मिला ली गयी, तब से ये तिलंगे बेकार हो गये।

शंकरपुर के पास गुरबक्स गंज बाजार में तिलंगों ने कथाबाँचू खेवट को घेर रखा है। खेवट सब को कथा सुना रहे हैं :

लाट डलहौजी के अडर से सलीमन साहेब के बाद लखनऊ का रैजीडेण्ट ऊटरम बनाया गया। सो भइया, एक दिन ऐसा हुआ कि ऊटरम शाही महल में वाजिदअली शाह से मिलने गया। ऊटरम ने नवाब के सामने एक कागज पेस किया जिस में लिखा था कि मैं खुशी से अपनी सल्तनत कम्पनी को देने के लिए राजी हूँ। नवाब ने कागज पढ़ कर दस्तखत करने से साफ इनकार कर दिया। हाँ बिल्कुल। राम जाने। फिर रिश्वतों और धमकियों के जरिये नवाब शाह के दस्तखत कराने की कोशिस की गयी। तीन दिन गुजर गये। मुलौ नवाब टस्स से मस्स न हुए। इस पर अंग्रेज सिपाही सारी बातों, वायदों को खाक में मिला कर शाही महल में दनादन घुसि गये। भइया, महल को लूटा। बेगमों की बेइज्जती की। और वाजिदअली शाह को यह कह कर कलकत्ते भेज दिया कि चलो वहीं से अपने हक के लिए इंग्लैण्ड से लिखा पढ़ी करो। कलकत्ते में बड़े लाट गवर्नर के दरबार में कामयाबी न होवै तो लन्दन पहुँच कर अपने हक की बात पार्लियामिण्ट और इंग्लैण्ड की महारानी के सामने पेस कर दें।.....

अरे भइया ! इतना बड़ा राज, राजमहल, सेना–फौज, बेगमात, धन–दौलत छोड़ि कै आखिर गये कैसे ?

खेवट सब को शान्त करा के कहने लगा :

बस यही समझो कि अकिल हैरान है कि ई सब कइसे हुआ ? बस यही जानो कि वाही अंग्रेज फौज जो कानपुर में पड़ी थी, वही चुपचाप लखनऊ आयी और बादशाह को हुकम सुनाया गया कि आप का राज अंग्रेज राज में शामिल कर लिया गया। आप के लिए बारह लाख रुपया सालाना पेनसन। तो यही समझो मोर भइया ! कि अंग्रेजों ने बिना कौनों लड़ाई–झगड़े के अवध पर कब्जा कर लिया। बादशाह अपनी माँ, खास बेगमात और सच्चे दोस्तों को ले कर कलकत्ते रवाना हो गये कि कलकत्ते से इंग्लैण्ड जा कर अपील करें और अपनी बेगुनाही साबित कर के सल्तनत के खात्मे के हुक्म को मन्सूख करायें।

अरे नवाब गये कैसे कलकत्ता ? खेवट ने बताया :

13 मार्च 1856 की रात्रि में आठ–नौ बजे नवाब कानपुर के लिए रवाना हुए। जनता को मालूम न होने दिया गया, फिर भी उन के पीछे तीन हजार लोग चल रहे थे। चौदह मार्च को कानपुर पहुँचे और अपने व्यापारी मित्र ब्रेण्डन, (जिसे स्लीमैन ने लखनऊ से निकाल दिया था) के बँगले पर ठहरे। दूसरे दिन कुछ बेगमें आयीं। यहाँ नवाब पर कड़ी निगाह रखी गयी। आजिज आ कर नवाब ने एक–दो लोगों को छोड़ कर सब से मिलना बन्द कर दिया। यहाँ नवाब एक मास रुके। यहाँ से इलाहाबाद होकर बनारस पहुँचे। रास्ते में उन्हें बड़ा कष्ट रहा। कम्पनी ने प्रबन्ध के जो वायदे किये थे, वे झूठे निकले। नवाब को सारा प्रबन्ध खुद करना पड़ा। बनारस के राजा ने उसका उचित स्वागत–सत्कार किया। पच्चीस अप्रैल को स्टीमर पर गंगा नदी के मार्ग से कलकत्ता के लिए रवाना हुए। उनके साथ एक सौ दस लोग थे। स्टीमर यात्रा में नवाब को बड़ा कष्ट हुआ, अतः उन्होंने लन्दन जाने का विचार त्याग दिया। दो हजार रुपया मासिक पर एक कोठी किराये पर ली गयी। तेरह मई को नवाब कलकत्ता पहुँचे। कम्पनी ने नवाब का स्वागत तोपों की सलामी देकर किया। इन दिनों लन्दन की पार्लियामेण्ट में अवध का हिसाब पेश हुआ और जो करोड़ों रुपया कम्पनी ने अवध से कर्ज लिया था, उस का फरजी विवरण दिया गया। उधर अवध के शाही परिवार में आपसी मतभेद बहुत बढ़ गये। इधर मल्का किश्वर की सवारी 16 जून 1856 को लन्दन के लिए रवाना हुई इस यात्रा में करोड़ों रुपये खर्च हुए। मार्ग में ब्रेण्डन उन के साथ रहा। बीस अगस्त को जहाज इंगलैण्ड पहुँचा। वहाँ मेजर बर्ड ने बड़ी सहायता और दौड़–धूप की। मल्का की कोई पूछ न हुई। उल्टे उसे कम्पनी द्वारा तैयार की गयी नवाब के विरुद्ध अभियोग पुस्तिका (ब्लूबुक) दी गयी। उस ने उसे

कलकत्ता भेजा। नवाब ने उस के उत्तर की तीन सौ प्रतियाँ और एक पत्र महारानी विक्टोरिया ने एक विशेष जनाना दरबार किया। विक्टोरिया ने यों ही ऊपरी बातें कर के टाल दिया और तेरह वर्षीय बालक एडवर्ड को मल्का की गोद में बैठा दिया। मल्का ने विक्टोरिया को भेट में लाखों रुपये दिये और बेटे को अपना हार ही उतार कर पहना दिया। उल्लू बेवकूफ कहीं की।

लोग शोर करने लगे। कोई तिलंगा कहने लगा कि हमारा बादशाह अभी दिल्ली में बैठा है। वह लाट साब को ठीक कर देगा।

दूसरा तिलंगा बोला, बादशाह अन्धा कर दिया गया है। तीसरा बोला, बन्द करो ये किस्से। तब तक पास खड़े एक बूढ़े तिलंगे ने कहा, हमारा देश कम्पनी ने मटियामेट कर के रख दिया। तुम पंचन को मालूम है या नहीं, अंग्रेज फौज अवध की आमदनी खा गयी। मालूम है, बक्सर की हार के बाद जनाबेअली से अंग्रेजों ने लिखा–पढ़ी की थी कि वे पैंतीस हजार से ज्यादा फौज नहीं रखेंगे। मुला लखनऊ जाइके मड़ियावन में देखो आलम ! खेत सब बंजर होइ गये, गाँव के गाँव उजड़ि गये। खेतीबारी खलास। हमारी फौज को न रसद न तनख्वाह। हम गरीब से गरीब होते चले गये। हमारे सिपाही ''या हुसैन'' ''या हुसैन'' कह कर रोते जाते थे ओर लड़ते जाते। ई तरह हम ने फिरंगियों से जंग की। मुला उस का नतीजा यही हुआ कि आज हम बिना बादशाह के हो गये.....।

और वही सलीमन साहेब, जो हर बात में नवाब की गलती निकालने आया था उस की लश्कर में जासूस और मुखबिर थे। वह जासूसी और मुखबिरी करने आया था यहाँ के तालुकेदारों, राजाओं की। वह झूठा और मक्कार था। उस ने यह क्यों नहीं बताया कि कम्पनी की फौजदारी अदालतें नरक से भी बदतर हैं। गोरे साहब दिन–दहाड़े झूठे दावे कर के लोगों की जमीन–जायदाद हड़पते हैं। उस की आँख फूटी थी। उसने यह क्यों नहीं देखा कि गोरे सिपाही हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार करते हैं। डाके डलवाते और हिन्दू–मुस्लिम दंगों के लिए आग फूँकते हैं। इसके पहले तो हमारे अवध में ऐसा कभी नहीं हुआ। दस साल की नवाबी हुकूमत में लखनऊ में आठ हजार आदमी बाहर से आ कर बसे, पर कम्पनी राज होते ही चार हजार आदमी भुखमरी के कारन लखनऊ छोड़ कर भाग गये।.....

शंकरपुर।

राना बेनीमाधव और राना बाबा आज आमने–सामने बैठे हैं। बाबा ने पूछा, तुम्हारी उदासी का कारण ?

राना बोले जब अपने शाहे आलम जाने आलम वाजिदअली शाह नहीं, अपना राज नहीं तो जीना बेकार है।

राना के कहा, यह ठीक है कि अवध की सल्तनत के साथ तुम्हारी रियासत का एक चौथाई हिस्सा कम्पनी ने जब्त कर लिया। तुम्हारी आँखों के सामने तुम्हारे शाह आलम, जाने आलम जबर्दस्ती लखनऊ से ले जाये गये, जिस का तुम्हें गहरा दुःख है और तब से तुम इतने उदास हो जो स्वाभाविक है। पर क्या माजरा इतना ही है ?

राना से कुछ न बोला गया। जैसे कोई लौ झिलमिलाती है, कुछ वैसी ही चीज राना की आँखों में हिलती झिलमिलाती है।

राना सामने से उठ कर जाने लगे। राना बाबा ने कहा, आओ मेरे साथ। आओ–देखो, तुम्हारे पुत्र रघुवीर के विवाह के दिन चढ़ रहे हैं।

अगले दिन से शंकरपुर गाँव–गढ़ी के बाहर चहारदीवारी के परकोटे पर और इधर राना महल के फाटक के अलिन्द पर भोर की शहनाई बजने लगी, शुद्ध भैरवी।

कन्यापक्ष के घर पियरी चिट्ठी का लोकाचार प्रारम्भ हुआ। पीले कागज पर लगन, फलदान विवाह की तिथि लिख कर, वरपक्ष के यहाँ भेजने से पहले कन्या के हाथ में रखा गया। हंसगौरी ने उसे पढ़ा, आँख और मस्तक से स्पर्श कर माँ अन्ना मई। के हाथों में रख दिया। तीसरे पहर फल–फूल, रेशमी वस्त्र के साथ पियरी चिट्ठी वरपक्ष के यहाँ पहुँचा दी गयी। संध्या समय से वर और कन्या के आँगने में मंगलगीत गाया जाना शुरू हुआ।

पीली चिट्ठी के बाद फलदान की तैयारी हुई। फलदान में चाँदी की थाल, मलमल का थान, चौदह चूड़ियाँ, सुपारियाँ, अनेक प्रकार के फल, नारियल, मखाने, जौ, तिल, चावल, हल्दी की गाँठें तथा द्रव्यसारी

सामग्री सजा कर बड़े थाल में रखी गयी। इस के साथ ही कलावे से बँधी हुई वर–वधू की लग्नपत्रिका रखी गयी। लग्नपत्रिका के भीतर हल्दी से रंगे हुए अक्षत, सुपारी, हल्दी की पाँच गाँठें और एक स्वर्ण मुद्रा रखी गयी। आंगन में चौका पूर कर चन्दन के पीढ़े पर हंसगौरी को बैठाया गया। उस की गोद में सारी सामग्री से सजी थाल रखी गयी। स्त्रियाँ गा उठीं :

'फूल तउ फूली गुलाबी सतरंग फूली
पाँच भइया की बहिनी अकेली रानी रुक्मिनि हो।
कासी के पाँच बिरहमन लगन लिखावहिं
पाँचउ भइया इकमत करो रुक्मिनि ब्याहइ हो।

फूलदान के दिन सारे शंकरपुर गाँव–गढ़ी में राना बाबा की ओर से बुलउआ लगाया गया। सारे महल में सजावट। सर्वत्र दीप जलाये गये।

उस सन्ध्या राना के आँगन में पुत्र विवाह के लोकाचार हो रहे थे। एक ओर मंगल सगुन गीत हो रहे थे, दूसरी ओर गाँवगढ़ी के लोगों के साथ राना बाबा रामायण–पाठ सुन रहे थे। प्रसंग चल रहा था :

जासु सत्यता तें जड़ माया, आस सत्य इन मोह सहाया।
रजत सीप महुँ मास निसि यथा भान कर वारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ अमन सकै कोउ तारि।।

रामायणी वासुदेव तिवारी कह रहे थे कि वास्तव में सारा दोष हमारी दृष्टि का ही है। चन्द्रमा तो अपनी जगह पर प्रकट है। हमीं अपनी आँखों पर हाथ रख लें तो चन्द्रमा कहाँ दिखेगा। सो राजन, संसार लाख असत्य हो फिर भी दुःख तो देता है। माना कि हमारा सिर सपने में ही कटता है, पर कटने का दुःख तब भी तो होता है।

जों सपने सिर काटि कोई।
बिनु जागे न दूरि दुःख होई।।

बिना नींद से जागे यह दुःख नहीं दूर होगा।

अचानक राना बेनीमाधव के मुख से फूटा, आह राम ! वे अपने आसन से सहसा उठ खड़े हुए। जो पिछले कितने दिनों और कितनी रातों से अजब आशापूर्ण वैराग्य में डूबे हुए थे, उन्हें जैसे गहरी अनुभूति हो गयी हो। उन्होंने हाथ उठा कर मानो अपने–आप से कहा, जिस का राजा नहीं, जिस प्रजा का राजा अंग्रेजों से पराजित, अपमानित कलकत्ते के मटिया बुर्ज में असहाय पड़ा है, उस प्रजा को इस तरह जीने का कोई हक नहीं !

राना बेनीमाधव उसी एक साँस में दुर्गा मन्दिर के अन्दर गये। माँ के सामने बलिवेदी पर बैठ कर अपनी तलवार से अपने माथे पर घाव किया, अँजुरी में खून भर कर माँ दुर्गा को चढ़ाते हुए आर्त स्वर में कहा, माँ !

और वे आँख खोले एकटक माँ को देखते रहे। माता और पुत्र में कोई निःशब्द संवाद होता रहा। माथे से रक्त की बूँदें भवानी–कृपाण पर गिरती रहीं।

दुर्गा पीठ के चारों ओर लोगों की भीड़ लग चुकी थी। पीठ द्वार पर राना बाबा चिन्तित खड़े थे। लोग साँस खींचे राना बेनीमाधव के दुर्गा पीठ से बाहर आने की राह देख रहे थे।

हाथ में नंगी भवानी कृपाण लिये राना बाहर निकले। बेनीमाधव ने राना बाबा के चरण स्पर्श कर प्रणाम किया।

राना बाबा ने पुत्र के रक्तरंजित माथे पर हाथ रख कर आशीष दिया, कभी भागना नहीं ! किसी से भी डरना नहीं ! विजयी हो !

कई दिनों बाद। राना बेनी न जाने कहाँ–कहाँ घूम कर संध्या समय अपने राजमहल में लौटे।

गाँव के बीचों बीच। आधी रात का समय। पंचपुरी पीठ पर राना बेनी अपने मित्रों, सहयोगियों और सेना–अधिकारियों से सलाहबात में लगे थे। पंचफैसला हुआ कि बिल्कुल गुप्त रूप से मानपुर के पास बिठूर

में राजा नाना साहब से मिला जाय। क्योंकि नवाब के खास आदमी अजीमुल्ला इंगलैण्ड से लौट कर बिठूर में ही हैं। फिर यहाँ से नवाब वाजिदअली शाह के वजीर अली, बेगम हजरत महल और उन के खास सलाहकार फैजाबाद के मौलवी अहमद शाह, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सतारा के रंगोबापू जी, रूहेलखण्ड के खान बहादुर खाँ, बाँदा के नवाब मीर खाँ और गोंडा के राजा देवी बख्श.....।

वैशाख सुदी पुनर्वसु नक्षत्र की रात थी वह। राना बेनी चौक से बाहर निकले ही थे कि कन्या के पिता सूरज सिंह हाथ जोड़े सामने खड़े थे।

दुहाई राजा की।

क्या है ठाकुर जी ?

कहाँ एक ओर बेटी–बेटा के ब्याह की सारी तैयारियाँ हो रही हैं, कहाँ दूसरी ओर अंग्रेज बहादुर से लड़ाई का फैसला.....।

क्या–क्या कहा अंग्रेज बहादुर ? ठाकुर, अब आप मेरे इतने निकट के सम्बन्धी हो गये हो, फिर कभी अंग्रेज को बहादुर न कहना।.....कायर है, विश्वासघाती !

राना जी, ब्याह के दिन ही अब कितने रह गये हैं ?

–क्यों ? ब्याह की तिथि है आषाढ़ सुदी पंचमी। अभी तो आज वैशाख का छठा ही दिन है। पूरा वैशाख, पूरा जेठ अभी दो माह, से अधिक का समय है ब्याह में। अंग्रेजी राज की गुलामी में हमारे बेटी–बेटा का ब्याह हो, इस के पहले हमें चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। यह ब्याह हमारे अपने राज में होगा।

राना बेनी ने सूरजसिंह के बायें कन्धे पर अपना दायाँ हाथ रखते हुए कहा, सब से बड़ा पाप है अपने–आप को दुर्बल समझना। जिसमें इतनी शक्ति और बहादुरी देखते हो, वह शक्ति और बहादुरी तुम्हारी ही दी हुई है।

ठाकुर सूरजसिंह राना बेनीमाधव का मुख देखते ही रह गये। राना बेनी पूरे विश्वास से कहते जा रहे थे, राम जी ने चाहा तो पन्द्रह दिन के भीतर लखनऊ के राजसिंहासन पर फिर अपने बादशाह वाजिदअली शाह बैठेंगे, नहीं तो अधिक–से–अधिक एक महीना। जै हो मातु दुर्गा भवानी की।

हाथ जोड़ कर सूरजसिंह बोले, असम्भव बात मत करो राना जी, वाजिदअली शाह अंग्रेजों के कलकत्ता–मटियाबुर्ज में नजरबन्द हैं। वह अब लखनऊ नहीं लाये जा सकते।

कुछ क्षण चुपचाप चलने के बाद, राना बोले, अगर वह नहीं, तो उनके शहजादा बिरजिस कदर सिंहासन पर होंगे।

शहजादा अभी नाबालिग हैं।

राना ने सूरजसिंह का दायाँ हाथ अपनी तलवार पर रख कर कहा, ब्याह की तैयारी करो।

राना, समय नहीं है अब अंग्रेजों से लड़ाई करने का। इतने सालों से अंग्रेज इसी समय की तैयारी कर रहे थे, आप को अभी तैयारी करनी है। रही नवाब जाने आलम की बात, अंग्रेजों ने मटियाबुर्ज में ही उन के लिए छोटा–सा लखनऊ कायम कर दिया है।

राना बेनीमाधव ने आँखें बन्द कर लीं। उन बन्द आँखों में मटिया बुर्ज का खिलौना लखनऊ झिलमिला उठा।.....

वहाँ भी वही बावर्चीखाना, आबदारखाना, भिण्डीखाना, खसखाना और राम जाने क्या–क्या ! फिर एक मद मुत्आशुदा बेगमों की रिश्तेदारों और भाई–बन्दों की थी, जिन्हें उनकी हैसियत के मुताबिक तनख्वाहें मिलतीं। इन सब लोगों ने मटियाबुर्ज के रकबे में और उसके आस–पास की जमीन पर मकान बना लिये हैं और एक शहर बस गया है, जिसकी मर्दुमशुमारी चालीस से ज्यादा थी। उन सबकी जिन्दगी का दारोमदार बादशाह की तनख्वाह के एक लाख रुपये माहवार पर था और किसी की समझ में नहीं आता था कि इतने लोग इस थोड़ी सी रकम में कैसे बसर कर लेते हैं। कलकत्ते में मशहूर हो गया था कि बादशाह के पास पारस पत्थर है। जब जरूरत होती है, लोहे या ताँबे को रगड़ कर सोना बना लिया करते हैं !..... वही नाच गाने। वही महफिलें.....वही पतंगबाजियाँ, वही मुर्गबाजियाँ, वही बटेरबाजियाँ। वही लखनऊ के अफीमची, वही दास्तानगोई, वही ताजियादारी, मर्सियाख्वानी, वही कर्बला.....वही.....।

उसी झिलमिलाहट के बीच एक तड़पती हुई रागनी सुनाई दी :

परीनहुफता हखाँ–ओ–देव दरकरिश्मा–ओ नाज।

बसोख्त अक्लज हैरत कि ईचे बुलअजनवीस्त।।

.....सुनो सुनो.....परी ने अपना चेहरा छिपा लिया है और देव..... राक्षस.....नाज–नखरे दिखा रहा है। अक्ल हैरान है कि यह सब कैसे हुआ ?

सात

पूरे अवध में, खास कर नवाब के खास–खास तालुकेदारों, जागीरदारों और अंग्रेजों से किसी वजह से नाराज राजाओं के पीछे जासूस लग गये थे।

राना बेनीमाधव ने अपने खास आदमियों–जैसे अपना अंगरक्षक टिकैत राय, पाठशाला के पण्डित दुलीराम अग्निहोत्री, कथाबाँचू खेवट, धारुपुर के हनुमन्त सिंह और अपने कुछ अत्यन्त विश्वासपात्र तिलंगों को साधु, फकीर, ज्योतिषी, सँपेरा, गायक और किस्सागो के भेष में पूरे अवध में भेजा। खुद राना साधु के भेष में एक दूसरे घोड़े पर सवार सब से पहले मिले बिठूर के नाना साहब से। वहीं अजीमुल्ला से भेंट हुई। फिर जाकर मिले तात्या टोपे से। रास्ते में एकाएक राना की भेंट हुई बेगम हजरत महल से।

बेगम खुद तरह–तरह के रूप बदल कर अवध के तालुकेदारों को संगठित कर रही थीं। बेगम हजरत महल ने दुआ दी : राना, अयोध्या नरेश राजा राम हमारी मदद करें।

राना ने झुक कर बेगम को प्रणाम किया और अकेले आगे बढ़ गये। लखनऊ–फैजाबाद सड़क के दाहिनी ओर, बाराबंकी से लगभग छब्बीस कोस दूर कल्याणी नदी के तट पर राना की भेंट दुआशाह से हुई। दुआशाह ने राना को आशीष देते हुए कहा, कभी भी अपना रूप और भेष मत बदलो। जो हो, वही रह कर कर्म करो, राख के नीचे दबी हुई अग्नि दहक उठेगी।

कल्याणी नदी के दोनों तटों कर घना पलाशवन था। पलाशवन की ओर संकेत करते हुए दुआशाह बोले,.....देखो, पलाशवन फूलने को है। जैसे–जैसे फूल आएंगे, पुराने पत्ते झड़ जाएंगे। जैसे–जैसे धूप में अग्नि की ताप बढ़ेगी। वैसे–वैसे जलते हुए अंगारे की फूल तरह खिलेंगे। जाओ, उस पलाशवन के भीतर जाओ। भीतर एक शिविर मिलेगा, वहाँ तुम्हें कुल लोग मिलेंगे।

आप कहाँ जाएंगे ?

तुम्हें कहाँ जाना है, उसी की चिन्ता करो। मैं कहीं भी रहूँ, सदा तुम्हें देखता रहूँगा। जाओ अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो। सब स्वधर्म में प्रकट हों, यही मेरी दुआ है।

राना बेनी एक वृक्ष के नीचे जाकर अपने वास्तविक रूप में आ गये। लेकिन लौट कर देखा, वहाँ दुआशाह नहीं हैं। फिर घोड़े की पीठ पर बैठ कर देखा। दूर–दूर तक देखा। दुआशाह न जाने कहाँ अदृश्य हो गये थे।

घोड़े की पीठ पर बैठे राना ने कल्याणी नदी को पार किया। पलाशवन के बीचोंबीच वट वृक्ष के नीचे सैनिकों की एक टुकड़ी। घोड़े इधर–उधर वृक्ष की निकली हुई जड़ों और डाल से लटकती हुई जटाओं से बँधे थे। सैनिकों ने राना बेनी माधव को देखते ही पहचान लिया। एक स्वर में बोले, हर हर महादेव !

घोड़े से उतर कर राना ने उन सैनिकों को बड़ी गम्भीरता से देखा। एक सैनिक ने पूछा क्या देख रहे हो महाराज ?

तुम लोग इस तरह यहाँ कैसे ?

जब से नवाब की फौज टूटी, हम लोग इधर लूटपाट के काम करते हैं। कभी–कभार डाकेजनी भी कर लेते हैं।

राणाजी मुस्कराये तो सारे सैनिक भी हँस पड़े।

राना ने पूछा, तो लूटपाट करते हो ? डाकू हो गये हो ?

गिरोह के अगुवा ने कहा, जब अपना कोई राज न हो, कोई लक्ष्य न हो, फिर और किया भी क्या जाय ! और कुछ होता भी नहीं। हम नवाब वाजिदअली शाह की सेना के सिपाही थे। हमारी फौजी कवायद फारसी में–वाह ! सारे सिपाही नकल करने लगे।

रास्त रो (सीधे चल)

पस बया (पीछे घूम)

दस्तर चप बगरिद (बाँयी ओर मुड़)

उस हास–परिहास के बीच अगुवा सिपाही, फौजदार देवकी दुबे के मुँह से अचानक वह बात निकली जो निकलनी नहीं चाहिए थी। बोले, अख्तरी, वादरी दो पलटनें तो थीं ही। चन्द रोज बाद जवान

और हसीन औरतों की एक छोटी जनानी फौज और बनायी गयी। क्यों ? क्यों ? रास्त रो, पस बया, दस्तर चप बगरिद.....

सारे सिपाही तरह–तरह से नकल उतारने लगे। राना के लिए जब असहय हो गया तब उन्होंने डाँटा, बन्द करो यह बदतमीजी। शाहे आलम जाने आलम की शान के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सूनूँगा। उन का नमक खाया है।

खामोशी छा गयी।

देवकी दुबे ने अपनी नंगी तलवार को अपनी दोनों जुड़ी हुई हथेलियों पर रख कर कहा, महाराज, रानाजी, आप तो नवाब के सब से बडत्रे विश्वासपात्र थे। आप तो हमारी भाषा, जबान में हम से कह सकते थे, सीधे चल।

राना बेनीमाधव फौजदार देवकी दुबे का मुँह ताकते रह गये। तो क्या नवाब की फौजी कवायद की फारसी शब्दावली ने सिपाहियों को गुमराह किया ?

तुम ने तब कहा क्यों नहीं ?

क्या आप नवाब से ऐसी कोई शिकायत कर सकते थे ?

क्यों नहीं ?

जनानी फौज के खिलाफ आप ने नवाब से कुछ कहा था, नवाब ने क्या जवाब दिया था ?

राना अवाक् रह गये।

यह सब तुम्हें कैसे मालूम ?

छोड़िए उन बीती बातों को। कहिए इधर कैसे आना हुआ ?

राना बेनी ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ने की सारी बातें बतायीं। अब तक क्या–क्या तैयारियों हो चुकी हैं, किन–किन से सम्पर्क स्थापित हो चुका है, किस की मदद कहाँ से होगी, किस की सेना कहाँ मिलेगी, पूरी योजना राना के फौजदार के सामने रख दी।

फौजदार ने हाथ जोड़ कर कहा, इस से होगा क्या महाराज ?

मुझ से प्रश्न मत करो, बस मेरे साथ आ जाओ।

राना के साथ वे सब चल पड़े। वहाँ से सीधे हड़हा वाले राजा ठाकुर रामसिंह के यहाँ पहुँच कर डेरा डाला गया। उन के घर वाले राना को देखते ही रो पड़े।

ठाकुर राम सिंह ने बताया कि कम्पनी ने जागीरदारों, तालुकेदारों की जमीन पर अधिकार की जाँच के लिए इनाम कमीशन बैठाया। जिसके तहत ठाकुर रामसिंह का, दादा परदादा का पैतृक ताल्लुका जब्त कर लिया गया। राना ने पूछा, रामसिंह की सेना कहाँ है ? पता चला कि सारी सेना समीप में ही माझा के झाऊ के जंगल में छिपी है। राना को पता था कि छापामार लड़ाई के लिए रामसिंह की वह सेना कितनी कुशल और सशक्त है। रामसिंह को साथ ले कर वहाँ से आधी रात को कूच कर राना अपने दलबल के साथ जिस समय माझा जंगल के समीप पहुँचे, उस समय अभी एक घण्टा रात शेष थी। एक टीले पर चढ़ कर राना ने झाऊ के जंगल में आँख दौड़ायी, न कहीं कोई रोशनी, न कोई पहचान कि कोई सेना कहीं है। तब रामसिंह ने रहस्य–स्वर में हाँक दी–रा रा रा। और झाऊ के उस शान्त जंगल में हाँक टकरायी, जैसे सारा सोया हुआ जंगल सिहर गया। अचानक उस जंगल से आवाज आयी–आरा आरा आरा !

रामसिंह ने तत्काल उत्तर दिया–तारा तारा तारा !

झाऊ के उस जंगल में अचानक एक प्रकाश चमका। राना और रामसिंह के घोड़े उसी दिशा में बढ़ने लगे। घोड़ों के समीप आते ही वह सेना झाऊ के दल से ऐसे उठ के निकल पड़ी मानो धरती से उगी हो।

राना बीच में और चारों ओर सिपाही हथियार ताने हुए। राना देखने लगे। छापामार लड़ाई हमारे देश की पुरानी चीज है। यह बड़ी संगठित सेनाओं का परिचायक नहीं, ग्राम संगठनों द्वारा व्यवहार में लाया जाने वाला युद्ध–कौशल है।

राना के मुँह से फूट पड़ा, साधुवाद ! हमारी यह सेना, हमारी यह लड़ाई अमर रहे। साथियों, शिवाजी महाराज इसी तरकीब से लड़े थे। राणा भीमसिंह ने अरावली की पहाड़ियों में औरंगजेब को यों ही घेर कर छापा मारा था।

फौजदार अभिराम बली ने आगे बढ़ कर संकेत किया। सारे सिपाही बैठ गये। अभिराम बली ने राना बेनीमाधव और रामसिंह के सामने हथेलियों पर बन्दूक रख कर नतसिर अभिवादन किया–

राना बेनी की जय !

राना बेनी की जय !

सेना ने जिस मन्द्र स्वर से जयजयकार किया, झाऊ का जंगल क्षणभर के लिए थरथरा गया।

रामसिंह, अभिराम बली और राना की बातें हुई। राना की योजना सुनकर रामसिंह और उन का फौजदार बली उत्साह से भर गये। रामसिंह के साथ पूरी सेना हो गयी। जंगल के गुप्त शिविरों में छिप कर राना अपने साथ देवकी दुबे और अभिराम बली को लिय हुए छहद्वार की ओर बढ़े।

दुबे अपना घोड़ा बली के पास ला कर धीरे से बोले, ई छेद्वारा किधर है बली भाई ? राना ने सुन लिया। अमराई में पहुँच कर थोड़ा विश्राम करते हुए बोले, बाराबंकी जिले में पसका, कमियार, शाहपुर, धनावा, आटा और परसपुर की छह रिसायतें छहद्वारा कहलाती हैं। इन रियासतों ने मिल कर एक बार अंग्रेजों से लोहा लिया था। कमियार के ठाकुर शेरबहादुर सिंह पूरे छह द्वार की सेना के सेनापति थे।

घोड़े को एड़ देते हुए राना अपने साथियों के साथ आगे बढ़े। दोपहर होते–होते रायबरेली के करीब पहुँच कर राना ने एक अमराई में रुक कर कहा, अभिराम बली, तुम ओर देवकी दुबे–दोनों अपने सैनिकों के साथ अलग–अलग रास्तों से लखनऊ के आसपास के गाँवों–जंगलों में डेरा डालो। वहाँ तुम लोगों को अनेक सैनिक, सरदार, तोप, बारूद, बन्दूक सहित मिलेंगे। मैं आज से दसवें दिन मंगलवार आधी रात के समय इधर अवश्य मिलूंगा। हर हर महादेव !

राना अपने घोड़े पर सवार तीर की तरह निकल गये। राना बेनी गोण्डा, बहराइच, बस्ती, सुल्तानपुर, फैजाबाद, बाराबंकी, सीतापुर, उन्नाव, कानपुर, इटावा, शाहजहांपुर, बरेली, हरदोई आदि अवध का विशाल क्षेत्र और खास कर बैसवाड़ा क्षेत्र में बिखरे हुए योद्वाओं, सिपाहियों, पुरुषों, पुराने हिन्दू मुसलमान राजवंशों के लोगों से सैन्य शक्ति, युद्ध–साधन जुटाने, उन्हें युद्ध की योजना में संगठित करने और आक्रमण की योजना फैलाने में दिन–रात दौड़ते रहे। वे जहाँ गये उन का स्वागत हुआ। अंग्रेजों से बेतरह चोट खाया हुआ अवध, उदास–निराश बैसवाड़ा, जग कर खड़ा हो गया। मिट्टी के नीचे दबायी हुई तोपें, बन्दूकें बाहर निकाली गयीं। बारूद बनाने, तोपगोला तैयार करने में अवध, बैसवाड़ा के कारीगर लग गये। हर ओर से अंग्रेजों के खिलाफ हवा बँधने लगी। अवध के नवाब के मातहत कितने ही जागीरदारों, तालुकेदारों की सेनाएं राना बेनी की सेना में आ मिलीं।

पूरब से राना बेनी, दक्षिण से तात्या टोपे और पश्चिम से राना– इन तीनों ने लखनऊ में विद्रोह के संगठन बनाये और मौलवी अहमद शाह के घर गुप्त बैठकें हुई। वहीं युद्ध की सारी योजना बनी। तभी इस की पूरी खबर हेनरी लारेन्स को मिल गयी।

कैसे ?

ग्वालियर से सिन्धिया राजा जयाजी ने अपने मन्त्री दीवान दिनकर राव राजवाड़े द्वारा यह खबर दी लारेन्स को। खबर पाते ही लारेन्स ने मौलवी अहमद शाह के घर को घेर लिया। पर इस बीच वे चारों लखनऊ से बाहर निकल चुके थे।

लखनऊ से बाहर निकलते–निकलते उस रात उन चारों ने घास मण्डी में एक अजीबोगरीब दृश्य देखा। हजारहाँ मुरीदों की एक भीड़ चल रही है। आगे–आगे डंका बज रहा है। भीड़ के बीचोबीच डंकाशाह फकीर सब के सामने अंगारा चबा रहा है। अंगारा मुँह से निकाल–निकाल कर वह लोगों को दे रहा है और चिल्ला–चिल्ला कर कह रहा है, जो आज अंगारे चबा रहे हैं, कल वे ही फिरंगियों को जला डालने के लिए आग उगलेंगे। उन्हीं को जन्नत मिलेगी !.....

डंकाशाह के चमत्कार, अमीरुज्जिवात के साथ उन का गठबन्धन, अल्लाह के साथ उन की रूबरू बातें, कमाल है। लोग बताने लगे राना बेनी, तात्या टोपे, नाना साहब और मौलवी अहमदशाह को कि यह फकीर डंकाशाह रोज रात के बारह बजे अपनी कोठरी बन्द कर के अँधेरे में बैठ जाते हैं। फिर कोठरी में हजारों गैस–बिजलियों को मात करने वाला खुदाई नूर फैल जाता है। फिर बादल की गड़गड़ाहट, बिजली की कड़क होती है। ऐसे में डंकाशाह की अल्लामियाँ से बातें हाती हैं। इन के मुरीद दरवाजे के बाहर कान लगाये खड़े रहते हैं....।

आठ

कथाबाचूँ खेवट कहाँ से कहाँ तक अयोध्या, फैजाबाद, गोरखपुर, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, सण्डीला, खैराबाद, रुदौली–बाप रे बाप, कहाँ तक घूमता रहा, पर किसी ने उस पर तनिक भी सन्देह नहीं किया। कोई सन्देह करता भी कैसे ! खेवट स्लीमैन साहब के साथ भी तो सब घूम चुका है और नीच–ऊँच, उबड़–खाबड़ सब समझ चुका है। पर चिट्ठीरसा के भेस में, लक्कड़ में घुँघरू बाँधे जो भला आदमी उस का कब से पीछा कर रहा है, बारी बिस्वा से रामनगर से रूधौली.....उसका खेवट पर सन्देह पक्का हो गया।

पक्का सन्देह ! वरना कहाँ बारी बिस्वा से चला वह चिट्ठीरसा यहाँ रुधौली तक उस के पीछे ही लगा रहता। ऐसा हो ही नहीं सकता। खेवट सोचने लगा, बड़े काम की छोटी गलती पकडना आसान काम है। पर छोटे काम की बड़ी गलती पकड़ना यह दुर्भाग नहीं तो और क्या है।

खेवट भाँप गया। वह चिट्ठीरसा के भेष में कम्पनी का कोई अंग्रेज साहब है। खेवट जैसे ही कुछ गाने के लिए अलाप भरने लगा कि पीछे से उस के दोनों के दोनों हाथ धर लिये गये।

बोल, बता, कौन है तू ?

कथा कहने वाला.....कथावाचक !

क्या ?

स्टोरी.....कथा.....वाचक.....टेलिंग।

यह कह कर खेवट मुस्कराने लगा।

इधर कौन–कौन घूमता ? राना बेनीमाधव किधर है ? नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, देसी पलटन का सिपाही ?

खेवट सिर हिलाता जा रहा था।

तुमने कुछ नहीं देखा ?

नहीं साहेब।

बंगाल का पलटन का नाम सुना है।

सिर्फ गंगादीन सिपाही का नाम जानता हूँ।

साहब अपनी डायरी देखने लगा। पण्डित गंगादीन ? अग्निहोत्री ?

हाँ साहेब।

वह कहाँ है ?

वह मर गया साहेब।

कैसे ? कहाँ।

अब फँस गया खेवट। कहाँ झूठ बोल कर जान छुड़ाने जा रहा था, और कहाँ.....।

बोलता क्यों नहीं ?

बोलता हूँ साहेब, बोलता हूँ। बस वह मर गया साहेब, और मुझे कुछ नहीं मालूम।

बैरकपुर का नाम सुना है। मेरठ का ? वहाँ क्या हुआ है ?

वहाँ साहेब, मुझे कुछ नहीं मालूम। यह बैरकपुर, मेरठ कहाँ हैं साहेब ?

झूठ बोलता है।

अरे हम कुछ बोलता ही नहीं ! सिर्फ किस्सा सुनाता है !

किस्सा ? क्या किस्सा ?

साहब उस की आँखों में देखने लगा। सचमुच वह अंग्रेज साहब था। नौजवान बाइस–तेइस साल का। साहब मुस्कराने लगा। खेवट ने सोचा, चलो, काम बन गया !

सामने आम का बहुत बड़ा बाग। तेज धूप। कड़ी दुपहरिया। भैंसगोरू, चरवाहे। बाग में गदहरे गुल्ली डण्डा खेल रहे थे। भैंसगोरू बगिया में लोटपोट के बैठे थे।

बगिया में खेवट कुएँ के पास बैठ कर अपनी गठरी खोलते हुए बोला, कुछ खाओगे साहेब ?

हमको पहचान गेया ?

हाँ, साहेब।

हम भी टुमको पहचान गेया। तुम राना बेनी माधव का आदमी है।

हम तो साहेब सब का आदमी है। हम 'स्टोरी', कथा–कहानी बोलता है।

राम कसम !

राम कसम साहेब !

साहब इत्मीनान से सामने बैठ गया। अपने थैले में से बर्तन निकाल कर पानी पिया।

अच्छा, कोई कहानी कहो ! सच्ची कहानी ! खेवट बोला–मुझे बहुत सच्ची कहानियाँ याद हैं। कैसी कहानी कहूँ ? .....राजा की, नवाब की.....जागीरदार की.....डाकू लुटेरे की..... हसीना की.....। साहेब बोला, नवाब की।

खेवट बड़े ठाठ से कहने लगा, तो सुनिए साहब, नवाब वाजिदअली शाह की एक सच्ची कहानी। हुँकारी भरते रहिएगा।

हुँकारी क्या ?

हूँ, हूँ।

खेवट ने कहानी शुरू की, नवाब वाजिदअली शाह अपनी माँ की एक बाँदी पर आसिक होई गये। माँ दोनों के मिलन में मुश्किल पैदा करती थीं। एक दिन बादशाह बाँदी के बिरह में इतना तड़पे कि सीधे अपनी माँ की सेवा में आ कर अपने दुःख–दर्द का इजहार करने लगे। माँ ने समझ बूझ से काम लिया। कहा कि सुन बेटे, मैं जान बूझ कर इस बाँदी को तुम्हारे पास नहीं जाने देती। क्योंकि इस की पीठ पर साँपिन का निशान है। यह जिस के साथ रहेगी, उस मर्द पर अपनी बदकिस्मती का साया डालेगी।

वाजिदअली शाह डर गये। उनकी तबीयत पहले से ही खराब रहा करती थी। ऊपर से दिल की बीमारी थी। तो जानेआलम ने सोचा, इतनी बेगमात में न जाने किस–किस के यह मनहूस निसान हो और उस की वजह से उन पर यह मुसीबत आयी हो।

साहब हुँकारी भरना भूल गया तो खेवट चुप हो गया।

साहब बोला, फिर क्या हुआ ?

आप हुँकारी नहीं भरेंगे तो कहानी आगे नहीं बढ़ेगी।

अच्छा.....अच्छा !.....हूँ !

तो बस, ऐसा विचार मन में आते ही नवाब ने ख्वाजासरा बशीरुद्दौला को हुक्म दिया कि सब बेगमों की तलाशी ली जाय।

हूँ !

तो साहेब, सब बेगमों पर कहर टूट पड़ा। मनहूस हो कर पिया जाने आलम की नजरों से कोई भी बेगम गिरना नहीं चाहती थी। बशीरुद्दौला बेगमों से रिश्वतें पाकर मालामाल हो गया।

फिर भी आठ बदकिस्मत बेगमों की देहों पर ख्वाजासरा बशीरुद्दौला ने साँपिन का निशान.....

फिर क्या हुआ ?

यों तो पिया जानेआलम अपनी किसी भी प्यारी बेगम को न निकालते, मगर उन्हें अपनी जान अधिक प्यारी थी।

हूँ।

उन आठ बेगमों को तलाक दे कर शाही महल से बाहर रहने का फरमान जारी कर दिया। बाद में उन बेगमात की ओर से भी पैरवी करने वाले निकल आये.....।

खेवट ने देखा कि साहेब सो गया है। धीरे से उठा और अपनी गठरी मोटरी ले आम के पेड़ पर ऊँचे चढ़ कर दिप गया।

कई रातों का जगा, थकामाँदा खेवट वहीं पेड़ की डाल पर पड़े–पड़े सो गया। नींद खुली तो शाम हो चुकी थी। साहेब न जाने कब कहाँ चला गया था। पेड़ से नीचे उतर कर खेवट पास के गाँव में गया। वहाँ एक जमोगदार के घर अपना परिचय दे कर और उसे पूरी कैफियत बता कर उस से एक घोड़ा लिया।

रात के अँधेरे में घोड़े पर सवार खेवट लखनऊ की ओर तीर की तरह निकल गया।

शंकरपुर। महल में रात के समय विवाह का मंगल संगीत उमड़ रहा था। तमाम लोग पंचपुरी में बैठे थे। आज वहाँ एक गम्भीर बैठक हो रही थी। शाम के धुँधलके में पूरब दिशा से दौड़ते हुए दो व्यक्ति आये थे। एक के हाथ में कमल था और दूसरे के हाथ में रोटी चपाती। जिस के हाथ में कमल का फूल था, वह वही कम्पनी बहादुर का सिपाही था, गंगादीन।

गंगादीन पंचपुरी में लोगों से घिरा हुआ हाथ में कमल लिये बता रहा था, कमल का फूल उन सारी पलटनों में, जो इस संगठन में शामिल हैं या शामिल होने को हैं, उनमें घुमाया जा रहा है। एक पलटन का सिपाही यह फूल ले कर दूसरी पलटन में जाता है। उस पलटन भर में हाथों–हाथ यह फूल सब के हाथों से निकलता है। जिसके हाथ यह सब से अन्त में आता है, उसका कर्तव्य होता है कि वह अपने पास की दूसरी पलटन तक उस फूल को पहुँचा दे। इसका मतलब यह है कि उस पलटन के सिपाही अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई करने के लिए बिल्कुल तैयार हैं। इस तरह के हजारों कमल के फूल बैरकपुर से पेशावर तक पलटनों के अन्दर घुमाये जा रहे हैं।

चपाती–रोटी हाथ में लिये दूसरा आदमी बताने लगा, यह चपाती एक गाँव का चौकीदार दूसरे गाँव के चौकीदार के पास ले जाता है। वह चौकीदार उस चपाती में से थोड़ी–सी खुद खा कर बाकी पूरे गाँव के लोगों को खिला देता है। फिर गेहूँ या दूसरे आटे की उसी तरह की चपातियाँ बनवा कर वह अगले गाँव में पहुँचा देता है। इसका मतलब यह है कि उसके लोग लड़ाई में भाग लेने के लिए तैयार हैं। गंगादीन के पिता उस पंचपुरी में बैठे सब देख–सुन रहे थे।

उन्होंने पूछा, कमल और रोटी का मतलब क्या है ? गंगादीन ने बताया–कमल माने आजादी और रोटी माने भोजन, खाना। इस काम के लिए हम जैसे सिपाही ही नहीं, नाना साहब, अजीमुल्ला खाँ और फैजाबाद के जमीन्दार मौलवी अहमद शाह तीर्थ यात्री के रूप में चारों तरफ घूम रहे हैं। इतवार 31 मई 1857 का दिन पूरे भारत में एक साथ विप्लव करने के लिए नियत कर दिया गया है।

यह बात सुनते ही लोग अशान्त हो गये।

गंगादीन के पिता पण्डित दुलीराम बोले, यह कैसे हो सकता है ? बीस जून को आयुष्मान रघुवीर का विवाह आयुष्मती हंसगौरी से निश्चित है। सूरजसिंह ने कहा, मेरी बेटी का विवाह, विवाह है; अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई, लड़ाई हैं।

राना बाबा बोले, इस लड़ाई का सिपहसालार कौन है ?

गंगादीन ने कहा, हमारे लिए राना बेनीमाधव है।

राना बाबा कहने लगे, तुम्हारे लिए राना बेनीमाधव, राना बेनीमाधव के लिए बेगम हजरत महल, बेगम हजरत महल के लिए नाना साहब पेशवा और सारे देशी सिपाहियों के लिए अब भी दिल्ली के कठपुतले बादशाह बहादुरशाह जफर.....मालूम है ? नाना साहब और पुरवैयों के नेता मानसिंह ने दिल्ली और लखनऊ से यह तै किया है कि इस लड़ाई में जीत के बाद बादशाही मिलेगी मुसलमानों को और दीवानी हिन्दुओं को। यह बात मेरी समझ में नहीं आती, जो हिन्दू और मुसलमान में बँटा हुआ है, जो कर्म से पहले ही फल पर आँख गाड़े हुए है, जो एक देश नहीं बल्कि दिल्ली, लखनऊ, झाँसी, कानपुर, शाहाबाद, बरेली, ग्वालियर आदि न जाने कितने केन्द्रों की सीमाओं में बँधा है, इतनी बिखरी हुई ताकत अंग्रेजों की एक समूची ताकत से कैसे लड़ाई लड़ेगी ? मेरी समझ में नहीं आता। यह वह लड़ाई नहीं है, जो एक राजा, एक तालुकेदार दूसरे राजा और तालुकेदार के बीच में होती है। यह पहली बार एक दूसरे तरह की लड़ाई है, बिल्कुल नये तरह का जंग। नये हथियारों से पुराने हथियारों के बीच; नये विचारों, नये उद्देश्यों से पुराने विचारों और पुराने उद्देश्यों के बीच। दो ऐसे आदमियों के बीच, जिस में एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानता है पर दूसरा पहले के बारे में सिर्फ आधी बात जानता है।

सब चुपचाप राना बाबा की बात सुन रहे थे। राना और सूरजसिंह के घरों से विवाह संगीत, रात के पूरे वातावरण में रंग बरसा रहा था।

राना बाबा ने पूछा– गंगादीन, बताओ, क्यों तुम कम्पनी बहादुर के सिपाही हुए ? क्यों अब खिलाफ हुए ?.....

गंगादीन ने बताया कि जब तक अंग्रेजी राज की जड़ें इस देश में नहीं जम पायीं थीं, तब तक वे सिपाहियों की बड़ी इज्जत करते थे। क्या तड़क–तड़क, रोबदाब था कम्पनी के सिपाही का। कम्पनी बहादुर का सिपाही होने का मतलब था बहादुर सिपाही। देसी, विलायती सब सिपाहियों का बराबर दर्जा, मगर सब झूठ निकला। कम्पनी बहादुर नहीं है, कम्पनी दगाबाज, मक्कार और विश्वासघाती है। सेना में देसी और अंग्रेज सिपाही, दोनों को दो आँखों से देखा जाने लगा। देसी सिपाहियों से मजदूरों–जैसे काम लिये जाने लगे। छावनी बनाना, छप्पर, खपरैल छाना, जमीन गोड़ना, घास काटना, झाडू–बुहारू देना, आम काम हो गया।

देसी सिपाहियों की जरा भी परवाह किये बिना सेना के अफसर रोज–रोज नये हुक्म निकालने लगे। मूँछ इतनी, दाढ़ी इतनी। पहले कान के पास कलम रख कर नीचे की दाढ़ी बनवाने का हुक्म निकला। फिर कानों में बालियाँ पहनने की मनाही हो गयी। परेड के समय माथे पर चन्दन–टीका लगाने पर सजा होने लगी। मरजी और कानून के खिलाफ देसी सिपाहियों को अफगान और ब्रहमदेश के युद्धों में जबर्दस्ती भेजा जाने लगा। गोरे–काले सिपाहियों में तनख्वाह का फर्क। देसी सिपाही जमादार के आगे नहीं बढ़ सकता, वह चाहे जितना बहादुर और होशियार हो। अंग्रेज अफसर सिपाहियों को जबर्दस्ती बाइबिल पढ़ने का हुक्म देते हैं और ईसाई होने के लिए तरह–तरह के दबाव और लालच देते हैं।

गोरे अफसर देसी सिपाहियों को खुलेआम गालियाँ देते हैं। पलटन की छावनी में देसी सिपाहियों की दशा बद से बदतर होती रही। देसी सिपाही घोड़ों के लिए घास काट रहे हैं। वे ही साईस हैं। वे ही पीलवान हैं। वे ही हाथियों को चारा देते हैं। वे ही अंग्रेजों की खैरबन्दगी और खिदमतगारी का इन्तजाम करते हैं। कमसरियत में रसोइए और नौकर ही हैं। वे ही कैम्प की सफाई करते, वे ही छावनी बनाते, डेरे गाड़ते–उखाड़ते और वे ही चपड़कनाती नाम से पुकारे जाते हैं।

गोरे अफसर कहते हैं कि बिना देसी सिपाहियों, मतलब नौकरों, डोली उठाने वालों, मजदूरों की उनकी पलटन एक दिन भी हिन्दुस्तान की जमीन पर नहीं रह सकती।

'ब्राउन बेस' बन्दूक की जगह 'एनफील्ड राइफल्स' में चर्बी लगे कारतूसों के इस्तेमाल से हिन्दुस्तानी सिपाहियों को इसाई बनाने की चाल चली गयी। फिर मंगल पाण्डे के बलिदान से हर छावनी में जैसे आग लग गयी।

बाहर अचानक फकीर दुआशाह की हँसी सुनाई दी। राना बाबा सहित लोग खड़े हो गये। सब ने झुक कर दुआशाह को सलाम किया। दुआशाह बोले; अरे गंगादीन ! जा जल्दी जा, सुबह होते–होते यह अमल रोटी रायबरेली, हाँ, जा, निकल जा ! किसी के चक्कर में मत पड़।

गंगादीन फौरन अपने साथी के साथ वहाँ से चल पड़ा। पण्डित दुलीराम पुत्र के साथ गाँव के बाहर तक गये। विदा देकर उसी पंचपुरी में आये। लोग दुआशाह को घेरे हुए खड़े थे दुआशाह कर रहे थे, जिस माँ ने यहाँ के खेतों–मैदानों, बागों में, आग, पानी और हवा के रूप में घर–घर की प्यास और चाह मिटायी थी, वह कहाँ है ? वह कहाँ गयी ? जिसने पिता का आशीर्वाद, माँ की मुहब्बत, पति–पत्नी का धर्म बन, अभी कल तक हमारी जिन्दगी को सींचा, वह कहाँ है ? हिन्दुस्तान की हिन्दुस्तानियत, गंगा–जमुना, सरजू और गोमती के संगम पर बसा यह अवध, जिस दिन इस जमीन पर अंग्रेज के जहाज ने लंगर डाला, तब दो रुपये में एक दुधारू गाय, आठ आने में एक बकरा, दो आने में एक सेर घी, एक पैसे की एक मुर्गी, एक पैसा का एक सेर दूध ! जो भी बाहर से यहाँ आया, यहाँ की यह सस्ती–मस्ती देख कर ताज्जुब में पड़ गया। यहाँ के आसमान में चाँद हँसा तो वह हँसी धान के खेतों में, छप्पर के घर से लेकर राजा के महल तक एक–सी छिटक गयी। खेतों में फसल आयी तो गाँव के सारे देवी–देवता जाग जाते। ढोल, फाग, मजीरा, रास, नाच, गवाई, सुरबहार, सब बजने लगे। देखो, वह खड़ी है माँ !.....

देखो वह जा रही है, माँ ! माँ !

पुकारते हुए दुआशाह दौड़ पड़े।

नौ

अब तक राना बाबा की जीवन–यात्रा में कभी भी कोई सिरा टूट नहीं पाया था। जीवन हर रोज, हर मुहूर्त, निश्चित नियम में बँधा हुआ था। उस दिन बेनीमाधव ने हठात् आ कर कह दिया कि आयुष्मान रघुवीर का विवाह अभी नहीं, अगली लगन में होगा। तब राना बाबा के जीवन में पहली बार कुछ हिलडुल गया, पर टूटा तब भी नहीं।

विवाह रुकने की खबर पूरे शंकरपुर में फैल गयी। सब को विश्वास हो गया कि बस, लड़ाई अब शुरू होने जा रही है। अब कोई सन्देह नहीं रहा। सब से अन्त में यह खबर हंसगौरी के पास पहुँची। उसने अपनी सखी सोनपती से इतना ही कहा, बक ? इस 'बक' का मतलब सोनपती क्या जाने ! पूरे शंकरपुर में कोई क्या जाने कि हंसगौरी के शरदकाल का स्वर्णिम आलोक उसके साथ आँखों–आँखों में ही क्या बातें करता था, एक अनादिकालीन मन की बात।

अगले दिन से गौरी अपने कमरे के सामने वाले बरामदे में चावल की लाई बिखरा देती थी। न जाने कहाँ–कहाँ से पंछी आ कर उन्हें खाते थे। वह रोटी का टुकड़ा रख देती थी तो गिलहरी आकर पूँछ के ऊपर भार रख कर खड़ी हो जाती। आगे के दोनों पाँवों से रोटी को उठा कर कुटुर–कुटुर कर के खाती रहती। गौरी ओट में खड़ी हो कर निहारती रहती। अपने चारों ओर के संसार के प्रति गौरी का हृदय अनुकूलता से भरा हुआ था। सन्ध्या को शरीर धोने के समय खिड़की के सामने वाले पोखर में गले तक डूबी हुई चुप बैठी रहती। जल अब उस के सर्वांग से आलाप करता है।

रात में बिछौने पर बैठती है प्रणाम कर के। सुबह उठ कर बिछौने पर फिर बैठ कर प्रणाम करती है। किसे करती है ?.....वही 'बक'।

सोनपती हँसती ही रह जाती है।

शंकरपुर की पाठशाला में हिन्दू–मुसलमान, ब्राह्मण, ठाकुर, बनिया, चमार, नाऊ, धोबी सब तरह के लड़के पढ़ते हैं। पाठशाला की पढ़ाई दण्डस्वरूप नहीं है। मौज–मस्ती आनन्दस्वरूप है। जिस किसी भी बालक की इच्छा हो, वह बिना किसी रोक–टोक के सीधे गुरू जी के पास आये, आगे का काम गुरू जी, दुलीराम अग्निहोत्री का।

शेख खुदाबक्स अपने पाँच साल के लड़के चिराग को अपने साथ लिये पाठशाला आये। गुरू जी ने कहा, शेख साहब, आज शाम गदहबेरिया के बाद हम सब आप के घर आएंगे।

मेहरबानी, जरूर आइए।

गुरु जी पाठशाला के सारे बच्चों के साथ शेख साहब के घर पहुँचे। गोबर की गणेश की मूर्ति बनायी। फिर सब को गणेश की मूर्ति के चारों ओर गोले में बैठाया गया। और चिराग बक्स को मूर्ति के सामने गुरु जी के पास। गुरु जी ने चिराग की अँगुली थाम कर चावल में 'राम' नाम लिखवाया। फिर सब ने चिराग बक्स के यहाँ खाना खाया। बस, अगले दिन से चिराग की पढ़ाई–लिखाई शुरू।

दो घण्टा दिन चढ़ते पाठशाला खुलती। जो लड़का सबसे पहले पाठशाला आता, उसकी हथेली पर 'सरस्वती' लिखा जाता। कोई परीक्षा नहीं होती थी। गुरु जी ने जब देखा कि लड़के का रेत पर लिखने का अभ्यास पूरा हो चुका तो फिर पत्थर की काली सलेट पर खरिया से लिखा कर उसे आगे की शिक्षा देते। पाठशाला में सब बैठते एक ही स्थान पर। अलग–अलग कक्षाएँ नहीं होतीं। पहले व्यायाम, फिर प्रार्थना होती, जिस में गुरु समेत सभी बालक एक साथ गाते :

बलमेव विज्ञानात् भूयोऽपिह। शत विज्ञानवताम् एको
बलवान् आकमप्यते।
बलैनेव वै पृथ्वी तिष्ठति।
बलैनेव लोकःतिष्ठति। बलम् उपास्व इति।।

बल ही विज्ञान से श्रेष्ठ है। एक सौ विज्ञान वालों को कम्पायमान करता हैं। पृथ्वी बल ही पर स्थिर है। लोग भी बल ही पर स्थिर हैं। अतएव बलवान बनो।

न अयम् आत्मा बलहीनैन लभ्य :

यह आत्मा बलहीन को नहीं प्राप्त होता।

एक दिन गुरु जी पाठशाला से निकल ही रहे थे कि दायीं ओर से पुकार आयी, गुरु जी ! गुरु जी, गोहार लागो !

दौड़ा हुआ एक हट्टा–कट्टा आदमी आया, आ कर गुरु जी के चरणों में भहरा पड़ा। उसे उठाते हुए गुरु जी ने पहचान लिया–अरे रामजन, का है रे ?

तब तक दो कहारों की एक डोली सामने रुकी। रामजन ने बताया कि डोली में उसकी पत्नी है। पति–पत्नी में पटरी नहीं है। बड़ा झगड़ा है। कोऊ उपाय बताओं गुरु जी ! हम बहुत परेशान हैं।

यह कह कर रामजन गुरु जी को अपने साथ लिये आम के पेड़ के नीचे एकान्त में आया। अपनी समस्या बताने लगा कि कलकत्ते में उसे बहुत अच्छी नौकरी मिली है। वह कलकत्ता जाना चाहता है, पर उस की औरत कहती है कि अकेली छोड़ि के गये तो उसी दिन जहर खाइ लूँगी।

आखिर ऐसा क्यों ? क्यों बेटी ?

रामजन की औरत पर्दा उठा कर डोली से बाहर निकल आयी। पाठशाला के सारे लड़के दूर खड़े सारा दृश्य देख रहे थे। रामजन की स्त्री ने घूँघट उठा कर गुरु जी से कहा, हुआँ के मेहरारू इनका भेंड़ाकूकुर बनाय लइहें। ई हमार मरद बड़ा मुरहा है। हम खूब जानित हइ इनका हाल।

पण्डित दुलीराम अग्निहोत्री पति–पत्नी को समझाने लगे और अन्त में एक रास्ता सुझाया कि रामजन एक साद बाद कलकत्ते से आ कर अपनी पत्नी को ले जायँ, न हो तो नौकरी छोड़ दें। पति–पत्नी दोनों खुश। गुरु जी ने जो मार्ग दिखाया वही उत्तम। गुरु जी के चरण स्पर्श कर के चले गये।

गाँव के एक वृद्ध ने हाथ जोड़ कर कहा, हे भगवान, ऐसा गुरु हो जो सिर्फ पाठशाला तक का नहीं, पूरे जीवन–भर का गुरु हो। जिस पर शिष्य का इतना विश्वास–भरोसा हो.....।

पण्डित दुलीराम गाँव की गलियों से चले जा रहे थे। बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री–पुरुष जो भी उन्हें देखता, हाथ जोड़ कर कहता, पायँ लग्गों गुरु जी। पायँ छूओं पण्डित जी। कोई अपने दरवाजे पर पण्डित जी को रोक कर पूछता, पण्डित जी, कोउ उपाय बताओ, मन बड़ा परेशान है। गुरु जी कहते, अरे मेहनत कर। परिश्रम कर। हाथ पर हाथ धरे मत बइठ। मन कुछ नाहीं। मन झूठ है। परिश्रम कर, मन कहीं चला जाइगा। गुरु जी गा पड़ते :

जाग जाग जीव जड़
अरे जड़जीव तू जाग रे
कहें वेध तू तो इहि मन माहिं रे
दोष दुःख सपने के जागे ही पै जाहिं रे।

गाते–गाते गुरु जी देवी पुरवा के तालाब पर पहुँच जाते। जैसे–जैसे साँझ घिरती, लोग वहाँ घिरते चले जाते। गुरु जी जन समूह के बीच बात शुरू करते :

हर कोई कह रहा है कि अन्धकार फैला हुआ है। ई कैसे दूर हो। एक दिन ऐसा हुआ कि सूरज लोक से एक आदमी गिरा और पृथ्वी पर आ गया। उस के साथ दो–तीन साथी थे। पृथ्वी पर उन्होंने रात में देखा कि तमाम कचरा ही कचरा है। ये लोग खोदने लगे कचरा। खोद–खोद कर सारा कचरा टोकरी से भर कर फेंकने लगे। खोदने की आवाज जोर से होने लगी। उस आवाज से आसपास के लोग जाग गये। लालटेन लेकर आये कि देखें क्या है। जैसे ही लालटेन की रोशनी आयी, सारा कचरा गायब हो गया।..... तो प्रकाश के सामने अँधेरा तो गायब हो ही जाता है।.....

.....अँधेरा जितना गहरा होगा, जितना पुराना होगा, प्रकाश के आगे उतना ही कमजोर होगा। घनघोर गुफा में जो अँधेरा भरा रहता है, वह हजारों वर्षों से है, लेकिन उस में एक चिराग लेकर चले जाइए, अँधेरा एकदम खतम।

.....अँधेरा है भाई..... इसलिए कि हमारे पास प्रकाश नहीं है। कुदार से खोदने पर अँधेरा नहीं जाएगा।.....

.....राहु–केतु थे न ! राहु यानी सिर ही सिर, उस को रण्ड नहीं, सिर्फ मुण्ड। और केतु यानी रण्ड ही रण्ड, नीचे का हिस्सा, उस के मुण्ड नहीं। क्या मतलब ? एक सिर, एक धड़। एक ज्ञान, एक कर्म।

ऊपर के लोग राहु बनेंगे। नीचे के लोग केतु। गाँव के लोग केतु और शहर के लोग राहु। ऐसा राहु–केतु समाज बनेगा तो क्या होगा ? अर्जुन से श्री कृष्ण भगवान उन्नीस साल बड़े थे। महाभारत की

लड़ाई में अर्जुन ने कृष्ण से कहा कि भइया, मेरा रथ हाँकोगे तभी लड़ाई लडूँगा, हाँ। कुल तीन ही अति उत्तम सारथी थे– कृष्ण, सुभद्रा और शल्य, हाँ !

.....हाँ, तो कृष्ण सारथी बन गये अर्जुन के। दिन में सारथी। सन्ध्या समय घोड़ों की मालिश और समय आने पर भगवद्गीता कहना, ज्ञान और कर्म दोनों।

रात का समय।

रघुवीर दूर से ही घोड़े से उतर कर गुरु जी के पास आया। गुरु जी, लड़ाई का डंका बज गया।

गुरु जी ने कहा, यह लड़ाई विचित्र है। ऐसा कभी न देखा होगा। एक ओर आपस में फूट है, एक–दूसरे पर विश्वास नहीं है, दूसरी ओर जहाँ सब–कुछ एक है, इतना आत्मविश्वास है। फिरंगियों ने देखा, यहाँ सब–कुछ टूटा–फूटा, छितराया पड़ा है। सब लोग एक–दूसरे से जलते हैं। चुगली खाते हैं। एक–दूसरे के खिलाफ परवाने लिख कर एक ओर दिल्ली के बादशाह को भेजते हैं, तो दूसरी तरफ कलकत्ते के सामने पूँछ हिलाते हैं। यह कैसा देश है ? सब का अपने–आप पर से, दूसरे पर से विश्वास उठ गया है.....। अजीबोगरीब है यह लड़ाई। देखना है..... कहते–कहते दुलीराम अग्निहोत्री अचानक चुप हो गये।

दस

सर हेनरी लारेन्स अवध का चीफ कमिश्नर था। 12 मई 1857। लखनऊ में उसने बहुत बड़ा दरबार किया, जिसमें उसने हिन्दुस्तानी जबान में एक जोरदार भाषण दिया। अपने भाषण में उसने हिन्दू–मुसलमान सिपाहियों को कम्पनी सरकार की वफादारी का महत्व दर्शाया। उसने मुसलमान सिपाहियों से कहा कि पंजाब में महाराणा रणजीत सिंह ने इसलाम धर्म की कितनी तौहीन की थी। और हिन्दुओं को याद दिलाया कि सम्राट औरंगजेब ने हिन्दू धर्म पर किस तरह कुठार चलाया था। और उसने दोनों को बताया कि केवल अंग्रेज ही एक–दूसरे से लोगों की रक्षा कर सकते हैं। इसके बाद उसने अपने खैरख्वाह सिपाहियों को दुशाले, तलवारें और पगड़ियाँ इनाम में दीं।

इन बातों का प्रभाव और अधिक बुरा हुआ। हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों को पूरी तरह दिखाई दे गया कि अंग्रेज किस प्रकार हमें पुराने झगड़ों की याद दिला कर और आपस में लड़ा कर दोनों को गुलाम बनाये रखने की तरकीब कर रहे हैं।

ठीक तीस मई की रात के नौ बजे छावनी की तोप छूटी। लड़ाई छिड़ने का यही निशान नियत था। सबसे पहले इकहत्तर नम्बर पलटन की बन्दूकों की आवाज सुनायी दी। फिर आगजनी, मारकाट शुरु।.. ...

इकतीस मई को सबेरे हेनरी लारेन्स ने कुछ गोरी सेना और सात नम्बर देशी सवार पलटन को साथ ले कर विप्लवकारियों पर हमला किया। रास्ते में राना बेनीमाधव और उतनी बड़ी सेना को देखते ही इस पलटन ने भी कम्पनी का झण्डा फेंक कर क्रान्ति का हरा झण्डा हाथ में ले लिया। लारेन्स को अपने थोड़े से अंग्रेज सिपाहियों सहित रेजिडेन्सी में आ कर शरण लेनी पड़ी।

इकतीस मई शाम तक, अड़तालीस और इकहत्तर नम्बर पैदल और सात नम्बर सवार और अन्य देशी पलटनों में भी स्वाधीनता का हरा झण्डा फहराने लगा।

दस जून तक सारा अवध अंग्रेजी राज के चुंगल से निकल गया। सिर्फ लखनऊ शहर की रेजिडेन्सी में, जहाँ अंग्रेज ने शरण ले रखी थी, वहाँ लड़ाई अब भी चल रही थी। राना बेनीमाधव के नेतृत्व में अवध के तालुकेदारों, राजाओं के सिपाही, वीर लड़ाके, सहस्त्रों की संख्या में अब लखनऊ मं बेगम हजरतमहल के झण्डे के नीचे आ कर जमा हो गये।

लखनऊ के अन्दर सारी अंग्रेजी सत्ता रेजिडेन्सी में कैद थी। उसमें करीब एक हजार अंग्रेज और आठ सौ हिन्दुस्तानी थे। अस्त्र–शस्त्र ओर रसद का सामान काफी था।

शेष लखनऊ और पूरे अवध पर वाजिदअली शाह के पुत्र शहजादा बिरजिस कदर की ओर से बेगम हजरत महल का शासन कायम हो गया।

लेकिन यह सब इतनी आसानी से नहीं हुआ, जैसा कि सुनने वालों को लगता है। बहुत मुश्किल से हुआ।

राना बाबा ने रघुवीर से कहा था कि न जाने कितनी काइयों के पर्त जमे, बरसों के बन्द तालाब में पत्थर फेंकने से जिस तरह काई फटती है और जल हिल–डुल जाता है, ठीक इसी प्रकार सदियों से जड़ भारत देश, अंग्रेजों से आघात पाकर थोड़ा तरंगित हो गया है। अंग्रेज बहाना बन गये। उनके बहाने इस देश के हर वर्ग के स्त्री–पुरुष ने अपनी न जाने कितनी कुण्ठाओं को तोड़ कर विद्रोह प्रकट किया था।

राना बेनीमाधव के अंगरक्षक टिकैतराय ने राना बावा को बताया कि राजा नुसरतगंज महमूद खाँ को साथ ले कर राना बेनीमाधव के बहुत समझाने–बुझाने और तमाम कोशिशों के बाद एक मकान में सब बेगमात इकट्ठा हुई। शक शुबहे पेश हुए।

एक बेगम ने कहा, अगर यहाँ किसी को गद्दी पर बिठाल कर अंग्रेजों से लड़ाई ठानी और कलकत्ते में अंग्रेजों ने नवाब शाह को मार डाला तो क्या होगा ? मगर बेगम हजरत महल ने किसी की न सुनी।

7 जुलाई 1957 को चाँदी वाली बारादरी में बिरजिस कद्र की ताजपोशी हुई। देशी सेना के सिपहसालार बरकत अहमद और तालुकेदारी ताकत के सेनापति राना बेनीमाधव ने बिरजिस कद्र को राज मुकुट पहनाया, इकतीस तोपों की सलामी सर की गयी। बिरजिस कद्र के नाम का सिक्का जारी हुआ। सल्तनत के नये ओहदेदार मुकर्रर हुए। सूबे से मालगुजारी वसूल होने लगी। अहमदउल्लाह शाह जो फैजाबाद के बागियों के साथ आये थे और कई लड़ाइयाँ लड़ चुके थे, खुद अपनी हुकूमत कायम करना चाहते थे। बिरजिस कद्र के मुकाबले लखनऊ ही में उनका दरबार अलग कायम था और दोनों दरबारों में राजनीतिक विरोध के साथ शिया–सुन्नी का झगड़ा और तास्सुब भी सामने आने लगा। सैनिक पंचायत और बिरजित कद्र सरकार के बीच रस्साकसी होने लगी।

यह भी तै नहीं हो पाया था कि बिरजिस कद्र को अवध का बादशाह बनाया जाय या दिल्ली के शहन्शाह की परिपाटी में उनकी पदवी नवाब वजीर की रहे। बहरहाल, जो हुआ वही क्या कम हुआ, फिर से दुबारा उन ग्यारह महीनों की नवाबी में !

फैसला हुआ कि सिपाहियों की तनख्वाह दूनी कर दी जाय और तनख्वाह की जो रकम कम्पनी सरकार में डूब गयी है, वह भी अदा की जाय।

हुक्मनामा जारी हुआ कि तेरह नयी पलटनें भरती हों।

एक–दूसरे हुक्मनामे के तहत अवध के खास–खास तालुकेदारों को अपनी सेनाएँ ले कर लखनऊ में आने का पैगाम दिया गया।

गोण्डा के राजा देवीबख्श सिंह तीन हजार सैनिक ले कर आये। गोसाईगंज के तालुकेदार अनन्दी और खुशहाल चार हजार सैनिक ले कर आये। सेमरौता–चन्दापुर के राजा शिवदर्शन सिंह, दस हजार सैनिकों के साथ और वहाँ के जमीन्दार रामबख्श, तीन तोपें और दो हजार फौज लेकर आये। अमेठी के राजा लालमाधो सिंह चार तोपों, दो सौ घुड़सवार और पाँच हजार पैदल सेना सहित आये। बैसवाड़ा के तालुकेदार राना बेनीमाधव सिंह पाँच तोपों और पाँच हजार सैनिकों के साथ आये। राजा नानपारा के कारिन्दा कल्लू खाँ, दस हजार सैनिकों के साथ, खजूर गाँव के राना रघुनाथ सिंह चार तोपों और दो हजार सैनिकों के साथ आये। इसी तरह आयोध्या, सुल्तानपुर, बाराबंकी, सण्डीला, रसूलाबाद के राजा, नवाब, चौधरी सब आये। इस तरह अवध के राजे, तालुकेदारों, चौधरी, चकलेदारों की जो सेनाएँ अवध की राजधानी लखनऊ में एकत्र हुई थीं, संख्या में एक लाख पचास हजार पाँच सौ थीं।

गंगादीन ने राना बेनीमाधव से पूछा, इतनी बड़ी सेना ले कर भी हम रेजिडेन्सी के मुट्ठी–भर गोरों और गोरापरस्तों से जीत नहीं पा रहे, इसका कारण क्या है ? राना ने उत्तर दिया, अभी कारण समझने–समझाने का वक्त नहीं है। गंगादीन ने वही सवाल रघुवीर से किया।

रघुवीर ने राना बाबा से वही सवाल किया। राना बाबा उदास स्वर में बोले, ऐसा लगता है मानो दस हजार हाथियों के बराबर बलशाली भीम गहरे दलदल में फँस गया है। दलदल से उबरने के लिए वह अपनी जितनी अधिक ताकत का इस्तेमाल करता है, उतना ही वह गहरा धँसता चला जाता है।.....उम्दा घड़ी के बेशकीमती पुर्जे मौजूद हैं। मगर सब बिखरे हैं। उन्हें एक साथ जोड़ने और बैठाने वाला मिस्त्री नहीं है। हर्षवर्धन से ले कर पृथ्वीराज, सांगा और आज तक यही बात दिखती है।

रेजिडेन्सी पर बराबर हमले होते रहे। भरपासी जाति के कुछ लोग लुटेरे जरूर थे, पर उनमें कुछ वीर पुरुष भी थे। कुछ तो सुरंगें उड़ाने में बडे पटु थे। वही बेलीगारद वालों को नुकसान पहुँचा रहे थे।

अगस्त में कानपुर से हैवलाक की सेनाओं के इधर आने की खबर गर्म थी। बेगम, राना, मम्मू खाँ और जनरल बरकत अहमद ने तै किया कि गोरों की नयी सेना आने से पहले बेलीगारद पर कब्जा कर लेना चाहिए।

दस अगस्त को सब पलटनें और रिसाले अपनी–अपनी जगह धावे के लिए तैयार होने लगे। राना और बरकत अहमद फौजें लेकर बेलीगारद की ओर बढ़े। हिन्दू–मुसलमान सारे तिलंगों ने बम महादेव का नारा लगाते हुए रेजिडेन्सी को घेर लिया। इतने में मौलवी अहमदुल्ला दौड़े हुए आये। उन्होंने कहा कि यह धावा नाहक हो रहा है। जब तक मैं न कहूँ, कुछ न हो।

मौलवी साहब का सिपाहियों पर प्रभाव था। सो तोपखाने के रिसालों ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। तिलंगे तब तक बेलीगारद की दीवार तक पहुँच गये। एक सुरंग में बत्ती दी गयी। पर वह न उड़ी। तिलंगे दीवार खोदने लगे। कुछ गिरजाघर और कुछ खजाने की ओर बढ़े।

पर कोई बेलीगारद को बेध नहीं पा रहा था, यह एक अजीब बात थी। जैसे ही उस दिन फौज चुप हुई, अंग्रेजों ने भीतर से जवाबी कार्रवाई की, जिसमें दो सौ बीस तिलंगे मारे गये और एक सौ पाँच घायल हुए।

फूट का बाजार शुरू से ही गर्म था। पूरी अवध सेना का संगठन और संचालन किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं था। जनरल बरकत अहमद, जिनकी जंगी सूझबूझ से चिनहट में विजय मिली, उनमें और राना बेनीमाधव में इस बात को ले कर तकरार थी कि तालुकेदारों की सेना का सिपहसालार कौन है ? दूसरी ओर मम्मू खाँ चूँकि बेगम की कमजोरी थे, इसलिए वह भी महाधमण्डी थे। इतना ही नहीं, सैनिक पंचायत के अन्य अफसर भी अपना महत्व जतलाये बिना कैसे रहते ?

नवाब के महलों में भी आपसी जलन और तू–तू, मैं–मैं का बाजार गर्म था। एक दिन कई बेगमात मिल कर हजरत महल के पास आयीं, कहा कि बेलीगारद के अंग्रेज को मारने का बदला वाजिदअली शाह और कलकत्ते में रहने वाली शाही टोली को मार कर न लिया जाय, इसलिए तुम इस सल्तनत को चूल्हे में डालो। हजरत महल बोलीं, मालूम हुआ तुम सब लोग जलती हो। बड़ी कहासुनी हो गयी। फौज के अफसरों तक बातें पहुँची। उन्होंने कहा कि बेगमात अंग्रेजों से मिल गयी हैं, उन्हें महलों से बाहर निकाला जाय। आपसी फूट की बातें अफवाहों की सूरत में सिपाहियों तक पहुँचती जिनका असर बुरा पड़ता था।

सरकारी खजाने में रुपया नहीं था। जुलाई में बिरजिस कद्र के गद्दीनशीन होने के बाद से ही बेगम को रुपयों की चिन्ता थी। तिलंगे शहर में लूटपाट मचा रहे थे। नगर की जनता में बड़ा असन्तोष था। एक दिन बिरजिस कद्र को घोड़े पर बेगम ने तिलंगों को समझाने के लिए भेजा। तैंतीस तोपों की सलामी सर की गयी। तिलंगों ने बड़े अदब से शासक की बातें सुनीं और वचन दिया कि भविष्य में शहर नहीं लुटेगा, लेकिन हमारे पेट की सुध ली जाय।

बेगम साहबा के पास कुल चौबीस हजार रुपये थे, जो खर्च हो चुके थे। खजाने के मालिक से खजाना माँगा गया। उन्होंने कहा कि सोने–चाँदी के असबाब के सिवा खजाने में और कुछ नहीं। उनसे चाभियाँ ले कर उन सोने–चाँदी की चीजों को गलाकर सिक्के ढालने का आयोजन हुआ। अफसरों ने नवाब माशूक महल का घर लूटा। नवाब के खजाने का भेद सात फीसदी कमीशन पाने की लालच में भेदियों ने मम्मू खाँ को बतला दिया। रात में मम्मू खाँ, राजा जयलाल, यूसुफ खाँ, हैदर खाँ आदि नवाब के घर गये। एक सहनची खोदी गयी, पाँच लाख रुपया निकला। इनमें से कुछ सरकार में पहुँचा, कुछ मम्मू खाँ के घर पहुँच गया।

सैयद कमालुद्दीन ने मम्मू खाँ पर लूट का इल्जाम लगाया। कमालुद्दीन के अनुसार मम्मू खाँ ने तिलंगों की लूट को इस तरह से बढ़ाया दिया कि वे लूट का धन सरकार में जमा करते रहें। एक दिन तिलंगे नवाब मुमताजुद्दौला के यहाँ से पचास हजार का माल लूट लाये और सरकार में जमा कर दिया। नवाब अफसर बहू का माल लूटा। शहर के रईस लूटे गये, शाही बेगमात ने तिलंगे द्वारा सताये जाने की शिकायत मम्मू खाँ से की, मगर उन्होंने ध्यान न दिया।

रुपये–पैसे का अभाव, बेगमात में जलन, सलाहकारों में फूट, फौज में खींचतान, शिया–सुन्नी सवाल, शहर में लूटपाट, अमीरों में असन्तोष, प्रजा में भय, इन सब के साथ रेजिडेन्सी की लड़ाई चल रही थी जिसे चलाते रहना जिन्दगी–मौत से भी ज्यादा आन की बात थी।

बेगम हजरत महल ने केवल मम्मू खाँ, मौलवी साहब, जनरल, साहबान, सूबेदार साहबान के भरोसे बैठे रहना अकलमन्दी न समझा। उन्होंने विभिन्न इलाकों के नाजियों, चकलेदारों को संगठित किया। प्रमुखतम हिन्दू सामन्त का सहयोग प्राप्त किया। इनकी सेनाओं का बराबर लड़ने के वास्ते आते रहना फौजी संगठन को भी एक बने रहने की प्रेरणा अवश्य देता था। मौलवी अहमदुल्ला शाह भी आपसी दिलशिकनी भूल कर अपने जौहर दिखलाने के आवेश में आ जाते थे। उनके चरित्र का राष्ट्रीय विकास ही

तब से आरम्भ होता है जब से वे स्वदेश रक्षक हिन्दू सामन्तों, विशेष कर राना बेनीमाधव के सम्पर्क में आते हैं ! बैसवाड़े के प्रमुख राजा माधव, कैकववारी प्रमुख हरदत्त सिंह, गोण्डा के राजा देवीबख्श सिंह बिसेन, जनवार, जहिबन, गौड़, कनपुरिया आदि अवध के समस्त क्षत्रिय सामन्त मण्डल का सहयोग प्राप्त कर लेना आसान बात न थी, खास तौर पर जब कि हाल ही में अयोध्या में जेहाद' हो चुका था।

महलों की बाँदियाँ बेगम हजरत महल की निगरानी में कवायद इत्यादि करती थीं और उनकी शागिर्द कहलाती थीं। स्त्री जासूसों का अच्छा संगठन भी उनके द्वारा किया गया था। निराशाजनक स्थिति में भी क्रान्ति–भावना को अवध में पौने दो वर्ष तक जगाये रखना बेगम का ही काम था। बेगम नाना और तात्या से भी क्रान्ति के सिलसिले में बराबर मिलती–जुलती रहीं। कोई आश्चर्य नहीं जो उन्होंने नाना की मुँह बोली बहन छबीली की स्फूर्तिदायिनी बातें सुनी हों। आड़े समय में क्रान्तिकारी एक–दूसरे के व्यक्तित्व से प्रेरणा ले कर ही अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं।

जुलाई, अगस्त और आधे सितम्बर तक तूफानी समुद्र में सल्तनत की झँझरी नाव ले कर भी बेगम बड़े साहसपूर्वक आगे बढ़ती रहीं। मीर फिदाहुसैन कप्तान, उनके भाई मुहम्मद हुसैन नाजिम, अब्दुल हादी खाँ, मुहम्मद मिर्जा, शरफुदौला–सभी बेगम से ही नया बल प्राप्त कर आपसी शिकायतों को नजर–अन्दाज कर स्वतन्त्रता संग्राम में आगे बढ़े। राजा जयलाल सिंह ने बड़ा साथ दिया। जब हैवलाक की सेनाओं के उन्नाव तक पहुँचने की सूचना पा कर तिलंगे लखनऊ की नाकेबन्दी छोड़ कर भागने लगे, तब राजा जयलाल ने अपना पहरा मुकर्रर किया। इस बीच रेजिडेन्सी पर जोरदार हल्ले होते ही रहे। सत्तासी दिनों के घेरे के बावजूद हर तरह से टूटे मुट्ठी भर गोरों को नहीं हराया जा सका।

इक्कीस सितम्बर को हैवलाक और आडट्रम की सेनाएँ लखनऊ के लिए चलीं। मगरवारा और बंसीरतगंज में विजय–लाभ करते हुए अंग्रेज सई नदी के किनारे बनी में पहुँच गये और तेइस तारीख को लखनऊ की ओर बड़े। शहर में घबराहट फैल गयी। उनमें कर्म प्रेरणा भरने के लिए शहर में मुनादी की गयी कि अंग्रेज जीतेंगे तो रिआया को ईसाई बनाएंगे। पोस्टर चिपकाये गये कि अंग्रेज जीते तो स्त्री–पुरुष–बच्चे किसी को भी जीवित नहीं छोड़ेंगे। दिल्ली, मेरठ, कानपुर सब जगह इन्होंने प्रजा की भयंकर दुर्दशा की है।

तिलंगों को सम्भवतः वेतन नहीं मिला था अथवा किसी और वजह से उन्हें सरकारी व्यक्तियों से बड़ी शिकायत थी। वे लड़ने तो जा रहे थे, पर सरकार ए–बिरजिस के प्रति असन्तोष ले कर पानी जोरों का बरस रहा था। सेनाओं में पूरा जोश नहीं था। बेगम के आग्रह पर मम्मू खाँ और जनरल हिसामुद्दौला तिलंगों का हौसला भी बढ़ाने के लिए एक गाड़ी पर सवार होकर गये। मीर ने वाजिदअली से साथ चलने को कहा, वे बोले कि हम तिलंगों की गालियाँ सुनने नहीं जाएंगे, अगर लड़ने के लिए जाते हो तो साथ देने को तैयार हैं।

सैयद कमालुद्दीन के अनुसार गाड़ी पर जाते हुए मम्मू खाँ और जनरल हिसामुद्दौला ने तिलंगों से इतनी गालियाँ सुनीं कि भाग कर एक मस्जिद में बैठे रहे।

23 फरवरी 1958 को कैम्पबेल सत्तरह हजार पैदल, पाँच हजार सवार और एक सौ चौंतीस तोपों सहित कानपुर से लखनऊ की ओर बढ़ा। इतनी विशाल सेना अवध के मैदानों में कभी नहीं दीखी थी। इस सेना में अधिकतर अंग्रेज, सिख और अन्य पंजाबी थे। किन्तु यह विशाल सेना भी लखनऊ को फिर से विजय करने के लिए काफी नहीं समझी गयी। पूर्व की ओर से सेनापति जंगबहादुर के अधीन विशाल गोरखा सेना, उत्तर से जनरल फ्रैंक्स के अधीन एक सेना और दक्षिण से जनरल रो क्राफ्ट के अधीन दूसरी सेना लखनऊ की ओर बढ़ी चली आ रही थीं।

अवध की सेना बंगाल से अधिकांश विद्रोही रेजिमेण्टों के अवशेषों तथा उसी इलाके में इकट्ठे किये गये देशी रंगरूटों को ले कर बनी थी। बंगाल के विद्रोही रेजिमेण्टों में आये हुए लोगों की संख्या पैंतीस या चालीस हजार से अधिक नहीं हो सकती थी। आरम्भ में इस सेना में अस्सी हजार आदमी थे। युद्ध की मार–काट, सेना त्याग तथा पस्तहिम्मती की वजह से इसकी शक्ति कम–से–कम आधी घट गयी होगी। जो कुछ बच रही थी, वह भी असंगठित थी, आशा–विहीन थी, बुरी हालत में थी और युद्ध के मोर्चों पर जाने के सर्वथा अयोग्य थी। नयी भरती की गयी फौजों के सैनिकों की संख्या एक लाख से डेढ़ लाख तक बतायी जाती है, किन्तु उनकी संख्या कितनी थी, यह महत्वहीन है। उनके हथियारों में कुछ बन्दूकें थीं, वे भी रद्दी

किस्म की। परन्तु उनमें से अधिकांश के पास जो हथियार थे, उनका इस्तेमाल बिल्कुल पास की लड़ाई में ही किया जा सकता था जैसी लड़ाई की सबसे कम सम्भावना थी। इस सैनिक शक्ति का अधिकांश भाग लखनऊ में था, जो आउट्रम के सैनिकों को मुकाबला कर रहा था, लेकिन उसकी दो टुकडियाँ इलाहाबाद और जौनपुर की दिशा में भी काम कर रही थीं।

लखनऊ को चारों तरफ से घेरने का अभियान फरवरी के मध्य में आरम्भ हुआ। पच्चीस तारीख तक मुख्य सेना और उसके नौकरोंचाकरों की भारी संख्या (जिनमें साठ हजार तो केवल सफरी सामान ले चलने वाले अनुचर थे) कानपुर से अवध की राजधानी की तरफ कूच करती रही। रास्ते में उसे कहीं विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। इसी बीच, सफलता की जरा भी आशा के बिना, विद्रोहियों न आउट्रम के मोर्चे पर हमला बोल दिया। पर उनकी दोनों सेनाओं को उसने एक ही दिन हरा दिया और फिर घुड़सवारों के अभाव में जितनी भी अच्छी तरह कर सकता था उनका पीछा किया। उनकी तोपें, खेमा तथा सारा सरोसामान नष्ट हो गया। जनरल होप ग्राण्ट मुख्य सेना के अगले भाग का नेतृत्व कर रहा था। कूच के समय मुख्य सेना से अलग हो कर लखनऊ से रुहेलखण्ड को जाने वाली सड़क पर स्थित दो किलों को उसने तहस–नहस कर दिया।

दो मार्च को मुख्य सेना लखनऊ के दक्षिण भाग में केन्द्रित कर दी गयी। नहर इस भाग की हिफाजत करती है। शहर पर अपने पिछले हमले के समय कैम्पबेल को इस नहर को पार करना पड़ा था। नहर के पीछे खन्दकें खोद कर मजबूत किलेबन्दी कर ली गयी। अंग्रेजों ने दिलकुशा पार्क पर कब्जा कर लिया। तभी ब्रिगेडियर फ्रैंक्स मुख्य सेना में आ मिला। स्वयं उसके दाहिनी तरफ उसकी सहायक गोमती नदी थी। इसी बची दुश्मन की मोर्चाबन्दी के खिलाफ बेट्रियाँ–तोपें अड़ा दी गयीं, गोमती पर पानी में तैरने वाले दो पुल बना लिये गये। ये पुल ज्यों ही तैयार हो गये, त्यों ही, पैदल सेना के अपने डिवीजन चौदह सौ घोड़ों और दो सौ तोपों को लेकर, सर आउट्रम उत्तर–पूर्वी किनारे पर, मोर्चा लगाने के लिए नदी के पार चले गये। इस स्थान से नहर के किनारे–किनारे फैली हुई दुश्मन की सेना के एक बड़े भाग को तथा उसके पीछे के कई किलाबन्द महलों को वह घेर ले सकता था। यहाँ पहुँच कर अवध के पूरे उत्तर पूर्वी भाग के साथ दुश्मन के संवाद–संचार के साधनों को भी उसने काट दिया। इसी बीच, दाहिने तट की बैट्रियों ने गोलन्दाजी शुरू कर दी थी। नदी के पट पर स्थित आउट्रस की बैट्रियों ने विद्रोहियों पर प्रहार करना शुरू कर दिया। सर लुगर्ड के मातहत दूसरे डिवीजन ने मारटीनियर पर धावा कर के उसे अपने अधिकार में ले लिया।

आउट्रम नदी के किनारे बढ़ता गया और विद्रोही जहाँ भी पड़ाव डालते, वहीं अपनी तोपों से उनको भूनने लगता। बयालीसवीं और तेइसवीं पहाड़ी रेजिमेण्टों ने बेगम के महल पर हमला कर दिया और आउट्रम ने नदी के बायें किनारे से, शहर जाने वाले पत्थर के पुल पर हमला बोल दिया। फिर अपने सैनिकों को उसने नदी के पार उतार कर अगली इमारत के खिलाफ हमले में शामिल हो गया। फिर किलाबन्द इमामबाड़े पर हमला कर दिया। तोपखाने को सुरक्षित स्थान में खड़ा करने के लिए एक खाई खोद ली गयी थी और, अगले दिन सेंध के तैयार होते ही इस इमारत पर धावा करके कब्जा कर लिया गया। उसने बादशाह के महल, मेसरबाग की तरफ भागते हुए दुश्मन का पीछा इतनी तेजी से किया कि भगोड़ों की पीछे–पीछे अंग्रेज भी उसके अन्दर घुस गये। एक महल तीसरे पहर तक अंग्रेजों के कब्जे में आ गया था। लगता है कि इसके बाद प्रतिरोध की सारी भावना खत्म हो गयी। कैम्पबेल ने भागने वालों का पीछा कर के पकड़ने की कार्रवाई फौरन शुरू की। घुड़सवारों के एक ब्रिगेड व कुछ तोपों के साथ ब्रिगेडियर केम्पबेल को उनका पीछा करने के लिए भेजा गया। इधर ग्राण्ट एक–दूसरे ब्रिगेड के साथ लखनऊ रुहेलखण्ड मार्ग पर सीतापुर की ओर विद्रोहियों को पकड़ने के लिए चल पड़े। इस प्रकार गैरीसन के उस भाग को, जो भाग खड़ा हुआ था, ठिकाने लगाने की व्यवस्था कर के पैदल सेना तथा तोपखाना शहर के भीतर उन लोगों का सफाया करने के लिए आगे बढ़े जो अब भी वहाँ जमे हुए थे। पाँच दिनों तक लड़ाई मुख्यतया शहर की संकरी गलियों में ही होती रही, क्योंकि नदी के किनारे के महलों और बागों पर तो पहले ही अंग्रेजों का कब्जा हो गया था। उन्नीस मार्च को पूरा लखनऊ कैम्पबेल के अधिकार में था।

अंग्रेज जीत गये। रेजिडेन्सी आजाद हो गयी। फिर लखनऊ में कत्लेआम ! तीन दिनों तक लूट ! पहले दिन लखनऊ शहर को सिखों और दस नम्बर पलटन ने लूटा। दूसरे दिन गोरखों ने। और तीसरे दिन अंग्रेजों ने।

राना बेनीमाधव ने पीछा कर रही अंग्रेजी सेना को चकमा दे कर अपने सिपाहियों सहित चुपके से लखनऊ में प्रवेश किया। शाहदतगंज में विजयी अंग्रेज सेना से मोरचा लिया। पर वहाँ सब कुछ असम्भव देख कर राना फिर लखनऊ से गायब हो गये।

राना बेनीमाधव कहाँ है ?

राना बेनी किधर है ?

कर्नल नील, मेजर रिचर्डसन, और ब्रिगेडियर रोक्राफ्ट, इन तीनों जंगबाजों ने अंग्रेज सिपाहियों की शक्ति के साथ उत्तर, दक्खिन, पूरब इन तीनों दिशाओं से रायबरेली, शंकरपुर के पूरे क्षेत्र में घेरे डाले। पर कहीं राना का पता न चला। उस घेरे बन्दी में इन तीनों सिपहसालारों की भेंट बिड़हर के तालुकेदार माधो प्रसाद और गोपालपुर के रईस हुजूर सिंह हुई। इन दोनों ने अपनी–अपनी पगड़ी उनके कदमों पर रख कर दोस्ती की भीख माँगी।

ग्यारह

शंकरपुर की अमराई में अचानक पपीहा बोला, पी कहाँ.....पी कहाँ ? अमराई की ठण्ढी छाया पास के पोखर की सीढ़ियों पर गलीजे की तरह बिछी हुई थी। अपनी सखियों के साथ उन सीढ़ियों पर बैठी हुई हंसगौरी अपने गीले केश सुखा रही थी। पपीहा फिर बोला, पी कहाँ ?

इस बार पपीहे की बोल सुन कर हंसगौरी काँप उठी। पोखर के जल में एकटक निहारने लगी।

हर वर्ष पपीहा पहली बार मृगदाह नक्षत्र में बोलता है, सो भी इस अमराई में नहीं, सई नदी के तट पर उँआरे के जंगल में। दूसरी बोल वह आर्द्रा नक्षत्र में भवानी टीले पर बोलता है। पुनर्वसु में वह राना बेनीमाधव की गढ़ी के आसमान में बोलता चला जाता है। पुष्य–अश्लेषा में वह सोनपत्ती के बाप दादा की बखरी पर बैठ कर बोलता है। और मघा की वर्षा में वह पंख खोल कर नहाता है। तब तक शंकरपुर की धरती गीली और मीठी हो जाती है। पर तब भी स्वाती नक्षत्र बहुत दूर–दूर ही रह जाता है।

हंसगौरी के मुँह से निकला, यह पपीहा भला मृगदाह में, वह भी इस अमराई में क्यों बोला ? वर्षा के नक्षत्र तो आर्द्रा से शुरू होते हैं।

सोनपत्ती ने आश्चर्य–भरे स्वर में कहा, वह देखो सखी वह, कौन आ रहा है ?

चिलचिलाती धूप में रघुवीर नंगे पाँव खाली खेतों के बीच की पगडण्डी से बड़ी शान्ति के साथ चला आ रहा है। उसके पीछे–पीछे सुसज्जित घोड़ा, जिसकी लगाम पैदल चलते हुए साईस के हाथ में थी, सधे कदमों के साथ आ रहा था। रघुवीर ज्यों–ज्यों पोखर के करीब आता गया, हंसगौरी की चितवन नीचे झुकती चली गयी।

अमराई की छाया में रघुवीर क्षण भर के लिए खड़ा हो गया। विस्मयभरी तन्मयता से हंसगौरी को एकटक निहारता रहा। सहज ही उसकी आँखें नीचे झुकीं और वह तेजी से अमराई के नीचे–नीचे चलने लगा। उसके पीछे–पीछे चलता हुआ घोड़ा हिनहिनाया, तीनों सखियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं।

भरे सरोवर में अधखिले कमल जैसे हंसगौरी के गम्भीर मुख को देख कर सोनपत्ती साँस खींचती हुई बोली, हाय दइया। सोनपत्ती हंसगौरी को छेड़ने लगी। हंसगौरी पोखर के पास गयी। अँजुरी में जल भर कर उसमें अपनी आँखें डुबोती रही।

हंसगौरी बोली, आज उन्हें इतना उदास देखा। खुद पैदल, घोड़ा पीछे–पीछे। पता नाहीं क्या बात है ! सखियों के साथ हंसगौरी अमराई की ओर बढ़ गयी।

रघुवीर ने आज पहली बार शंकरपुर में एक दहशतभरी खामोशी अनुभव की। उसने कुछ ऐसे चेहरे देखे जिन पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। अनेक घरों के द्वार बन्द थे। गाँव के बीचोंबीच, जहाँ ग्राम देवता का चबूतरा था, उसके पास से गुजरते हुए किसी के मुँह से उसने यह सुना कि अब राना माधव जी का दस्तखत और मुहर लगा हुआ कागज दिखाये बिना न शंकरपुर में कोई आ सकता है न बाहर जा सकता है। ऐसे में विवाह ? पिता का आदेश है। सिर आँखों पर।

पिछले चार दिनों–रातों से रघुवीर घोड़े पर अपने पिता की खोज में कहाँ–कहाँ नहीं गया ! वे मिले तो उसी उँआरे के जंगल में, सई नदी के उस पार। अपनी बची हुई सेना के साथ। साथ में वही गोंडा के आजानुबाहु राजा देवीबक्स सिंह, बाला साहब, मौलवी अहमदशाह, कालपी का हरि बुन्देला, चौधरी भोपाल सिंह, फौजदार हनुमान पाण्डे, अभिराम बली, तात्या टोपे और गंगादीन।

पिता ने रघुवीर से कहा, घर जाओ। मेरा यह पत्र दो पिता जी को। आज से सातवें दिन, आषाढ़ सुदी तेरस, दिन मंगलवार, सूर्य लग्न।

बंगाल फौज और कम्पनी के विद्रोही सैनिक लूटपाट का माल ले कर अपने घरों की ओर रवाना हो चुके थे। अवध सिपाही अब नेतृत्वहीन झुण्ड के झुण्ड इधर भटक रहे थे। बेगम हजरत महल अपने पुत्र सहित लखनऊ से निकल कर गुरुबक्स रैकवार के मिठोलीगढ़ में रहीं और फिर बहराइच के रेकवारों के मुखिया हरदत्त सिंह के छोए गढ़ में केन्द्र स्थापित कर वहीं से सारे सूत्रों का संचालन करती रहीं।

लॉर्ड कैनिंग ने अवध में यह एलान करवा दिया कि जो लोग हथियार रख देंगे उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा। पर इसका कोई असर नहीं दिखा। इसके बाद पाँच जून को अहमदशाह की हत्या हुई। फिर क्या था।

नाना साहब, राना बेनीमाधव, बाला साहब, तात्या टोपे, विलायत शाह और अली खाँ मेवाती के अधीन हजारों सिपाही उसी उँआरे के जंगल में आ कर जमा होने लगे। घाघरा नदी के किनारे चौक घाट में बेगम हजरत महल और सरदार मामू खाँ की सेना तैयार थी। इसके अलावा सइबा के राजा तरपतसिंह, राजा रामबख्श, बहुनाथ सिंह, हनुमन्त सिंह आदि अनेक बड़े जमीन्दार अपने–अपने सैन्य दल को ले कर अवध का फिर अंग्रेजों के हाथों से छीनने के प्रयत्नों में लग गये।

धारूपुर के तालुकेदार हनुमन्त सिंह ने सेनापति होपग्राण्ट को खबर दी कि राना बेनीमाधव ने फिर से लखनऊ पर चढ़ाई करने की तैयारी शुरू कर दी है। होपग्राण्ट यह सुन कर चकित रह गया कि तेरह महीने तक लगातार लड़ाई होने और लखनऊ में छः महीने रक्त की नदियाँ बहने के बावजूद राना बेनीमाधव लखनऊ पर फिर हमला करने का साहस कर रहा है ?

भेदिये ने आकर अवध में अंग्रेज सेनापति होपग्राण्ट को खबर दी कि सत्ताइस जून को राना बेनीमाधव के पुत्र रघुवीर का शंकरपुर में ही विवाह है। होपग्राण्ट की आँखें चमक उठीं। दो अंग्रेज भेदिये शंकरपुर में लग गये। दिन में वे भेदिये किले के बाहर बाँस के जगल में छिपे रहते और रात को रूप बदल कर शंकरपुर में भेद लेते।

एक ओर विवाह की पूरी तैयारी हो रही थी, दूसरी ओर किले के भीतर एक स्थान पर जमीन में गाड़ कर रखे हुए अस्त्र शस्त्र, तोपें खोद कर बाहर निकाली जा रही थीं। तोप के गोले लगाये जा रहे थे। बारूद के छर्रे, और पलीतों, कटार, भाले, तलवार, बाँक, बिन्नोट, बरछा आदि बनाने में तमाम कारीगर लगे थे।

विवाह का दिन।

शंकरपुर के चारों तरफ राना की सैन्यशक्ति लगी हुई थी। पुर के भीतर जगह–जगह ढोल ताशे, रोशन चौकी, नौबत, तुरही और शंख बज रहे थे।

सुबह से ही लोगों के मन में यह बात रह रह कर आ रही थी कि कहीं ऐसे ही समय पर अंग्रेज हमला न कर दें। पर कोई चिन्ता नहीं। राना की तैयारी पूरी थी। शंकरपुर डीह और सिवान के चारों तरफ बिल्कुल चौकस निगरानी। सिपाही तैनात थे।

विवाह की घड़ी नजदीक थी। राना का हुक्म हुआ, कन्या के मकान को जाने वाले रास्ते पर दूल्हे की पालकी के साथ–साथ केवल रोशन चौकी का संगीत चलेगा। उसके अलावा कोई धूमधाम नहीं।

सचमुच और बाजे नहीं बजे। उतनी रोशनी भी नहीं। सोना जड़ित पालकी पर चढ़ कर वर विवाह के घर में आया। केवल पालकी के सामने पुरोहित और दो भाट थे। लोग हठात् कुछ समझ ही नहीं सके।

हंसगौरी सजधज कर विवाह मण्डप में जाने से पहले राना बाबा को प्रणाम करने के लिए आयी। गौरी का पूरा शरीर काँप रहा था। राना बाबा ने हंसगौरी के मस्तक पर हाथ रखते हुए आशीष भरे कण्ठ से कहा, सर्वशुभदाता कल्याण करें।

बरमाला का शुभ कार्य सम्पन्न हुआ। वर–वधू मँड़वे में ब्याह चौकी पर बैठे ही थे कि अचानक चारों ओर से एक शोर सुनाई पड़ा। फिर बाँस के जंगल में बन्दूक और तोप की आग बरसने लगी।

राना बेनीमाधव अपने सबुजा घोड़े पर बैठ कर दौड़े। हंसगौरी के पिता सूरजसिंह ने हाथ जोड़ कर राना को रोक कर कहा, ई लड़ाई अब ना लड़ो राना जी। खबर कराई देत हैं कि आप बेगम और विरजिस कदर के साथि नाहीं हैं।

राना बोले, सूरजसिंह, धरम के बदे लड़ब। बेगम और बिरजिस का साथ ना छोड़बे। राना तेजी से निकल गये। चारों ओर से युद्ध का डंका बजने लगा। एक अंग्रेजी फौज परदेसपुर और दूसरी गुरुबक्सगंज की ओर से आयी थी। दोनों फौजों ने मिल कर एक साथ शंकरपुर पर हमला किया। राना बेनीमाधव ने अपनी घुड़सवार सेना के साथ अंग्रेजों की पलटन पर जवाबी हमला किया। अंग्रेज सेना उनके मुकाबले में ठहर न सकी। अपनी दो तोपें छोड़ कर भागी। होपग्राण्ट ने सात नम्बर पलटन को आगे बढ़ने का हुक्म दिया।

राना के पास चार, पर अंग्रेज सेना के पास बारह तोपें थीं। उन बारह तोपों ने इस तरह गोले बरसाने शुरू किये कि राना के सिपाही और शंकरपुर के लोग ऐसे कटने लगे जैसे हँसिये से घास कटती है !

राना के साथ जो उनके वीर साथी अंग्रेजों से लड़ रहे थे उनमें से कोई भी जरा नहीं घबरा रहा था। राना ने अपनी तोपों के पास दो हरे झण्डे गड़वा कर उनके नीचे अपने आदमियों को जमा किया। उन आदमियों का मुखिया गंगादीन बोला, चार–चार की टोली में बढ़ो और अंग्रेजों की तोपें छीन लो। पर तोपों के पास पहुँचने से पहले ही लोग वहीं गिर पड़ते।

घमासान युद्ध, घरों में आग लग चुकी थी। उस मारकाट, भागदौड़, भयंकर शोर और अन्धकार के बीच राना बाबा खाली हाथ रघुवीर और हंसगौरी को ढूँढ रहे थे। राना महल के द्वारा पर भयंकर लड़ाई हो रही थी। राना बाबा ने देखा, रघुवीर और हंसगौरी दोनों तलवार लिये युद्ध कर रहे हैं।

राना बाबा बढ़कर दायें हाथ से रघुवीर को और बायें हाथ से हंसगौरी को पकड़ कर महल के अन्दर ले जाने लगे। रघुवीर ने विरोध किया। राना बाबा अविचलित रहे। चारों ओर धुआँ ही धुआँ, शोर, चीख ! महल के एक भाग में आग लग चुकी थी। किले की दीवारें जगह–जगह से टूटने लगी थीं। राना बाबा उन्हें जबरन खींचते हुए अन्तःपुर की ओर ले जा रहे थे। रघुवीर ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया, वह तेजी से मुड़ा। बाहर दौड़ा। उसके पीछे हंसगौरी और दोनों के पीछे राना बाबा।

बाहर भयंकर लड़ाई हो रही थी। राना बेनीमाधव को शंकरपुर में तीन तरफ से तीन सेनाओं ने घेर लिया था। उस भयंकर युद्ध के बीच फिरंगियों के प्रधान सेनापति ने खुद राना के पास समाचार भेजा कि अब लड़ने से कोई फायदा नहीं। उसने वादा किया कि अगर राना हथियार डाल देंगे तो उन्हें माफ कर दिया जाएगा और उनकी सारी जायदाद उन्हीं के पास रहने दी जाएगी। लेकिन राना बेनीमाधव ने इन्कार कर दिया।

किले के भीतर विकट युद्ध हो रहा था। राना बेनीमाधव चारों ओर से घिरे जा रहे थे। अचानक राना बेनीमाधव अपनी सेना सहित शंकरपुर छोड़ कर निकल गये। दो सेनाओं ने राना का पीछा किया। बची हुई एक सेना से शंकरपुर में लड़ाई हो रही थी।

उस लड़ाई में से राना बाबा ने अपने प्राणों की बाजी लगा कर रघुवीर को निकाल लिया। वे रघुवीर को खींचते हुए राज महल के अन्तःपुर में जाने वाले एक गुप्त द्वरा से, भूगर्भ स्थित एक कमरे में ले आये। रघुवीर के साथ हंसगौरी नहीं थी। रघुवीर ने देखा था कि गौरी को पकड़ कर उसके पिता अपने घर ले जा रहे थे।

बाहर लड़ाई धीरे–धीरे खत्म हो चुकी थी। अंग्रेज सिपाही राजमहल को लूट रहे थे। तहखाने में राना बाबा और रघुवीर के बीच एक लड़ाई चल रही थी। घायल शेर की तरह तड़फते हुए रघुवीर कह रहा था, जाने दो मुझे, मैं लडूँगा ! लडूँगा ! राना बाबा ने कहा, वह लड़ाई खत्म हो गयी है। वह लड़ाई हार गये हम। सच्चाई को कबूल करो।

रघुवीर ने पूछा, माँ कहाँ है ? बाबा ने बताया, तुम्हारी माँ..... तुम्हारी माँ नहीं रही ! जब तुम्हारे पिता लड़ते–लड़ते शंकरपुर छोड़ कर भागने लगे, तुम्हारी माँ ने प्राण त्याग दिये।

रघुवीर रो पड़ा। रोता रहा। उस भूगर्भ में जाने कहाँ से सूरज की हल्की सी रोशनी आने लगी। बाबा बोले, रघुवीर, पहले जी भर कर रो लो, फिर तुम्हें कुछ सौंपना चाहता हूँ। यहाँ सब कुछ लुट जाएगा, खत्म हो जाएगा ! मैं मार दिया जाऊँगा, हो सकता है तुम्हें भी गोली मार दी जाय, तुम्हें भी तोप से उड़ा दिया जाय, जैसे इस वक्त बाहर किले की दीवारें तोपों से उड़ाई जा रही हैं।..... रघुवीर, रो चुका ? अब तो नहीं रोना ? रधुवीर !

रघुवीर ने सिसकते हुए कहा, आप इतने बेरहम हैं, मुझे नहीं पता था।

मुझे खुद नहीं पता था रघुवीर !

बाबा बोले, तुम्हें कुछ बताऊँगा। तुम मर भी गये तो वे बातें रक्तबीज बर कर इस भूमि पर गिरेंगी और रह जाएंगी। हम नहीं होंगे पर सच्चाई को जिन्दा रहना है। सुनो, ध्यान से सुनो, रघुवीर, यह कैसे हुआ कि ऐसे भारत के ऊपर इस तरह अंग्रेजों का राज यहाँ कायम हो गया ? मुगलों को उनके सूबेदारों ने तोड़ा। सूबेदारों की ताकत को मराठों ने खत्म किया। मराठों की ताकत को अफगानों ने खत्म किया। और

इस तरह जब सब एक दूसरे से लड़ने में लगे हुए थे, तब अंग्रेज उन सबको कुचल कर खुद भारतवर्ष के स्वामी बन बैठे। एक देश जिसका ढाँचा पारस्परिक विरोधों और अलगावों के ऊपर खड़ा हो, क्या दूसरों के हाथों फतह किये जाने के लिए ही नहीं बनाया गया था ? भारत का पिछला इतिहास लगातार पराजय का इतिहास है, उन आक्रमणकारियों का इतिहास है, जिन्होंने आकर हमारे उस निर्जीव समाज के आधार पर अपने साम्राज्य कायम किये थे।

समय–समय पर विजेता की तलवार इस देश की टुकड़ों में बाँटती रही है। अगर कृष्ण और राम का बन्धन न होता तो यह देश कितने परस्पर विरोधी दुश्मन राज्यों में बँट जाता, ठिकाना नहीं।

अचानक तेज आवाज हुई। कुछ गिरने और टूटने की आवाज आने लगी। रघुवीर ने पूछा, मेरी माँ का शव कहाँ है ?

राना बाबा बोले, तुम्हारी माँ के मरते ही मैंने महल के उस हिस्से में आग लगा दी।

ये गाँव, ऊपर से ये चाहे कितने ही भोले भाले, मासूम हों, अवध की नवाबी, तानाशाही, लूट और विनाश का ठोस आधार यही रहे हैं। जिन्होंने मनुष्य के दिल और दिमाग को छोटी से छोटी सीमाओं में बाँधे रखा है, उनकी सारी गरिमा और तेज उनसे छिन गया है। देश की इतने भयंकर हालत की तरफ देख कर इन गाँव वालों ने ऐसे मुंह फिरा लिया जैसे कि सब स्वाभाविक हों। वे स्वयं भी हर उस आक्रमणकारी लुटेरे का असहाय शिकार बनते रहे हैं जिसने उनकी तरफ देखने तक की परवाह न की। इसी गाँव गँवई के जड़ जीवन ने ऐसी अँधेरी ताकतों और विश्वासों को भी जन्म लेने दिया जहाँ मनुष्य की हत्या भी एक शानदार धार्मिक प्रथा बनने लगी।

राना बाबा की आँखें लाल हो आयीं थी। कहीं से वे कुदाल ढूँढ़ कर ले आये और खोदने लगे जमीन। रघुवीर प्यास, भूख और नींद से बेहाल था। फिर भी बाबा की अपलक देख रहा था। जमीन के भीतर से बाबा ने नन्हीं–नन्हीं हड्डियों को निकाल कर रघुवीर को दिखाते हुए कहा, देखो.....देखो.....अपने पुरखों की नवजात कन्याओं की अस्थियाँ..... इनके गुनाह यही थे कि इनके पिता राजपूत क्षत्रिय थे, इनकी माताएँ अबला थीं।

रघुवीर की आँखों में वे दृश्य जल उठे ! राजपूत क्षत्रिय के घर में लड़की पैदा हुई ! धाई से कहो गला घोंट कर मार दे।

नाहीं सरकार। ई हमसे नाहीं होई।

चली जा गाँव छोड़ कर। निकल जा।

ठकुरानी से बोलो, गला घोंट दे। ठकुरानी बेहोश है। ठाकुर ने बढ़ कर नवजात कन्या शिशु को मिट्टी के नीचे दबा दिया। तीसरे दिन गृह शान्ति और कुल शुद्धि के लिए ब्राह्मण भोज। कनौजिया ब्राह्मण मृत्यु भोज नहीं करेंगे। ऐसा ? इतनी हिम्मत ? ढिंढोरा पिटवा दो। सारे कनौजिया ब्राह्मण हमारे इलाके, हमारी तालुकेदारी से निकल जायँ।

रघुवीर अपनी आँखों से देख रहा है.....। कनौजिया ब्राह्मणों का काफिला जा रहा है, अवध से बाहर, विन्ध्याचल की घाटियों में। बरार और मध्य देश के सूने पठारों में। कनौजिया ब्राह्मण जा रहा है अवध छोड़ कर मिथिला, बंगभूमि, आसाम, उड़ीसा। स्त्रियाँ रो कर गाती हुई जा रही हैं :

रघुवीर बिनु आज
हम ना अवध मा रहिबै।

राना बाबा हाथ की मिट्टी को अपने सिर पर पोंछते हुए बोले, दूसरा असली कारण भीतर है। एक पूरी चीज जो टूट फूट कर न जाने कितने टुकड़ों में बिखर गयी हो, उसे फिर से पूरी चीज की शक्ल में दिखाने का प्रयत्न करना। एक सच्चाई निरन्तर चलने वाली, आगे बढ़ने वाली, फूल और फल देने वाली, उसका रुक जाना, उसे फिर से चला कर दिखाना। एक आग जिस पर न जाने कितनी राख, मलवा, कूड़ा कर्कट आ पड़ा हो उसे, खोद, हटा उसी अग्नि से जुड़ कर स्वयं आग हो जाना एक प्रकाश, एक तेज जिसे अन्धकार की कितनी ही परतों ने आ घेरा हो, उसे चीर फाड़ कर फिर से प्रकाशित होना। एक वस्तु जो अपनी धुरी से हट कर गिर गयी हो, उसे फिर से उठा कर उसकी बुनियाद, उसकी धुरी पर रखना; यही है जो तुम्हें सौंप रहा हूँ। नींद और प्यास से रघुवीर बेहाल था। राना बाबा ने उसे ठीक से बिठाया। सिर थाम कर अपनी दिशा में किया। सुनों हमारे पुरखे, गंगा और वीरम दो भाई। सुल्तान सूबेदार उन्हें आपस में

लड़वाता। जो हार जाता उस पर सूबेदार अपना कब्जा कर लेता। हार जो जाता, पर कबूल कौन करता कि हार गया। इतना बड़ा अपमान कौन स्वीकार करता। तो लूटपाट कर सुल्तान के आगे हाथ पसार कर फिर जमीन, जायदाद, तालुका खड़ा किया जाता। फिर लड़ाई होती। भाई को हराने के लिए वीरम मुसलमान हो गया। और उस अन्तिम लड़ाई में वीरम, जिसका नाम तब गुलमोहम्मद हो गया था, उसके साथ सूबेदार सुल्तान की फौज आयी थी। उस लड़ाई में सुल्तान ने गंगा से कहा सुनो; अगर इस वक्त तुम इस्लाम कबूल कर लो– तो हम तुम्हारी तरफ से लड़ कर वीरम उर्फ गुलमोहम्मद को हरा कर उसकी आधी जायदाद तुम्हें दे देंगे। अगर हमारी बात नहीं मानी और लड़ाई में हार गये, जो तुम्हें हारना ही है, तो समझ लो फिर क्या होगा– तुम जबरदस्ती मुसलमान ही नहीं बनाये जाओगे, तुम्हारी सारी जायदाद लेकर हम तुम्हें अपना गुलाम रखेंगे।

भयभीत कायर गंगा, जान माल लेकर सोजत, जोधपुर से भागा, भागते–भागते.....और रायबरेली से उत्तर दस कोस का जंगल.....जंगल के बीच बीच में गाँव पुरई पुरवा.....यहीं ठौर मिला। गाँव वाले पूछते–तउ भइया, केहर सैतिन आयो ? जोधपुर से। कउन लोग हो भइया ? राजपूत, बैस क्षत्री। पाँव लागी महाराज। तौ सरकार साहेब आपु तउ हमार राजा ठाकुर। खुसी से रहीं ई मुलुक माँ। तउ हम पचन का बन्दोबस्त करो। तहसीली करो.....।

कहते–कहते राना बाबा चुप हो नये। ऊपर देखने लगे। जैसे कुछ जबान पर आ गया है, पर उसे भूल जाने की कोशिश कर रहे हों। बाबा थूक घूँट कर बोले, वहाँ से यहाँ भाग कर आये हुए हमारे पुरखे अपनी असली भीतर की सच्चाई, अपना वास्तव तो बता नहीं सकते थे कि वे भयभीत, पराजित, कायर हैं। वे इतना बड़ा अपमान कैसे स्वीकार कर सकते थे ! अहंकार ! भय !

भय, अपमान, कायरता, घायल अहंकार और ऊपर वैसे क्षत्रिय राजपूती आन। भीतर की सारी प्रतिक्रिया, अपनी राजपूती की सारी आन, उस नवजात कन्या की निर्मम हत्या के रूप में प्रकट होती है।..... क्रिया तो केवल लड़ाई थी, लड़ाई, लड़ाई उस सूबेदार से, पर भय भी था अपनी जान का। जिसे अपनी जान का भय है वह लड़ नहीं सकता। अपनी सच्चाई स्वीकार न कर पाने की मजबूरी कायरता को दुगुनी करती है। एक कायरता जो है, दूसरी कायरता है पर जो स्वीकृत नहीं है। आह ! ''मैं'' ! यह हो नहीं सकता। है, पर हो नहीं सकता, उसके अहंकार की यह चोट, यह घाव, उसे कभी चैन नहीं लेने देती। भीतर यह जितनी बड़ी चोट होगी, बाहर उतना ही बड़ा दमन और अत्याचार होगा, प्रजा पर, अपने अधीनों पर, अपने से निर्बलों पर.....। भीतर जितना बड़ा अपमान होगा उतना ही विस्तार होगा राजमहल का, राज और तालुकेदारी का। भीतर जितना ही बड़ा भय होगा, बाहर उतना ही बड़ा आडम्बर होगा। हम सब यही थे। तेरे सारे पुरखे यही थे। गंगा से लेकर मुझ तक, तेरे बाप तक.....तुझ तक.....!

राना बाबा दीवार के सहारे अपना सिर टिका कर मूर्तिवत बैठे रह गये। रघुवीर की आँखों में जैसे कुछ जल उठा। उसकी सारी नींद, सारी भूख प्यास सब मानो उस कमरे में धू धू कर जल उठे। उस जलन में कहीं भी कुछ धुआँ नहीं था। सब उस के आरपार दिखाई देने लगा.....बाबा का वह तमतमाया हुआ मुख। उनकी मुँदी हुई आँखों के भीतर की वे आँखें।

रघुवीर पास जाकर बोला, बाबा !

हाँ।

हम लोग यहाँ भाग कर आये.....

बाबा बोले, खबरदार अब अगर एक बार भी पलकें झुकीं तेरी।

राना बाबा ने कहा, तू अकेला बाहर जाना चाहता है ? तू अकेला चारों ओर घिरी उस फौज से ? तू लड़ना नहीं, आत्महत्या चाहता है ?

नहीं। आगे बताओ बाबा !

बाबा ने बताना शुरू किया, हम भाग कर यहाँ आये। हमें केवल जीविका ही नहीं चाहिए थी। अपनी कायरता और घायल अहंकार को छिपाने, भरने, पाटने के लिए फिर वही जायदाद–तालुकेदारी, झूठी शान शौकत चाहिए थी। अपने साथ जो धन–दौलत ले आये थे उससे थोड़ी जमीन जायदाद खरीदी। एक घर बनाया। पर उतने से हमारा काम कहाँ चलने को था ? हम जो कुछ करते थे वह क्रिया कहाँ थी, वह तो प्रतिक्रिया थी। फिर हमने अवध के नवाब के सामने सिर झुकाया। नवाबी फौज में सिपाही.....नवाब के दरबार

में मीर मुन्शी मुसाहिब.....महाजनी..... और इस तरह ऊपर नवाब की चापलूसी, दरबार की खैर–ख्वाही, नीचे प्रजा को लूटते–ठगते पहले महाजन, फिर तहसीलदार, फिर चकलेदार, फिर माफीदार, और फिर तालुकेदार, फिर राजा !..... कभी जी नहीं भरा। भरता कैसे ? छोटापन तो भीतर था। क्षद्रता तह में थी। होना यह था कि पहले अपमान, अपनी हार, अपनी क्षुद्रता के खिलाफ लड़ाई लड़ते। प्रतिकार करते। पर किये ठीक इस के उलटे कुकर्म। किसी भी कीमत पर राजपूती झूठी आन बनी रहे, क्षत्रिय की मूँछ तनी रहे, पर सच्चाई यह थी कि मूँछ रह ही नहीं गयी थी। सब धोखे में थे। सब को धोखे में रखना चाहते थे।

रघुवीर ने तड़प कर पूछा, मेरे पिता क्यों भागे ? लड़ते–लड़ते यहीं मर क्यों नहीं गये ?

बाबा ने कहा, एक भागना योद्धा पुरुष का होता है, बाहर की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण, दूसरा भागना कायर मनुष्य का होता है भीतर से मृत्यु के भय के कारण। एक है रुक कर देखने वाला, दूसरा है बहने वाला, लड़ते–लड़ते भागने वाला ! तुम ने देखा नहीं, रघुवीर देखो, शंकरपुर के चारों ओर अंग्रेज फौज का घेरा। प्रधान सेनापति लार्ड क्लाइव खुद दक्खिन पूरब हिस्से में घेरा डाले पड़ा है। उत्तर पश्चिम में होपग्राण्ट जैसा सिपहसालार डटा हुआ है। चाँदनी रात। दो बजे रात को चाँद डूबा। उस अंधेरे में मेरा बेटा राना बेनीमाधव, चुपचाप होपग्राण्ट की दाहिनी चौंकी के बीच से होकर भाग गया। जैसे मेरा बेटा शंकरपुर में युद्ध नहीं लड़ रहा था.... चन्द्रमा के डूबने और अंधेरा हो जाने की राह तक रहा था। आह मेरा बेटा ! मृत्यु डर से भाग गया ! भाग कर कोई कहाँ जाएगा भला। मरना तो होगा ही..... नाम और रूप का अहंकार। यह शरीर सुख.....यह झूठा नाम और यश..... इसे मरना ही होगा। अपमान, धोखा, विश्वासघात, असह्य दुःख, उपेक्षा, बदनामी, घोर यातना से मर कर ही इस रघुवीर से छुट्टी मिलेगी.....। रघुवीर जो एक व्यक्तिवाचक संज्ञा है। जब तक यह संज्ञा है, इतनी सी, तब तक कर्म नहीं होगा। तब तक इसी की रक्षा में भागना पड़ेगा। इसे मार कर ही जीना होता है। जीवन यज्ञ है। इस में ''मैं'' जल कर भस्म हो जाएगा। केवल ''तू'' रह जाएगा। तू सोचेगा नहीं देखेगा, कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म..... आह हम हिन्दू हैं ? आर्य.....हिन्दू ?....

राना बाबा का गला रुँध गया। आँसू भरे कण्ठ से वह बोले– सब छिन गया ! सब लुट गया ! सर्वनाश हो गया ! मर गया, बहुत अच्छा हुआ। इस ने हमारी आँखें खोल दीं। मैं भी उसी झूठ और भ्रम में था। इसी तरह चलेगा, चलता रहेगा। जहाँ झूठ ही सच है वहाँ कुछ नहीं होगा। पर नहीं। नहीं, नहीं..... जो है ही नहीं वह सच नहीं हो सकता ! शिशु हत्या, इतने बड़ पाप, इतने जघन्य अपराध को जिस ने पुण्य माना.....इतना बड़ा झुठ.....आह !

राना बाबा खुदी हुई मिट्टी को अपलक निहारते हुए कहते रहे, जो केवल भय से संचालित हैं, वे सब पशु हैं। जो निर्भय है वही है व्यक्ति, जो बाहर व्यक्त है, वही है व्यक्ति। जिस में मूल्य, मर्यादा, आदर्श अभिव्यक्त है, वही है व्यक्ति। और पुरुष ! जो बाहर ही व्यक्त नहीं है बल्कि जो अपने 'पुरु' अपने नगर, अपने देश, अपने भीतर स्थित है, जो अपने भीतर से सब कुछ देख रहा है। देखो रात हो गयी है न। रात हो गयी है, यह व्यक्त सच्चाई दिख रही है, पर रात के भीतर में क्या है, यह नहीं दिख रहा।

आधी रात का समय था। अजब सन्नाटा, मसान जैसा। कहीं से रोने की आवाज सुनाई दे जाती। एकाएक कहीं से कोई आवाज सन्नाटे को चीर कर चली जाती।

बाबा और रघुवीर दोनों एक दूसरे से अदृश्य थे। दोनों एक दूसरे को साँसों से देख रहे थे ! स्पर्श से दोनों एक दूसरे से बँधे थे। बाबा ने रघुवीर का हाथ पकड़ कर उस घुप अँधेरे कमरे में कुछ टटोलना शुरू किया। टटोलते टटोलते उन्हें एक रस्सी का सिरा मिला।

रघुवीर, देखो यह क्या है ?

रस्सी का सिरा है बाबा। इस का दूसरा सिरा कहाँ है ? खींच कर देखो। कहीं से बँधा है उसे सिरे पर जा कर ही देखा जा सकता है।

रस्सी का यह सिरा यहाँ है। हम ही आये हैं इसे पकड़ कर यहाँ तक। आये हैं ना ? यह रस्सी घूमती नहीं। लौटती नहीं। सिर्फ आगे बढ़ती है। क्योंकि जीवन आगे चलता है। कभी पीछे नहीं मुड़ता। हम कहाँ से बँधे हैं ? सूत्र कहाँ है, हम यह देखने पीछे नहीं जा सकते। कैसा भी समय हो, कैसा भी सुख और संकट हो, कितनी भारी विपत्ति हो, हम पीछे नहीं जा सकते। हम पीछे भागते हैं। पर पीछे जा नहीं सकते। देखो यह रस्सी। हम इस इच्छा से कि हमें पीछे लौटना है। नहीं....।

ऊपर उस खंडहर की फर्श पर कुछ सिपाहियों के चलने की आवाजें आने लगीं। वे इधर से उधर जाते आते। रोशनी इधर से उधर दौड़ती। वे लुटे टूटे उजड़े जले महल में अब भी न जाने क्या ढूँढ रहे थे। थोड़ी देर बाद, महल के अन्तःपुर के हिस्से में कहीं कुछ खोदा जाने लगा।

भूल जाओ नवाब, मुगल सुलतान, पठान, तुर्क, मंगोल को, वे सब पूरब के थे। इसलिए पूरब में पूरब मिल गया। पर भारतवर्ष और ये अंग्रेज, बिल्कुल दो जुदा चीजें हैं, दोनों की जीवन दृष्टि में बुनियादी भेद है।

अंग्रेजों की दृष्टि में प्रकृति पर विजय के मार्ग में प्रकृति के प्रतिरूप देवता बाधा पहुँचाते हैं इसी लिए उन्होंने अपने देवताओं की हत्या करते, यहाँ तक कि भय से अपने ईश्वर तक को मार दिया। ठीक इस के विपरीत यहाँ मनुष्य और प्रकृति, आत्मा और परमात्मा, दोनों एक हैं। जो बाहर सूर्य का प्रकाश है वही हमारे भीतर का, चैतन्य का प्रकाश है। बाहर जो अन्धकार है वही हमारे भीतर का भय है। इसी लिए हमारे मनुष्य और देवता में वैर नहीं, लड़ाई नहीं, समत्व है।

रघुवीर ने पूछा, क्या पिताजी भी लड़ाई नहीं कर रहे थे ? तो क्या वह भी अंग्रेज थे ?

बाबा बोले, तभी तो नकली अंग्रेज को असली अंग्रेज ने मारा। जिस दिन हम अपने बहुकेन्द्रों से हट कर केवल स्वार्थ के एक केन्द्र पर आने लगे, उसी दिन अंग्रेज यहाँ विजयी हो गया। सुनाऊँ मीरजाफर का राजीनामा लॉर्ड क्लाइव के दरबार में ?

सुबह हो रही थी। ऊपर तोड़फोड़ खोदाई रुक गयी थी।

उस भूगर्भ में आज तीसरा दिन था।

राना बाबा बोले, अंग्रेज, यह जो नया राजा यहाँ आया है अपनी नयी हुकूमत और ताकत ले कर, इससे कोई अकेले नहीं लड़ सकता। इस से लड़ाई करनी होगी सब को मिला कर सब को जगा कर। उस लड़ाई का केन्द्र एक नहीं होगा, अनेक केन्द्र होंगे, जितने केन्द्र भारतीय धर्म में हैं।

भारतीय धर्म ?

हाँ, भारतीय धर्म ! हिन्दू धर्म नामक यहाँ कोई धर्म नहीं है। धर्म यहाँ सनातन है। सनातन धर्म जो आत्मदानी है। सब को स्वीकार करने वाला है। जो सारे बिछड़े हुए अंशों को एक में मिलाने और सब को स्वीकारने का सनातन भाव है, वही है सनातन धर्म। सनातन जीवन !

रघुवीर ने पूछा, बाबा, सब में वह पश्चिम, वह अंग्रेज नहीं है क्या ?

कमरे के बाहर दिन के प्रकाश का धक्का लग रहा था। धुंधला सा प्रकाश छन कर आ रहा था। राना बाबा बोले, सब में यह पश्चिम, वह अंग्रेज क्यों नहीं है ? पर सब को, सम्पूर्ण को मान कर जीने वाला यह भारतवर्ष तो जीवित बचे ! सावधान ! सुनो ! सावधान ! अगर भारत जीवित न बचा तो केवल पश्चिम रहेगा, उस में पूरब, उत्तर–दक्षिण नहीं होगा। केवल पश्चिम मतलब केवल अर्थ.....।

बाबा धर्म क्या है ?

अखण्ड दृष्टि।

धर्म की जड़ता ही अधर्म है। धर्म का ठहराव ही अधर्म है।

यह जड़ता यह ठहराव क्यों ?

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–इन चार पैरों वाला वृषभ जब कभी एक पैर कभी दो, कभी तीन पैरों से चलना चाहता है तो क्या कभी चल सकता है ? चलना सम्भव है केवल चारों पैरों से। चारों परस्पर सन्तुलित चारों। में समान गति समान भाव और एक निष्ठा। जीवन में निरन्तरता, गत्यात्मकता और अखण्डता की सनातन अनुभूति।....रहना वर्तमान में, जीना भूत अतीत में, भागना भविष्य में– यह अधर्म है। मेरा पुत्र राना बेनीमाधव जी रहा था नवाब की तालुकेदारी में, भागा भविष्य में, कि अंग्रेज जब चले जाएंगे तो वह फिर लौट आएगा।

रघुवीर के मुख से वह 'आह' सुन कर राना बाबा उसकी आँखों में निहारते हुए बोले, जो मनुष्य को न्यायपूर्वक जीवन बिताने के लिए हर क्षण जिन्दा रखे वही धर्म है। वह हर क्षण चलता हुआ परिवर्तनशील सत्य है। तभी उस की पहचान ''चक्र'' से ''वृषभ'' से करायी गयी है।

रघुवीर न जाने किस दर्द से कराह उठा। राना बाबा उसके तप्त मुख को अपनी हथेलियों में ले कर बोले, देखो, तुम में जो पुरुष है, जब उसे इतनी भूख प्यास लगी होती है कि कहीं उसे चैन नहीं, उस समय भी वह जीवन यज्ञ में दीक्षा ले रहा है।

मृत्यु भय यहाँ कैसा ? मृत्यु प्राचीन बीज का नया अंकुरण है। हम अन्धकार के पार जाते रहें, हम भागें नहीं। लड़ें ! शत्रु से लड़ना ही आत्मरूप प्रकाश है।

जैसे कोई प्रकाशमान पात्र हो, उस पर मिट्टी लेप दी गयी हो, फिर उसे कोई धो कर सामने रख दे, वही राना बाबा कर रहे थे।

सुनो, हम यज्ञ और योग के संयोग की सन्तान हैं। बाहर जो कुछ हो रहा है वह तुम्हीं हो। सब तुम में है और तुम सब में हो। तुम पुण्डरीक हो। पुण्डरीक माने सर्जक होना, आनन्दप्रद होना, गहरी जड़ों वाला होना है। जब तक एक भी प्राणी दुःखी है, तब तक यही कामना हो कि तुम उसका दुःख अनुभव करने के लिए हो। तुम रहोगे तथी तो भगवान उसे दुःख से मुक्त करने के लिए प्रेरित करेगा। मतलब, तुम्हारा उसके सामने होना उसे आश्वासन देगा कि अब उसका दुःख बँट गया। दूसरों को दुःख बाँटने के लिए अब मुझे अपना दुःख भूलना चाहिए। अपने ''मैं'' के केन्द्र से मुझे बाहर आना ही होगा।.....

हाँ, बाहर। बाहर वही युद्ध है। हर क्षण युद्ध। इससे भागना केवल भ्रम है। युद्ध अब अकेले नहीं होगा। सब को एक साथ ले कर होगा। युद्ध अब अस्त्रों से नहीं होगा। उसने सबके अस्त्र छीन लिये हैं। युद्ध ही अब मर्यादा है। पुराना सब कुछ विध्वंस हो गया है।

राना बाबा ने रघुवीर का दायाँ हाथ पकड़ा और भूगर्भ द्वारा को जरा सा खोल कर उसे बाहर देखने को कहा।

बाहर सब कुछ बदल गया था। सारा शंकरपुर लुट फुँक कर तबाह हो चुका था। राजमहल बिल्कुल खण्डहर। कहीं कुछ भी पहचान में नहीं आता। सब कुछ बरबाद हो कर एक मलवा हो गया।

बाबा ने पूछा, ऐसा पहली बार देख रहे हो न ? इस अव्यवस्था और विनाश के भीतर अगर कोई चीज ढूँढ़नी हो तो पहले हमें अपनी बुद्धि को व्यवस्थित और विवेकमय करना होगा। बुद्धि अपने आप में एक व्यवस्थित शक्ति है, इकाई है। बुद्धि का काम ही है अव्यवस्था से व्यवस्था की ओर जाना। और ऐसे क्षणों पर यही बुद्धि ही जल्दबाजी में घबड़ा कर सच्चाइयों से, समझौते कर लेती है। पर हम ऐसा नहीं करेंगे। हमारी बुद्धि से हमारी ''धी'' से ऊँ भूः भुवः और स्वः तीनों भुवनों को समेटने वाला प्रकाश जुड़ा है। पहली बार ताकने से जब बुद्धि चकरा जाती है, लगता है कि सर्वनाश है। पर ताकने से आगे जब 'देखना' शुरू होता है तब वास्तव में यह दिखता है कि सब भूमिका है। सविता उपासना की। सविता, अर्थात् जगत् की प्रेरक शक्ति को अर्घ्य देना। सूर्य के रूप में जो उसका प्रकाश जीवन रहस्य को खोल रहा है, उसके प्रति हमें खड़ा हो जाना है, जिस से जो भी हमारी इन्द्रियाँ काम करें वह उस प्रकाश से प्रेरित हो।

बाबा हाथ जोड़ कर नतसिर बोले, आज से सात वर्ष पूर्व यह दीक्षा मुझे स्वामी दयानन्द जी ने दी थी। जीवन से गायत्री मन्त्र का सूत्र उन्होंने ही जोड़ा था। एक घूमा था अवध में कर्नल स्लीमैन। गुप्तचर भेदिये की तरह ! वह महज घूमता था। वह यात्रा नहीं थी। अंग्रेज यात्रा नहीं करते। वे शिकार करते हैं। यात्रा की थी स्वामी दयानन्द ने। उन्होंने ही गायत्री मन्त्र का रहस्य खोला था। देखा, उगते हुए सूर्य को। बाहर एकाएक इतने प्रकाश का भरना भीतर एक आकुलता पैदा करता है कि वहाँ भी प्रकाश उमड़ पड़े जिससे यह अंग्रेज यह पश्चिम साफ–साफ दिखाई पड़ जाये, राख की भीतर ढँकी छिपी हुई वह अग्नि, सविता, वह सावित्री। और देखो, इस सर्वनाश के भीतर, इसके मलबे में ऊपर के आतंक से जाति जाति में वैर, सम्प्रदाय–साम्प्रदाय में घृणा, शास्त्र और लोक में अलगाव, व्यक्ति में आत्मरति ! ऊपर के इस आतंक से लोग इतने उदास हैं कि जीवन रचना और उल्लास के स्रोत ही रुक जायें। सावधान ! एकाएक देखने से यह भी लगेगा कि सब रुके हैं। सब उदास, निराश, मृत्यु की प्रतीक्षा में हैं ! .....नहीं नहीं, शायद सब सूर्योदय की प्रतीक्षा में हैं ! राम बिना अयोध्या उदास है। राम मर्यादा ! राम पुरुषोत्तम ! राम जीवन !.....

.....मर्यादा और जीवन मूल्य कभी नहीं मरते। वे अदृश्य में, सर्वनाश के आकाश में बस उड़ते रहते हैं और ताक लगाये रखते हैं उस पुरुषोत्तम की, जिसके भीतर वे मूल्य फिर से निवास करें। वही पुरुषोत्तम की, जिसके भीतर वे मूल्य फिर से निवास करें। वही पुरुषोत्तम, जिसकी सब तरफ आँखें हैं, सब ओर मुख

हैं, सब ओर बाँहें हैं ! अपनी बाँहों में वह सब कुछ घेर लेता है। वह एक है। वही अपने स्फुरण मात्र से आकाश और पृथ्वी की नित नूतन सृष्टि करता है।

देखो ! पहले देखो उसी क्षुद्र को, उसी तुच्छ को—जो उसके रास्ते में बाधा है। जब तक क्षुद्र नहीं मारेगा, जब तक तुच्छ सन्तुष्ट नहीं होगा, तब तक धारा कैसे आगे बढ़ेगी ? और जब तक गड्ढे ताल तलरी नहीं भरेंगे, पानी आगे कैसे बढ़ेगा ? यही क्षुद्र नहीं भरने देता ! हारा हुआ धर्म ! उसे पाप कह कर टाल देता है। यहाँ तुच्छ और क्षुद्र दोनों भरने को बाकी हैं !

रात के सन्नाटे को चीरती हुई ढिंढोरा पीटे जाने की आवाज आ रही थी।.....ऊँचे स्वर में महारानी विक्टोरिया की घोषणा दोहरायी जा रही थी—सुनो ! सुनो !! मलका विक्टोरिया, महारानी विक्टोरिया का फैसला ! उनके वचन सुनो—हिन्दुस्तान में कम्पनी का राज अब खत्म हुआ ! सारी हुकूमत अब मलका विक्टोरिया ने अपने हाथों में ले ली है, सिवा उन लोगों के जो अंग्रेजों की हत्या में भाग लेने के अपराधी हैं बाकी जो भी लोग हथियार रख देंगे उन सब को माफ कर दिया जाएगा। हिन्दुस्तानियों की गोद लेने की प्रथा अब जायज समझी जाएगी और दत्तक पुत्रों को पिता की जायदाद और गद्दी का मालिक माना जाएगा। किसी के धार्मिक विश्वासों या धार्मिक रस्मोरिवाज में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा। देशी नरेशों के साथ कम्पनी ने इस समय तक जितनी सन्धियाँ की हैं, उनकी सब शर्तों का अब ईमानदारी के साथ पालन किया जाएगा। अब किसी भारतीय नरेश और तालुकेदार की रियासत या उसका कोई अधिकार न छीना जाएगा। सारे भारतवासियों के साथ ठीक अंग्रेजों जैसा व्यवहार किया जायेगा।.....

राना बाबा ने रघुवीर से कहा, युग बदल गया ! अंग्रेजों ने पल भर में इतनी बड़ी फूँक मारी कि सारी रोशनियाँ आँख झपकते भर में बुझ गयीं। ऐसा मलका विक्टोरिया सोच रही हैं ऐसा अंग्रेज सोच रहे हैं। ऐसा उन्हं सोचना भी चाहिए कि सारा हिन्दुस्तान सारा पूरब अब इंगलैण्ड का है ! ऐसा ही रावण ने भी सोचा था। यही है अब नयी लड़ाई। महाभारत की लड़ाई तो पुरानी हो गयी। महाभारत, एक परिवार, एक कुल, एक वंश के भीतर की लड़ाई थी। राजाओं में परस्पर युद्ध ! वह मनुष्य के भीतर छोटे और बड़े धर्म के बीच छिड़ी लड़ाई थी। वह युग बीत गया। अब राम और रावण हैं ! एक आर्य, एक अनार्य के बीच है यह युद्ध !

यही दिखाया स्वामी दयानन्द और तुलसीदास ने। तब से मेरी नींद गायब हो गयी। तब से सब कुछ छोड़ कर बस राम और रावण देखता रहा.....! राम और कुछ नहीं हैं। न योद्धा, न राजनेता, न धर्मात्मा। राम केवल मनुष्य हैं, पुरुष, मूल्यधारी और सम्बन्धधारी ! राम गरीबनेवाज हैं, राम शरणदाता हैं ! राम पैदल लड़ाई लड़ने वाला है ! राम व्यक्ति नहीं, परिवार है, समाज है, लोक है.....।

अंग्रेज जीत गये.....भले ही जीत गये। याद रखना, अंग्रेज प्रज्ञा गुलामी की है। आर्य प्रज्ञा स्वतन्त्रता की है। इसी बीज को मलबे के भीतर से बीन लेना है और फिर से जमीन तैयार कर उस में बो देना है इस बीज को। देखो, हम ने खुद अपने हाथों से अपने ही ऊपर कितने अत्याचार किये हैं ! जानते हो आचार का अतिक्रमण ही अत्याचार है। मर्यादा उल्लंघन ही अत्याचार है। हम अत्याचार से अत्याचार की लड़ाई नहीं लड़ सकते। लड़ाई है तो केवल राम और रावण के बीच। राम का राज्य लोक में, हृदय में है। राम ऐसे राजा हैं जिन की अपनी कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है। पर रावण का राज्य देवताओं की सारी प्राकृतिक शक्तियों को अपनी गुलामी में रखने का है। उस के राज्य का लक्ष्य है अर्थ, व्यापार, वाणिज्य। उसकी मर्यादा है व्यक्तिगत सम्पत्ति.....।

जब कृष्ण द्वारिका के राज सिंहासन पर बैठे तो राधा समेत सारी गोपियाँ द्वारिका में उन्हें देखने आयीं। कृष्ण को राज सिंहासन पर बैठे देख कर राधा और गोपियों ने अपना मुँह फेर लिया। उन्हें लगा यह कृष्ण नहीं, कोई और है ! हमारा वह कृष्ण यह नहीं है ! और गोपियाँ लौट गयीं।.....राधा कृष्ण में प्रेम असम्भव था, वहीं से प्रेम शुरू हुआ था। असम्भव का ही नाम प्रेम है ! उस प्रेम से मिलन सम्भव नहीं था। वह प्रेम सफल नहीं होगा, यह स्वीकार कर के वह हुआ था। रघुवीर ! तुम और हंसगौरी वही प्रेम हो, वही सम्बन्ध, वही स्वीकार, वही असम्भव—आश्चर्य !.....

बस, बाबा चुप हो गये। आँखें मूँद लीं उन्होंने।

प्रातःकाल हो चुका था। कमरे में जैसे प्रकाश की आहट हो रही थी। बाहर से वही ढिंढोरा पीटने की आवाज, वही एलान—हिन्दुस्तान का मुल्क जो अभी कम्पनी के सुपुर्द था अब मलका विक्टोरिया ने अपने हुकूमत में ले लिया है।.....

राना बाबा ने उठ कर रघुवीर के माथे को स्पर्श करते हुए कहा, देखना इस चाल को। खूब गौर से देखना और क्षण भर को भी आँखों से ओझल न होने देना। हर क्षण जगे रहना ! जैसे वह क्षण आये, पकड़ लेना, जैसे प्रेम आता है।

जाओ। बढ़ो। खोल दो दरवाजा। सीधे जा कर अंग्रेजों के सामने हाजिर हो जाओ। जाओ, घूम कर मत देखना। उन्हें मेरा पता बता देना। रघुवीर राना बाबा के चरणों की धूल अपने माथे पर चढ़ा कर बाहर चला गया।

बारह

शंकरपुर गाँव के उत्तरी छोर पर अंग्रेजों की छावनी पड़ी थी। दिन के चौथे पहर रघुवीर ने सीधे जा कर सब से बड़े अंग्रेज अफसर होपग्राण्ट से अपना परिचय दे कर कहा, मैं रघुवीर, वल्द श्रीयुत राना बेनीमाधव, साकिन शंकरपुर। सारे अंग्रेज एक दूसरे का मुँह देखते रह गये !

शाबाश ! होपग्राण्ट ने मुस्करा कर पूछा, तुम्हारा बाबा किधर है ?

मैं इसी शर्त पर आप के सामने हाजिर हूँ कि मेरे बाबा को न पकड़ा जाये।

उसे हाजिर करो।

होपग्राण्ट का गुस्सा देख कर रघुवीर ने कहा, बाबा यहाँ से चले गये।

वह भाग गया ?

नहीं, बाबा चले गये बनवास में !

रघुवीर ने देखा, हंसगौरी के वही पिता सूरजसिंह होपग्राण्ट के पास जा कर कुछ कह रहे हैं।

होपग्राण्ट के इशारे पर रघुवीर को एक पेड़ के नीचे अंग्रेज सिपाहियों के बीच बैठा दिया गया। वहाँ और लोग भी बैठे थे जिन की मुश्कें बँधी हुई थीं। दायीं ओर आमों के पेड़ की शाखों पर रस्सी से लटका कर लोगों को फाँसियाँ दी जा रही थीं।

आसपास के इलाकों के लोग जानवरों की तरह बाँध–बाँध कर अंग्रेज अफसरों के सामने लाये जा रहे थे। चारों और गजब का सन्नाटा छाया था। कभी–कभी अंग्रेज अपनी भाषा में परस्पर बातें कर लेते थे। कभी कुछ गिरने टूटने की आवाजें भी उठती थीं। लोग इतने भयभीत थे कि रोना तक मुमकिन नहीं था। सब चुपचाप फाँसियों पर चढ़ाये जा रहे थे। कुछ तोप के आगे खड़ा कर दागे जा रहे थे।

लोग सिपाहियों के बूटों पर अपना माथा टेक कर सगे सम्बन्धियों की लाशें माँगते थे और उन्हें ठोकर मारी जा रही थीं। फिर वे चुपचाप अंग्रेज अधिकारियों के हाथ में सोने की मोहरें देते और लाश ले जाते। कोई एक बंगाली बाबू लोगों के बीच घूम–घूम कर रजिस्टर पर कुछ लिख रहा था। सिपाहियों की बन्दूकें चारों तरफ तनी हुई थीं। कोई कहीं से आता–जाता दिखता तो उसे गोली मार दी जाती।

रघुवीर सब देख रहा था। लूट के सामान गाड़ियों पर लाद कर लाये जा रहे थे।

सूरजसिंह चीजों के बारे में बताते जा रहे थे। दो अंग्रेज सिपाही और एक अफसर अलग–अलग ढेरियों में रख रहे थे। आभूषण, चाँदी, सोना, मोहरें, गिन्नी, कसीदा किये कपड़े, सोने चाँदी के बर्तन, हथियार, भाण्डे, बाजे, दर्पण, तस्वीरें, किताबें, बहियाँ, पताकाएँ, पगड़ी, ढाल, भाले–तलवार–कृपाण। सामानों को आग में जला कर या उन्हें तोड़ कर उन पर लगा हुआ सोना निकाला जा रहा था।

राना बेनीमाधव के अन्तःपुर से भी अन्दर एक संग्रहागार मिला। चौदह फुट लम्बा और उतना ही चौड़ा वर्गाकार कमरा, जिसमें तीन–तीन फुट के फासले पर सन्दूकें और अलमारियाँ लगी थीं छत तक। उन में भरे हुए थे वेशकीमत रेशमी वस्त्र, बहुमूल्य कश्मारी शालें, सोने चाँदी के रत्न जड़े आभूषण। एक सन्दूकची क अलग–अलग खानों में भरे थे हीरे, लाल पुखराज और नीलम।

रघुवीर कुछ समय पहले एक ऐसे लोक में था जहाँ सब कुछ अदृश्य था, कितना दीख रहा था कि बता पाना असम्भव। यह दूसरा लोक था, यहाँ जो कुछ दीख रहा था, डरावना था। सहसा रघुवीर ने देखा, गाँव से कलपादाई आ रही थीं। सिपाहियों की हटाते हुए कलपादाई बोलीं, अरे बेटवा, लेव, पानी पी लेव बेटवा !

लोटा किये रघुवीर ने अपने आसपास बैठे हुए लोगों की ओर देखा। एक दो लोगों को थोड़ा पानी पिला कर बाकी सारा रघुवीर जैसे एक घूँट में पी गये। अउर लाती हूँ बेटवा ! सिपाही ने बन्दूक के कुन्दे से धक्का दिया, कलपादाई गिर गयीं। रघुवीर ने दौड़ कर दाई को सम्भालते हुए गाँव के भीतर जाने के लिए हाथ जोड़े। कलपादाई गाँव की तरफ चली गयीं।

दोपहर। फिर तीसरा पहर। तमाम आदमियों के साथ फकीर दुआशाह भी पकड़ कर लाये गये थे। वहां सारा मंजर देख कर दुआशाह गा पड़े :

है जल्वाएतन से दरो दीवार बसन्ती।
पोशाक जो पहने है मेरा यार बसन्ती।

क्या फस्लेबहारी ने शगूफे हैं खिलाये।
माशूक हैं फिरते सरे बाजार बसन्ती।।

कर्नल एलक्जेण्डर गुस्से में बोला, फाँसी पर चढ़ा दो इस बेवकूफ को। सिपाहियों ने दुआशाह को दबोच लिया। रघुवीर ने होपग्राण्ट से कहा, यह फकीर है दुआशाह !

फकीर ? फकीर क्या होता है ? क्या काम करता है ?

फकीरी, सब से मुहब्बत करने वाला, सब को दुआ देने वाला।

दुआशाह गा पड़े :

हम से न बोलो पिराय मोरी अँखियाँ।
हम से न बोलो !.....
रात कहे पिया झुलनी गढ़ा दूँ
झुलनी गढ़ा दूँ !
होते बिहान बिसर गयीं बतियाँ।
हम से न बोली !.....
जाओ वहीं जहूँ रैन गँवायी।
घूँघट जिन खोलो दुखाय गयी अँखियाँ।
हम से न बोलो !.....

दिन डूब गया। अपनी जगह बैठे–बैठे रघुवीर ने अब तक जितना कुछ देखा, उससे उसके मन में एक बड़ा बोझ उत्तर गया, आत्मगौरव का बोझ।

उसे दिखा कि जो लड़ाई हुई थी वह अंग्रेजों और हम लोगों के बीच कोई सुनियोजित लड़ाई नहीं थी। अंग्रेज अपने लक्ष्यों, विचारों, कार्यो में एक थे। पर हम लोगों में ऐसा कुछ नहीं था।

वहीं से उस ने देखा कि अंग्रेज छावनी में प्रत्येक अंग्रेज के पीछे दस हमारे लोग हैं। यह साफ जाहिर है कि हमारी सहायता के बिना अंग्रेज सेना वह लड़ाई नहीं जीत सकती थी। भयंकर आग में अंग्रेज सिपाही के लिए भोजन लाने वाला बावर्ची हिन्दुस्तानी ही था। जबर्दस्त लड़ाई में फँसे हुए अंग्रेज सिपाही को पानी पिलाने वाला भी हिन्दुस्तानी था। घायल हुए सिपाहियों को डोली में रख कर ले जाने वाला भी हिन्दुस्तानी ही था। यह लड़ाई नहीं, एक ऐसा मामला था जिस में अपने समान स्वामी की देखरेख में एक दास अपने साथी को अंग्रेज की बेड़ियों से पूरी मजबूती के साथ बाँध रहा हो।.....यह लड़ाई घृणा और भय से भरे हुए लोगों की थी।

जैसे–जैसे अँधेरा गहराता गया, रघुवीर ने देखा आसपास और दूरदराज के गाँवों में अब तक आग की लपटें नहीं बुझी हैं। सचमुच अंग्रेज बदले के लिए इतना प्यासा है। लड़ाई चरित्र को इतना हीन करती है। उस खामोश अँधेरे में रघुवीर चारों ओर ग्रामवासियों के उदास चेहरों को देख कर अपने भीतर से काँप गया। तभी किसी तेज प्रकाश की तरह हंसगौरी की याद आयी ! हंसगौरी। वही दुल्हन स्वरूप। फिर माई की याद आयी। माई का फूल महल की राख में है !..... फिर पिता का भागता हुआ चेहरा आँखों में जलने लगा।

बाबा जैसे अब भी सामने खड़े कह रहे हों, बताओ किस को किस रूप में देखोगे ? अच्छा पहले यह बताओ, अब अपने आप को किस रूप में देखोगे ? यही तो बुनियाद है। **जा की रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तीन तैसी।** अकेले तो नहीं ?

रघुवीर को अचानक उस अन्धकार में माई और राना बाबा के साि बचपन में की हुई वह नैमिषारण्य की यात्रा की स्मृति कौंध उठी। आगे आगे घोड़े पर राना बाबां बीच में माई की पालकी। पालकी के पीछे सुखपाल में बैठे रघुवीर और हंसगौरी। पीछे–पीछे सिपाही। नैमिषारण्य क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले सब पैदल चल रहे हैं। आगे–आगे दो बच्चे दौड़ रहे हैं–रघु और गौरी, पीछे माई और उन के पीछे बाबा।

छावनी में गैस के हण्डे जल रहे थे। हिन्दुस्तानी सिपाही और तिलंगे अंग्रेजों को पंखे झल रहे थे। रघुवीर होपग्राण्ट के सामने जा कर खड़ा हो गया।

क्या है ?

एक निवेदन। पेड़ों से झूलती लाखों को नीचे जमीन पर रखने की इजाजत चाहता हूँ।

कौन उतारेगा ? तुम ?

जी, हाँ।

रघुवीर अकेले पेड़ों पर चढ़ कर लाशें उतारने लगा तो डरे सहमे हुए लोग सहायता करने लगे, लावारिस लाशों को दो बैलगाड़ियों पर रखवा कर गर्मी की उस रात में जब शंकरपुर से बाहर चला तो पीछे से आवाज आयी, भइया जी !.....और वही दुआशाह जली हुई कण्डी हाथ में लिये हुए दिखे। आगे बढ़े तो हर दिशा में लोग लक्कड़ बोझा सिर पर लिये आये। सब एक साथ चले तो डर कुछ कम हो गया। जंगल के पास वही नदी थी, भरसी, उसी के तट पर चिताओं में सब ने मिल कर आग दी। चिताओं के प्रकाश में सब चुपचाप बैठे थे। आसपास के गाँव से लोग वहाँ आ आ कर बैठते रहे। कोई कुछ बोल नहीं पा रहा था।

रघुवीर को लगा कि वह जैसे भरसी नदी के तट पर चिताओं के सामने नहीं, नैमिषारण्य में बैठा है। चारों और ऋषि मुनि, साधु सन्त बैठे हैं। एक सन्त सिद्धिविनायक की कथा कह रहा है, साधो, सुनो ! बौद्ध धर्म के पतन का एक कारण विदेशी कुषानों का बौद्ध धर्म ग्रहण करना भी था। विदेशी शासकों को पराजित और शामित प्रजा स्वाभाविक रूप से तुच्छ प्रतीत होगी। बौद्धों और ब्राह्मणों की शत्रुता तो अपने देश में थी ही। जब कुषान राजा बौद्ध बन गये तो ब्राह्मणों–बौद्ध संघर्ष की आड़ में प्रजा पर अधिक अत्याचार करने का बहाना मिल गया। राजाश्रय पाकर बौद्ध आचार्य और भिक्खुगण मोटे हो गये। साम्प्रदायिक घृणा ने उन्हें संकीर्ण, हृदयहीन बना दिया। जनता में उन के प्रति आदर नहीं रहा। ऐसे समय में शिव का भार कन्धों पर उठा कर चलने वाले भारशिवों ने विदेशी कुषानों को खदेड़ कर भारत से बाहर निकाल दिया। नैमिषारण्य सम्मेलन का श्रेय उन्हीं भारशिवों को है। नैमिषारण्य का असली उद्देश्य सूत द्वारा महाभारत बाँचना है। सत्यनारायण की कथा, सिद्धिविनायक की कथा, हरतालिका व्रत की कथा, ऋषि पंचमी की कथा, सब यहीं की धरती पर सूत शौनकसंवाद के रूप में फूटी हैं।

दूसरा सन्त कह रहा है, सुनो पंचो ! महात्मा बुद्ध ने एक बड़ी जोरदार बात उठायी थी। उन्होंने कहा कि हर सत्य परिवर्तनशील है। धर्म को बिना सोचे समझे मत ग्रहण करो। जो बुद्धि को उचित जँचे वही धर्म है। कुछ लोग विष्णु को प्रधान देवता मान कर पांचरात्र धर्म मानते थे और कुछ शिव को मान कर पाशुपत धर्म। कुद देवी को प्रधान शक्ति मान कर शाक्त थे। सूर्य, गणपति, कार्तिकेय, विभिन्न नदियाँ, वृक्ष और सर्प, गरुड़, हनुमान इस देश की जनता द्वारा पूजे जाते थे। इन सब में परस्पर संघर्ष था। पर प्रबल विरोधी को परास्त करने के लिए सारे पन्थों सम्प्रदायों ने मिल कर एक संयुक्त मोर्चा बनाया भारत धर्म। यही महाभारत ! हमारा ब्राह्मण पुरखा तेजस्वी होते हुए भी तानाशाह था। वह जिज्ञासुओं की जिज्ञासा शान्त न कर उसे घुड़कता था। शंकराचार्य ने उस तानाशाही को तोड़ा !.....और यह तानाशाही ?

रघुवीर को लगा वह जिस भरसी नदी के तट पर जलती चिताओं के सामने बैठा है वह उन्हीं भारशिवों की कोई पहचान तो नहीं।

सुबह हो रही थी।

भोर के प्रकाश में पूरी भरसी नदी चमकने लगी थी। शंकरपुर का जंगल, आसपास बैठे लोग, सूखी प्यासी धरती, पेड़–पालो, चिड़िया–चुरंग, खर पतवार, बोलबात–सब कुछ दिखाई पड़ने लगा था : भू : भुव : स्व :.....।

तेरह

अवध में तालुकेदारी खत्म हो गयी। इस्तमरारी बन्दोबस्त बंगाल से लेकर बिहार तक सन् 1793 से 1817 के बीच हुआ था और उस से जमीन्दार की सृष्टि हुई। पर उस समय जमीन की नापजोख नहीं हुई थी। लिहाजा लड़ाई झगड़े और मामले–मुकदमे का कोई अन्त नहीं था। सन् 1840 में अंग्रेज सरकार की ओर से पैंतीस साल की नाप जोख के बाद केवल गाँवों की चौहद्दी ही तै की गयी।

सन् 1857 के अवध में जो जमीन्दारी आयी उस से प्रजा थर–थर काँप उठी। 'जरीब' कानून लगा, जरीब से नापजोख कर एक–एक टुकड़ा जमीन का ब्यौरा। बाँटजोख और उस की मिल्कियत तै करने के लिए इन्तजाम हुआ। वही जरीब कानून अब शंकरपुर गाँव में पहुँचा।

यह खबर तो गाँव भर में फैली ही थी कि 5,513 रुपये में राना बेनीमाधव का सारा तालुका कम्पनी राज के एक बंगाली बाबू दक्षिण रंजन मुखर्जी ने खरीद लिया है। अब एक और खबर फैली कि शंकरपुर सहित राना के बीस गाँव अंग्रेजों के खैरख्वाह सूरजसिंह को सरकार ने इनाम में दे दिया। हंसगौरी के पिता सूरजसिंह अब जमीन्दार हुए !

जो भी खबर फैली सब सच होती चली गयी। रायबरेली जिला हो गया। शंकरपुर रायबरेली जिले का एक गाँव हो गया।.....

रायबरेली का कलक्टर मार्टिन साहब आया था शंकरपुर में। सूरजसिंह ने उस की अगवानी की थी। इधर के सारे जमीन्दारों और सरकार के खैरख्वाह लोगों का एक दरबार लगा था राना के महल के खण्डहर के सामने। उसी दरबार में कलक्टर साहब ने सनद बाँटी थी। जमीन्दारी की सनद !

मार्टिन साहब ने सनद के साथ सरकारी हुक्मनामे पर सारे जमीन्दारों से हलफनामा के साथ दस्तखत कराये थे; अब तुम्हारी तीन खास जिम्मेदारियाँ हैं। पहली, मुकर्रर समय से दस दिन पहले सरकारी खजाने में सारी मालगुजारी जमा कर देना। दूसरी, अब कोई अपने पास किसी तरह का हथियार बन्दूक, तलवार, गोला बारूद नहीं रख सकता, न कोई हथियार–असला बना सकता है। तीसरी, अब जमीन्दार, रियाया सब की रक्षा और हिफाजत की जिम्मेदारी सरकार की है। इस में किसी की कोई दखलन्दाजी नहीं होगी।

सरकार की तरफ से गाँव–गाँव में ढिढोरा पिटवा दिया गया कि तीन महीने के भीतर सब अपने अपने हथियार सरकार के माल गोदाम में जमा कर दें। तीन महीने के बाद किसी भी आम और खास के पास या उस के घरबार में कोई भी हथियार मिलेगा तो उसे फाँसी की सजा दी जाएगी।

पूरे अवध में सबके किले ढह गये। सब शस्त्रहीन हो गये। अब खेत और जमीन जमीन्दारों की व्यक्तिगत सम्पत्ति हो गयी।

गाढ़े और नजर न धँसने वाले अँधेरे में सारा शंकरपुर गाँव मानो खो गया है। अन्दाज से ही कहा जा सकता है कि सामने राह के उस तरफ राना के महल का खण्डहर है। खण्डहर भी नहीं, बस उस का थोड़ा सा हिस्सा। बाकी सब गड्ढा हो गया है। पश्चिम तरफ है दुर्गा मन्दिर ओर पूरब की ओर ठाकुरद्वारा। ये दोनों देवस्थान तब महल के भीतर थे, अब खुले आकाश के नीचे एकदम मौन, अँधेरे में डूब गये हैं।

सिर्फ शाम को ही एक बार उन देवस्थानों में दिये की रोशनी थोड़ी देर के लिए दिखाई पड़ती। न जाने कौन आकर जला जाता ! फिर अँधेरा ही अँधेरा।.....जमीन्दार सूरजसिंह को हवेली के अलावा बाकी पूरे गाँव–घरों में शाम को ही दरवाजे बन्द हो जाते।

रघुवीर ने एक बार फिर नजर गड़ा कर गाँव को देखा। गाढ़े अँधेरे में सोता हुआ शंकरपुर। असहाय शिशु के आत्मसमर्पण जैसा वह चित्र उस की आँखों में साफ उभर रहा है। सहसा रघुवीर की सर चार्ल्स मेटकाफ की बात याद आयी–शक, हूण, यवन, मंगोल, पठान, मुगल, मराठा, इंग्लैण्ड और 'मास्टर्स इन टर्न बट द विलेज कम्युनिटी रिमेन्स द सेम.....' नहीं। फिर उसे लार्ड क्लाइव की बात याद आयी–अंग्रेज सब कुछ तोड़ेगा, टुकड़े कर मिटा देगा।

सहसा उसे पंचपुरी में रोने और कुछ बोलचाल की आहट मिली। वह दबे पाँव जाकर खड़ा हो गया। पंचपुरी में आग लगने के बाद अब तक उस पर कोई छाजन छप्पर नहीं पड़ा था। चबूतरे पर गाँव के कुछ लोग बैठे थे। कुछ रो रहे थे। खेवट राम कह रहा था, शंकरपुर से निकल कर राना माधव गढ़ी नारे पर गये। वहाँ से मीरा पहुँचे। राना शंकरपुर से इसी लिए भागे कि इहाँ लड़ाई न हो, गाँव बर्बाद न हो जाय।

मुला गाँव तो बर्बाद होइ गया, यह कह कर फौजदार देवकी दूबे फफक कर रो पड़े।

धीरज राखो फौजदार काका !

खेवट बताने लगा, मीरा के बाग में राना जम कर लड़े होपग्राण्ट से। अंग्रेज लोहा मान गये। होप ने राना को कहला भेजा। कि अगर राना आगे बिना किसी जोर जुलम के समर्पण कर दें, अंग्रेजों का अधीनता मान ले तो उन को माफ कर दिया जाएगा। मगर वाह! राना बहादुर ने खटाक उत्तर दिया कि वे अपने शरीर का तो समर्पण नहीं कर सकते, क्योंकि वह तो ईश्वर का है जिसकी रक्षा के लिए उन्हें लड़ना ही है। रही समर्पण और अधीनता की बात, वह तो केवल उसी के हाथ में है जिसने यह जीवन दिया।

लोग वाह—वाह करके रोने लगे।

खेवट ने आगे बताया, फिर मीरा के बाग में रात भर लड़ाई हुई। तब तक ब्रिग्रेडियर ईवले के साथ अंग्रेजों की एक सेना और आय गयी। राना फिर भागे वहाँ से। ईवले और ग्राण्ट, दोनों ने राना का पीछा किया। राना अपनी सेना के साथ डुँडिया खेड़ा के जंगल में निकल गये। अंग्रेज जंगल में घबड़ा गये। तब इसी सूरजसिंह ने खबर दी कि राना रामबख्श के गाँव में हैं, उनके किले में। फिर क्या था ! होपग्राण्ट ने रामबख्श के किले को तोप लगा दी। राना के काफी सिपाही मारे गये। मगर राना फिर निकल गये।

अब तीनों तरफ से राना का पीछा किया जाने लगा। पश्चिम तरफ से होपग्राण्ट, दक्षिण तरफ से ब्रिग्रेडियर ईवले और पूरब तरफ से क्लाइड। राना ने गोमती को पार किया। गोमती के उस पार राना और उनकी सेना और इस पार अंग्रेज सेना, तीन बटालियन और तीन सेनापति। उधर राना अकेले। कुल तीन सौ पैंतीस घुड़सवार बहादुर तिलंगे उनके साथ में। अंग्रेजों ने बहुत मुश्किल से गोमती को पार किया। तभी देखते क्या हैं कि राना और उनकी सेना फिर गोमती के उस पार। फिर क्या करें ? अंग्रेजों के छक्के छूट गये। जब अंग्रेज गोमती के इस पार तो राना उस पार। गोमती के बालू में राना ने अंग्रेजों को तबाह कर दिया। तब तक घाघरा नदी पार कर अंग्रेजों की देशी सेना इधर आयी। राना जब चारों तरफ से घिर गये तो घाघरा नदी को पार कर गये। बैसवाड़ा से अवध में आ कर राना बहराइच की ओर गये। अंग्रेज परेशान कि राना किधर गायब हो गये। तब यही धारुपुर के हनुमन्त सिंह ने अंग्रेजों को खबर दी कि राना घाघरा नदी के बैराम घाट के पास मिनैनी गाँव में हैं।

राना ने देखा कि पूरे अवध में से देवीबख्श, मुहम्मद हसन, मेंहदी हसन, अमर सिंह, खान बहादुर खाँ, बेगम हजरत महल, मम्मू खाँ, नाना साहब, बाला साहब, ज्वाला प्रसाद और विद्रोही नेता चारों ओर से घेर कर उत्तर दिशा की ओर जैसे हाँके जा रहे हैं ! भइया ई समझो कि जैसे कोई महामृगया शिकार हो, तराई के जंगल की ओर वे वीर पुरुष हाँके जा रहे हैं।

तीनों तरफ से जाल बिछा था। तभी लॉर्ड क्लाइड को गुप्तचरों से यह खबर मिली की बाला साहब और राना तराई के पास तुलसीपुर में हैं। ब्रिग्रेडियर रोक्राफ्ट ने तुलसीपुर पर धावा किया। गजब की लड़ाई हुई तुलसीपुर के किले में।

लॉर्ड क्लाइड चिल्ला—चिल्ला कर कह रहा था, राना आत्मसमर्पण कर दो। हथियार डाल दो। हम तुम्हें राजा की पदवी देंगे। मगर राना वहाँ लड़ते—लड़ते नानपारा की ओर चले गये। नानपारा का किला है घने जंगल के बीच। राना माधव अपने शत्रुओं की बढ़त को यहीं रोक देना चाहते थे। मगर बरोड़दिया में जो लड़ाई हुई उसमें राना को फिर पीछे हटना पड़ा। तभी राना की भेंट नाना साहब पेशवा से हुई। दोनों राप्ती नदी के किनारे बाँकी के पास अंग्रेजों से लडत्रे। बाँकी की लड़ाई के बाद राना ने तराई के जंगल की ओर.....

कहते—कहते खेवट का गला रुँध गया और वह रो पड़ा।

रघुवीर ने बढ़ कर खेवट के माथे पर हाथ रख कर कहा, खेवट काका, राम राम कहो, राम राम !

सारे लोग उस अँधेरे में रघुवीर के पास आ कर खड़े हो गये। रघुवीर के मुँह से निकला, राम राम कहो.... राम राम !

जैसे डूबते को अचानक कोई सहारा मिल जाय। राम ! राम....!

पाठशाला में रघुवीर रात के अन्तिम पहर में सोया था। तभी दरवाजे की साँकल बजी। रघुवीर की नींद खुल गयी। कौन ?

गौरी !

हंसगौरी ! तुम ?

दरवाजा खोले रघुवीर एकटक हंसगौरी को निहारता रह गया। गौरी बोली, लो सिन्दुर से माँग भर दो, लो, सोचो नहीं !

रघुवीर ने कमरे में आकर दिये की रोशनी की। देखा, वही सोहाग की साड़ी, वही आभूषण, वही दुल्हन हंसगौरी !

गौरी की हथैली से चुटकी भर सिन्दुर ले कर रघुवीर ने हंसगौरी की माँग भर दी ! घुटने के बल जमीन पर बैठ कर हंसगौरी ने रघुवीर की चरणरज ले कर अपने माथे पर लगाया। फिर उठ खड़ी हुई।

दोनों एक–दूसरे को अपलक निहारते रह गये। गौरी के मुँह से फूटा, राना बाबा ?

रघुवीर अपने भीतर–बाहर से सिहर गया। उसाँस खींच कर उसने आँखें बन्द कर लीं। उसके कानों में असंख्य कण्ठों से गाया जाता हुआ कोई संगीत भरने लगा। उसकी आँखें खुल गयीं। रघुवीर ने सचमुच हंसगौरी को पहली बार देखा ! एक तरह का सौन्दर्य ऐसा होता है जो लगता है कि वह जैसे देवता का प्रसाद हो ! प्रकृति का आशीष हो !.....हंसगौरी का वह रूप, वह सौन्दर्य उसी श्रेणी का था। वह जैसे सुबह के शुक्र तारे की भाँति था, रात के संसार से स्वतन्त्र, प्रभात के संसार से उस पार का ! रघुवीर के मुँह से निकला, पहले का जब सब कुछ समाप्त हो गया, फिर यह आरम्भ ?.....

हंसगौरी बोली, आरम्भ से पहले भी आरम्भ है। सन्ध्या बेला का दीपक जलाने के लिए बत्ती सबेरे ही बट लेनी पड़ती है !.....अच्छा, अब चलूँगी।

कहाँ ?

हंसगौरी बोली, तब से हर रात के पिछले पहर तुम्हें ढूँढ़ने निकलती थी। इसी तरह। ढुँढ़ती ढुँढ़ती वापस लौट जाती थी। आज वापस नहीं जा रही। आ रही हूँ तुम्हारे पास। मेरे ऊपर मेरे पिता का पहरा है। पर यह कितना आश्चर्यजनक है, देखो !.....हंसगौरी भागती हुई चली गयी। रघुवीर उस दशा में देखता रह गया।

राना बाबा का वाक्य, जहाँ दोनों में प्रेम असम्भव था, वहीं से प्रेम शुरू हुआ था, असम्भव का ही नाम प्रेम है.....। हंसगौरी के पिता सूरजसिंह ने जमीन्दार होते ही गर्जना की थी, कैसी शादी ? कैसा ब्याह ?..... मेरी बेटी से राना के पुत्र की शादी नहीं हुई। कन्यादान कहाँ हुआ ? बिना सप्तपदी के, सेंदुर–सोहाग के बिना कैसा ब्याह ?

राना बाबा का मुख !.....आचार का अतिक्रमण ही अत्याचार है। मर्यादा उल्लंघन ही अत्याचार है। हम अत्याचार से अत्याचार की लड़ाई नहीं लड़ सकते। लड़ाई है तो केवल राम और रावण में !.....

.....पिता राना बेनीमाधव का मुख ! माई का वह मुख ! साथ ही वे असंख्य मुख.....हे राम !

इतने भोर में ही पंचपुरी पर लोगों की इतनी बोलचाल ! बात क्या है ? रघुवीर को देखते ही अस्सी साल के जगताप बाबा ने झुक कर प्रणाम किया। इस पर गबदू पाण्डे बोले, यह क्या ? हमने तुहुँका कितनी बार मना किया कि ई सब राना के जमाने में चलता था। ऊ जमाना अब लदि गै। अब जमाना है जमीन्दार साहेब बाबू सूरजसिंह का। अब तालुकेदारी नहीं, जमींन्दारी है।

जगताप बाबा ने कहा, हाँ हाँ अब का जमाना बेसक नवा है भइया। ऊ जमाने का अब कुछ न रहा। मुल मुसीबत तो याह है कि ऊ जमाने के हम पचे ई जमाने में रहि गये !.....

पहले जमाने के राना माधव के अंगरक्षक टिकैतराय अब सूरजसिंह जमींन्दार के नायब गुमास्ता हैं। उन्होंने डपट कर कहा, अरे बुड्ढ़े, क्या बकता हैं ?

गबदू पाण्डे को सहारा मिल गया, कहता है ऊ जमाना ! अरे अभी कुल चार साल बीता नहीं कि ऊ बीते जमाने की कहानी.....हुँ !

जगताप बाबा जमीन पर उकड़ूँ बैठते हुए बोले, कहानी ? हाँ हाँ, ऊ जमाने की बात कहानी ही तो है। अभी चारे साल बीता है तो का ? ऊ समय शंकरपुर गाँव माँ गाय–भैंइस के बिआने पर सब दूध माठा बाँटा करते रहें। पेड़ों पर फल पकते तो फल कोऊ अकेले नहीं खाता था। ब्याह शादी, किरिया करम में बरतन बँटते थे। लोगबाग देवतन की परतिष्ठा करते थे। राह किनारे आम, कटहल, फल–फूल के बर्गइचा लगाते थे। तलैया, पोखरा खोदवाते थे। बड़े बड़कवा, गुरु, ब्राह्मण, फकीर, सन्त, साधु को श्रद्धा से प्रणाम करते थे। चार मेंई सब कहानी खत्म होइगै कि नाहीं ?

इतने सबेरे पंचपुरी के चबूतरे पर लगान की वसूली चल रही थी। बड़े गुमास्ता लगान की वसूली कर रहे थे। रघुवीर ने नायब गुमास्ता टिकैतराय से पूछा, जमीन–जायदाद अब माल है तभी मालगुजारी है। पर यह लगान क्या है ?

टिकैतराय मुस्कराये, अरे भइयाजी, मालगुजारी तो है जो जमीन्दार कास्तकार रियाया से वसूल कर सरकारी खजाने में जमा करता है। इसके बाद लगान है जो जमीन्दार रियाया से वसूल कर अपनी तिजोरी में रखता है।

और जमीन्दार का इतना खर्चा कैसे चलता है ?

उसके लिए नजराना।

तभी खेवट का गीत स्वर सुनाई दिया :

मालगुजारी सरीर है
तो लगान हैं आतमा।
नजराना जमदूत है
तो जमीन्दार परमातमा।।

लगान की पहली किस्त वसूली जा रही थी। साथ ही पिछली किस्त का बकाया भी वसूला जा रहा था। जिसकी वसूली नहीं होगी उस का मूल सूद दोनों अगली किस्त में मिला कर सब असल करार दे दिया जायेगा।

जमींदार के दो सिपाही, बुलबुली सिंह और कौउआ सिंह मनोहर कुम्हार और चैतू तेली को पकड़े हुए ले जा रहे थे। दोनों एक ही साँस में चिल्ला रहे थे, दोहाई सरकार की !!!

तालुकेदार हुजूर था। नवाब की नवाबी थी। वह मालिक था। पर जमीन्दार सरकार हो गया। अंग्रेज सरकार का बिचोलिया था नजमींदार, इसी लिए वही सरकार हो गया प्रजा के लिए। क्या दिमाग है अंग्रेज का भी ! सत्तावन की लड़ाई देख कर अंग्रेज सरकार ने तय किया है कि राज्य और प्रजा का सीधा रिश्ता ही तोड़ दो। बीच में ला दो जमीन्दार को। इस से दो काम बनेंगे। लूटने और चूसने को एक मजबूत स्थायी आधार मिलेगा तथा प्रजा राजा–जमीन्दार से लडेंगी। ताकी अंग्रेज से न कोई शिकायत हो सके, न लड़ाई।

मनोहर रोते हुए बोला, गुमास्ता बाबू ! ई लगान हमरे मान का नाहीं है। चेतू तेली ने कहा, सरकार, गये दिन हम साहेब पटवारी को बतावा रहा कि हम शंकरपुर छोड़ि के अब रायबरेली के बजार में रहते हैं.... .!

गुमास्ता के इशारे पर रमजान चौकीदार ने डांटा, अबे चोप्प ! ऊ तालुकेदारी नहीं है कि जब चाहा एक गाँव छोड़ कर दूसरे गाँव में जाई बसे। ई है जमीन्दारी। अंग्रेज सरकार से पक्की सनद मिली है जमीन्दार बहादुर को। अबे तू भाग कर जायेगा कहाँ ?

रघुवीर देख रहा है सब। लगान की बढ़ोत्तरी। रियाया के पास है ही क्या ! शरीर है। भूख है। डर है। सो बेगार ले ले कर जमीन्दार ने पहले अपनी हवेली बनवायी। बाग बगीचे बनवाये। अपनी खेती खड़ी की। दिन रात बेगार ! चमार बेगार में जूते बना कर दे जमीन्दार साहब को ! कुरमी अहीर हल बैल के साथ बेगार में खेती करें ! कुम्हार बर्तन दे, तेली तेल दे.....

रियाया किसान के पास रह क्या गया है। घर में अनाज का नाम नहीं। बैसाख के बाद से प्रजा ने मटरू साह और शंकर साहू से उधार खाना शुरू कर दिया है। साल भर में तन ढँकने को एक–दो से

ज्यादा कपड़े मयस्सर नहीं हैं। छप्पर पर फूस साबुत नहीं है। सारी बरसात का पानी घर के अन्दर ही गिरता है। यह सब क्या देखते नहीं हैं जमीन्दार साहब ? सिपाही–प्यादे भेज कर बेगारी कराने के लिए रैयतों को पकड़वा मँगाते हैं। कमाल है, बन्दोबस्त के रेकार्ड तक में यह बेगार खटना रियाया के ऊपर लगी मालगुजारी में लिखा है। ऊपर से लगान है, रहने के घर का लगान। कुएँ पर लगान। खूँटा गाड़ने पर लगान.....। पूरे गाँव पर इतनी बड़ी विपत्ति अपने ही सूरजसिंह जमीन्दार से !

हंसगौरी की याद आयी। वह कैसे होगी ? उस से कुछ बात भी न हो सकी।

सहसा रघुवीर को राना बाबा की कही हुई कहानी याद हो आयी। मछुआरे की टोकरी से एक ब्राह्मण महराज शालिग्राम की बटिया ले आये थे। उस शालिग्राम की पूजा से ब्राह्मण ने सरबस गँवा दिया लेकिन पूजा करना नहीं छोड़ा। बाबा ने कहा था, मनुष्य में जो भगवान है, उसकी भी वही गति है। वह है मछुआरे की टोकरी की शिला, शालिग्राम की बटिया !

सब कुछ चला गया, पिता, माता घर द्वार ! उसके साथ अन्तर के देवता कौन सा खेल खेलेंगे ? रघुवीर ने बढ़ कर मनोहर और चैतू को गुमास्ता के चंगुल से छुड़ाते हुए कहा, यह सरोसर अन्याय है। भगवान से तो डरो !

गुमास्ता ने पूछा, तुम्हारे पिता भगवान से डरते थे ?

नहीं डरते थे। लेकिन क्या उस का दण्ड उन्हें नहीं मिला ?

हम जमीन्दार साहेब से क्या कहेंगे ? जवाबदेही तो हमारी है।

रघुवीर ने कहा, कह देना जमीन्दार से कि आप के दामाद ने ऐसा किया है।

सारे लोग अवाक् रघुवीर का मुँह तकने लगे।

बाहर गाँव के सिवान में मेघ घरज उठे। बरसात के पानी भरे बादलों की गम्भीर गरज ! सब भागे वहाँ से। पंचपुरी भीगने लगी। रघुवीर अकेला वहीं चबूतरे पर खड़ा भीगने लगा। मूसलाधार वर्षा थी। रात हो आयी। चारों तरफ अंधेरा। कुछ लोगों की चलने की आहट आ रही थी। इस वर्षा में इतनी रात को ये कौन लोग हैं ? कहाँ जा रहे हैं ?

रघुवीर ने पाठशाला के बरामदे में खड़े–खड़े आवाज दी : कौन ? कौन लोग हो भइया ? जवाब मिला, हम पचन हैं बाबू ! भोनू, शिवदास, सुदीहल ! शिवदास बोला, जमीन्दार के सिरवार का हुकुम है कि सरकार के खेतन कै मेड़ बाँधि आवो।

रघुवीर देखता ही रह गया। जमीन्दार के हलवाहे, इस वर्षा और अँधेरी रात में उन के खेत बचाने के लिए चले जा रहे हैं।

गांव में कहीं से किसी बृद्ध का एक करुण स्वर फूटने लगा :

आजु मोहिं रघुवीर की सुधि आयी !
सावन गरजे भादों बरसै
पौन बहै पुरवाई
कौनो बिरिछ तर भीजत होइहैं
सिया राम लखन दोनों भाई !
विपदा कही न जाई.....

रघुवीर की आँखें आँसुओं से भर आयीं। उन आँसुओं में राना बाबा राना माधव, गंगादीन, भोनू, शिवदास, सुदीहल, देवीबख्श, मुहम्मद हसन, बेगम हजरत महल, नाना साहब और असंख्य मुख भीगते हुए दिखाई देने लगे।.....

वर्षा रुक गयी। चारों तरफ सन्नाटा छा गया। केवल मेंढक और झींगुरी की आवाजें उस सन्नाटे को तोड़ने की कोशिश कर रही थीं।

पहुना ! = डरी हुई आवाज में अचानक किसी ने पुकारा।

कौन ? सोनपत्ती !

रघुवीर के सामने ऑवल से ढके थाल को सोनपत्ती ने खोलते हुए कहा, सखी ने भेजा है पहुना। ई पहिनने की धोती है। ई कुर्त्ता है। ई अउर वस्त्र है। ई भोजन है। सखी ने कहा है अपने सामने पहुना का वस्त्र बदलवा देना। भोजन कराई के आना।

मैं अपने ही गाँव में पहुना कैसे हो गया ?

होइ नहीं गये ? देखो हमारी ओर।

सोनपत्ती ने ऐसी नजर से रघुवीर को देखा कि रघुवीर पिघल कर मानो पानी हो गये। अपने भीगे वस्त्र को बदल कर रघुवीर ने भोजन किया। सोनपत्ती खिसिर खिसिर हँसती रही। और मजाक करती रही। उसने कहा, पहुना, सखी ने एक किस्सा बुझाया है। बूझो तो जानी :

झिर झिर झिर झिर नदी बहत है।
झिर झिर बहै बयार।
ए हो हम तुहँसे पूछी
तोहरे मोछिया कै कौन सिंगार ?

रघुवीर चुपचाप सोचने लगा।

बूझो जल्दी, हमें देर हो रही है।

रघुवीर के मुँह से अनायास निकला :

झिर झिर झिर झिर नदी बहत है
झिर झिर बहै बयार
जो है माँग कै सेन्दुर
उहै मोरे मोछिया के सिंगार !

खिलखिला कर हँसती हुई सोनपत्ती जाने के लिए खड़ी हो गयी। जाते जाते बोली, सखी ने ई चिट्ठी दी है। जवाब तैयार राख्यो, हाँ ! रघुवीर के हाथ में सखी की चिट्ठी देते हुए सोनपत्ती पहुना की गदोरी में चिकोटी काट कर भाग गयी। रघुवीर जैसे ही वह चिट्ठी पढ़ने चला, दरवाजे पर किसी के आने की आहट हुई।

कौन ?

मैं हूँ खेवट।

क्या बात है ?

बुढ़वा बरगद के नीचे 'चाकचोबन्द' मालूम पड़त है बाबू। अब गाँव में और जगाई ?

क्या कह रहे हो ? डाकू ?

हाँ डाकू। घर सेतिन निकला तो देख्या कि बुढ़वा बरगद के नीचे लाल रोशनी दप दप कर लागति है। मैं सोचत रहेउँ, गौर किहेउँ, अरे ई तो मसाल है ! पानी मसाल लिये डकैत जमा है ?

तुम जल्दी से रमजान चौकीदार को बुला लाओ।

ना बाबू ना, चौकीदार थाने गया है रसूलपुर।

रघुवीर चुपचाप स्थिर हो कर खड़ा रहा। चाकचोबन्दों का क्या ठिकाना। बरसात के दिनों में लोगों की गरीबी आसमान छूती है। तिस पर यह अँधेरी रात। जो लोग चोरी डकैती करते हैं, दुनिया की गरीबी, अभाव और अपमान में सोया उन का गुस्सा सब से पहले इसी खूंखार बेरहम और अपमान में सोया उन का गुस्सा सब से पहले इसी खूंखार बेरहम अपराध–वृत्ति को जगाता है और तब बाहरी दुनिया को इन पापी हाथों के इशारे से बुलाता है। धीरे–धीरे वे लोग आपस में तालमेल कायम करते हैं। उस के बाद चाकचोबन्द हो कर एक रात सब बाहर निकल पड़ते हैं। निश्चित स्थान पर आ कर एक आदमी माटी की हाँडी में मुँह डाल कर एक आवाज रात के सन्नाटे में गुँजा देता है। उसी इशारे से लोग इकट्ठे होते हैं। फिर मशाल जला कर देवी भवानी की पूजा करते हैं। फिर चाकचोबन्द शुरू ! उस वक्त वे किसी को भी नहीं पहचानते। अपनी सन्तान को भी नहीं। बस खून और लूट।.....

रघुवीर अँधेरे में खड़ा सिहर उठा। फिर सम्भल कर बोला, चलो चलते हैं।

अरे बाप रे ऐसे ? ना ना !

क्यों ?

बाप रे बाप, मैं नहीं जाता। आप भी मत जाइए। बाबू !.....

रघुवीर उस अँधेरे को चीरता हुआ चला। पीछे–पीछे थर थर काँपता हुआ खेवट भी। बुढ़वा बरगद पास आ गया। रघुवीर ने देखा, कुल नौ जने हैं। मुँह पर मूँछें हैं सब के। तीन के कन्धों पर बन्दूकें लटकी हैं। बाकी के हाथों में तलवार है। बन्दूक तान कर एक ने पूछा, कौन है ?

रघुवीर।

रघुवीर राना ?

हाँ, रुको।

सब भागने लगे। रघुवीर ने मशाल हाथ में ले कर पीछा करते हुए कहा, रुको ! वे थोड़ी दूर भाग कर रुक गये। रघुवीर उन सब के मुँह देखने लगा।

वे सब राना बेनीमाधव की सेना के सिपाही थे।

चोदह

रात भर रघुवीर चिन्तित रहा। चाकचौबन्द के वे सारे ठग डाकू राना के सिपाही थे। इतना ही नहीं, उन का सरदार फगुनी था। उसने रघुवीर को बताया, नवाबी फौज के, तालुकेदारों के और विद्रोही बंगाल सेना के हजारों सिपाही, तिलंगे अपनी बेकारी और निराशा में या तो साधु सन्यासी हो गये या फिर ठग डाकू बन गये। वे कातिक से फागुन तक ठगी डकैती नहीं करते। दरअसल उस दौरान यहाँ सब की हालत इतनी बुरी नहीं रहती। उस समय ऐसा घृणित पाप करना तो दूर रहा, ये लोग व्रत करते हैं। पुण्य की कामना से उपवास करते हैं। भीख देते हैं। वे मन ही मन लक्ष्मी को प्रणाम करते हुए कहते हैं कि हे देवी लक्ष्मी माता, तुम रहस्यमयी हो ! तुम्हारे रहने से भी आफत है, नहीं रहने से भी आफत है। तराई के जंगल में तुम चली गयी हो देवी ! और इधर जब से जमीन्दारी आयी है, जमीन्दार लोग तरह तरह के छल–प्रपंच से गरीबों का सरबस हड़प रहे हैं, लगान के सूद में, कर्ज के सूद में, सूद पर सूद में। यहाँ तक कि लोगों को गलत तरीके से दबाने के लिए वे झूठे मामले मुकदमे करने से भी नहीं हिचकते। इन बातों को वे अधर्म नहीं मानते। इन सब की जड़ में तुम्ही हो लक्ष्मी माता ! हे माँ, तुम्हारे अभाव से ही इन अभागों में ऐसी पापवृत्ति जाग उठी है। किस दिन किस गाँव में डकैती पड़ जाएगी, कोई नहीं जानता।

गाँव से खेतिहर खुदकाश्त करने वाले और सिकमी जोतने वाले रघुवीर के पास आते और पूछते क्या किया जाये भइया ? रघुवीर उन्हें क्या जवाब दे ?

तभी एक दिन सुबह ही सुबह शंकरपुर में शोर हुआ कि पाठशाला के गुरुजी का पूत गंगादीन सिपाही आया है। विधवा पण्डिताईन को तब तक विश्वास हो गया था कि उनका पूत गंगादीन लड़ाई में मारा जा चुका है।

बिल्कुल फटेहाल मूँछ–दाढ़ी बढ़ाये गंगादीन जब गाँव में आया तो उसे कोई पहचान न सका। जैसे ही कहता कि वह गंगादीन है तो लोग डर के मारे भागने लगते। वह भागता अपने घर गया। माँ कुएँ से पानी भरा घड़ा लिये चलीं और सामने जब उसे देखा तो भूत–भूत चिल्ला कर वहीं बेहोश हो गिर गयीं। गाँव की भीड़ जमा हो गयी। उस भीड़ में रघुवीर को देख कर गंगादीन ने कहा, भइया, कोई उपाय कीजिए। देखिए, लोग क्या कर रहे हैं।

रघुवीर ने बढ़ कर गंगादीन को भरोसा दिया। वह लोगों को समझाने लगा कि यह गंगादीन है। तब तक माँ को होश आ गया था। रघुवीर के समझाने के बाद कहीं माँ को विश्वास हुआ। तब माँ रोने लगी।

सारा गाँव मानो गंगादीन के दरवाजे पर जमा हो गया था। सब एक ही बात पूछ रहे थे, राना माधव कहाँ है ? कैसे हैं ? उन्हें कहाँ छोड़ा ?.....

गंगादीन ने बताया कि राना को उसने नहीं छोड़ा है। राना ने तराई के जंगल में उस से कहा कि गंगादीन, तुम्हें मेरी आज्ञा है कि तुम शंकरपुर लौट जाओ। लोगों को बताओ कि राना बेनीमाधव जिन्दा है। .....हम अपने बहादुर नेता राना बेनीमाधव के साथ अंग्रेजी सेना के खिलाफ लड़ते रहे। एक जगह से दूसरे स्थान तक हम बराबर लड़ते रहे। हमें भयंकर से भयंकर मुसीबतें उठानी पड़ीं। अन्त में हमारी ऐसी हालत हो गयी कि हमें अपने भोजन खरीदने के लिए अपनी बन्दूकें बेचनी पड़ीं। यह वाकया तराई में बुटवल और नया कोट के बीच का है। अंग्रेजों और गोरखों, दोनों ने राना पर दबाव डाला कि राना समर्पण कर दें। पर राना किसी हालत में समर्पण के लिए तैयार न हुए। इसीलिए एक घमासान लड़ाई हुई, डांगघाटी में, गोरखा और अंग्रेज सिपाहियों से। इस के बाद राना ने कहा, खल्क खुदा का.....मुल्क बादशाह का, अमल भगवान का.....। और विदाई ले कर चल पड़े। यह कहते–कहते गंगादीन फफक कर रो पड़ा।

रात हो आयी। घने अँधेरे में कोई ताकतवर आदमी पैरों से जोर की आवाज करता हुआ करीब के मोड़ से मुड़ कर दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ। उस के पीछे कई सिपाही हाथों में मुरेठा, लालटेंन और लाठी लिये हुए आये। रघुवीर ने उठ कर कहा, जमीन्दार साहेब !

प्रणाम करो गंगादीन। गंगादीन ने प्रणाम किया। जमीन्दार सूरजसिंह ने कहा, गंगादीन, मेरे साथ आओ। तुमसे कुछ बात करनी है। रघुवीर ने आँखों के संकेत से कहा, जाओ ! जाओ ! गंगादीन उन के

साथ चला गया। न जाने किस आकर्षण से खिंचा हुआ उनके पीछे रघुवीर भी गया। चलते–चलते उस के सामने हंसगौरी का सुहाग भरा मुख उभरने लगा।

वे हवेली की बैठक में चले गये। रघुवीर हवेली के अहाते में कटहरी चम्पा के झुरमुट में खड़ा रह गया। वह आश्चर्यचकित रह गया। न जाने किधर से अचानक हंसगौरी आयी। मैं सोचती थी तुम भी आओगे। तभी मैंने पिता जी को वहाँ भेजा !

गौरी ने अपने आँचल के नीचे से सोने की कटोरी में एक टीका ले कर रघुवीर के माथे पर लगा दिया। यह अशोक षष्ठी का टीका है। तुम्हें कभी कोई दुःख न हो, शोक न हो ! माँ ने भेजा है। देखो वह खड़ी है माँ, हाथ में चिराग लिये।

रघुवीर ने देखा। माँ खड़ी हैं प्रकाश लिये। आशीष दे रही हैं।

उस क्षण रघुवीर को लगा, यह संसार महज हिसाब या तर्क से समझने की चीज नहीं है। यही बात एक दिन राना बाबा ने कही थी। राना बाबा की याद आते ही उस ने सिर झुका कर मन ही मन उन्हें प्रणाम किया। हिसाब के फेरे से पार खड़ी है उस के पास यह हंसगौरी !

रघुवीर ने हंसगौरी के दोनों हाथ थाम कर उसे अंक से लगा लिया। दोनों के तन थर थर काँप उठे। आनन्द से उन की आँखों में दमक उठी एक अनोखी जोत !.....

रात को रघुवीर ने गंगादीन से पूछा, क्या कहा जमीन्दारसाहब ने ?

सब पूछते रहे। और अपने और इस गाँव के बारे में बताते रहे। फिर मुझ से पूछा, अब तुम किस के हो ? मैंने कहा, आप का हूँ। वह बहुत प्रसन्न हुए। मिठाई खिलायी। कहा, रघुवीर को किसी तरह की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। फिर मुझे एकान्त में ले जा कर कहा, रघुवीर को समझाना कि वह भूल जाय कि हंसगौरी से उस का विवाह हुआ हैं विवाह पूरा भी कहाँ हुआ ? देखो न ! विधि का विधान ही कुछ और था ! नहीं तो विवाह हो नहीं गया होता ? ईश्वर जो कुछ भी करता है, अच्छा ही करता है। मैं अपनी बेटी के लिए उचित वर ढूँढ रहा हूँ। रघुवीर का विवाह तो फिर होना ही है। मैं प्रबन्ध करूँगा रघुवीर के ब्याह का ! रघुवीर को हँसी आ गयी। गंगादीन भी हँस पड़ा।

अगले दिन जमीन्दार के पण्डित हरीराम शास्त्री ने गाँव में घोषणा की कि स्वर्गीय पण्डित दुलीराम अग्निहोत्री के पुत्र गंगादीन की 'शुद्धी' होगी, नहीं तो वह ब्राह्मण समाज से बाहर, बहिष्कृत ! गंगादीन को काटो तो खून नहीं। वह जमीन्दार साहब के पास भागा गया। प्रार्थना की। ठाकुर साहब ने कहा, यह जात धर्म का मामला, इसमें कतई दखलन्दाजी नहीं कर सकता। रघुवीर भी कोई मदद नहीं कर सका।

फिर गंगादीन ने पंचपुरी के चबूतरे पर पंचायत बुलायी। पंचायत में भी उस की कोई सुनवाई न हो सकी। गंगादीन की माई फूलमती ने भी बेटे को समझाया कि शुद्धि तो करानी ही होगी !

क्या माई ? मैंने ऐसा क्या किया है ?

लड़ाई में अंग्रेजन का खून लगा है तुम्हारे बदन में। और बात ई है कि तुम्हार ससुराल वाले भी याही कहते हैं कि दामाद की जब तक शुद्धी न होगी हम बेटी न विदा करेंगे।

क्या ? मेरी शादी हो गयी ?

–हाँ बेटवा।

कहाँ ? किस से ? कब ?

गंगादीन अपनी माई से यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया कि उस की शादी उस की अनुपस्थिति में ही हो गयी। हुआ यह कि पण्डित दुलीराम अग्निहोत्री मरते समय कह गये थे कि गंगादीन की शादी मैंने तै कर दी है दानापुर गाँव के पण्डित शिवनाथ तिवारी की बड़ी कन्या फूलकुमारी के साथ। गंगादीन की शादी किसी तरह जरूर कर देना। मैंने वचन दिया है। मेरा वचन खाली न जाय। सो गोबर, सुपारी और हल्दी अक्षत का गंगादीन रच कर फूलकुमारी से शादी हो गयी ! गंगादीन ने यह जान कर अपना कपार पीट लिया और अपनी शुद्धी के लिए तैयार हो गया।

इस बीच शंकरपुर में दो में पुरोहित पण्डित हो गये थे। पहले हरीराम शास्त्री जिन का दर्जा बड़ा था। वह जमीन्दार साहब के राजपुरोहित थे। दूसरे केशव चन्द्र मिश्र, यह थे प्रजापण्डित। गंगादीन की शुद्धी का जिम्मा केशव पण्डित ने सम्भाला।

सब से पहले गंगादीन का मूड़ मुड़ाया गया। नये वस्त्र पहन कर, नंगे पैर सुबह शाम दुर्गा मन्दिर से शिव मन्दिर तक पाँच परिक्रमा। सुबह दोपहर शाम, तीनों वक्त गाय का मूत्र, गंगाजल, दूध, घी और दही मिला कर पंचगव्य पीना। सिर्फ एक वक्त शुद्ध शाकाहारी भोजन। सुबह शाम गायत्री मन्त्र का जाप और रात को रामायण पाठ !

पूरे सवा महीने के शुद्धीकरण में गंगादीन सूख कर काँटा हो गया। उस की शुद्धीनिष्ठा देख कर जमीन्दार ने गंगादीन को पाठशाला का सहायक गुरू नियुक्त किया। परिवार सहित उस के रहने खाने आदि का सारा खर्च जमीन्दार हवेली के खाते में चढ़ाया गया।

पर जिस दिन फूलकुमारी दुलहिन बन कर गंगादीन के घर आयी, और गंगादीन ने उस का मुख देखा, वह पछाड़ खा कर गिर पड़ा। होश आने पर वह चिल्ला पड़ा, इतनी बदशकल औरत ! हाय रे मेरी किस्मत !

फूल कुमारी बदशकल ही नहीं थी, गुस्सैल भी। जिस दिन गंगादीन को उस के गुस्से का पता चला, उस दिन उस के मुँह से सहज ही फूटा :

सुनो भरथ भाबी प्रबल, बिलखि कह् यौ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ।।

इस के बाद सिपाही गंगादीन पण्डित गंगादीन अग्निहोत्री हो गया। मगर पाठशाला के काम में उस का जी नहीं लगा। उस ने जमीन्दार साहब से साफ कह दिया कि मैं सिपाही हूँ। मेरा पाठशाला में जी नहीं लगता।

तो मेरे दरबार के सिपाही बन जाओ।

नहीं, बात यह है कि मेरा अभी कहीं जी नहीं लगता।

राना बेनी माधव को कभी भूल नहीं पाता।

जमीन्दार साहब को यह बात बोल कर गंगादीन सीधे रघुवीर के पास पहुँच गया।

तीसरे पहर का समय। क्वाँर का महीना बीत रहा था। पंचपुरी में लोगों के साथ रघुवीर भइया बैठे जगताप बाबा से महाभारत सुन रहे थे। वहीं चुपचाप गंगादीन भी बैठ गया। प्रसंग चल रहा था मूसल पर्व का। यदुवंश का नाश कैसे हुआ ?

सारे यदुवंशी आपस में बँट कर कलह कर रहे थे। देखते ही देखते सब लोग दो पक्षों में बँट गये। सब एक दूसरे पर बरसात के पानी के समान शरवर्षा करते हैं। चारों ओर रक्त जल के समान बहने लगा। पिता को पुत्र और पुत्र को पिता, छोटे भाई को बड़ा भाई और बड़े भाई को छोटा भाई मारता है। भांजे को मामा मार डालता है और भांजा मामा को मार डालता है। हे शिव ! हे राम ! हे भव ! हे संसार का विनाश करने वाले शिव ! हे राम ! हे हर ! हे हर हर हर हर हर ! हे पुरहर ! हे स्मरहर ! हे मृत्युहर ! माधव की माया कितनी विराट है। उन के लिए कुछ भी असाध्य नहीं। जब धनुष बाण समाप्त हुए और यदुवंशी आपस में घास तृन के टुकड़ों से लड़ने लगे तब सर्वनाश आसान हो गया। मृतकों की संख्या देख कर महाबली बलभद्र समुद्र में कूदे और तुरन्त ही डूब कर अनन्त लोक चले गये। इस तरह श्रीकृष्ण ने सोचा कि पृथ्वी का भार समाप्त हुआ। अपने अवतार के प्रयोजन की सिद्धि भी देख ली। फिर सोचा कि अब बैकुण्ठ का समय आ गया तो अब बिलम्ब नहीं होना चाहिए। ऐसा सोच कर भगवान ने अपने दायें पाँव को मोड़ कर बायीं जाँघ पर रखा और शरीर को सीधा कर के बैठे। प्राण को दबा कर निश्चल हुए और मूलाधार को स्थिर कर दिया। बड़ी कुशलता के साथ कुण्डलनी शक्ति को सुषुम्ना के द्वारा ऊपर को जगा कर भी चक्रों का जला कर अग्नि मण्डल को स्पर्श करने के बाद अग्निमण्डल को भी पीछे कर दिया। फिर एकदम पहले की अग्नियों के साथ अमृत किरण मण्डल से मिल कर पसीने के रूप में बहने वाले अमृतधारा में लीन हो कर मूलाधार को ठण्ढा किया। फिर तुरन्त ब्रह्मरन्ध्र को भीतर दवा कर तप के द्वारा योग में बैठ कर विराजे। तब सारे त्रिभुवन में व्याप्त तेज से प्राण को जीत कर अमृत प्लावन करने के बाद उन के सिर से धुआँ निकलने लगा। फिर जब एक बरगद वृक्ष के चबूतरे पर बैठ कर विराजे तब श्रीकृष्ण का पाँव स्पष्ट

दिखाई दिया। उसे देख कर जंगल में रहने वाले जीवों का अन्त करने वाला एक शिकारी धीरे–धीरे निकट आया और वृक्षों की आड़ में छिप कर भगवान के पाद पद्म को खग का मुख समझ कर उस पर तीक्ष्ण शर का प्रयोग किया।

हे राम ! ओ हो हो ! सब के मुँह से एक साथ निकला। पंचपुरी में बैठे हुए लोग रो पड़े। जगताप बाबा आगे बोले :

विधि का विधान देखो। यह वही शर था जो लोहे के मूसल के टुकड़े का बना हुआ था। तो वह बाण जा कर भगवान के पादपद्म पर लगा, क्योंकि वही भगवान की इच्छा थी। मर्यादानुसार जब शिकारी निकट आया तब अपने दुर्भाग्य को समझ उस ने हाथ जोड़ कर कहा, हे कृपानिधान, हे रक्षक ! मुझे कुछ भी न मालूम था। अपना समझ कर मुझे क्षमा करो। मुनिवरों के मानस में, गोपियों के स्तन तटों पर, कमल सरोवर में, बलि के सिर पर, महादेव के हृदय में, ब्रह्मा के करतल पर, अहिल्या के पत्थर शरीर पर विराजमान तुम्हारे पादपद्म पर मेरे शर को लगने के लिए क्यों तुम्हारे मंगलमय ने प्रबन्ध किया। हे मुरहर, नारायण ! तुम्हारा चरणयुगल ही मेरा शरण है !

कृष्ण ने कहा, डरो मत। तुम्हारे प्रति मेरा गहरा वात्सल्य है। तुम अमर लोक जाओ।

हे राम ! हे शिव ! कैसा अदभुत है ! पक्षी का मुख समझ कर तो बहेलिये न बाण मारा, पर वह स्वयं एक खग प्रवर बन गया। वाह !

शाम हो चुकी थी। दूर से किसी के रोने की आवाज आ रही थी। खेवट रोता हुआ आ रहा था। साथ में दुआशाह फकीर। खेवट ने दुःखद समाचार सुनाया–रानाबेनीमाधव नहीं रहे !.....राना तराई के जंगल में.....। सब रो पड़े। सारा शंकरपुर रोने लगा।

जमीन्दार सूरजसिंह की हवेली को छोड़ कर पूरे गाँव घर में न कोई चिराग जला, न किसी का चूल्हा। दुआशाह सारी रात गाते रहे :

अवध माँ राना भयो मरदाना !
पहिल लड़ाई भई बक्सर माँ सेमरी के मैदाना
हुवाँ से जाय पुरवा माँ जीत्यो तबै लाट घबड़ाना
नक्की मिले मानसिंह मिलिगै मिले सुदर्शन काना
छत्री बंस एक ना मिलिए जाने सफल जहाना !

सारी रात खेवट से गंगादीन पूछता रहा और रघुवीर सुनता रहा। तराई के जंगल में अंग्रेज शिकार खेल रहे थे। राना विश्राम कर रहे थे। अंग्रेज की दो गोलियाँ उनके सीने में लगीं। राना का शव अंग्रेज ढूँढते ही रह गय।.....शव अर्न्तधान हो गया ! फिर अंग्रेज खिसिया गये। जंगल में आग लगा दी।

मरणासन्न अवस्था में राना ने जंगल के किनारे एक किसान को देखा। उसके पास गये। अपना नाम बताया। कहा, गौर से देख लो मुझे। उधर जंगल के बीचों–बीच तमाम लाशें बिछी हुई हैं। उधर कोई मुझे ढूँढ़ता आये तो उसे मेरी यह तलवार दे देना। उसे बताना कि तुमने यहाँ क्या देखा। साफ कह देना कि हम बुरी तरह से हार गये। हम इसी लिए हारे कि लोग उस तमाम दौलत और शान–शौकत से तंग आ चुके हैं हमने लोगों के खून पसीने और हड्डी पसली से निचोड़ा है। दो लोग–अमीर और गरीब, राजा और प्रजा एक अंग्रेज से नहीं लड़ सकते ! एक ही दो को डरा सकता हैं।.....

उस किसान ने बताया, जैसे ही राना माधव का शरीर छूटा चारों तरफ अँधेरा सा छा गया। कुछ देर बाद जब अँधेरा छँटा, तो वहाँ रक्त ही रक्त ! शव का कहीं अता पता ही नहीं।

राना बेनी माधव की तलवार ले कर गंगादीन माँजने लगा। अगले दिन उस तलवार को ले कर राजा जमीन्दार से कुछ कहा सुनी हो गयी। जमीन्दार का कहना था कि राना की तलवार उन्हीं के दरबार में रहेगी। गंगादीन कहता था कि राना की तलवार अब पूरे शंकरपुर की है।

अब पूरा शंकरपुर किसका है ? जमीन्दार का।

पूरा गाँव उस तलवार को ले कर भावुक हो गया था। स्त्रियाँ उसे देख कर रोतीं। आदमी लोग उसके सामने सिर झुकाया करते।

खेवट कवित्त पढ़ता :

राना तेरी तेग तान माँहि फड़कत जात

काटि काटि मुण्ड झुण्ड डुण्ड पटकतु है।
मच्छिका समान ही उड़ावती है शत्रु शीश
गोरंग सुवंग को सुआंग सों रंगतु है।
खंग कोपि तोपि देत तोपन की लोथिन सों
गनन गनन को तो कछु न गनतु है
सर पै समान असि, सर पै समान अरि
सर पै नहाय रक्त सरजा करतु है।

गंगादीन सुनाताः

बेनी वीरबाना बैस बंस मरदाना
बाकी भूपति जनाना ठानठाना भीर घात है।
ताना देखि भृकुटी युद्ध में दिवाना देखि
कम्पनी विलायत सकल विललात हैं।
छीन्यो तोपखाना तब शत्रु है सकाना।
रन राना बिरझाना आज खाना नहीं खात है।

रघुवीर ने समझाया कि क्या रखा है अब इस तलवार में ? क्या कर लिया तोप तलवार ने ?..... अंग्रेजों जमीन्दारों में तलवार रखना भी जुर्म है। अब राजा जमीन्दार शोभा के लिए तलवार अपनी बठकों में रखेंगे। वे अब तलवार नहीं चला सकते। वे थक गये हैं अंग्रेज राज की सलामी बजाते–बजाते ! उनमें इतनी भी ताकत नहीं कि अपनी ढालें ले कर चल सकें या तलवार उठा सकें। मगर देखो हममें कहीं कोई थकन नहीं है, क्योंकि हमारे पास वैसा कुछ नहीं है !

रघुवीर अपने हाथों से पिता की तलवार जमीन्दार सूरजसिंह को देने गया।

सूरजसिंह फूले न समाये।

पन्द्रह

एक दिन सुबह हंसगौरी की माँ जब गौरी बेटी के लिए एक कटोरा दूध लेकर छत के कोने में आयीं तो वहाँ बेटी नहीं मिली। सुबह आसन बिछा कर, पूरब की ओर मुँह करके पूजन के लिए गौरी रोज वहीं बैंठती है, माँने सोचा था वहीं वह मिल जाएगी। पर आज वहाँ नहीं थी।

नीचे से ऊपर सीढ़ियों पर पहुँचतें ही दायीं ओर जो एक छोटी छत है, गौरी आज वहीं पर दीवार के सहारे अवसन्न भाव से बैठी थी। शायद अपने भगवान् से रूठ कर ! निरपराध शिशु को अहंकारी निष्ठुर पिता जब अकारण मारता है, तब वह जिस तरह कुछ भी नहीं समझ पाता, बस चुप हो जाता है, ठीक वही दशा थी गौरी की !

माँ को भी कुछ पता न था। कल रात पिता ने बेटी को बताया कि तुम्हारी शादी बिथौली के कुँवर से करने जा रहा हूँ, तब गौरी ने स्पष्ट कहा कि अब मेरी शादी और कहीं नहीं होगी, काकाजी ! जवाब में काका ने गुस्से से कहा था कि होगी, तुम्हारी शादी जरूर होगी। इस पर गौरी के मुँह से निकला था कि फिर वह शादी मेरी चिता की अग्नि पर होगी, फिर काका ने बेटी पर हाथ उठा दिया था।

यह खबर माँ को नहीं थी। माँ ने देखा, गौरी की आँखें लाल हैं, फूली हुई, चेहरे का रंग राख जैसा हो गया है। माँ ने जब दूध पीने का अनुरोध किया तो गौरी बोली, रहने दो !

क्यों, रहने दूँ ? मेरे दूध का क्या अपराध है ?

अपने उस दूध की बात मत करो माँ !

मैं सब समझती हूँ बेटी, पर मेरा क्या वश है ! माँ की आँखों से आँसू ढलक पड़े।

गौरी ने कहा, माना कि काका आज इतने बड़े जमीन्दार बहादुर हैं, पर इतनी जल्दी वे अपनी सारी मर्यादा भूल गये। गौरी की आँखें भर आयीं। उसे राना बाबा की बात याद आयी–गौरी बेटी, सम्पूर्ण आत्म निवेदन एक फल की भाँति है। धूप, हवा, पानी के योग में ही फल पक सकता है। कच्चे फल को चक्की में पीसने से फल का क्या होगा ?

माँ ने बताया कि कल अपने यहाँ लखनऊ से मेकेण्ड्रयू साहब आ रहे हैं। अंग्रेजी दावत होगी ! रायबरेली के कलक्टर के साथ सेटिलमेण्ट के अफसर भी होंगे। अभी से दावत की तैयारी करनी होगी।

गौरी ने कहा, माँ जाओ, हनू को भेज दो। हनू अर्थात् हनुमानप्रताप सिंह, गौरी का छोटा भाई।

12–13 वर्ष का सुन्दर कुमार हनू सीढ़ियों से दरवाजे के पास आ कर डरता–डरता खड़ा हो गया। गौरी के समान ही उसकी बड़ी–बड़ी आँखें थीं। जलपूर्ण मेघ की भाँति सरस गेहुँआ रंग। गौरी ने उठ कर हनू को खींचते हुए अंक से लगा लिया। बोली, दुष्ट ! कल से अब तक कहाँ था, ले, दूध पी ले। जबर्दस्ती हनू को सारा दूध पी लेना पड़ा। फिर बोला, दीदी, तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ, बताओ तो सही। गौरी ने उसके गाल का चुम्बन लेते हुए कहा, हरसिंगार का फूल लाया है !

मेरी जेब में हैं।

अच्छा तो बाहर निकाल !

उन्होंने दिया है।

उन्होंने ?

हाँ, उन.....उन.....उन्होंने !

दोनों मुस्कराने लगे। धीरे–धीरे गौरी गम्भीर हो गयी। बोली, हनू ! मुझ में बुद्धि नहीं है। जिसे आँखों से देखती हूँ उसे भी नहीं समझ पाती। हनू ने धीरे से जेब में से केसरिया रंग कागज की एक पोटली बाहर निकाल दीदी की गोद में रखते हुए दौड़ कर भाग जाने की तैयारी की।

नहीं, तुझे भागने नहीं दूँगी। अब किसी को भी नहीं भागने दूँगी।

हनू लजाते हुए बोला, यही बात वह भी.....कहते हैं.....। तेरी दीदी ने यहाँ बाँध रखा है !.....अच्छा दीदी, तुमने खंजन पंछी देखा है ?

देखा है। देखो–देखो वह छत की मुँडेर पर खंजन ! खंजन की पीठ पर बैठ कर प्रातःकाल एक नन्हें से शीतकण की तरह एक राजकुमार आता है और हवेली में चला जाता है। यह कहती हुई गौरी हरसिंगार के फूल की पोटली खोलने लगी।

नहीं दीदी, अभी मत खोलो !

अच्छा डरो नहीं। तुम्हारे जाने पर ही खोलूँगी।

अच्छा दीदी, तुमने कभी सुभागी बुढ़िया को देखा है ? पाँच सौ बरस की बुढ़िया है वह ! तीसरे खण्ड के आँगन के पीछे कण्डा लकड़ी वाले घर में संझामाई की पीठ पर चढ़ कर वह सुभागी बुढ़िया आती है।

अच्छा, संझामाई की पीठ पर चढ़ कर ?

हाँ, अपनी इच्छा से ही सुभागी बुढ़िया खूब छोटी बन सकती है।

उस मन्त्र को उस से सीख लेना होगा। जब मैं कण्डा लकड़ी वाले घर घुसती हूँ तो लोग मुझे देख लेते हैं। हनू इस बात का कोई मतलब नहीं समझ सका। बोला, कण्डा लकड़ी वाले घर में सुभागी बुढ़िया ने सिन्दुर की डिबिया छिपा रखी है। वह सिन्दुर कहाँ से लाती है, जानती हो ?

प्रातःकाल के बादलों के भीतर से !

हनू ठिठक गया। वह सोचने लगा। कथा बाँचू खेवट काका ने सागर पार की दैत्यपुरी की बात कही थी। पर गौरी दीदी की बात ज्यादा अच्छी लगी। उस ने कहा, जो स्त्री सिन्दूर की उस डिब्बी को ढूँढ़ कर उस से अपनी माँग भर लेगी, वह राजरानी हो जाएगी !

यह कह कर गौरी हनू के साथ नीचे अपने कमरे में चली आयी। दोनों पास पास कुर्सियों पर बैठ गये। पास की तिपाई पर चाँदी की तश्तरी में फूल गेंदा, कुन्द, गुलमेंहदी, जवा के पुष्प रखे थे। हनू को पता है कि गौरी दीदी छत के कोने में बैठ सूर्योदय की ओर मुँह कर के किसी देवता को उत्सर्ग करेंगी। ये सारे पुष्प उसी की प्रतीक्षा में थे। आज उन पुष्पों को उस ने हनू के पास रख दिया, बोली, फूल लेगा ?

हाँ !

क्या करेगा, बता तो !

सच सच बता दूँ !

हाँ।

ले जा कर रघुवीर को दूँगा।

गौरी चुप एकटक देखती रह गयी उन अनिवेदित पुष्पों को ! फिर हनू के माथे पर चुम्बन लेते हुए पूछा, इन में से कौन सा फूल तुझे सब से अधिक अच्छा लगता है, बता ?

जवा कुसुम ! उस ने सवेरा होने से पहले ही जो सुभागी बुढ़िया की सिन्दूर की डिब्बिया में से रंग चुरा लिया है !

उसी समय गौरी ने सिर घुमा कर देखा तो पीछे काका चुपचाप खड़े थे। कैसे यहाँ आये ? पाँव की आहट तक न सुनाई दी ! इस समय अन्तःपुर में काका जी के आने का वक्त नहीं था। इस समय तो बाहर की बैठक में जमा–जमीन्दारी की कितनी समस्याएँ आ जुटतीं इन के आस पास। इसी समय मैनेजर, कारिन्दे, सिपाही–चौकीदार, साहूकार और दलाल आते थे। खुदरा खबरें और कागजपत्र ले कर कचहरी इजलास देखने वाले मुख्तार मुन्शी घनश्यामप्रसाद आते थे। ऊपर से सलाम माई बाप करने वालों की भीड़ भी कम न थी।

काका जी को देख कर हनू जैसे सूख गया। छाती धड़क उठी। उस ने भागने की कोशिश की। लेकिन गौरी ने उसे दबाये रखा, उठने नहीं दिया।

काका जी ने धमकाते हुए कहा, यहाँ क्या कर रहा है ? पढ़ने नहीं जाएगा ?

चुपचाप सिर झुका फूलों की पोटली हाथ में छिपाये वह झट से उठ कर जाने लगा। काका जी ने पोटली को हनू के हाथ से छीनते हुए पूछा, यह क्या है ? कहाँ ले जा रहा है ? क्षण भर में हनू का मुँह लाल हो गया। बोला, यह मेरा है।

यह रूमाल किस की है ?

गौरी ने कहा, मेरी है !

इसे कहाँ ले जा रहा है, सच सच बता नहीं तो तेरी खाल खिंचवा दूँगा।

हनू ने कहा, रघुवीर को देने। रघुवीर का नाम सुनते ही काका जी ने गुस्से से तमतमा कर पोटली के फूलों को हवा में फेंक दिया। रूमाल को फाड़ते हुए बोले, क्यों नहीं तुझे जनमते ही मार कर गाड़ दिया ! तू इसी लायक थी। कान खोल कर सुन, मैं तुझे अब भी जिन्दा गड़वा सकता हूँ।.....

हनू एकटक दीदी को निहारता रहा। उस को अब डर नहीं था। अब कैसा डर ? सीमा तो टूट गयी। यही भाव लिये वह दीदी को निहारता रहा। दीदी चुपचाप, पूरे धीरज के साथ कुर्सी पर अविचल बैठी रहीं। उन की साड़ी का केसरिया आँचल उन के सिर को ढँके हुए था। आँखें ऊपर देखने लगी थीं। गले में सोने का हार चमक रहा था। वही हार जो रघुवीर की माँ ने उसे शादी के दिन पहनाया था। तब से गौरी वही हार पहने रहती थी। दोनो हाथों में चूड़ियाँ और रत्नजड़ित कंगन। वे कंगन भी रधुवीर की माँ ने ही पहनाये थे शादी से दो दिन पहले। वे हाथ गोद में रखे थे। अति सुकुमार हाथ ! सम्पूर्ण देह वाणी जैसे उन्हीं हाथों में मुखरित थी। हनू ने नतमस्तक उस आत्माभिमानिनी की ओर फिर से देखा, जब काका कमरे से चले गये थे। हिम्मत न हुई कि वह दीदी को पुकारे। बस, दोनों स्तब्ध थे। दीदी ने एक लम्बी साँस ले कर छोड़ी और उठ कर कमरे में बिखरे जवाकुसुम के फूलों को अपने आँचल में रखने लगी।

रघुवीर ने अपने हाथों से एक नया घर बनाया था। मिट्टी का घर छप्पर से छाया हुआ। निहायत साफ सुथरा। दो कोठरियाँ थीं उस घर के, एक भीतर आँगन में और एक बाहर। बाहरी कोठरे में चारों ओर दरवाजे थे। एक बरामदा था। फर्श पर पुआल की चटाइयाँ बिछी हुई थीं। रघुवीर नित्य सुबह झाडू बोहारी कर के घर को चमाचम करता फिर नहाने जाता। उस दिन वह नहा धो कर आया तो बरामदे के तख्त पर बैठे हनू को देख कर प्रसन्न हो गया। रघुवीर कुछ बोले इस से पहले ही हनू ने फूलों की वह पोटली हाथों में थमा कर कहा दीदी ने.....!

दीदी ने क्या ?

देख लीजिए।

पोटली खोलते ही जवाकुसुम दोनों हथेलियों में फैल गये ! रघुवीर ने उन फूलों को एक क्षण देखा, फिर ले जा कर कमरे के बीचोंबीच रख दिया। हनू ने कहा, मैं सोचता था आप इन फूलों को किसी देवी देवता की पूजा में चढ़ायेंगे, पर आप तो.....। आप नहा धो कर कोई पूजापाठ नहीं करते ?

नहीं तो !

आप ईश्वर को नहीं मानते ?

मानता तो हूँ। पर उस की पूजा पाठ क्यों ? रघुवीर हँस पड़े। हनू सवाल पर सवाल करता रहा। यह आप का घर है ? आप खुद अपने हाथों से सब झाडू पोंछा करते हैं ? यह तो चारों ओर से खुला है। आप के साथ और कौन रहता है ?.....आप खुद अपने आथों से खाना बनाते हैं ? तब तक भीतर से एक लड़का आया। करीब आठ साल का। लो मिलो, यह है नूर अली; और यह है हनुमान !

हनू ने पूछा, ये कौन है ?

मेरे दोस्त हैं !

हनू रघुवीर और नूर अली का मुंह देखता रह गया। उस ने फिर पूछा, सब आप के दोस्त हैं ?

हाँ।

काका जी भी ?

हाँ, क्यों नहीं।

हनू चुप रह गया। कुछ क्षणों बाद बोला, पर मेरे काका जी आप के दोस्त नहीं हैं।

तो क्या हुआ ?.....

कुछ देर चुप रहने के बाद हनू ने कहा, मैंने दीदी से एक दिन पूछा कि दीदी इस दुनिया में सब से खूबसूरत चीज क्या है, तो दीदी ने कहा, उन्हीं से पूछना, वही बताएंगे। आप बताएंगे ?

रघुवीर ने हनू को अपने अंक से लगा कर कहा, इस दुनिया में सब से ज्यादा खूबसूरत चीज है मनुष्य का स्वाभिमान, अपनी जिन्दगी को अच्छी तरह जीना हिम्मत के साथ, आनबान के साथ !

यह कैसे होता है ?

यह उसी में होता है जो अन्याय–अत्याचार के खिलाफ लड़ता है।

हनू ने कुछ क्षण चुप रह कर जिज्ञासा की, आप को डर नहीं लगता ?

डर ? क्यों ? किस से ?

हनू के मुँह से निकला, मेरी दीदी को भी डर नहीं लगता। हनू उसी साँस में वहाँ से चला गया।

कमिश्नर मेकेण्ड्रयू साहब और रायबरेली के कलक्टर कारनेगी साहब के साथ बन्दोबस्त मोहकमे तीन अंग्रेज अफसर और आये थे जमीन्दार के डिनर में। साथ में कारनेगी साहब की मेम भी आयी थी। अंग्रेजी दावत की तैयारी में लखनऊ से खानसामें आये थे। बैठक और खाने के कमरे को विलायती ढंग से सजाया गया था। अंग्रेज मेम से बातचीत करने में लिए हंसगौरी को सजा कर मेम साहब के पास बिठाया गया था।

अंग्रेज हाकिम अफसरों ने जमीन्दार सूरजसिंह से पहले हिन्दी में पूछताछ की फिर अंग्रेजी में बातें होती रहीं। हंसगौरी को सब सुनने समझने का अवसर मिला था।

सैटिलमेण्ट अफसर और कलक्टर कारनेगी ने कमिश्नर से अंग्रेजी में कहा था कि जो भी हो, अवध की प्रजा जमीन्दार से और खास कर इस्तमरारी बन्दोबस्त से बिल्कुल खुश नहीं है। गाँव के दस्तकार, पौनी, प्रजा बहुत दुःखी हैं। खास कर अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था से बुरी तरह चिढ़ रही है।

इस पर कमिश्नर ने अपने अफसरों से कहा था कि अंग्रेजी हुकूमत को इस मुल्क पर राज करने के लिए एक आधार चाहिए था। इस आधार को लगातार मजबूत करते रहना हमारा फर्ज है। इसमें प्रजा रोती चिल्लाती रहे। जमीन्दार की हिफाजत के लिए ही हमारी न्याय व्यवस्था है। इस पर कलक्टर और सेटिलमेण्ट अफसरों ने कहा कि अवध की रियाया अंग्रेजी कचहरी कानून से बुरी तरह परेशान है। हमारे गुत्थीदार कानूनों से बँधना, हमारे न्यायालय के घमण्डी और लापरवाह अफसरों को मुकद्दमा लड़ाने के लिए मुकर्रर वकील–मुख्तार, न्याय हाकिमों की रिश्वतखोरी और अन्याय, फिर फैसला हो जाने पर डिग्री करवाना अवाम को बेहद परेशान करता है। आज सौ में निन्यानबे लोग हमारी न्याय प्रणाली के बजाय अपनी पुरारी पंचायत प्रणाली के पक्ष में हैं।

इस पर भी बात चली कि जमीन्दारों, राजाओं, जागीरदारों से अवाम अब और भी ज्यादा परेशान है। एक ओर अंग्रेजों की मालगुजारी, दूसरी ओर जमीन्दार का लगान। और लगान के अलावा बेगारी, नजराना, हथियावन, घोड़ावन, नजरदौरा, पकावन, कमिश्नरावन.....। नवाबी राजा कैसा भी था, अपना था। नये राजा और नयी हुकूमत से जनता मन ही मन कुढ़ती है।

कमिश्नर कलक्टर की दावत में जो खर्चा हुआ उसके लिए शंकरपुर और आसपास के गाँवों में 'कमिश्नरावन' बोल दिया गया। कारिन्दे और सिपाही दौड़े 'कमिश्नरावन' वसूलने के लिए। मारपीट का दौर शुरू हुआ।

दोपहर का वक्त था। मनोहर कुम्हार चैतू तेली को खदेड़ते हुए बोले, अरे भाग कर किधर जाएगा ? दोनों भागते–भागते रघुवीर के घर में घुस आये। बचाओ ! रघुवीर भइया बचाओ !

रघुवीर को पता है जमीन्दार की लगान और कमिश्नरावन का। अभी पिछले दिनों घोड़ावन और उससे पहले हथियावन लग चुका है। गरीब प्रजा मटरूसाह और शंकरसाह की अब तक कर्जदार बनी हुई है।

तब तक भागा हुआ तिरबेनी लोहार आया। उसके पीछे–पीछे सिपाही कौआ सिंह और बुलबुली सिंह। दोहाई रघुवीर भइया की, कह कर तिरबेनी गिर पड़ा। कौआ सिंह ने रघुवीर से कहा, बदमाश शराब पीता है, जमीन्दार का लगान नहीं देता।

तिरबेनी बोला, शराब कहाँ मालिक, हँड़िया में महुआ पीता हूँ, महुआ।

रघुवीर ने तिरबेनी को बैठाते हुए कहा, ऐसे तो तुम थे नाहीं तिरबेनी भाई।

.....हाँ–हाँ, ऐसन हम नाही रहे। तब ऐसन ई गाँव गढ़ी भी नहीं रहा। तभी ई अंग्रेरेज तीन बेर बन्दोबस्त किहिन उहो ना चला। फिर तीसरे दायें बन्दोबस्त किहिन तब कुछ था शंकरपुर माँ। जै हो राना महाराज की ! हमारे मम्मू खाँ गाते थे, सब भूपन की नाक काटि वीरता अकेले संग राना के चली गयी।.....

चुप रहता है या नहीं। दोनों सिपाहियों की डाँट सुन कर तिरबेनी बोला, आँखि दिखाते हो ? जमीन्दार का लगान नहीं देता। मौरूसी पैसा बन्द कर दिया। हाँड़ी महुआ पीना शुरू कर दिया, क्यों ? आखिर क्यों ?

सब चुप रह गये। रघुवीर को देखते हुए तिरबेनी बोला, तिरबेनी लोहार का दाँव, उस्तरा, गुप्ती, भाला, तलवार, कुदाल, कुल्हाड़ी, फल, फाल अब खरीदता कौन है ? सब रायबरेली के बाजार में बिकता है। सब सस्ता माल। न गाँव में काम है, न इज्जत। फिर हँड़िया का महुआ न पीयूँ तो का करूँ ? बोलो !

गाली देते हुए दोनों सिपाही तिरबेनी को मारने दौड़। रघुवीर ने बढ़ कर रोक दिया, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

अच्छा, जमीन्दार देखेंगे। दोनों सिपाही गाली बकते चले गये।

उधर से एक मुसाफिर आया। उसने गाँव से बाहर निकलने का रास्ता पूछा। चैतू तेली ने कहा, अइसी तें चले जाव। आगे गद्दारन केर घर परी। बहिके आगे ते रस्ता है।

राहगीर चला गया। रघुवीर ने पूछा, गद्दार को आय ? तो चैतू और मनोहर एक स्वर में बोले, जमीन्दार।

गद्दार काहे कहत हौ उनका ?

साहब यहु तौ नाहीं जानित हैं। जउन सुना है कहिति है।

रघुवीर चिन्तित हो गया। इस तरह की बातें जमीन्दार तक पहुँची तो ये जिन्दा नहीं बचेंगे। रघुवीर ने उनसे कहा, मेरी बिनती है अपना मुँह बन्द राखो।

शाम को वे तीनों, तिरबेनी लोहार, चैतू तेली, मनोहर कुम्हार पकड़ कर जमीन्दार के सामने पेश किये गये। पीठ पीछे मुश्कें बँधवा कर झुका दिये गये। पीठ पर दस–दस ईटें रख दी गयीं।

कुछ ही देर में वहाँ अकेले रघुवीर आये। उन्हीं तीनों के निकट रघुवीर भी उसी तरह झुक गये। फिर क्या था लोग वहाँ इकट्ठे होने लगे। भीतर से दौड़े जमीन्दार सूरजसिंह आये।

तीनों को मुश्कें खोल दी गयीं। उन तीनों को वहाँ से भगाते हुए सूरजसिंह ने रघुवीर से कहा, यह क्या किया ?

रघुवीर चुपचाप लोगों के बीच घिरा खड़ा था। तिल और अक्षत की एक मूठ अचानक आसमान से वहाँ बरस पड़ी। रघुवीर ने ऊपर देखा, वही हंसगौरी।

सोलह

गंगादीन, गाँव भर में सबसे ज्यादा आजाद तबीयत का आदमी है। उसे अपनी बुद्धि, अनुभव और सबसे अधिक अपनी शान पर विश्वास है। अंग्रेज को देख कर उसका खून खौलता है, पर कम्पनी बहादुर को अब भी याद करता है। अब भी अपने आप को सबसे बड़ा सिपाही मानता है। सन् सत्तावन की लड़ाई की दिन–रात चर्चा करता है। किस से ?

रघुवीर को जो कुछ चाहिए, गंगादीन ले आता है। जाने कहाँ–कहाँ से, रघुवीर के लिए किताबें जुटाता है। खुद पढ़ता है। एक–एक बात की खबर रखता है।

एक दिन बोला, सुनो रघुवीर, इस गाँव में सबसे पहला मुकदमा चला तिरबेनी लोहार, चैतू तेली और मनोहर कुम्हार पर। क्यों ? मुझ पर क्यों नहीं मुकदमा चलाया जमीन्दार ने ? क्योंकि मैंने पढ़ा है ताजीरात हिन्द, जिसे सन् 1833 के चारटर एक्ट के बाद लार्ड मैकाले ने बनाया है ! कैसा पेचदार कानून है ? किसी चतुर किन्तु पतित मनुष्य ने किसी कौम पर अत्याचार करने, उसे दरिद्र तथा चरित्रभ्रष्ट करने और उसके मनोबल का नाश कर डालने के लिए इससे अधिक खतरनाक हथियार कहीं नहीं तैयार किया होगा ! दीवानी और कलक्टरी अदालतों में ही हमारा माली और नैतिक पतन शुरू हुआ है।

गंगादीन सूरजसिंह की जमीन्दारी, दौलत, झूठी शान और उसकी पशुता से घृणा करता है। किस मुँह से कहता है कि हंसगौरी का विवाह रघुवीर से नहीं हुआ ? पंचपुरी पंचायत होती तो इनकी जबान खींच ली जाती। रघुवीर की ही तरह गंगादीन शंकरपुर गाँव को प्राणों से ज्यादा प्यार करता है। उसे वह अपनी आँखों के सामने दिन ब दिन नीचे की ओर लुढ़कते हुए देख रहा है। जोर, जुलुम, कानून, कचहरी, थाना, पुलिस की ताकत से हो रहे अत्याचार, छूत–अछूत, हिन्दू–मुसलमान, गरीब–अमीर का हो रहा बँटवारा। सब गाँव के नियमों मर्यादाओं को तोड़ने पर उतारू हैं।

रघुवीर की राय से गंगादीन ने जगताप बाबा, खेवट, कलपादाई और रमजान चौकीदार को मिला कर दशहरे की रामलीला की तैयारी की। इस तरह के उत्सव का नाम शंकरपुर में मर्यादा मनसा था। मनसा गीत दल की अगुआ कलपादई अभी जिन्दा हैं। शंकरपुर में ही नहीं, अवध के सारे गाँवों में मनसा की धूम ज्यादा थी। यही एक सार्वजनिक उत्सब है जिसमें पूरा गाँव बिना किस भेदभाव के सुबह से शाम तक पहले मनसा पूजा, फिर पोखर पूजा, शाम को रावण वध और रात को भरतमिलाप लीला करता है।

गाँव के तमाम बच्चे आज सवेरे से ही पोखर में नहा कर नये कपड़ों में सजे तैयार हैं। कुमारी किशोरी लड़कियाँ पीठ पर गीले केश पसारे पत्तल में तिउनी का चावल, सिंघाड़ा, गुड़, दही, पान, सुपारी सजा कर बड़े, बरगद के थान पर रख रहीं थीं। जिनके यहाँ कुमारी लड़कियाँ नहीं हैं, वहाँ से बड़ी बूढ़ियाँ वही सामग्री लेकर आ रही थीं। सब एक स्बर में गा रही थीं :

हरी–हरी सजनी चिरइया
सजन वहाँ परछइँ रे
अवधपुरी राजा राम
उन की हई रनियाँ रे।
उनके भये नन्दलाल चउक चुनि आयी रे।
घिय बिनु होम न होइ
दुधई बिनु जाउर रे
ऐहो घिय बिनु धरम न होइ
पूत बिनु सोहर रे।

उसी गीत के बीच से हंसगौरी की सहेली सोनपत्ती छित कर गयी गंगादीन के पास। बोली, ऐ ! धियान से सुनो। सखी पोखर पूजा में अइहैं। कउनो बहाना से सखा को उधर जरूर लाना। हाँ जरूर, राम कसम !

गंगादीन उस दिन बेतरह व्यस्त था। वह ही रावण बना था। रात को भरत मिलाप में वही 'पेटीमास्टर' था। संगीत की जिम्मेदारी उसी की थी। उसे दम मारने की भी फुरसत न थी। अभ्यास के बीच

में ही भाग कर रघुवीर के पास गया। पूरी बात झटपट बता कर कहा, सोचो, सोचो कोई उपाय। मुझे आ कर बताना। हम कलपादाई के आँगन में लीला अभ्यास कर रहे हैं।

रघुवीर की समझ में कुछ न आया। उसने दोस्त नूर अली से राय ली। नूर अली भागे–भागे जमीन्दार की हवेली में हनुमान भइया के पास गये। तब हनू ने सब पक्का कर दिया। कि नूर अली नंगधड़ंग हो कर पोखर की तरफ भागेंगे और रघुवीर भइया पीछे–पीछे दौड़ेंगे नूर अली को पकड़ने के लिए। जब नूर अली पोखर में कूद पड़ेंगे तो रघुवीर हक्का–बक्का रह जाएंगे। तभी सोनपत्ती आ कर आगे सब सम्भल लेगी।

सच, पोखर पूजा में बिल्कुल वही हुआ। ऊपर से उस में यह एक अंक और जुड़ गया कि पोखर पूजा देखने एक अंग्रेज आ गया अपनी मेम के साथ। दोनों शिकार खेल कर जंगल से लौट रहे थे। गंगादीन ने गाँव के लौंडों को भड़का दिया। सब चिल्लाने लगे :ण

बन्दर आ गया बन्दर !

बन्दर, छछुन्दर !

बन्दर का मुँह काला !

बन्दर मेरा साला।

तमाशा खड़ा हो गया। पोखर पूजा में एक तरफ गौरी और रघुवीर। सारी भीड़ उस अंग्रेज और मेम के पीछे। सखी से सखा की भेंट करा कर सोनपत्ती खुशी से झूम उठी !

रावण वध और भरतमिलाप के पीछे गंगादीन का एक खास मतलब और भी था। दशहरा के दिन जमन्दार सूरजसिंह के यहाँ दो अंग्रेज व्यापारी ग्रामोफोन बाजा ले कर आये थे। उसी बहाने गाँव के सरे लोगों को जमीन्दार ने अपने दरवाजे पर साँझ से ही हाजिर होने के लिए बुलाया था। गंगादीन और खेवट ने प्रबन्ध कर दिया कि जमीन्दार के दरवाजे पर लोग न जायें।

शाम को रावणवध लीला हो रही थी। जमीन्दार का दरवाजा बिल्कुल सूना था। अंग्रेज का ग्रामोफोन सुनने कोई नहीं आया था। सूरजसिंह अचानक लीला में घुस गये। सारे लोग घबड़ा गये। बुजुर्ग चौंक उठे। कौन है ? किस के दस सिर हुए हैं ?

गंगादीन हाथ जोड़ कर बोला, रावण की लीला मैं ही कर रहा हूँ मालिक ! सूरजसिंह ने गुस्से से कहा, बन्द करो यह लीला। सब सन्न रह गये। सूरज सिंह गालियाँ देते हुए गंगादीन को मारने दौड़े। रधुवीर ने सामने आ कर कहा, नहीं, यह नहीं हो सकता। आप यहाँ इस तरह का व्यवहार मत कीजिए।

गुस्सा और घृणा भरी एक नजर सब पर डालते हुए सूरज सिंह ने कहा, तुम लोग मेरी ताकत नहीं जानते ! कान खोल कर सुन लो, जो कोई मेरे खिलाफ जाएगा उसे मैं कीड़े–मकोड़े की तरह मसल कर रख दूँगा। मुझे किसी की भी परवाह नहीं।....और जाते जाते यह भी कहते गये, मैं सब को जानता हूँ। बड़े धर्मात्मा, हुँह ! मनसा पूजा ! रातों रात धर्मात्मा बन गये सब !

रघुवीर ने कहा, आप तो धर्मात्मा हैं न ?

बिल्कुल हूँ। धर्म मेरे लिए आडम्बर नहीं हैं। मेरे अपने इष्ट देव हैं। उन की पूजा पाठ करता हूँ। मगर ये.....।

गाली देते हुए जमीन्दार चले गये। जमीन्दार सूरज सिंह की यही विशेषता है। जब वह अपने इष्ट का ध्यान, पूजापाठ करते है तो उस समय वह कुछ और हो जाते हैं। विनम्र और उदार, जैसे दूसरी ही दुनिया के आदमी हों। नहीं तो क्रोध, घमण्ड, परम स्वार्थी स्वभाव, झूठी शान !

रघुवीर जमीन्दार को ही केवल कसूरवार नहीं देखता। आज सारे हिन्दू समाज का जीवन ऐसे दो भागों में बँट गया है। कर्म जीवन और धर्म जीवन, बिल्कुल अलग–अलग बातें हो गयी हैं। दोनों में कोई सम्बन्ध नहीं है। इष्ट देवी देवता के पूजापाठ में जिस की आँखों में आँसू बह आता है, वही आदमी पूजापाठ के तुरन्त बाद आँखें पोंछते हुए आसन पर बैठ कर कुछ भी कर डालने में तनिक भी संकोच नहीं करता !

इन दोनों सूरज सिंहों में पहली बार आमना–सामना हुआ अगले दिन दोपहर को हंसगौरी के कारण। गाँव के तमाम पौनी–प्रजा, गरीब–असहाय, झुण्ड के झुण्ड औरत मर्द, पाँत बाँध कर गाते जमीन्दार जी के दरवाजे पर आ रहे थे। किसी के हाथ में थाली, किसी के हाथ में तसला, किसी के हाथ में माटी

का कटोरा, किसी के हाथ में पत्तल दोना और कोई खाली हाथ। जमीन्दार ने पुरोहित हरीराम शास्त्री से पूछा, यह क्या तमाशा है ? शास्त्री जी ने बताया, बेटी हंसगौरी ने सबको मनसा प्रसाद पाने के लिए बुलाया है।

हंसगौरी प्रसाद बाँटने लगी थी। सोनपत्ती थाल में प्रसाद निकाल कर गौरी के हाथ में देती। गौरी एक एक को प्रसाद देती जा रही थी। सूरज सिंह के मन में आया हंसगौरी को रोक दें। पर उसी क्षण दूसरा भाव भी जगा कि यह तो धर्म का प्रसाद है। जब सब लोग मनसा प्रसाद ले कर चले गये तो सूरज सिंह ने पूछा, क्यों बेटी, सब को इस तरह मनसाप्रसाद क्यों बाँटा ?

राना बाबा ऐसा ही करते थे !

कौन राना बाबा ?

वही राना बाबा, मेरे परमपूज्य !.....मेरे जीवन दाता, जीवन रक्षक ! मनसापूजा ग्रामदेवता की पूजा है।

तुझसे मतलब !

गुस्से से लाल जमीन्दार पिता के सामने विनम्र बेटी ने कहा, पिछले कई वर्षों से मनसापूजा नहीं हुई तो यह प्रसाद नहीं बँटा। इतने वर्षों बाद जब इस बार हुई तो लोग प्रसाद बिना कैसे रहते ?

मुझ से तो पूछ लिया होता। यह गाँव अब वही पुराना गाँव नहीं रहा। जमाना बदल गया।

सूरज सिंह आज पहली बार बेटी के सामने अपने दोनों रूपों का आत्मविरोध महसूस कर रहे थे। धीरज बाँध कर सूरज सिंह ने कहा, बेटी, तुम से क्या मतलब इन गँवारों से ? यह पूजापाठ लीलाधीला इन बेपढ़े बेवकूफों की चीज है। तुम तो अंग्रेजी पढ़ी लिखी हो। मेम ने तुम्हें पढ़ाया सिखाया है। तुम्हारा क्या मतलब इन देहातियों से ? और जहाँ तक बात रही राना बाबा की, खबरदार.....।

आगे सूरज सिंह नहीं बोल पाये। बेटी के सामने से हट गये। वर्षों पूर्व का दृश्य पिता सूरज सिंह के सामने आ गया। उन का दम घुटने लगा। खजूर गाँव के तालुकेदार सेनवंशी सूरज सिंह के घर कन्या का जन्म। महल भर में थालियाँ बजने लगी हैं। कन्या को महल के आँगन में जमीन खोद कर दबा दो और मार दो।

बीच में एक जोरदार आवाज, नहीं।.....

कौन ? राना बाबा।

मत मारो कन्या को। जमीन में जिन्दा मत दबाओ। मैं अपने पोते रघुवीर से तुम्हारी कन्या के विवाह का वचन देता हूँ।.....

फिर वह सारा इतिहास। राना बेनीमाधव द्वारा खजूरगाँव की तालुकेदारी का खरीदा जाना। राना बाबा द्वारा सूरज सिंह को शंकरपुर में ला कर बसाना। तालुकेदारी में से उतने गाँवों को सूरज सिंह को दे देना.....राना बाबा.....हंसगौरी.....रघुवीर.....।

मनसापूजा की घटना के बाद सूरज सिंह चुपचाप बहुत सी बातें सोचने लगे।

गाँव की पाठशाला अब शंकरपुर गाँव से बाहर निकल कर बाग के किनारे चलती है। अब वह पाठशाला नहीं, स्कूल है। पाठशाला गाँव की थी। स्कूल सरकार का है। तब पाठशाला के पण्डित जी थे दुलीराम अग्निहोत्री। गाँव भर के लोग पण्डित जी को महीने में सीधा देते और उन के बच्चे पाठशाला में पढ़ते। उन दिनों दुर्गा, काली और रामकृष्ण की पूजा रोज होती थी। और सब के पुजारी वही पाठशाला के पण्डित होते थे। उसी पाठशाला के पढ़े हुए हैं रघुवीर और गंगादीन।

गंगादीन जमीन्दारी को लंकापुरी कहता है और जमीन्दार को रावण। पर रघुवीर के लिए रावण है अंग्रेज। अंग्रेजी सभ्यता–संस्कृति है लंकापुरी की।.....

जमीन्दार ने गाँवजवार में ढिढोरा पिटवा दिया कि जो कोई रघुवीर के पास अपनी फरियाद ले कर जाएगा उस का घरबार उजाड़ दिया जाएगा। फरियाद सुनने के लिए जमीन्दार बहादुर हैं। जमीन्दार बहादुर से पूछे बिना अब फिर मनसापूजा नहीं होगी।

जिस दिन यह ढिंढोरा पिटा उसी रात तिरबेनी लोहार के घर में किसी ने आग लगा दी। उस का फूस का घर जल रहा था। तिरबेनी की औरत लछमिनियाँ छाती पीट–पीट कर विलाप करती हुई जमीन्दार

के सिपाही बुलबुली सिंह का नाम ले कर कह रही थी कि सिपाही ने घर फूँका है। उस ने अपनी आँखों से देखा।

रघुवीर उस जलते हुए घर को देख रहा था। लोग उस आग से लड़ रहे थे। मनोहर और चैतू के भी घर आसपास ही थे। जैसे जैसे आग बढ़ रही थी वैसे वैसे हवा भी बढ़ने लगी थी। आसपास की चीजें आग को छूने के लिए काँप रही थीं। देखते ही देखते तिरबेनी के घर के साथ मनोहर और चैतू के घर भी जल कर स्वाहा हो गये।

सारा शंकरपुर डर गया। उसी खौफ के माहौल में जमीन्दार के यहाँ एक नया हाथी और पाँच नये घोड़े खरीद कर लाये गये। एक ओर फुलवारी प्रजापट्टी में औरतें विलाप कर रही थीं तो दूसरी ओर हाथी घोड़ों के पूजन के बाद रात में जमीन्दार के दरवाजे पर लखनऊ की रण्डी और भाँड की महफिल जमी थी।

जगताप बाबा और गंगादीन के साथ बैठे हुए रघुवीर सुन–गुन रहे थे। राना बाबा की बात.....बहुत बड़े बड़े राजा महाराजा थे। उन के दरबार में एक से एक बढ़ कर सेनापति। ऐसे ऐसे कवि और आचार्य थे जिनके हर शब्द अर्थ से भरे पड़े थे, हर शब्द में ज्ञान और सौन्दर्य। अद्‌भुत पराक्रम किये राजाओं ने। तर्क और ज्ञान से बड़ी–बड़ी कथाएँ बनीं। पर लोकमानस ने क्या किया उन के साथ ? जैसे–कुत्ते की पूँछ में बच्चे खड़बड़िया बाँध ताली पीट कर भगाते हैं, उसी तरह उन सारे शब्दों, अर्थों, कथाओं को पूँछ में बाँध कर भूल जाता है। अपने हृदय से क्या लगाता है, बन्दर कथा। याद रखता है कि राम रावण की लड़ाई में बन्दरों ने मिल कर लंकापुरी के समुद्र में पत्थरों का एक पुल बनाया। वाह !

तीनों उदासी भूल कर हँसने लगे। जगताप बाबा ने बताया कि उन के परदादा कहते थे कि उन के जमाने में लोग महाभारत कहते सुनते थे। महाभारत ही नाचते गाते थे।

रघुवीर ने कहा, क्योंकि तब हमारी लड़ाई अपने ही कुल परिवार और राजवंशों के बीच में थी। लेकिन जब से इस देश की लड़ाई बाहरी लोगों से शुरू हुई तभी से महाभारत की जगह रामकथा लोकप्रिय हुई। पहले रामकथा आयी, फिर रामकथा के आधार पर यहाँ मन्दिर बने।

गंगादीन के मुंह से निकला, वह तालुकेदारी, यह जमीन्दारी वही मन्दिर है क्या ?

रघुवीर ने कहा, पर लोग जानते हैं इन मन्दिरों में राम नहीं हैं। इन्हें कुत्ते की पूँछ में बाँध कर ताली पीट देंगे। कहाँ गये वे अवध के नवाब ? वे दरबार अब कहाँ हैं ? वह तालुकेदारी कहाँ गयी ? वे मीर, गालिब, बिहारी, केशव कहीं हैं लोक में ? हैं तो वही तुलसीदास, वही रहीम, वही सूफी फकीर.....

अचानक गाँव के सन्नाटे को चीर कर दुआशाह का संगीत उभरने लगा :

चम्पक हरवा अंग मिलि अधिक सुहाइ
जानि परै सिय हियरे जब कुम्हिलाइ।
डहकु न है उजियरिया निसि नहीं धाम
जगत जरत अस लागै मोहिं बिनु राम।
विरह राम उर ऊपर जहँ अधिकाइ
ए अँखिया दोउ बेरिन देहिं बुझाइ।
प्रेम प्रीति को बिरवा चले लगाय
सींचन की सुधि लीजौ मुरझ न जाय।

रधुवीर ने पूछा, कहाँ कहाँ घूमते रहे शाह जी ?

जहाँ जहाँ वह घुमाता है, घुमता हूँ।

हालचाल कैसा देख रहे हो बाबा ?

जगताप बड़ी उदासी है ! बहुत दुःखी हैं लोग। पता नहीं क्या ऐसी चीज छिन गयी लोगों की।

कोई भी समय और देश क्यों न हो, विदेशी शासन से उस की पूरी व्यवस्था को गहरा धक्का लगता है। अवध पर ब्रिटिश हुकूमत कायम हो जाने के बाद, खास कर सन् सत्तावन की हार के बाद वहाँ के पुराने तालुकेदार, अमीर उमरा सरकार के ऊँचे पद पाने की आशा, नहीं कर सकते थे। राजा से प्रजा के सारे रिश्ते टूट चुके थे। बीच में जमीन्दारी आ गयी थी।

पहले सारी शक्ति का स्रोत एक राजा था, अपना राजा, राजा राम ! अब राम नहीं, राजा रावण हो गया था। समुद्र पार अंग्रेज राजा, समुद्र पार लंका नगरी। वहाँ जानकी माई को चुरा कर अशोक वाटिका में ले गया है फिरंगी, तभी तो परदेशी राजा में वह एक शक्ति का स्रोत फूट कर तीन हो गया। एक से तीन। सम्पूर्ण से खण्ड खण्ड–एक कलक्टर से ले कर थानेदार चौकीदार तक, दूसरा जज मुन्सिफ से ले कर पटवारी तक। तीसरा वाइसराय से ले कर जमीन्दार तक।

अफसर, इन्साफ और कानून; तीनों एक से, लेकिन तीनों अलग अलग हो गये। इन तीनों के ऊपर न कोई मर्यादा थी, न किसी पुरुषोत्तम का आदर्श ! जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम वनवास चले गये। सूनी पगडण्डियों पर लोग करुण स्वर में गाते हैं :

अवधा लागै ला उदास।
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या
लछिमन बिन ठकुराई
सीता बिना मोरी सूनी महलिया
के अब दियना जराई
हे माई !
मोहि रघुवीर की सुधि आयी !

प्रजा कोई नवाबी राज में भी प्रसन्न नहीं थी। बड़े दुःख थे, बड़ी लूट थी नवाबी में। किसान तालुकेदारों और हाकिमों की मर्जी पर छोड़ दिये गये थे। मगर तब लूट एक तरफ से थी, अब तीन तरफ से हो रही है। अंग्रेज जमीन्दार और अहलकार तीनों अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए इतने आतुर है कि लोगों के दुःख दर्द की थोड़ी भी परवाह नहीं है। हर तरह के सरकारी कागजों, टिकटों, अर्जियों, खानपान, खूँटा, कुआँ, मकान, यहाँ तक कि किश्तियों और नौकाओं पर कर, लगान; अनाज, नमक, तेजाब, बारूद के लिए ठेकेदार लगा दिये गये।

अवध में यही मान कर बन्दोबस्त किया गया कि जमीन और खेत का असली मालिक जमीन्दार है।

नवाब तालुकेदारी के सिपाही बेकार हो कर या तो ठगों, डाकू–गिरोहों में चले गये या फिर साधु संन्यासी हो गये। सब से नीचे का गरीब तबका चाहे वह ब्राह्मण हो, चाहे मुसलमान भिखारी बनने के लिए मजबूर हुआ। सन् सत्तावन के बाद सब से गहरा धक्का अवध में ब्राह्मण और मुसलमान को ही लगा था। यही दोनों भिखारी हुए थे। अवध के गाँवों में एकतारा और करताल बजाते हुए ब्राह्मण सुबह से शाम तक घूमते गाते हैं :

जननी बिनु राम अब ना
अवधि माँ रहिबै
बन को निकरि गये दुनो भाई
आगे आगे राम चलत हैं
पीछे लछिमन भाई

किंगरी हा, सारंगी, ढोल, तमूरा और रबाना बजाते हुए मुसलमान भिखारी भी दरवाजे–दरवाजे गाते हैं :

मदीना बुला ले हे प्यारे सनम
मोरे मौला मदीने बुला ले मुझे
भुलाई गइऊँ रे सिवबाबा की गलियाँ
मौला कसम अरे बाबा कसम
भुलाई गइऊँ रे सिवबाबा की गलियाँ
उत्तर ओर से चलें मामा भैयनवाँ
पहुँचे कजरी के बनवा हो ना
मामा समुझावै सुन रे भयनवाँ
मति केहू के पतियाय
रहिया में बैठी काली नागिनियाँ

काली नागिनिया माने जमीन्दारी। जमीन्दार, अहलकार, कानून, कचहरी।

मालगुजारी, लगान के अलावा जमीन्दार अब बेगार लेता है। नजराना लेता है, पैदा होने से मरने तक का नजराना। बेटी बेच कर नजराना देता है किसान। एक नरक से बचने के लिए दूसरे नरक को कबूल करता है। जमीन का काश्तकार पट्टेदार मर गया तो उस के लड़के पोते को हक तभी मिलेगा जब मुर्दाफरोशी का नजराना जमीन्दार को मिले। ईदबकरीद, दशहरा, दीवाली पर जमीन्दार का दरबार लगता है। और दरबार में जमीन्दार को भेंट चढ़ाना फर्ज ही नहीं, भेंट न चढ़ाये वह जुल्मीकसूरवार है। पहले तालुकेदार चढ़ावा भेंट छू कर प्रजा को इनाम सहित वापस कर देता था। मगर अब नजराना, नजरदौरा, पकावन, मुर्दाफरोशी, गिरावन, उठावन, कुआँ खोदावन, लढ़ियावन, न जाने कितने 'रावण' आ गये।

पहले तालुकेदार को डर था कि प्रजा किसी वजह से नाराज हुई तो तालुका छोड़ कर कहीं और चली जाएगी, या फिर चकलेदार से शिकायत करेगी या फिर सीधे नवाब के दरबार में तालुकेदार के खिलाफ उजर उठाएगी। अब कैसा डर जमीन्दार को, उस की रक्षा में अंग्रेजी पुलिस और फौज है, मदद में कचहरी खड़ी हैं और कानून और अफसर तो हैं ही। अब रियाया नाराज होगी तो भाग कर कहाँ जाएगी ?

कृषि का सारा गौरव समाप्त हो गया। जो अब तक ग्राम का अन्नदाता था, वह अब महज काश्तकार रह गया। हर वक्त हर कि जमीन्दार कभी भी उसे बेदखल कर सकता है। कारिन्दा, सिपाही कभी भी लगान के नाम पर उसके घर में घुस कर लूटपाट कर सकता है। नवाब के सिपाही और योद्धा भी होते थे। प्रजा तब सुरक्षित भी थी, अब जमीन्दारी में किसान केवल हलवाहा, बेगार करने वाला मजबूर प्राणी रह या ! अंग्रेज को गसिर्फ राज ही नहीं करना था, अवध की अपार सम्पत्ति लूट कर अपने देश ले जाना था। इस के लिए जमीन से पानी तक उसे एक ऐसे नये ग्राम समाज की जरूरत थी जिसकी बुनियाद निजी मिल्कियत पर हो। जहाँ निजी मिल्कियत है वहीं बाँटा और तोड़ा जा सकता है। स्थायी बन्दोबस्त स्थायी लूट है।

गंगादीन बोला, वाह दुआशाह, अगर आप हमारे राजा होते।

अरे फकीर ही राजा होता है ! जगताप बाबा की इस बात पर रघुवीर का दिल भर आया।

दुआशाह फकीर है। फकीर हैं, पर सारे गाँव के अभाव–अभियोग, दुःख–दर्द, राजी–खुशी, खामी–कमी से वाकिफ हैं। पता नहीं कितने गहरे रिश्तों की डोर से बँधे हैं। रघुवीर नाम दुआशाह का ही रखा हुआ है।

दुआशाह ने तब राना बेनीमाधव से कहा था, सुनो राना। राना नाम तुम्हारे साथ चला जाएगा। यह रघुवीर है, खुदा परवरदिगार की खास रहम है इस पर।

और जगताप बाबा ? गाँव के लोहार, चमार, बढ़ई, नाऊ, धोबी, राजाप्रजा, पंच का क्या काम है, क्या वृत्ति है, इसे जगताप बाबा जानते हैं। आज जमीन्दारी और बन्दोबस्त में किस की जमीन कहाँ है, पटवारी के नक्शे पर अँगुली रख कर बता देंगे। कभी जरीब कट्ठा से एक धुर जमीन नहीं नापी है, पर कौन खेत कितना है कितनी मिल्कियत का है, इस के बाबत बन्दोबस्त के कागज में और पटवारी के खसरा–खतियौनी में क्या दर्ज है, जगताप बाबा को सब पता है। एक अक्षर लिख नहीं सकते, पर इन्हें क्या नहीं पता है। पिछली पाँच पुश्तों की पंचपुरी का सारा कच्चा चिट्ठा, कर्म कुकर्म का पूरा ब्यौरा बाबा को याद है।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी। चाकचौ बन्द के सरदार फगुनी ने आ कर खबर दी कि रघुवीर भइया के पीछे खुफिया पुलिस लगी है। जमीन्दार के सिपाही हर हफ्ते रायबरेली में रपट दर्ज करते हैं। कहाँ गया, किस से मिला, कौन कौन रघुवीर से मिलने आया सारी कैफियत अंग्रेज कोतवाल डेविड साहब को दी जाती है।

फगुनी ने बताया कि उस के गिरोह के लोग पिछले दिनों तीन अंग्रेजों को पकड़ कर डाँडिया खेरा के जंगल में ले गये। उन के पास जो कागजात मिले उन में क्या नहीं था !

और क्या मिला तुम्हें ?

फगुनी ने रघुवीर से कहा कि अंग्रेजी हुकूमत अवध–बैसवाडा में अकाल आने की राह देख रही है। इस की तैयारी और तरकीब अंग्रेज अफसर सन् साठ से ही लगा रहे हैं।

दुआशाह सन्न रह गये। गंगादीन हँसा। कहा, अकाल के मुंह में जमीन्दार जाएंगे। अंग्रेजों की जमीन्दारी यहाँ नहीं चलेगी। इस जमीन जंगल में मानुष रहते हैं और बन्दर, भालू भी !

दुआशाह, रघुवीर, गंगादीन लोगों को अकाल के बारे में कुछ चेतावनी देते, अवध बैसवाड़े की धरती पर वास्तव में अकाल आ चुका था। अकाल अंग्रेजी राज की रचना थी, सन् साठ से ही अंग्रेज अकाल के बारे में बोल लिख रहा था। अब अवध ने उस अकाल को देखा गौर से देखा और खूब अच्छी तरह से पहचाना।

भयंकर सूखा पड़ा था। दौरे पर आये अंग्रेज अफसर जमीन्दार सूरज सिंह के यहाँ रुकते, गुपचुप बातें करते। जाओ देखो, नदियों के किनारे की हरियाली कैसे सूखती है ? अवध का दोआबा, गोमती, सरजू, गंगा, जमुना, रामगंगा, बानगंगा का दोआवा कैसे सूख कर चटक जाता है ? जाओ देखो, हरे–भरे खेत कैसे बलुही जमीन में तबदील हो जाते हैं। देखो, कैसे तेज हवा रुक जाती है ? धरती बंजर हो जाती है। आदमी जानवर और पेड़ पौधे अकाल और गर्मी से कैसे ऐंठ जाते हैं ? इस अकाल के भीतर से अपना रास्ता बनाओ.....! अपने पिता की हवेली में बैठी हुई हंसगौरी अंग्रेज अफसरों की यह बात सुनती सुनती जलने लगती।

एक दिन जैसे अग्निपरीक्षा की चिता से उठ कर हंसगौरी बिल्कुल अकेली रात के पिछले पहर रघुवीर के पास। आयी कहने लगी, सुनो ! इस अकाल के बीच से रास्ता बनाओ ! तुम दिन रात कहाँ–कहाँ, मारे–मारे फिरते हो ? ऐसे किस–किस को बचा लोगे ? तुम सब जानते हो, सब देखते हो, तब भी तुम हो कि चलते ही जाते हो। अकाल और क्या है ? अकाल वहाँ से आरम्भ होता है जहाँ जीवन के सीधे–सादे सहज काम भी यन्त्रणा बन जाते हैं। जहाँ चलने में, साँस लेने में, देखने और सोचने में, हर बात में डर मालूम होता है। जो इस अकाल के भीतर से भी रास्ता बना लेता है, अकाल वहीं खत्म हो जाता है। एकाएक धुन्ध छँटती है और अकाल के परे एक महाकाल दिखाई पड़ने लगता है !.....

सुबह होने लगी थी। हंसगौरी जा चुकी थी। उसके एक एक शब्द रघुवीर को घेरे हुए थे। 'जब भीतर और बाहर अँधेरा इतना बढ़ गया तो यही लगा कि सूर्य निकल आया है। उसी सूर्योदय की कल्पना हो ह्रदय में भर कर मैं तुम्हारे पास आने के लिए निकल पड़ी, न जाने किस तीर्थ का जल ले कर। जिस तरह अभिसार में निकला जाता है, उसी तरह निकली थी। अँधेरी रात अँधेरी लगी ही नहीं !.....'

रायबरेली के कलक्टर ने अगले दिन रघुवीर को बुला कर पूछा कि इस अकाल के बारे में आप का क्या ख्याल है ?

रघुवीर ने अंग्रेज कलक्टर को समझाया कि हर गाँव का एक डिवहार होता है जिसे डीह देवता या डीहबाबा कहते हैं। शंकरपुर का डीह गाँव छोड़ कर भाग गया है सन् सत्तावन की लड़ाई के बाद। उसे ढूँढ कर फिर गाँव में ले आया जाय तो अकाल दूर हो जाएगा।

कलक्टर ने जमीन्दार सूरज सिंह और अपने लोगों से सलाह कर के जानना चाहा कि इस में कोई खतरा या चाल तो नहीं है। रघुवीर राना बेनी माधव का पुत्र है, यह नहीं भूलना चाहिए। सब ने कहा कि यह एक पूजापाठ है, अन्धविश्वास के तौर पर। इस में ऐसा कुछ नहीं है।

सत्रह

सूखे सावन की एक गर्म सुबह। खेवट ने गले में ढोल लटका कर शंकरपुर के सिवान में देवी–देतवा, भूत–प्रेत को जगाने के लिए ढोल पीटना शुरू किया।

कलपा दाई की अगुआई में गाँव की औरतों ने सिवान पूजन शुरू किया। गाँव की चारों दिशाओं में बन्दोबस्त ने पत्थर की थाक गड़वा दी है। सब के खेत नपतुल कर बने हैं। जमीन्दार के खेतों को 'सीर' कहते हैं और काश्तकार के खेतों को 'काश्तकारी'। सिवान पूजन पूरा नहीं हुआ कि रात को उँड़वाँ गाँव के लोगों ने पूरब दिशा के सिवान की चोरी कर ली। उँड़वाँ का सिवान शंकरपुर में घुस आया।

जगताप बाबा ने पंचायत बुलायी। उँड़वाँ के लोगों से कहा कि शर्म करो उँड़वाँ वालो ! उँड़वाँ गाँव में ही राना बेनीमाधव का जन्म हुआ है। राना की जन्मभूमि के लोग शंकरपुर के सिवान की चोरी करें यह डूब मरने की बात है। पर जमाने की इस रफ्तार में भला अब कौन डूबता ! गंगादीन ने उँड़वाँ के तुरंगा सिंह का नाम ले कर कहा कि उस ने चोरी की है, अगर उसने चोरी नहीं की है तो लोटे में गंगाजल भर के उसमें पीपल पात डाल कर सिवान में घूम कर कहे कि इतना सिवान उँड़वाँ का है तो हम मान जाएंगे।

तुरंगा सिंह ने पीपल पात डाले गंगाजल को ले कर घूमना शुरू किया। ज्यों–ज्यों उस चोरी किये हुए सिवान में वे घूमे त्यों–त्यों वह अन्धे होते चले गये ! जिस क्षण गंगाजल भरा लोटा उन के हाथ से धरती पर गिरा उस क्षण तुरंगा सिंह पूरे अन्धे हो चुके थे। शंकरपुर को अपना सिवान वापस मिल गया। दूर–दूर तक इस घटना की खबर गाँवों में फैल गयी। सिवान पूजा और डीह बाँधना गाँव–गाँव में शुरू होने लगा।

सिवान पूजा के बाद कथाबाँचू खेवट बस्ती जिला के लकड़मण्डी घाट से एक जबर्दस्त ओझा सोखा ले आये। नाम था पंचानन।

पंचानन सोखा ने शंकरपुर के पुराने डीह पर खुद अपने हाथों से कुदारी चला कर एक गड्ढा खोदा। उस गड्ढे में गंगादीन और रघुवीर के हाथों माटी की हौदी में दूध भरा गया। हाथ में खाली घड़ा बजाते हुए उल्टी चारपाई पर बैठा पंचानन सोखा। गाँव के लोगों ने तरह–तरह के बाजे बजाने शुरू किये। उल्टी चारपाई को कन्धे पर उठाया तिरबेनी लोहार, मनोहर कुम्हार, चैतू तेली और घोघे चमार ने। सब से आगे–आगे मिट्टी के पात्र से दूध की बूँद गिराते हुए रघुवीर चले। फिर पीछे–पीछे उल्टी चारपाई पर पंचानन सोखा। दायीं ओर शंख बजाते हुए पुरोहित केशव मिश्र, बायीं ओर गंगादीन और पीछे घरी–घरियाल बजाते हुए खेवट तथा गाँव के लोग। गाँव जवार की भीड़ भी इकट्ठी थी।

सब लोगों की निगाह उसी सोखा पर है जो पचरा गाता हुआ जाख और जाखिन को ढूँढ़ रहा है। जाख और जाखिन दो लोक देवता हैं। जिस गाँव से रूठ कर जाखिन कहीं चली जाती है, उस गाँव में अकाल पड़ता है। जब जाखिन चली जाती है तो उसके पीछे–पीछे जाख भी चला जाता है। जाख–जाखिन जहाँ जाते हैं वहाँ सुकाल हो जाता है। अब जाखिन का पता कैसे चले कि वह किधर से कहाँ गयी ?––और यह खबर केवल उस गाँव के भूतपिशाच और असंख्य देवी–देवता ही दे सकते हैं।

जहाँ कोई देवता, भवानी, भूत, पिशाच रास्ते में पड़ते हैं, किसी पेड़ पर, कुएँ पोखर में, खेत खलिहान में; वहाँ झट सोखा को पता चल जाता है कि यहाँ है ! और सोखा उसी दम चारपाई से कूद कर जमीन पर नाच नाच कर पचरा गाने लगता है :

पुरबहि सुमिरों पुरबई मइया
पुर्वे क बरहना पीर मइया सारदा
उत्तर को सुमिरौ उत्तरी भवानी
दक्खिने गंगा जी के धार मइया सारदा
पुरबो भवानी डिहिवा के सुमिरो
जे के सुमिरौ अपने राम कैं सुमिरों
जे गुरु पैदा कीन मइया सारदा।
पसुरिन पसुरी जोरि के उपरा चाम रंग दीन
ते के में सुमिरों अपने मात–पिता कै

जो सोखा पैदा कीन मइया सारदा
अचरन अचरन ढाँकि कै छतिया
दूध पियाइ दीन मइया सारदा

तै के मे सुमिरों अपने गुरु कै
जे गुरु विद्या दीन मइया सारदा !

तो शंकरपुर के पूरब सिवान पर पहुँचते पहुँचते सोखा पंचानन चिल्ला कर चारपाई से नीचे कूद पड़ा :

काली मइया बैठो मोरे अंगना
देव सतरंगिया बिछाय
तुमरी सरन मइया जज्ञ रची है
जज्ञ सपूरन होय जाय।
आओ कानी नैकानी अरिया
चमरिया डिबहरिया

बोल चमरिया माई ! कब से आयी ? ओह ! सन् पचास में। किट किट किट किट मत बोल ! सही में मुँह खोल नहीं तो.....! ना ना ना ना। अच्छा तो बोल ! सुन !.....बहुत दिनन की बात है। हम बच्चा रहे, दस बारह बरिस के। तब एक मनई घोड़ा चढ़ा आय उइ केसरुआ के मैदान माँ, गूलर के पेड़ तरें उतरे रहै। साथ में दुइ कुत्ते रहैं। पूछैं फलाने सिंह हैं ? फलाने तिवारी हैं ? फलनिया हैं, ई सब पूछें। फिर कहें हमरे साथ चलो। अउर कोउ गा नाहीं। हम ही गये। पूछा, कौन जात ? चमार। ई बात पर ऊ हमें आपन घोड़ा सेतिन कुचलवाय दीन। तब से हम चमरिया होइकै याइ गूलर के पेड़ पर रहों। सब से बदला लूँ। सब को ठोकर मारूँ।..... आ आ माई चमरिया माई आ ! इस में आ जा ! आजा।

घड़े में दो अक्षत डाल कर सोखा महाराज ने उसे बाँध कर रख लिया। फिर चारपाई पर बैठ कर आगे चले।

हइला ! हइला ! हई हई !
हइला ! हइला ! हई हई !

पूरब उत्तर दिशा में उँड़वाँ गाँव के पास सोखा पंचानन फिर अपना घड़ा ले कर कूदा।
मनुआँ दर्र !
मनुआँ दर्र !
आजा आजा भैंसासाई।
आ गया भैंसासाई।
बोल भाई !
बोल दूँ ?
हाँ बोल ! इधर कहीं जाख जाखिन को देखा ?
हेरे मोरी बात सुन !
सुना।

सुन– अवध के ताल्लुकेदारान नवाब के शाही खजाने में झंझी कौड़ी भी देना अपनी शान के खिलाफ समझते थे। आमतौर पर नाजिम या आमिल की फौजें आतीं, तालुकेदार गढ़ी छोड़ कर भाग जाते। मुठभेड़ भी हो जाती। पकड़े जाने पर आमिल लोग राजाओं तालुकेदारों की बड़ी दुर्गत करते। उन के मुँह पर पाखाने का तोबड़ा बाँधा जाता। नाखूनों में कीलें ठोंकी जातीं। पैरों में काँटेदार बेड़ियाँ डाल कर डण्डे के जोर से दौड़ाया जाता। पर, वाह ! राजा तालकेदार ऐसे कंजूस होते कि दमड़ी के लिए अपनी चमड़ी की मुतलक परवाह न करते। तो सुन पंचानन, मैं एक

तालुकेदार हूँ। भूत प्रेतों में मुझे भैंसासाई के नाम से जाना जाता है ! मैं इसी बबूल के पेड़ पर रहता हूँ। मुझे हरियाली कतई पसन्द नहीं।

पंचानन कहता है, मनुआँ दर्र, भैंसा साई !

भैंसासाई को घड़े में रख कर सोखा आगे बढ़ा। दिन डूबने जा रहा था। पंचानन ने जल्दी–जल्दी एक कुएँ से पित्तपियासी और एक पोखरा से डोमा और बैताल को अपने घड़े में बन्द कर के शंकरपुर के डीह पर गड़ी दूध से भरी हुई हौदी में डाल दिया।

अगले दिन सुबह पंचानन उत्तर पूरब सिवान से जंजपूक प्रेत को खदेड़ते हुए दौलतपुर गाँव में चला आया। गाँव के बीचोंबीच पीपल का पेड़ था। पेड़ के खण्डहर में ही जंजपूक प्रेत छिपा था।

हइला ! हइला !

बोल जंजपूक !

बोलूँ ?

बोल–जाख जाखिन को कहीं देखा है ?

मैं तो अन्धा हूँ !

कैसे ?

जिस दिन शंकरपुर लूटा जा रहा था मैंने सोचा, चलो थोड़ा मैं भी लूट लूँ जिस रात राना बेनीमाधव शंकरपुर से गये, बहुत आदमी मरे। गोरे कहीं दूर भी दिखाई पड़ते तो गाँव के लोग जान बचाने के लिए घास के गट्ठरों में छिप जाते। गोरे आ कर घास में आग लगा देते।

किसी ने उन के डर से कुएँ में कूद कर अपनी जान बचानी चाही तो वे लोग बन्दूकें ताने कुएँ पर ही आ कर जम गये। हमारे पड़ोसी दुलीराम अग्निहोत्री होम कर के बाहर आ ही रहे थे कि घर में दो गोरे और चार काले सिपाही घुस पड़े। गोरे सीधे होमशाला ही में पहुँचे। यज्ञ की अग्नि को लोहे के तसले से ढँक दिया। गोरों ने सोचा कि इस में भी कोई अर्थ है। तसला मैंने ही उठाया। मेरे तो हाथ ही जल गये। राख के नीचे माल होगा, यह सोच कर जैसे ही एक अंग्रेज ने हाथ डाला उस का हाथ जल गया। फिर तो गोरों ने अग्निहोत्री जी पर धाँय–धाँय गोली चला दी ! और सारा घर लूट कर चले गये। मैंने भी लूटा। गाँव में, खास कर राना बेनीमाधव के महल में जितना सोना, चाँदी, हीरा, मोती, मूँगा मानिक मिला, सब गोरे लोग लूट ले गये। राना बाबा का पुस्तकालय बहुत बड़ा था। स्मृति, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद और ऐसे ही पृथ्वी पर रचे जाने वाले सब प्रकार के उत्तम ग्रन्थों का वहाँ संग्रह था। सब में आग लगा दी।

फर्राशखाने से जाजिमें तोशक तकिये तम्बे–कनात सब ले जा कर अपने डेरे में रखे। नक्कारखाने में जा कर सब नगाड़े, ढोल, तोशे, मृदंग, पखावज फोड़ डाले और उन के ताँबे के मेढ़ेर बगल में दबा कर चल दिये। ठाकुर जी के मन्दिर तक को नहीं छोड़ा। देवी के अलंकार वस्त्राभूषण सब लूट ले गये। अँधेरे कोनों में जो जहाँ मिलता था सब को ढूँढ़ कर मारते ! तीन दिनों में सोने चाँदी की लूट गोरों को बख्शीश में मिली ! फिर हुकुम हुआ कि अब चार दिन और लूट होगी, राना के पूरे तालुके की लूट ! लेकिन अब इस में किसी की जान नहीं जाएगी ! लूट के चार दिन हिन्दुस्तान के राजे रजवाड़ों की तरफ से मदद के लिए आयी हुई पलटन और काली पलटनों में बाँट दिये गये ! मैं राना के एक हाथी की पीठ पर बैठा लूट का अपना सामान ले कर जा रहा था कि हाथी जैसे पगला गया। उस ने मुझे पटक कर अपने दायें पैर को मेरे सीने पर इतनी जोर से चाँपा कि दोनों आँखें बल से बाहर आ गयीं। तब से मैं यहाँ जंजपूक प्रेत के रूप में हूँ। मुझे कुछ नहीं दिखाई देता !.....

जंजपूक नाम किस ने दिया ?

हम प्रेतों का भी अपना जगत लोक है। प्रेतों ने मुझे जंजपूक नाम से पुकारना शुरू किया।

अच्छा जंजपूक, तुम आ जाओ इस घड़े में। जंजपूक को घड़े में रख कर सोखा पंचानन की उल्टी चारपाई आगे बढ़ी। आगे बढ़ते ही सूखे मैदान से किसी ऊँट की आवाज आयी, भिल भिल भिल भिल। पंचानन चारपाई से कूद कर दौड़ा, सुन बे पिशाच। तेरी पिशाचिन मेरे घड़े में हैं। आजा, आजा ! मनुआँ दर्र! मनुआँ दर्र ? बोल भाई पिशाच, कहीं देखा हमारे जाख जाखिन को ?

आ पहले कुश्ती लड़।

आजा ! आजा !

पिशाच से पंचानन कुश्ती लड़ने लगा। पंचानन को पटक कर पिशाच उस की छाती पर बैठ कर बोला :

बोल, मारी डारूँ कि खून पी कर छोड़ दूँ ?

तो सुन। अंग्रेज की तोपें उन जगह कादिरघाट पर लागी रहें औरु नवाबी की तोपें कम्पनी बाग में लागी रहें। तीन तोपें रहें। पहले अंग्रेजन की हार हुई गयी। गोरा बहुत कटा। दोसर तीसर पलटन आयी, तब हिन्दुस्तान कटा। बीच में फँसा बलभदर सिंह। तब पीलवान कहिसि, आकि सरकार जो हुकुम होय तो मैं निकाल लै चलों। तो उयि कहिनि कि हम छत्री हुइबै पीठी दिखाउब ? तो हौदा पर से उतर परै। औरु जैसे बजरा कैसी बाली नाहीं छाँटति, कैसे अंग्रेजन का काटिन दुपहर तक, दूनो हाथन से लड़त रहे। मैं सिपाही रह्यों। पीछे से घात करिकै मारयों। तब बलभदर सिंह के लहास गिरी। फिर मैं पगलाय गयौं। आपन करेजा मा कटार भौंक लिह्यों।

पिशाच को अपने घड़े में रख कर पंचानन आगे बढ़ा। आगे छह दिनों तक पंचानन अपने घड़े में सुखिया दुखिया, भवानी, शेखू, इमरती, पित्र पियासी डाइन आदि को घड़े में भरता हुआ डीह की हौंदी में डालता रहा। सातवें दिन पंचानन सई नहीं के तट पर सेमरी गाँव के पास एक पीपल के नीचे नाच–नाच कर पचरा गाने लगा। तब पीपल के पेड़ पर सम्पतमाई उतरीं। माता ने बताया कि उन्होंने सई के उस पार ऊँआँरे के जंगल में देखा है जाख जाखिन को !

फिर अगले दिन सोलह कहारों की पालकी सजायी गयी। पालकी के साथ कई सौ लोगों की बारात ऊँआँरे जंगल में गयी। पालकी खोल दी गयी। पालकी के पास पंचानन गाने लगा। जाखिम आयी। पंचानन मारे खुशी के नाचने लगा। जाखिन के पीछे पीछे जाख था। पंचानन जाखिन को पालकी में बैठते हुए देख रहा था। जाखिन को पालकी में बिठा कर लोग गाते नाचते शंकरपुर लौटे। दूध भरी हौदी में जाखिन को डाल कर शंकरपुर का डीह बाँधा गया।

डीह बँधवा कर अगले दिन रघुवीर लोगों को अपने साथ ले कर तीर्थयात्रा पर चला।

सई नदी के उस पार का जंगल। उसी जंगल में पहुँचने और राना बाबा के दर्शन के लिए वह तीर्थयात्रा थी !.....आगे रधुवीर पीछे गंगादीन, दुआशाह, जगताप, खेवट और सैकड़ों लोग। पहला पड़ाव दौलतपुर। रात को रघुवीर ने कथा कही :

एक ऋषि महात्मा थे। तपस्या कर रहे थे। घनघोर तपस्या। बहुत दिनों से। एक दिन एक चिड़िया ने ऋषि के ऊपर टट्टी कर दी। ऋषि को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने ऊपर देखा, पेड़ पर वह चिड़िया बैठी है। ऋषि ने उसे इतने गुस्से में देखा कि वह चिड़िया जल कर खाक हो गयी ! ऋषि को लगा कि उन की तपस्या पूरी हो गयी और वह भी कुछ कर सकते हैं। उस के बाद ऋषि–महात्मा जी गये एक गाँव में भिक्षा माँगने। एक स्त्री अपने पति के पैर में तेल मालिश कर रही थी। महात्मा जी बड़े रोब में बोले, अरे भिक्षा दे मुझे ! स्त्री ने कहा कि महाराज, अपनी बैठो थोड़ी देर या कहीं और घूम आओ। जब मैं पति की सेवा पूरी कर के छुट्टी पाऊँगी तभी भिक्षा दूँगी आप को। महात्मा जी को बड़ा ताव आया। कहा कि अरे औरत, तू मुझे जानती नहीं कि मैं कौन हूँ ! स्त्री बोली, महात्मा जी, मैं वह चिड़िया नहीं हूँ जो आप के देखने से ही भस्म हो गयी। महात्मा जी हैरान कि इसे कैसे पता चली वह चिड़िया वाली घटना ? पूछा, तुम्हें कैसे पता ? स्त्री बोली कि अगर तुम्हें इस का पता लगाना है कि मुझे उस घटना का पता कैसे चला तो आप सीधे जाइए फलाँ नगर में एक कसाई के पास। वह आप को बता देगा। अभी तो मुझे फुरसत नहीं है।

महात्मा जी हैरान। कसाई को इस का ज्ञान कहाँ से कैसे हुआ ? फिर गये उस कसाई के पास महात्मा जी। कसाई मांस काट कर ग्रहकों को दे रहा था। महात्मा जी पास जा कर बोले कि वह चिड़िया वाली बात उस औरत को और तुम्हें कैसे पता चली ! कसाई बोला कि महाराज, अगर आप को इतनी ही जल्दी है जानने की तो आप फलाँ गाँव चले जाइए। वहाँ आप को हल जोतता हुआ एक किसान मिलेगा, वह आप को जरूर बता देगा, अभी तो मेरे पास वक्त नहीं है !

महात्मा जी उस कसाई को एकटक देखते रह गये। वह अपने काम में इतना रमा हुआ था कि उसे दीनदुनिया की कोई फिक्र ही नहीं थी। अचानक कसाई ने कहा, अरे महाराज, आप अभी तक यहीं खड़े हैं? जाइए !

ऋषि ने कहा कि उन्हें पता चल गया कि वह कारण क्या है। मैं जीवन से भाग कर समाधि लगाये तपस्या करता रहा। तभी मुझ में इतना क्रोध और अहंकार है। जो जीवन में ही अपने कर्म की समाधि में हैं, उन्हें भला किस ज्ञान की कमी ! उन्हें कैसा अहंकार और कैसा क्रोध.....?

गंगादीन बोले, इस कहानी का मतलब क्या हुआ ? मतलब माने अर्थ। अर्थ माने करम। करम माने भाग्य या किस्मत नहीं, करम माने कर्म––अपना काम ! मगर अपन कर्म कहा अपना काम ! मगर अपना कर्म कहाँ है जिस में इतना मन, प्राण रम जाय कि समाधि ही लग जाय ! अब तो कोई काम अपना नहीं है। हर काम जमीन्दार का है। जायदाद और रुपये पैसे का मालिक जमीन्दार है। हर काम में उसी की जबर्दस्ती चलती है। कोई मर गया तो उस की सम्पत्ति का मालिक जमीन्दार जबकि असली हकदार तो राजा राम हैं। राम की राजशक्ति ! लेकिन रावण–राजशक्ति अंग्रेज ने अपना अधिकार जमीन्दार को इस तरह से सौंप दिया है कि हक, हुकुम, क नून, न्याय सब कुछ का मालिक जमीन्दार ही है।

रघुवीर ने कहा कि पहले सारी सम्पत्ति का मालिक था राजा। राजा माने प्रजा और प्रजा माने राजा। राजा माने राम। राम माने मर्यादा, वही तो पुरुषोत्तम है। एक केन्द्र, एक उत्स। सारे उत्स उसी एक से निकले हैं।

हाँ, उत्स से ही उत्स निकलेगा। तभी तो शंकरपुर में सब ने पंचपुरी बना कर कहा, यह स्थान राजा का है। इसलिए पंचपुरी पंचदेवता का सेवायत राजा था। राजा का सेवायत प्रजा थी। सब के अपने काम थे, जैसा स्वभाव वैसा काम अपना था। अपना काम अपना आनन्द। अंग्रेज राजा नहीं हैं। केवल राज्य है। राज्य अपना अधिकार जमीन्दार को दिये बैठा है। जमीन्दार ने दिया ठेकेदार को.....

यात्रा का अगला पड़ाव सिद्धोर। उस पड़ाव पर रघुवीर ने कथा कही :

एक थे ब्राह्मण। बड़े कर्मवान और पुण्यवान ! उन के घर स्वयं सौभाग्यलक्ष्मी ने आश्रय लिया था। उन्हें हर काम में सफलता मिलती थी। उन का घर परिवार गौरवपूर्ण था। पाप को बड़ी ईर्ष्या हुई ब्राह्मण से। पाप ने एक उपाय किया। अपनी पत्नी को साथ ले कर ब्राह्मण के घर आया और कहा कि मैं बहुत अभागा हुँ। बहुत कष्ट है मुझे। मेरी पत्नी मलिनता को थोड़े दिन अपने घर में शरण दें। ब्राह्मण मान गये। उन्होंने पाप की स्त्री उदासी मलिनता को अपने यहाँ रख लिया। यह भी कहा कि पाप, तुम भी रहो यहाँ अपनी पत्नी के साथ। लेकिन पाप साहस न कर सका, क्योंकि वह जानता था कि ब्राह्मण के पास धर्म है।

पाप की स्त्री उदासी मलिनता को अपने घर रखते ही ब्राह्मण के यहाँ अजीब परिवर्तन होने लगे। गायों ने दूध देना बन्द कर दिया ! फले पेड़ के फल नीरस हो गये ! घर में लोग सोते ही रहते। एक रात जब ब्राह्मण जप कर रहे थे तो एक नारी रोती हुई उन के सामने प्रकट हुई। बोली, मैं तुम्हारी सौभाग्यलक्ष्मी हूँ। अब तक तुम्हारे यहाँ रहती आयी। आज छोड़ कर जाना पड़ रहा है।

क्यों मुझ से क्या अपराध हुआ ?

तुमने अपने यहाँ पाप की स्त्री को स्थान दिया है, इसी लिए हम दोनों साथ नहीं रह सकतीं। ब्राह्मण चुप रहे। भाग्यलक्ष्मी को उन्होंने प्रणाम किया। लक्ष्मी चली गयी।

सारा घर श्रीहीन हो गया। अकाल पड़ गया। सारा जल सूख गया। वर्षा गायब हो गयी। हाहाकार मच गया। ब्राह्मण के सामने फिर एक स्त्री प्रकट हुई। बोली, मैं तुम्हारी यशलक्ष्मी हूँ। सौभाग्यलक्ष्मी नहीं रही, अब मैं भी जा रही हूँ। और चली गयी वह भी। दूसरे ही दिन निन्दा शुरू हुई कि यह ब्राह्मण चरित्रहीन है, पापी है, अपराधी है ! ब्राह्मण की कलंक कहानी चारों ओर फैल गयी। तब कुललक्ष्मी ने आ कर कहा कि मैं तुम्हारे यहाँ अब कैसे रह सकती हूँ ? वह भी चली गयी !

अन्त में धर्मपुरुष सामने प्रकट हुआ। ब्राह्मण ने पूछा, आप ?

हाँ। मैं धर्म ! मैं भी अब जाता हूँ।

क्यों ? क्या अधर्म किया है मैंने ?

तुमने पाप की स्त्री को अपने यहाँ आश्रय दिया है। आश्रय देना क्या अपराध है ? पाप है ?

धर्म चुप खड़े रह गये। ब्राह्मण ने कहा, मैं आप को हर्गिज नहीं जाने दूंगा। आप ही के सहारे जीवित हूँ। मैं ही आप का अस्तित्व हूँ। धर्म प्रसन्नता से बोले, तुम्हारी जय हो।

धर्म के उस आशीष को सुनते ही पाप की स्त्री ने कहा, अब मैं जाती हूँ। क्यों ? जहाँ धर्म है वहाँ मैं नहीं रह सकती।.....पाप की स्त्री चली गयी। फिर सौभाग्यलक्ष्मी, यशलक्ष्मी और कुललक्ष्मी सब लौट आयीं ब्राह्मण के घर।

गंगादीन ने कहा, वाह ! खूब है ! लक्ष्मी ही यश देने वाली हैं। वही कुल को पवित्र करती हैं। लक्ष्मी ही सब कुछ हैं।.....

जगताप बाबा बोले, नहीं, धर्म ही सब कुछ है। तुमने उसी धर्म को अपने जीवन में आश्रय दिया है रघुवीर, इसी से इतने लोग तुम्हारे साथ हैं।

तीसरे दिन वे तीर्थयात्री सई नदी को पार कर जंगल में चलने लगे।

जंगल के बीचों–बीच राना बाबा की कुटिया मिली। पर वह कुटिया सूनी थी। रघुवीर राना बाबा को ढूँढ़ते–ढूँढ़ते उनका नाम ले–ले कर पुकारने लगा। तभी एक चरवाहा दिखा। चरवाहे ने बाबा की समाधि दिखा कर बताया कि बाबा को तन छोड़े आज आठ मास बीत गये !.....

एक अजब सन्नाटा छा गया ! सब बाबा की समाधि के चारों ओर चुपचाप बैठ गये। मानो जीवित राना के सामने रघुवीर अविचल खड़ा था। राना बाबा के शब्द उस के कानों में उभरने लगे–जो धर्म की रक्षा करता है उसी की रक्षा धर्म करता है।.....धर्म को अपने जीवन में जिया है, तभी इतने सब लोग तुम्हारे साथ हैं।.....मेरा विश्वास है, इस तरह यहाँ मुझे न पा कर तुम जरा भी अधीर नहीं होंगे। तुम आत्मनिर्भर हो चुके हो। देखो, ठीक समय पर कार्य न होने से सब उलट–पुलट हो जाता है। फिर हजार प्रयत्न करने से भी सुधार कठिन होता है। आत्मनिर्भरता ही जीवन का आधार है ! दूसरे स्थान से केवल बीज मात्र मिलता है। फिर ठीक समय पर जमीन तैयार करना, उस में बीज बोना, जल देना, हिफाजत करना, सब ही अपने ऊपर है।.....

सारे लोग राना बाबा की समाधि पर चुप बैठे थे। कुछ लोग रो रहे थे। रघुवीर सर्वत्र देख रहा था राना बाबा को। जंगल के एक–एक वृक्ष, एक–एक पत्ते और तृण के जरिये ! राना बाबा मानो रघुवीर से कह रहे थे, मौत क्या है ? भागना कहाँ है ? मौत से डरने की क्या बात है ? सब 'हरि' है.....सब 'हरि हरि'। सब हरण हो रहा है। सब कुछ मर रहा है। सब कुछ नया जन्म ले रहा है। सब उदय अस्तमय है।.....जीवन में सारे असामंजस्य का एक कारण है, अपने मन के मुताबिक आशा करना ! और चँकि दूसरा भिन्न होने के कारण वह आशा पूर्ण नहीं हो सकती, इस लिए असामंजस्य, दुःख, बेचैनी अनिवार्य है।.....राम वही है जहाँ 'दो' नहीं, दोनों में संघर्ष नहीं है ! जो है वही है....वही एक सत्य !.....जो 'दो' है, दो पैदा करता है, दो से दस, वही रावण है। राम ही रावण का संहारकर्ता है। एक ही दो का संहार करता है। अंग्रेज एक थे। अब अंग्रेज दो हो रहे हैं–अंग्रेज और जमीन्दार ! जैसे हम दो–राजा–प्राज, गरीब–अमीर, ऊँच–नीच, छूत–अछूत !.....रघुवीर जैसे राना बाबा के संग गाने लगा। बाबा का अत्यन्त प्रिय गान ! सब गा पड़े :

तुम जनि मन मैलो करो लोचन जनि फेरो।
सुनहु राम बिनु रावरे लोकहु परलोकहुँ कोऊ न हितु मेरो।

अठारह

शंकरपुर गाँव के रास्ते पर पैर रखते ही रघुवीर को हंगामे की खबर मिली ! कोई कितने ही हंगामों से इन गाँवों की धीमी जीवन यात्रा का सुरताल भंग करने की कोशिशें कर रहा है !.....

रायबरेली के अंग्रेज कलक्टर ने जमीन्दार सूरजसिंह से जवाब तलब किया है कि हुकूमत को यह खबर क्यों नहीं दी गयी कि रघुवीर ने डीह बाँधने और तीर्थयात्रा के बहाने इतनी बड़ी तादाद में लोगों को अपने साथ ले लिया ? लोगों का आपस में इतने दिनों एक साथ रहना, एक साथ चलना, खाना पीना और रघुवीर के साथ इतनी बातें करना कितना खतरनाक हो सकता है ?

पुलिस, जमीन्दार, उनके कारिन्दे, सिपाही सब शंकित हो उठे। अकाल के दिनों की गर्म हवा लू बन गयी ! उस हवा में अंग्रेजी राज और जमीन्दारी हुकूमत के सारे समर्थक, चाटुकार, और सहयोगी, सेठ–साहूकार, धनी, ब्राह्मण, क्षत्री, पढ़े–लिखे लोग, सब इकट्ठे हो गये। सब ने रघुवीर के खिलाफ बयान दिये। कलक्टर ने जब सूरज सिंह जमीन्दार से पूछा तो उन्होंने साफ कह दिया, यह हमारी ही लापरवाही और भूल है। लोगों को उन के अपराधों का दण्ड मिलेगा। हुजूर, फिर ऐसी गलती नहीं होगी ! राम की कसम सरकार !

जहाँ एक ओर राम है और दूसरी ओर सरकार, अंग्रेज या कोई भी दूसरी सरकार, वहाँ सत्य के विधान को लाँधना तोड़ना कितना आसान है ! ऐसे ही लोग ईश्वर को कोई भी नाम दे कर उसे सब से ज्यादा मानने का खुला दिखावा करते हैं। शायद उन के लिए विधान तोड़ने के सभी अपराधों का दण्ड हल्का हो जाता है, यही अन्धविश्वास जमीन्दार सूरज सिंह के जीवन का सबसे बड़ा भरोसा है।

सूरजसिंह के सिपाही और रायबरेली कोतवाली के पुलिस, दोनों ने तीर्थयात्रा में शरीक हुए लोगों के घरों की तलाशी लेनी शुरू की। आगे–आगे घोड़े पर जमीन्दार साहब, दायें–बायें दरोगा और कोतवाल, पीछे–पीछे डण्डा–भाला लिये सिपाही और थाने की पुलिस।

तलाशी की शुरूआत रघुवीर की झोंपड़ी से शुरू हुई। झोंपड़ी में तीन अनाथ स्त्रियाँ और चार अनाथ लड़के–लड़कियाँ मिलीं। स्त्रियों में दो मुसलमान औरतें थीं, एक ब्राह्मणी, एक चमाइन। अनाथ लड़के–लड़कियाँ भी मुसलमान, अहीर, ब्राह्मण, कुम्हार घरों के थे।

जमीन्दार ने रघुवीर से पूछा, यहाँ कोई धर्मशाला खुली हुई है ?

रघुवीर ने उत्तर दिया, आप पहले तलाशी ले लीजिए, सवाल बाद में कीजिएगा।.....

गंगादीन के घर की तलाशी में सिपाहियों ने घर का कोना–कोना छानना शुरू किया। धार्मिक पुस्तकों पर हाथ लगाया ही था कि रघुवीर के मुँह से निकला, राम !

गंगादीन के मुँह से भी निकला, राम !

राम शब्द सुनते ही गाँव के लोग गंगादीन के दरवाजे पर इकट्ठे होने लगे। वहाँ इस तरह ब्राह्मण, ठाकुर के साथ चमार, धोबी, लोहार, जुलाहा, कोंहार, तेली को एक साथ बैठ कर 'राम' की गोहारी लगाते देख कर जमीन्दार का खून खौल गया। कोतवाल के हाथ से हण्टर ले कर उस ने सामने बैठे घोघे चमार पर प्रहार करना चाहा कि रघुवीर ने जोर से कहा, राम !.....

राम कहते हुए सारे लोग एक दूसरे को मजबूती से पकड़ कर एक समूह हो गये। जमीन्दार और सिपाहियों के प्रहार सब पर एक साथ शुरू हुए कि राम की गोहार से पूरा गाँव गूँज उठा। उसी गूँज के भीतर से दौड़ी आयी हंसगौरी, नहीं, यह नहीं हो सकता ! मैं अपनी जान दे दूँगी !.....

हंसगौरी को उस तरह सामने देख सूरजसिंह का सिर चकरा गया। बेटी को साथ लिये हुए सूरजसिह घर लौट आये। इधर घर की तलाशी का काम होता रहा।

शंकरपुर गाँव के आसपास के जिस भी गाँव में पुलिस के सिपाही घुसते लोग अपने घर द्वार छोड़ कर भागने लगते। गंगादीन, दुआशाह, जगताप बाबा, खेवट, तिरबेनी, मनोहर आदि लोगों को अपने साथ लिये रघुवीर डर के मारे भागते हुए लोगों से कहता, डरो नहीं, भागो नहीं, राम कहो राम ! घर छोड़ कर भागोगे तो वे धन धर्म सब लूट सकते हैं। घर की तलाशी लेने आये हैं। लेने दो तलाशी ! सब लोग दो तलाशी ! इस में इतना भय क्यों ? निर्बल के बल राम हैं !

राम ! राम !!

जिसके मुँह से राम निकलता, जिसके कानों में राम की गोहार पड़ती उसे सचमुच न जाने कैसा सहारा मिल जाता ! डर के मारे थर–थर काँपते लोग मन ही मन राम–राम कहते हुए खड़े देखने लगे। घरों की तलाशी के बहाने पुलिस के सिपाही खुले आम लूट रहे हैं; गहना–गुरिया, रुपया–पैसा सब कुछ।

शून्य में स्वर उठ रहा है, राम, राम !!

सारा इलाका एक ही दिन में समझ गया कि क्या है डीह बाँधना ? क्या है तीर्थयात्रा ? क्या है रघुवीर और क्या है राम ? इस बात को साफ–साफ समझ न पाते हुए भी हल्का सा यह आभास हुआ कि और कुछ हो या नहीं, पर राम का सहारा तो है ! न सही कुछ, रघुवीर तो है ! कुछ नहीं है रघुवीर के पास, न घर–द्वार, न पैसा कौड़ी। उस के सिर का खून गिरा है शंकरपुर की धरती पर। रघुवीर ने जमीन्दार, पुलिस, दरोगा, कोतवाल के मुंह पर कहा है कि रैयतों को भी मानमर्यादा का हक है। राज्य के आगे जमीन्दार, धनी, महाजन और प्रजा की मानमर्यादा में कोई फर्क नहीं है, हाँ !.....

ऐसा है वह रघुवीर ! इतना निडर ! कैसे कहता है, राम !

रघुवीर जमीन्दार से नहीं डरता। अंग्रेज से बात करता है ? वाह रे वाह !

पिछले साल आधे सावन में वर्षा हुई थी। उसके बाद से फिर नहीं हुई। क्वाँर लगने को है। ऐसे मौसम में धूल भरी गरम हवा के झोंके ! उस हवा से बदन का खून सूख रहा है। चारों ओर प्यास का हाहाकार !.....

ठीक दुपहरिया का समय। तपी हुई माटी पर नंगे पैर पर चलता हुआ एक आदमी चिल्ला–चिल्ला कर कह रहा है; हे राम ! हे राम ! मैं गऊ हत्यारा ! मैंने गऊ हत्या की राम ! हे राम ! राम ! राम ! मेरा नाम पातू शुकुल गौ हत्यारा पातू शुकुल.....

जिधर से गौ हत्यारा पातू निकलता लोग रास्ते से हट जाते कि कहीं उसकी छाया न छू जाय। वह किसी गाँव में नहीं घुस सकता। वह किसी घर या कुआँ, जलाशय, ताल, पोखर के पास नहीं जा सकता। उससे बात करना भी पाप है। वह लोगों से डर रहा था, लोग उससे डर रहे थे। लोग देख रहे थे कि बुरी तरह भूखा–प्यासा और तन–मन से बेतरह टूटा हुआ पातू शंकरपुर के सिवान में है।

वह राम–राम कहता हुआ लड़खडा कर चल रहा था। रघुवीर ने पातू को देखते ही अपने पास बुलाया। पातू दौड़ कर आया रघुवीर के पास। बेहोश हो कर बीच में ही गिर पड़ा। रघुवीर ने बढ़ कर पातू को उठा लिया। झोंपड़ी में ला कर उसे जल पिलाया। अपने हाथों से मुंह हाथ पैर धोये और फिर उसे अपने पास बैठा लिया। खबर गाँव भर में फैल गयी। गाँव जवार के जमीन्दार, ब्राह्मण, ठाकुर, महाजन रघुवीर को अधर्मी, पापी जैसे अपशब्द कहने लगे ! तभी एक रात अकाल की पहली वर्षा हुई।

सावन शुक्ला दशमी। वर्षा शुक्ल पक्ष में उतरे तो अकाल क्या महाकाल भी भाग जाय !

पूर्णिमा तक वर्षा होती रही। अकाल की सूखी धरती को एक बार में इतना जल मिल जाय तो धनभाग ! और वहीं हुआ।.....कलपा दाई गाँव भर कह आयीं, उइ दिन, जब डिवहार बँधा, जाख जाखिन आइन गाँव माँ, हम पंचन का बतौवा रहैं। अब लेव सावन सुकुलपच्छ का बरखा ! अरे ई सावन कर्कट रासि कै महीना है। सूर्य ई समय कर्कट रासि माँ रहता है। गाँव के बूढ़े राना बाबा की बखरी के डीह पर बैठ कर बात करते हैं।

कर्कट छरकटसिंह,
शुक्रा कन्या काटे कान।
बिना वायु के तुला कहो
तो कहाँ रखोगे धान.....

पानी का गुण भी अच्छा है। वाह रे जाख–जाखिन, वाह ! ऐसी वर्षा किसानों के लिए सुख की होती है। गड़ही–गड़हा में भूरपूर पानी और खेतन में लकलका धान के पौधे ! पूरे सिवान में पसरा धानी रंग ! खेतों में दलदल माटी, वाह और क्या चाहिए ?

कथाबाँचू खेवट ने उसाँस ली। ऐसी सुकाल वर्षा, मगर खेतों में गीतों की गूँज नहीं ? ऐसी वर्षा के बावजूद किसान हाथ पर हाथ धरे बैठा है ! पहले का जमाना होता तो ऐसी वर्षा में किसान गिरई मछरी की तरह खेतों में कूद पड़ते। किसान के घर में धान के बीज को कौन कहे, एक वक्त खाने को भी नहीं है। पहले ऐसा नहीं था। अन्त का बीज गाँव के कोठार में सदा भरा रहता था। जैसे उस समय गऊ ब्याती

थी तो गाँव भर में दूध और दूध की इनरी बँटती थी, जैसे रास्ते के किनारे आम–अमरूद के बगीजे लगते थे, पोखर–तालाब खुदता रहता था, गाँव–गाँव, घर–घर में देवी–देवता की प्रतिष्ठा होती थी, उसी तरह गाँव का अन्न राजा का अंश निकाल कर पौनी परजा में बाँट कर शेष पंचपुरी में रखा रहता था।

अब मटरू साह और शंकर साह धान के बीज बेच रहे हैं। पहले बीज राना बाबा के बखार से मुफ्त में दिया जाता था। तालुकेदारी में आवाज दी जाती थी कि आओ भाई लोग, जमीन लो, खेत लो, बीज लो, घर दुआर लो, आओ बसो हमारे गाँव में ! जिस तालुकेदार ने सताया, बेइज्जती या बेइन्साफी की, तालुका से बीज, पानी, सिंचाई में दिक्कत हुई, लोग तालुका छोड़ कर निकल जाते थे। और अब जमीन्दारी में तो इस्तमरारी बन्दोबस्त ही है ! अब वे पंख कट गये !

जमीन्दार के बखार में धान भरा है। मटरू साह और शंकर साह जमीन्दार के बखार से धान खरीद कर लाते हैं और दूने दाम पर बेचते हैं। अब तो अन्न लक्ष्मी नहीं, बिकने वाली जिन्स है। जूतों से रगड़ कर अन्न की परख होती है !.....

कुछ किसान मटरू साह के दरवाजे पर आ कर बोले, राम राम साहू जी ! साहू जी नाराज हो गये। बोले, राम राम कहोगे तो जूते पड़ेंगे ! समझे ! डण्डे टूटेंगे तन पर, जमीन्दार ने सिपाहियों से कह दिया है कि जो राम नाम कहे, पीटो उस साले को !.....

जमीन्दार भी तो राम–राम कहते हैं।

अरे ऊ राम राम और है रे !

शंकरसाहू को न जाने कहाँ से खबर मिली कि हंसगौरी तिरबेनी लोहार की औरत लछमीना के हाथ से धान के बीज गाँव में बँटवा रही थी। जमीन्दार ने अपनी आँखों से देख लिया। अब हंसगौरी को लखनऊ भेजा जा रहा है। वहीं उसकी शादी होने जा रही है कछवाहा के जमीन्दार से।

कछवाहा के जमीन्दार ? नये बने हुए राजा जमीन्दार धनी मानी का पारिवारिक मर्यादाबोध खूब उग्र होता है। सूरज सिंह ने निश्चित रूप से समझ लिया है कि रघुवीर को अब अपना दामाद कबूल कर और उसे अपनी बेटी दे कर वह बड़ी गलती करेंगे। अंग्रेजी हुकूमत नाराज होगी। दूसरे, बेटी हंसगौरी अपनी पूर्व पदवी की अपेक्षा बहुत अधिक ऊपर उठ गयी है। हंसगौरी को अब यहाँ रखना आफत है। वह इधर कई बार अपनी माँ के जरिये कहला चुकी है कि वह तो जन्मते ही मारी जा चुकी है अपने पिता के हाथों। वह जिन्दा है केवल राना बाबा के कारण। और राना बाबा से शादी कर ही दी है रघुवीर के साथ। कैसे सेनवंशी क्षत्री हैं उस के पिता, जो अपने वचन का पालन नहीं करते ?.....

सत्य को भला कौन स्वीकारे ? सारा चक्कर सत्य से भागने का ही तो हैं। हंसगौरी को शंकरपुर से दूर हटाना ही होगा। उसका दूसरा विवाह करना ही होगा।

सूरजसिंह ने अपने पुरोहित हरीराम शास्त्री, गुमाश्ता टिकैतराय और मुख्तार मुन्शी घनश्याम प्रसाद से परामर्श कर के निर्णय लिया कि भादों की छठ के दिन सूर्य निकलने से पहले ही बेटी को जबर्दस्ती सोलह कहारों की पालकी पर बिठा कर लखनऊ की यात्रा पर भेज दिया जाय। पालकी द्वारा शंकरपुर से लखनऊ की यात्रा कुल तीन दिनों की है। रास्ते में दो सिपाही भेजे जायें उन के लिंग इधर दो–चार दिनों में काट दिये जायें ताकि जंगल में कोई खतरा न रहे !.....

इस काम के लिए जमीन्दार के दो बहादुर विश्वासपात्र सिपाही फौजदार सिंह और देवकी दुबे छाँटे गये। साथ ही उन्हें गुमाश्ता टिकैतराय से यह सूचना मिली कि इसके लिए कल उनका लिंग काट कर उन्हें बधिया किया जाएगा और इसके बदले हर एक को पाँच–पाँच बाँधे खेत इनाम में दिये जाएंगे। सिपाही देवकी दुबे तैयार हो गये, मगर फौजदार सिंह ने कहा, अगर विश्वास नहीं है तो अंग काटने से कुछ नहीं होता !

किस सिपाही की हिम्मत कि यह बात जमीन्दार बहादुर से जा कर कहे पर बात तो पहुँचनी ही थी। फौजदार सिंह जमीन्दार के सामने पेश हुआ।

क्या कहा, तूने जरा मेरे सामने तो कह ?

सुबह का ही वक्त था। सिपाही पसीने से सराबोर हो गया। उस से कुछ बोला नहीं जा सका।

बोल ! पालकी के साथ जाएगा या नहीं ?

मालिक, जाने के लिए साहस नहीं है।

जाना होगा। अरे पगले यह शरीर सत्य नहीं हैं। शरीर तो छाया है आत्मा की, मन की, इच्छा की !

हाँ मालिक !

जमीन्दार ने ताली बजा कर गुमाश्ता टिकैतराय को बुलाया। कान में कुछ कहा। कुछ ही क्षणों में सिपाही बुलबुली सिंह और कौआ सिंह ने आ कर फौजदार के दोनों हाथ पकड़ लिये !

हुकुम हुआ, बुलाओं नाऊ को !

सिपाही फौजदार ने अपने आस पास चारों ओर देखा। उसके मुँह से आर्त स्वर में निकला, राम ! राम !! राम !!!

लगा कि उसी समय वही राम स्वर जमीन्दार की हवेली में गूँजा ! हवेली की छत पर से वही राम स्वर पड़ोस में जा गूँजा। फिर शंकरपुर गाँव में। एक एक कर राम–राम कहते हुए रघुवीर, गंगादीन, जगताप बाबा जमीन्दार के दरवाजे पर आये। उनके पीछे चारों ओर से गाँव के लोग। सब सिपाही फौजदार सिंह को घेर कर बैठ गये।

देखते क्या हो ? मार–मार कर भगाओं इन्हें। जरूरत पड़े तो गर्दन उड़ा दो ! आगे देख लेंगे कचहरी में। मारो.....। जमीन्दार को क्रोध भरी आवाज हवा में खिंच गयी। सिपाही खड़े मुँह ताकते रहे। लाओ मेरी बन्दूक !

जमीन्दार सूरजसिंह के बेटे हनुमानप्रताप सिंह ने बाप के हाथों में दोनली बन्दूक थमाते हुए कहा, कक्काजी, यह लीजिए बन्दूक। पहली गोली मेरे सीने पर चलाइए और दूसरी गोली दीदी पर !.....

सूरजसिंह ने आँख उठा कर देखा, हंसगौरी सामने खड़ी थी चुपचाप, पिता को अपलक देखती हुई। पिता जमीन्दार सूरज सिंह प्रेम रस को नहीं समझते, परन्तु बेटा–बेटी के मुख के ऊपर जो भाव बरस रहा था, उस ने उन के हृदय को हिला दिया। मन को लगा, उसे जैसे किसी ने वर दे दिया है। क्षण भर में ही जैसे जमीन्दार बहादुर पिता हो गया ! पिता मनुष्य को गया और हाथ से बन्दूक छूट कर जमीन पर गिर पड़ी। सूरज सिंह का दिल भर आया था। उन के मुँह से निकला, बोलो, क्या चाहती हो ?

गौरी उस क्षण यदि कहती कि वह रघुवीर के साथ जाना चाहती है तो सूरजसिंह शायद उस समय राजी हो जाते, क्योंकि आज पहली बार गौरी के उस मुख को देख कर राना बाबा का वह मुख दिखा था जब उन्होनें नवजात कन्या के जीवन दान के लिए भीख माँगी थी। यह कैसा आश्चर्यजनक सत्य है।

सूरजसिंह ने कहा, बेटी, तुम मुझसे आज जो माँगोगी, वही पाओगी। गौरी तपाक से बोली, कक्का जी, सब को धान का बीज दे दो।

सूरजसिंह अबाक् रह गये। जो आज मस्तक का मुकुट दे सकता है, उस से जूते के फीते की माँग की गयी !.....इन गाँव वालों को धान का बीज क्यों देना चाहती हो ?

कक्का जी, मैं इन्हें स्वयं देना चाहती थी। इन लोगों ने नहीं लिया। कहते हैं हम ऐसे नहीं लेते। यदि आप हुक्म दे दो तो ले लेंगे।

भीख देना चाहती हो ?

नहीं।

तो ?

कक्का जी !

चारों ओर सन्नाटा छाया रहा। सूरजसिंह ने कहा, ठीक है, सब को धान के बीज दे दो।

ऐसा अयाचित दान जमीन्दार सूरज सिंह के द्वारा अभी तक जीवन में कभी भी नहीं दिया गया। उस असम्भव बात पर विश्वास हो गया कि डरो नहीं, राम हैं, राम !

जिस बहाव में रघुवीर का मन डूबा था, उसी में गौरी ने आ कर मानो अपने मन की शक्ति से उस के मन को ऊपर उठा लिया। पर दूसरी ओर सूरज सिंह के मन में आत्मत्याग की जो लहर स्वार्थ के तट को लाँघ गयी थी, वह भी गाँव वालों को धान के बीज देने की बात से मानो टकरा कर फिर छिछली तलहटी के कीचड़ में चली गयी।

बाप बेटी के बीच फिर हफ्तों कोई बात नहीं हुई। अक्सर तीसरे पहर जमीन्दार, खेत, मुकदमा, जमीन की खरीद फरोख्त के मामले में लोग आ कर बाहर के कमरे में प्रतीक्षा करते। उस दिन भीतर से

सूरज सिंह लगे गालियाँ बकने। फिर अचानक अपने ही ऊपर उन्हें धिक्कार हो आया। बोले, जरा बैठो तुम लोग, मैं अभी आता हूँ। मुन्शी जी ! आप सब की बातें नोट कीजिए तब तक।

सूरजसिंह तेजी से घर के अन्दर चले गये। गौरी की माँ को पुकारा, कहाँ हो हनू की माई ! पति की पुकार सुन कर पत्नी झटपट दरवाजे के पास आ कर पूछने लगी, क्या है ?

जरा गौरी को बुलाओ।

गौरी दौड़ी हुई आयी। पूछा, क्या है कक्काजी ?

अरे हनू की माई, तुम ने पान नहीं दिया मुझे।

चाँदी के पनडिब्बे से पान की गिलौरी बना सोने की तश्तरी में रख कर गौरी ने पिता के सामने पेश किया।

मैंने हनू की माँ से कहा था पान के लिए।

गौरी देखती ही रह गयी। पिता जी बोले, देखो गौरी, तुम्हारे लखनऊ जाने और पहले दूसरे विवाह का सारा मामला यहीं खत्म हो गया। समझी सब बातें इस मामले में समाप्त हो गयीं। अब तुम्हें.....।

अचानक सूरज सिंह चुप रह गये।

गौरी ही बोली, हाँ कक्का, अब मुझे क्या.....?

अब तुम्हें अपनी पूरी जिन्दगी विधवा की तरह यहाँ बसर करनी होगी। या तो.....

या तो क्या ?

कुछ नहीं।.....

दरवाजे की ओट में एक प्राणी अब तक छिप कर खड़ा था, हनू। कम साहस नहीं था उस में ऐसी स्थिति में कक्का जी के सामने आने का। पर हनू ने अपने पिता के सामने साहस का परिचय उसी दिन दे दिया था, फिर भी लड़की के पुतले की तरह स्तब्ध बना हुआ खड़ा था। गौरी ने ही कहा, कक्का जी, जब मेरा पति जीवित है तो मैं.....

हाँ, हाँ !

मैं उस अपशब्द को अपनी जबान पर भी नहीं ला सकती। हाँ, एक वचन देती हूँ, मैं उन से तब तक नहीं मिलूँगी जब तक आप नहीं चाहेंगे।

इस घर के बाहर तुम पैर नहीं रखोगी।

उन से यही कहने के लिए सिर्फ एक बार मिलना चाहूँगी उन से।

सिर्फ एक बार, पर अकेले नहीं, माँ के साथ।.....।

कक्का जी चले गये। माँ जी भी उन के पीछे पीछे चली गयीं। तब हनू निकला किवाड़ के पीछे से। बोला, यह वचन आप ने क्यों दे दिया ?

गौरी ने हनू को खींच कर अपने पास बैठाते हुए कहा, अपना मान रखना है तो कक्काजी का मान रखना ही है। कक्का जी कोई मामूली आदमी नहीं है। बहुत अच्छे हैं। बड़े समझदार हैं।

तो दीदी, तुम सिर्फ एक बार मिलोगी रघु से ? सिर्फ एक बार ?

तो क्या हुआ, वह मुझ से कोई अलग हैं ?.....अच्छा चल पान का बीड़ा लगा दूँ। एक तेरे लिए, एक अपने लिए। आज पान खाने खिलाने का मन हो रहा है।

तो उन के लिए भी पान का बीड़ा लगा कर दो।

चाँदी के पनडिब्बे में से पान के पत्ते पर चूना कत्था लगा कर उस पर सुपारी केसर इत्र के सहारे आज जैसे गौरी का मन चला जा रहा हो, पैदल एकाकी किसी तीर्थ पर। गौरी अपने उस तीर्थयात्री मन को देखती जा रही थी। फिर मन जैसे तीर्थयात्री से पालवाली नौका हो जाता है। वह आकाश लग रही है; नौका का वायु से वह स्पर्श ही सवेरा है।

हनू बोला, दीदी, कुछ कहो।

लो यह बीड़ा तुम्हारे लिए और लो, यह उन के लिए।

पान का बीड़ा लिये हनू पिछवाड़े के रास्ते से भाग निकला। रघु के यहाँ पहुँचा तो वहाँ भीड़ लगी थी। उँड़वाँ गाँव के तुरंगा बाबा कह रहे थे, कचहरी में अपने वकील के मुंह से बात सुनी कि कागजी सबूत होना चाहिए कि तुम बेकसूर हो। फिर चाहे जितने करो कसूर। चाहे कत्ल, करो, चाहे मारो, चाहे लूटो, चाहे

जो कुकर्म करो, बस कागजी सबूत होना चाहिए कि बेकसूर हो। अरे मेरा सिर घूम गया। अरे ई क्या कहि रहे हो वकील साहब ? अरे कानून माने जिन्दगी का उसूल; कानून माने मर्यादा। कानून माने नीति.....। वकील साहब बोले कि ऊ सब तो कहने में ठीक है मगर असली बात समझ लो, अंग्रेज का कानून, अंग्रेज की कचहरी जिन्दगी के उसूल से अलग है। कानून अलग चीज है, उसूल, मर्यादा और नीति अलग चीज।

हाथ में पान का बीड़ा छिपाये हनू तुरंगा बाबा की बात में जैसे खो गया।

रघुवीर का ध्यान जब हनू की ओर गया तो पूछा, अरे तुम कैसे आये ?

उस ने इशारे से अलग ले जा कर पान का बीड़ा देते हुए कहा, दीदी ने भेजा है। पान खा कर रघुवीर ने पूछा, बैठोगे नहीं ?

आप को कैसे पता कि मैं नहीं बैठूँगा ?

दीदी पान खाने का रास्ता देख रही होंगी। तुम जब तक वापस जाओगे नहीं.....हनू वापस भागा वही प्रमाण पाने के लिए। सच, गौरी हाथ में पान का बीड़ा लिये इन्तजार में बैठी थीं।

अच्छा पहले पान खा लो, फिर पूछूँगा।

पूछो।

रघुवीर तुम्हारे पति हैं.....।

हाँ, हैं।

पति ही हैं सिर्फ.....?

हाँ हाँ।

मेरे पिता भी तो पति हैं अम्मा के।

हाँ हैं।

दोनों पतियों में फर्क क्या है ?

कुछ नहीं।

नहीं, झूठ बोलती हो।

सच बोलूँ तो तेरी समझ में आएगा ?

हनू मुस्कराने लगा। गौरी दीदी ने भाई को अपने अंक से लगा लिया। दीदी के आँसू हनू के सिर पर बरसने लगे।

दीदी, यह क्या ?

वही।

सब जानता हूँ।

गौरी ने अपने आँचल से हनू के सिर को थपथपाते हुए कहा, जो जानता है वह ऊपरी पावना है भैया; उस के भीतर जिस के सहारे संसार सागर पार करना होता है, वही है धर्म; धर्म यदि सरस हो कर फूल, फल, रस, सुगन्धि नहीं देता तो वह धर्म पत्थर की तरह गले में बँध कर डुबा देता है। कुछ समझ में आया ?

गौरी अपने कमरे में पलंग पर आँखें बन्द किये लेटी रही। हनू सिरहाने खड़ा पंखा ले कर हवा करने लगा। तभी कमरे में चुपके से सोनपत्ती आयी। हनू ने कहा, शीऽऽऽ.....दीदी सो रही है, जगाना नहीं।

पत्ती रोती हुई बोली, भइया, तू जा यहाँ से, मुझे सखी से एक बात कहनी है। हनू चला गया। गौरी के अंक से लग कर सोनपत्ती रोती रही। गौरी ने कहा, सखी, क्या बात है ? बता तो सही।

पत्ती बोली, आज से आठवें दिन मेरा गौना है।

हाय ! यह तो बड़ी अच्छी बात है।

सोनपत्ती ने भरे कण्ठ से कहा, मेरी एक ही इच्छा है सखी, इसी आठ दिन के बीच तुम एक बार उन से मिल लो।

अच्छा मिलूंगी। जरूर मिलूंगी।

उन्नीस

गाढी अँधेरी रात के परदे में ढँका हुआ शंकरपुर गाँव। आसमान के नक्ष त्र गायब। लग रहा था कि गाढ़े जमे हुए अँधेरे के सिवा और कोई नामोनिशान नहीं है। उदासी और जिज्ञासा से भरे हुए ये लोग अपनी जिन्दगी के लिए दरस–परस, बातचीत, गाना–बजाना और किस्सा–कहानी के शब्दबोध से ही एक दूसरे के निकट, एक दूसरे का सहारा बने रहते। उन के प्रेम और द्वेष दोनों साथ–साथ चलते। उन्होंने न जाने कब से जरा सा भी सुख नहीं भोगा। पर ताज्जुब की बात है–इन अवध वासियों के स्वभाव की कोमलता ! हाँ कोमलता ! 'पाये लागँू भाय'। जो कितने कितने कड़वे यथार्थ से भी नहीं खुरची जा सकी ! चेहरों पर लाचारी है पर व्यवहार में कहीं कोई कड़वाहट नहीं !

आज इतना अखण्ड अन्धकार !

इस अखण्ड अन्धकार को कहीं पर खण्डित कर के एक नाचती हुई लौ जल रही है। रघुवीर की झोंपड़ी में, रघुवीर के ठीक सामने चाकचौबन्द डाकू गिरोह का सरदार फगुनी खड़ा था। रघुवीर उस समय सब कुछ को ओझल कर देने वाले अँधेरे में फगुनी के आरपार सच्चाई का ठीक अन्दाज लगा रहा था। रघुवीर ने कहा, जमीन्दारी में खेतीबारी नहीं चली। तरह तरह के दुःख अपमान हैं ! पर डाका डाल कर रहना, डाकू का जीवन, यह क्या है ?

तो क्या करें, हम मर जायें ? फगुनी के चेहरें पर गुस्सा बरस आया था। ये चाकचौबन्द के डाकू कभी राना बेनीमाधव की सेना के सिपाही थे। और यह डाकू सरदार फगुनी का बस चलता तो डाका के बहाने अब तक कितने खून हो गये होते। पहला खून टिकैतराय का, जो कभी राना का अंगरक्षक था, आज जमीन्दार का गुमाश्ता है। यह कहाँ की मर्यादा है कि अंगरक्षक जिन्दा रह जाय और रक्ष्य मर जाय ? जमीन्दार नहीं, जमीन्दार का मैनेजर, मुख्तार, गुमाश्ता नहीं, जमीन्दार का एक सिपाही किसी गाँव में चला जाय, तो सारा गाँव हाथ जोड़ कर खड़ा काँपता रह जाय।

चाकचौबन्द के ये लोग अवस्थी ब्राह्मण हैं। ठगी डकैती भला ये क्या जानें ? नवाबी जमाने में जब आयोध्या काण्ड हुआ था, वही हनुमान मन्दिर के बैरागी साधु और मुसलमान के बीच लड़ाई, जब एक हिन्दू नवजागरण हो रहा था, उस समय भरपासी आदि छोटी जाति के खूँखार लोगों के साथ साथ इन अवस्थी लोगों का भी खूब दमन किया था नवाबी राजा ने। फिर भी वे लोग बिल्कुल मर नहीं गये। अपनी शक्ति की संस्कृति को न जाने किस तरह सुरक्षित रखा। बल और लठैती के करिश्मे के कारण बैसवाड़ा के तालुकेदार की सेना में अवस्थी लोग खासमखास थे। जो सेना में नहीं थे वे खेतिहर थे। बाहर से बड़े शान्त मगर भीतर से गुस्सैल। इधर जब से जमीन्दारी आयी है और जमाना बदला है ये अपमानित बेकार अवस्थी सिपाही परस्पर दुःख सुख की बातें करते कराते अचानक डकैती का मनसूबा गाँठ लेते हैं, यही है 'चाकचौबन्द'। चाकचौबन्द माने राय सलाह। राय सलाह जब पक्की हो जाती है तो अवस्थी लोग चल पड़ते हैं।

रघुवीर को सब पता है। राना के अवस्थी सिपाही डाकू हो कर जंगल में छिप गये, बाकी साधू हो गये, उदासी साधू, रामनामी, अलखनामी, नाथयोगी, सेवापन्थी, भगतपन्थी, गुलाबदासी.....

कानन मुद्रा गले रुद्राख
फिर फर पढ़हिं भुवनै साख।
बोलत गौरख सुनिहौ लोप
परतन होय पै जोग न होय।
साखी सबदै नाहीं जोग
फिर फिर देखहिं गाँव के लोग।
एकै नारि जग ऊपजा
कोउ ब्राह् यमन कोउ सोद।

नवाब की सेना के सिपाही तीन हिस्सों में बँट बिखर गये। एक हिस्सा ठगी में चला गया। एक भिखारी हो गया और एक हिस्से का आधा जमीन्दारों के यहाँ नौकर चाकर हुआ और आधा हिस्सा रण्डी पतुरिया का साजिन्दा–कारिन्दा हो गया।

रघुवीर ने पूछा, सुनो फगुनी, तुम लोग कब तक डाकू बन कर रहोगे ?

जब तक जिन्दगी है !

जानते हो यह जिन्दगी कैसे बनी है ? रघुवीर कहने लगा, कितनी छोटी छोटी चीजों से बनी है यह जिन्दगी, अन्न से खून, खून नसों में, नसें इस शरीर में। खून दौड़ रहा है पूरे शरीर में। हम साँस ले रहे हैं। भीतर कितनी कितनी मशीनें चल रही हैं ! सब नियमानुसार चल रहा है, नीचे से ऊपर तक। कहीं नियम टूटा, मर्यादा टूटी तो मशीन बन्द। जिन्दगी ठप्प ! एक तत्व का दूसरे से सम्बन्ध रुका, मौत.....।

फगुनी ने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा। बात तो समझ में आती है। नियम है हर चीज का। हर चीज की अपनी मर्यादा है। पर यह भी सच है कि जमीन गयी। पोखर बगीचे गये। खेत–खलिहान गये, ढेर डंगर गये। फिर बरतन भाड़ों की बारी आयी। इस के बाद सब मैदान साफ। कोई आधार नहीं। कोई सहारा नहीं, बस उपवास। यही अगर न्याय है, यही मर्यादा है तो संसार का आशय क्या है ? जब कानून ही न्याय है तो डाका ठगी के अलावा और क्या उपाय है ? बोलो रघुवीर भैया, एक वचन दे कर जा रहा हूँ, जब भी तुम्हारे 'राम' की आवाज हमारे कानों में पड़ेगी, हम दौड़े आएंगे।

रघुवीर ने कहा, तुम भी जब राम की आवाज दोगे तो हम भी आएंगे।

नहीं भइया, हम राम को आवाज नहीं देंगे।

क्यों ?

राम पूजापाठ है।

नहीं, राम लड़ाई है।

फगुनी उसी अँधेरे में देखने लगा। दोनों हाथों में एक एक बन्दूक लिये गंगादीन आया। फगुनी ने उस से कहा, यहाँ नहीं, उसी बरगद के पेड़ के नीचे।

रघुवीर ने गंगादीन के समाने खड़े हो कर पूछा, यह सब क्या है ?

गंगादीन बोला, यह है मस्केट बन्दूक और यह है इनफील्ड रायफल। सन् सत्तावन में इनफील्ड ने मस्केट को हरा दिया। हम अब इनफील्ड रायफल चला कर देखेंगे। अब उन के पास रॉयल इनफील्ड है। राजा हैं। जमीन्दारी है। सभी कुछ है, कानून कचहरी, पुलिस, अफसर, साहूकार।

फगुनी, गंगादीन, रघुवीर इन में कहासुनी होने लगी। रघुवीर समझाने लगा, हर जीवन और समाज का अपना एक भीतरी नियम होता है। यह नियम टूटा तभी तो आयी नवाबी। हमारे जीवन की अपनी मर्यादाएँ थीं। मर्यादाएँ टूटीं। उन्हीं टूटी हुई मर्यादाओं से तालुकेदारी पैदा हुई। उन्हीं में से इतनी मारकाट लूटखसोट हुई.....।

गंगादीन ने पूछा, पर उन्हें तोड़ने वाला कौन था ? हमीं तो थे। पर ऐसा हुआ क्यों ?

रघुवीर ने कहा, सुनो भाई, अपना कायदा कानून क्या था ? जो प्रजा से लिया जाता था वह राजा से होता हुआ फिर प्रजा के हित में लौट आता था। जैसे हमारे शरीर का जीवन। सारे खुराक से रक्त बनता है। रक्त कलेजे से होता हुआ सारे अंग में कर्म की स्फर्ति दे कर जीवन चलाता है। पर इस की गति जहाँ रुकी, वहाँ उतना ही मल, रोग, दोख, पतन। यह जीवन प्रवाह जहाँ बँधा, जहाँ रुका, वहीं से स्वेच्छाचार, मनमानी और निरंकुश ताकतों की लड़ाइयाँ परस्पर शुरू हुई। मुगल शक्ति को उन्हीं के सूबेदारों ने हराया। सूबेदारों को मराठों ने, मराठों को अफगानों ने और सब को एक साथ हरा दिया अंग्रेजों ने।

गंगादीन ने मुट्ठी भींच कर कहा, नदी जैसे अपनी धारा बदल लेती है और छोड़ जाती है जमीन, उसी छोड़न में जी रहे थे हम ! ये असंख्य पितृ सत्तात्मक सामाजिक संगठन और हमारे ये गाँव, ये ही स्वेच्छाचार की बुनियाद रहे हैं। हम अपने इन्हीं गाँवों में बन्द थे। तभी जिस तरह शहरों में राजा नवाब उसी तरह गाँवों में एक तालुकेदार दूसरे को हड़प कर जाने के लिए न जाने क्या–क्या करते रहते। प्रजा चारों ओर टुकुर–टुकुर देखती रह जाती। मैं अब यहीं नहीं रहूंगा।

रघुवीर आश्चर्यचकित हो बोला, यहाँ नहीं रहोगे ? क्या मतलब ?

गाँव में नहीं रहूँगा। अब यह रहने लायक जगह नहीं है। बदला लूंगा। एक एक को जान से मार दूँगा।

रघुवीर ने गंगादीन को पकड़ लिया। मेरी एक बात का जवाब दे कर जाओ। क्या मैं तुम्हारे बिना यहाँ रह सकता हूँ।

गंगादीन चुप।

बन्दूक से बन्दूक की हार होती है क्या ? याद करो, सिर्फ रेजीडेन्सी बची थी अठारह सौ सत्तावन की लड़ाई में। सारा अवध अंग्रेजों के हाथ से निकल गया था। बची रह गयी थी लखनऊ की उतनी सी रेजिडेन्सी। जिसमें करीब एक हजार अंग्रेज और आठ सौ हिन्दुस्तानी थे। और उसे घेरे हुए थीं अवध के नवाब, राजे, तालुकेदारों की सेनाएँ, संख्या में एक लाख पचास हजार, पाँच सौ सिपाही बन्दूक, तोप, बारूद से लैस। पूरे सत्तासी दिनों के घेरे बावजूद इतनी बड़ी सेना ले कर भी रेजिडेन्सी के मुट्ठी भर गोरों और गोरा परस्तों से जीत नहीं पाये। आखिर क्यों ? तुम तो खुद चश्मदीद गवाह हो। बन्दूक से बन्दूक की हार नहीं होती। हारता है द्वैत। यानी दो एक से ! दस हार जाता है एक से ! दस के पास चाहे जितनी बन्दूकें हो, चाहे जितनी शस्त्र शक्ति हो। हार की वजह तुम्हें पता है।

गंगादीन बोला, नहीं, वजह मैं नहीं जानता।

नकली लोग असली लड़ाई नहीं लड़ सकते। झूठे अहंकार और विलास के नशे में सोये हुए, बिखरे हुए लोग, संख्या चाहे जितनी हो, लड़ाई के साधन चाहे जितने हों मुट्ठी भर से वे हार जाते हैं।

गंगादीन ने तड़प कर पूछा, कैसा नकली ? कौन नकली ?

रघुवीर ने गंगादीन के कन्धे पर दाँया हाथ रख कहा, एक था वीर राजा। नाम था पुरुषोत्तम। नीति, नियम, संयम, न्याय; यही थी उस की वीरता। राजा माने प्रजा पुरुष। जब तक प्रजा उस शक्ति से जुड़ी थी तब तक राज्य भर में वीरता थी। धन धान्य से भरा था वह राज्य। आसपास दूर दराज का कोई राजा पुरुषोत्तम के राज्य पर कभी हमला करने की हिम्मत नहीं करता था। समय बीता। राजा वृद्ध हो गया। मृत्यु शय्या पर पड़े उस ने अपने परम विश्वासपात्र सेनापति और मन्त्री से कहा कि मैं मरने जा रहा हूँ। इसी बीच कहीं से कैसे मुझ से मिलती जुलती शक्ल का एक आदमी ढूँढ़ो और उसे मेरे नाम पर राज दे दो। किसी को कानोंकान खबर न हो कि मैं मर गया। ऐसा ही हुआ। असली पुरुषोत्तम की जगह नकली पुरुषोत्तम का राज चलता रहा।

संयोग से शिकार खेलते हुए एक विदेशी राजा पुरुषोत्तम के राज में चला आया। पुरुषोत्तम के प्रति आदर प्रकट करने के लिए विदेशी उस के दरबार में गया। पुरुषोत्तम ने उसे अपना मेहमान बना लिया। उस का खूब आदर सत्कार हुआ। विदेशी राजा के सामने भोग–विलास, बहादुरी के प्रदर्शन हुए।

वहाँ रह कर विदेशी राजा को ऐसा लगा कि वह राजा असली पुरुषोत्तम नहीं है। उस विदेशी राजा ने चढ़ाई कर दी। नकली राजा, उस के मन्त्री और सेनापति आक्रमणकारी राजा से युद्ध करने के बजाय यह साबित करने में लगे रहे कि वर्तमान राजा ही असली राजा है। हार पर हार होती रही। आक्रमणकारी राज्य को सबूत पर सबूत मिलता गया कि राजा नकली है। फिर क्या, सारी प्रजा अपने असली राजा के लिए रोने में लग गयी और असली विदेशी राजा नकली स्वदेशी राजा के सामने जा खड़ा हुआ। नकली राजा चुपचाप बिना लड़ाई लड़े विदेशी राजा को राजमुकुट और राजसिंहासन सौंप कर राजमहल से भाग गया।

कथा सुन कर गंगादीन का चेहरा स्याह हो गया। उस के हाथ पैर काँप गये। बन्दूकें उस के हाथ छूट कर गिर गयीं।

रघुवीर ने गंगादीन को अपने पास बैठाते हुए कहा, एक था पुरुषोत्तम। उस के राज्य के छह अंग थे; प्रकृति और प्रजा; पृथ्वी पोषित धन धान्य; देश, काल, कोष, अर्थात् जन सम्पत्ति, राजा की निजी नहीं; सत्ता, आन्तरिक व्यवस्था और बाहरी शक्तियों से बचाव के लिए सेन।.....देखो मेरे मित्र ! देखों अपने जनों को, देखो अपना देश और अपना काल। देखो अंग्रेजी समय। अंग्रेज और कुछ नहीं है महज एक व्यवस्था है। व्यवस्था के अलावा और कुछ नहीं है इन के पास। तभी इन की व्यवस्था विराट है। उसी एक व्यवस्था से, अर्थ की व्यवस्था से जीवन के सारे सम्बन्ध जाल भाव बिछे हैं। इन की हर चीज के मूल में निजी सम्पत्ति का भाव है। इसी से ही सब कुछ जुड़ा है सब कुछ निकला है–शिक्षा, न्याय, कानून, शासन, इस की सारी व्यवस्था, इन के सारे सम्बन्ध.....।

फिर दोनों हाथ उठा कर रघुवीर अजब स्वर में बोला, उठो, देखो ! प्रहार करो जड़ पर ! मैं हूँ अध्यापक, वेतन ले कर मैं नहीं पढ़ाऊँगा। मैं न्यायकर्ता, प्रशासक, वेतनभोगी नहीं हूँ मैं। मैं हूँ ब्राह्मण, जाति नहीं, वर्ण है मेरा ब्राह्मण। मेरी कोई निजी सम्पत्ति नहीं है तभी है मेरा यह वर्ण ! गाँव से ले कर केन्द्र तक आत्मा से ले कर शरीर तक मैं ही हूँ विधि, नियम बनाने वाला; उसे आचरण में, कर्म व्यवहार में लाने वाला

और न्याय करने वाला। हम एक ही में त्रिमूर्ति हैं। एक ही में धर्म, अर्थ, काम, नियम, व्यवस्था और न्याय। सब कुछ यहाँ विभूति है, उसी एक की अभिव्यक्ति ! यहाँ अनुभव प्रत्यक्ष का है। अनुभव में ही प्रेक्षणीयता है, देखा है। दृश्य है सब !.....

गंगादीन बड़ी देर तक शून्य में देखता रहा।

रघुवीर बड़े दुलार से बोला, का सोच रहे हो मितवा ?

कुछ सोच नहीं देख रहा हूँ भाई।

क्या देख रहे हो ?

शून्य !

रघुवीर हँसने लगा। मितवा ! क्या हँसना भूल गये ?

बताओ अब करना क्या है ?

रघुवीर मौन बैठा रह गया।

बोलो।

क्या बोलूँ ?

अब करना क्या है ?

रघुवीर बोला, सन् सत्तावन में इतना इतना तो किया गया, पर हुआ क्या ?.....

सर्वनाश हुआ।

तो उसी तरह कुछ और कर के जो शेष है उस का भी सर्वनाश करना है ?

रघुवीर भैया, तुम कहना क्या चाहते हो ?

देखो उत्तेजित हो कर, बात और कर्म करने से विनाश के अलावा और कुछ नहीं होता। कर्म करना एक महत्वपूर्ण फलदायी चीज है। पर कर्म हो जाना बिल्कुल एक दूसरी चीज है, जैसे से पात्र जल गिर जाना.....बरतन से तेल बह जाना। असली काम है यह देखना कि करने वाले के भीतर क्या हो रहा है ? जिस पर क्रोध है, अपने भीतर देखना कि क्रोध क्यों है ? वह क्रोध कैसा है ? और फिर उसे स्वीकार कर लेना। यह है कर्म। एक है जान बूझ कर क्रोध करना, शत्रु से लड़ना। दूसरा है अनजाने में क्रोध हो जाना, लड़ बैठना। फिर अपने स्वाभाविक विनाश पर, हार पर पश्चाताप करना।.....

रघुवीर कहे जा रहा था, गंगादीन। पहले अपने भीतर से हार, विनाश का पाप भाव, पाप के प्रति पश्चाताप, इसे काटना है। फिर हमारे भीतर से कर्ता जगेगा। हम सब उठेंगे। देखो न, एक थी बाहर की परिस्थिति; विदेशी शक्ति, अंग्रेजी व्यवस्था। दूसरी थी नवाबी और तालुकेदारी शक्ति। एक हर हालत में एक था। एक लक्ष्य। एक संकल्प। दूसरे में न जाने कितने कितने दूसरे थे, जिन में न कोई तारतम्य था, न कोई व्यवस्था थी। एक के कर्म के पीछे कर्ता शक्ति थी कि हमें राज्य करना है, इन नकली दिखावटी लोगों पर। दूसरे के कर्म के पीछे कोई कर्त्ता शक्ति नहीं थी। महज एक गुस्सा था, अहंकारजनित क्रोध कि हम अंग्रेज को यहाँ से भगा देंगे।

और जब अंग्रेज यहाँ से नहीं भागे, तो बस हम हार गये। हम खुद भाग निकले। कोई साधु सन्त फकीर हो गया। कोई जंगल भाग गया। कोई आत्महन्ता बना। जैसा जिस का अहंकार था, जितना जिसका क्रोध था.....।

भीतर क्या है ? बाहर क्या है ? इसे देखने विचारने वाला कहाँ है ? वह हिन्दू–जिस का अर्थ ही है देखने वाला। वह देखने वाला कहाँ है ? पहले वह अपने भीतरी असन्तुलन के कारण बाहर से हारा। फिर उस का अहंकार जागा कि आह मैं हार गया। तब से उस की सारी सोच उस के सारे काम और व्यवहार में वही अपराध भाव कि आह मैं हार गया। असम्भव।.....भाई गंगादीन, जब कोई सच्चाई देख लेगा और उसे स्वीकार करेगा, तभी यह सोचना कटेगा, तभी कर्ता कर्म करेगा, लड़ाई ! युद्ध !! यह कर्म कभी खत्म नहीं होता। इस में कभी कोई हार हार नहीं होती।

गंगादीन अपलक रघुवीर के आर पार देख रहा था।

बीस

कल सन्ध्या बीतते ही हंसगौरी माई के साथ रघुवीर के यहाँ जाएगी। यह बताने और कहने कि अब दुबारा हंसगौरी रघुवीर से मिलने नहीं आ सकती।

उस दिन सन्ध्या समय हंसगौरी स्नान कर के चन्दन जल से अपने शरीर को शीतल करती रही। शरीर को निर्मल बना कर सुगन्धिमय कर के उसे 'उन्हें' उत्सर्ग कर देगी। वह मन ही मन एकाग्रता के साथ ध्यान करने लगी कि हर पल उस के हाथ में उन का हाथ है।

सोनपत्ती सखी के श्रृंगार में मदद कर रही थी और मन ही मन कुछ गा रही थी। चलने की पूरी तैयारी कर के हंसगौरी ने दर्पण में अपने आप को देखा। उस के सम्पूर्ण शरीर में जैसे उन का सर्वव्यापी स्पर्श विद्यमान है ! सब कुछ उन्हीं का है ! उन की प्राप्ति से बाहर जो मेरा रूप है वह तो छाया है। यही भाव जीते जीते आनन्द से उस की आँखों की पलकें भीग आयीं

एक पालकी पर माँ, दूसरी पर हंसगौरी और उसी में छिप कर बैठी सोनपत्ती। क्षणों में ही रधुवीर का घर आ गया। बाहर छप्पर की दालान में कई लड़के बैठे पढ़ रहे थे। कई गरीब अनाथ औरतें बैठी थीं।

सोनपत्ती ने सब से आँखें बचा कर घर के भीतर झटपट अपनी सखी को सखा के सामने कर दिया। कुन्दफूल की माला से दोनों के हाथ बाँध कर कहा जब तक मैं बुलाने न आऊँ यहाँ से बाहर नहीं जाना।

सामने रेंड़ी के तेल का दियना जल रहा था। एक दूसरा दियना जला कर रघुवीर ने कमरे को पूरी तरह से आलोकित कर दिया। मिट्टी का कमरा। फर्श और चटाई का बिछावन। उस पर एक सफेद चादर। सिरहाने किताबें, कागज–पत्तर। हंसगौरी ने अपना सोहाग का दुपट्टा नीचे बिछाते हुए कहा, यह हमारे घर का अन्तःपुर है और यही है हमारी पुष्प शय्या !

दोनों आमने सामने बैठे थे। क्या बोलें, क्या बात करें ? कहीं कोई शब्द नहीं था। दोनों मौन ही बातें कर रहे थे। रघुवीर गौरी को बिल्कुल नये रूप में, जिसे रूप सौन्दर्य की मर्यादा कहते हैं, अपलक देख रहा था।

सिरहाने की ओर झुक कर चीजों के भीतर से लाल कपड़े में बँधी हुई कोई एक नन्हीं सी चीज गौरी की दायीं हथेली में रखते हुए रघुवीर ने कहा, राना बाबा ने मुझे दिया था। आज तुम्हें सौंप रहा हूँ !....
.

यह है क्या ?

तुम देखो !

शंख रूपी एक सीपी थी वह, जिस के भीतर केवल शून्य था। वही बीज रूप में प्रज्ञा थी। इसी प्रज्ञा के विरोध में सभी राजा खड़े थे, वे चाहे हिन्दू राजा हों या मुसलमान राजा।

रघुवीर कह रहा था, इस देश के साधु सन्तों ने इसी प्रज्ञा बीज को, इसी अलख निरंजन को किस तरह अपनी हृदय सीपी में सुरक्षित रखा ! आओ, आज इस क्षण पर पुरखों की इस धरोहर बीज को सुरक्षित रखने और समय की खेत–माटी में इसे बो देने का संकल्प लें !

दोनों ने एक दूसरे को आलिंगन में बाँध लिया। उस क्षण हंसगौरी को एक गहरी अनुभूति हुई कि दुःख यदि उसे इस तरह से धक्का न देता तो वह अपने देवता के इतने समीप कभी भी नहीं आ सकती थी। दीपक के प्रकाश की ओर हाथ जोड़ती हुई बोली, भगवान ! अब कभी भी तुम्हारा मेरा विच्छेद न हो, विरह चाहे जितना हो !

सुबह होने में दो घण्टे की देर थी। सोनपत्ती जानबूझ कर कड़े, छड़े, पायल भरे पैरों को पटक कर चलती हुई कमरे के पास आयी। कमरा बिल्कुल खाली था। सोनपत्ती लाज के मारे बाहर छिप गयी। पर जी नहीं माना। झाँक कर देखा। दियना जल रहा था। कमरा सूना था। बिस्तर पर फूल बिखरे थे। अरे, वे कहाँ गये। सोनपत्ती डर गयी। आँगन में देखा। जी धक्क से रह गया ! एक कोने में दोनों झुके हुए न जाने क्या निहार रहे थे। रघुवीर के हाथ में दियना जल रहा था। रघुवीर दिखा रहा था.....

देखो, यह दूब, इसी माटी में हमारे राना बाबा की मिट्टी की धूल है। बाबा दूब के मुँह से बोलते हैं, देखा रघु। मैं मरा नहीं हूँ। सिर्फ मिट्टी में मिलता जा रहा हूँ। मेरे शरीर के चारों ओर घासें उग रही हैं। मेरा समूचा तन दूबों से भर उठा है। इसी मिट्टी ने ही मुझ से कहा, आओ, लो सूँघो इस सुगन्धि को !.....

हंसगौरी और रघुवीर, दोनों वहीं घास के पास बैठ गये। गौरी दूब के ऊपर हाथ फेरती हुई बोली, यह कितनी पहचानी सी गन्ध है ! यह गन्ध पहले पहल मुझे मिली जब पहली बार राना बाबा की गोद में खेली। फिर जब तुम्हें देखा विवाह के दिन होम की वेदी के पास। फिर आज.....।

अचानक वहाँ कोई लजीला सा भाव खिल कर हँसी जैसा चमक उठा।

कौन ?

बताओ कौन ?

सखी को देख कर गौरी लाज के मारे सिहर गयी। तो क्या अब जाना है ? रघुवीर के दोनों हाथ पकड़ कर हंसगौरी निःशब्द बोली, मेरे हृदय रक्त के भीतर, जो तुम हो, मैं उसी बीज से पंखुरी हो कर बाहर प्रकट हो सकूँ !.....

अगले दिन अभी एक पहर दिन भी न चढ़ पाया था कि कलपा दाई छाती पीटती हुई दौड़ी आयी, रघुवीर भइया ! अरे रघुवीर भइया, कहाँ हो ?

क्या है दइया ?

अरे जुलुम होइगै !

क्या हुआ ?

कलपा दाई रोने लगी। तब तक वहाँ जगताप बाबा, गबदू पाण्डे, तिरबेनी लोहार, रमजान चौकीदार और गाँव के तमाम गदहरे इकट्ठे हो गये।

का हुआ दाई ?

अरे का बताई, गजब हुइगा ! उह दिन हम बतावा रहै कि यू नन्दुआ आय कुलच्छनी। दस पेड़ आम के हैं, वाही का घमण्ड। आँखिन फूटी हैं.....।

पता चला कि टिकैत राय के सुपुत्र नन्दूराय ने उड़वाँ गाँव की अहीर लड़की मैना के साथ छेड़खानी की। उड़वाँ गाँव के लोग गाँव की बेटी के अपमान का बदला लेने के लिए जान पर तुले हैं। जमीन्दार से न्याय माँगा तो न्याय नहीं मिला। बोले कि पुलिस थाना, कचहरी जाओ !

रघुवीर को अनुमान लगाते देर न लगी कि मामला कितना गम्भीर और खतरनाक है ! ऐसा तो पहले कभी हुआ ही नहीं कि इस तरह के अनैतिक अपराधी को दण्ड और पीड़ित को न्याय न मिला हो।

रघुवीर ने देखा, उड़वाँ गाँव के लोग डण्डा, लाठी, गँड़ासा लिये शंकरपुर के सिवान में आ गये है। और भंयकर गुस्से में गाँव की तरफ बढ़ते आ रहे हैं। रघुवीर ने देख लिया कि अभी बात की बात में दो–तीन कतल हो जाएंगे। जमीन्दार टिकैतराय का पक्ष लेगा। पुलिस आएगी। गिरफ्तारियाँ होंगी। लूट मचेगी। शंकरपुर और उड़वाँ गाँव में सदा सदा के लिए नफरत के बीज बो उठेंगे। इस से लाभ उठाएंगे जमीन्दार, पुलिस, हाकिम, कचहरी अदालत के लोग !

रघुवीर ने खबर पहुँचायी टिकैतराय के घर कि सब छोड़ कर जमीन्दार की हवेली में चले जायें या मेरे यहाँ आ जायें। अपने घर में ताला मार दें।

रघुवीर नंगे पैर गाँव से बाहर आ कर उड़वाँ गाँव के उत्तेजित लोगों के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। आगे आगे तुरंगा बाबा, उन के दो जवान बेटे। दायें बायें अहीर लोग। सब के चेहरों पर यही एक भाव था– न्याय नहीं तो बदला लेंगे। एक की इज्जत गयी तो पूरे गाँव की इज्जत गयी।

रघुवीर सब को अपने साथ लिये उसी पंचपुरी के चबूतरे पर आया। गंगादीन से कहा कि सब के लिए गुड़ और ताजा पानी अपने हाथ से ले आओ।

पर उड़वाँ गाँव का कोई भी शंकरपुर का जल छूने तक को तैयार न था।

रघुवीर ने हाथ उठा कर कहा, पंच फैसला होगा। अपराधी को दण्ड मिलेगा। यह मेरा बचन है। आप लोग कृपा कर जल ग्रहण करें।

तुरंगा बाबा ने इशारा किया। सब ने गुड़ खा कर जल पिया। तब तक वहाँ पहुँच गये थे रामभजन, फौजदार, देवकी दुबे, कलपा दाई, जगताप बाबा, कथाबाँचू खेवट, टिकैतराय, नन्दूराय, शेख खुदाबख्श, चैतू, रमजान, भोनू, शिवदास, केशवचन्द्र मिश्र, हरीराम शास्त्री वगैरह। जैसे पूरा शंकरपुर गाँव पंचपुरी के चबूतरे पर घिर गया।

कितने वर्षों बाद यह दृश्य आया है शंकरपुर में ! एक और उड़वाँ गाँव दूसरी ओर शंकरपुर। एक ओर नन्दूराय वल्द टिकैतराय, दूसरी ओर गिरधारी अहीर की कन्या मैना ! लोटे में गंगाजल। उस में पाँच सोपारी, पाँच दूब और पाँच हल्दीगाँठ डाल उसे आम के पत्तों से भर कर कच्चे धागे के से बाँध कर वह पात्र सब के सामने घुमाया गया। सब ने उसे स्पर्श किया। अन्त में वह पात्र नन्दूराय के सामने रखा गया। नन्दूराय के मुँह में दूब की एक पत्ती दे कर पूछा गया, पंच परमेश्वर के सामने सच सच बताओ नन्दूराय, तुमने इस कन्या के साथ किसी किसिम की छेड़खानी की ? पात्र को स्पर्श कर के बोलो !

सन्नाटा छा गया।

रघुवीर ने कहा, बिल्कुल निडर हो कर बोलो नन्दूराय !

नन्दूराय ने पात्र स्पर्श कर कहा, हाँ, मैंने छेड़खानी की।

क्यों ? क्या समझ कर ?

मैं टिकैतराय का पूत, मेरा कोई क्या कर सकता है !

लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

पंचों से आपस में राय बात कर के रघुवीर ने फैसला सुनाया, आज से यह कुमारी मैना शंकरपुर की कन्या हो गयी। अपने घर में रख कर अपनी कन्या की तरह इस का पालन पोषण टिकैतराय करेंगे। इस का गौना टिकैत देंगे। मैना बेटी की डोली इस गाँव से उस की ससुराल जाएगी। डोली में कहारों के साथ एक कन्धा गाँव के सिवान तक भाई के रूप में नन्दराय देंगे।

पूरी प्रसन्नता और सन्तोष के साथ सब ने स्वयं सब कुछ कबूल कर लिया। पंचपुरी में पंचों के सामने, रघुवीर के सामने, सब के सामने ! न पुलिस, न जमीन्दार, न हाकिम, न हुक्काम, न वकील–मुख्तार, न कचहरी, न अदालत, न गवाही, न सबूत।

इस बीच रसूलपुर थाने का दरोगा भी आ कर एक जाँच पड़ताल कर गया। रायबरेली के कलक्टर बरमिंघम साहब ने पुलिस कप्तान बर्ड साहब को अपने साथ लिये हुए शंकरपुर और उड़वाँ गाँव का दौरा किया। जमीन्दार सूरजसिंह से लिखित बयान लिया गया कि पंचपुरी का पंच फैसला क्या है ?

तुरंगा बाबा से कलक्टर ने पूछा, क्या पंचपुरी के नाम पर दोहरी हुकूमत नहीं है ?

नहीं साहेब, ऊ तो न्याय हैय।

क्यों जमीन्दार सूरज सिंह, तुम ने न्याय क्यों नहीं किया ?

जमीन्दार के पास कोई जवाब नहीं था। बरमिंघम साहब ताज्जुब में पड़ गया था कि ऐसा माफिक फैसला कैसे हुआ ? कैसे सब ने कबूल कर लिया ? कैसे टिकैतराय दूसरे की लड़की को अपनी बेटी बना कर अपने घर में रखता ? बिना किसी कागज, पत्तर सबूत गवाही के फैसला हुआ कैसे ? कैसे सब ने मान लिया ?

ग्राम पुरोहित केशवचन्द्र मिश्र बरगद के पेड़ के नीचे कुछ बच्चों को पढ़ा रहे थे। बरर्मिघम साहब ने स्कूल इन्स्पेक्टर से पूछा कि अभी तक ऐसा माफिक पाठशाला कैसे चलता है ? इन्स्पेक्टर ने बताया कि गाँव के कुल लोग पुरोहित की सेवा करते हैं। पुरोहित इनका पण्डित है, गुरु है और वैद्यराज भी है।.....और इस पर खर्चा क्या है ? बस दो वक्त का भोजन और साल भर में दो वस्त्र ! बरमिंघम साहब का आश्चर्य बढ़ता ही जा रहा था। नया नया बिल्कुल जवान कलक्टर आया था, सीधे इंगलैण्ड से। उसे पुरोहित और जजमानी प्रथा के बारे में बड़ी जिज्ञासा हो रही थी। उस ने जानना चाहा कि पुरोहित बिना किसी निजी सम्पत्ति के हैं ? उसे यह जान कर बेहद आश्चर्य हुआ कि पुरोहित ही क्या, राना बेनीमाधव के पुत्र रघुवीर और पहले के पुरोहित के पुत्र गंगादीन के पास अपनी कोई सम्पत्ति नहीं है।

बरमिंघम ने पुरोहित केशवचन्द्र मिश्र को अपने पास बुलाया। पुरोहित लोटे में जल भरे हुए आये। बरमिंघम ने हाथ मिलाने के लिए अपना दायाँ हाथ बढ़ाया तो मिश्र जी ने लोटे को नीचे रख कर साहब से हाथ मिलाया। फिर मुड़ कर लोटे के जल से हाथ पैर धो कर अपने आप को म्लेच्छ स्पर्श से शुद्ध कर लिया। साहब ने पूछा कि इस ने हाथ पैर क्यों धोया ? लोगों ने सच छिपा लिया वरना ब्राह्मण को न जाने कितना दण्ड मिलता। पर साहब को सब पता था। साहब ने पूछा, ओ पुरोहित ब्राह्मण, तुम हमें मलेच्छ समझता ! सच बोल !

हाँ साहेब, आप मलेच्छ हैं !

मलेच्छ माने क्या !

मलेच्छ माने जिस की इच्छा में मल हो।

क्या मतलब ?

पुरोहित ने समझाया कि धर्मविहीन अर्थ, विनयहीन विद्या और सम्पत्ति मल है, विकार है मानव प्राणी का ! बरमिंघम साहब बड़े ध्यान से पुरोहित की बातें सुन रहा था। आस पास खड़े हिन्दुस्तानी अफसर, जमीन्दार, हाकिम हुक्काम डर के मारे काँप रहे थे कि यह सिरफिरा पुरोहित क्या बेक जा रहा है।

अचानक दूर से किसी की कराह सुनाई पड़ी। किसी रोगी बीमार को कोई आदमी अपने कन्धे पर बिठाये जा रहा था। गाँव की पगडण्डी पर वैद्य पुरोहित के पास। पुरोहित बोले, साहेब, मुझे उस रोगी को देखना है। यह कह कर पुरोहित केशवचन्द्र मिश्र बढ़ कर बोले, अरे भाई, रुको, मैं यहाँ हूँ।

रोगी के पास पहुँच कर पुरोहित ने रोगी की नाड़ी देखी। और लगे रोगी को खदेड़ने। आगे–आगे रोगी भाग रहा था, पीछे–पीछे डण्डा लिये पुरोहित उसे दौड़ा रहे थे। अंग्रेज कलक्टर के साथ खड़े हुए तमाम लोग हैंरानी से वह दृश्य देख रहे थे।

करीब आधे घण्टे बाद पुरोहित वापस आये। साहब ने सवाल किये। पुरोहित ने बताया कि रोगी के कीड़े की टट्टी खा रखी थी। उस के पेट में इतनी दूषित वायु थी कि वह न बैठ सकता था न चल–फिर सकता था। वह तो समझे था कि उसे लकवा मार गया है। मार के अलावा और कोई उपचार नहीं था। डर के मारे वह भाग गया। मैंने भी उसे दोड़ा कर उस के दूषित वायु विकार को काट दिया।

बरमिंघम साहब पुरोहित का मुँह देखता रह गया। तुम सब की दवा करते हो ?

दवा नहीं, उपचार।

पैसे नहीं लेते ?

पुरोहित को हँसी आ गयी। सिपाहियों ने पुरोहित को डाँटा। पर बरमिंघम साहब बोला, ठीक हँसता है, हँसने दो !.....मल.....इच्छा.....मलेच्छ.....।

सन्ध्या समय गंगादीन ने पुरोहित के साथ गाँव के कुछ और लोगों से कहा कि खबरदार ! कोई बरमिंघम साहब, बर्ड साहब से ज्यादा फिजूल की बातें न करे। भूल गये कर्नल स्लीमन को ? जैसे वह भेदिया बन कर अवध भर में घूमा था, उसी तरह यह बरमिंघम भी है। देखा नहीं, बरमिंघम हर बात को कागज पर लिख लेता है।

खेवट ने आकर रघुवीर को खबर दी कि तिलोही गाँव में दुआशाह बीमार पड़े हैं। गंगादीन, खेवट, फगुनी और फौजदार सिंह उसी वक्त तिलोही के लिए रवाना हुए। खटोले पर बैठा कर वे अपने कन्धों के बल दुआशाह को शंकरपुर ले आये।

रघुवीर के पास खाट पर सोये–सोये दुआशाह ने अपने दुर्बल हाथों से जल की ओर इशारा किया। रघुवीर ने जतन से पानी पिलाया।

कहा, शाह बाबा, आप इस कदर बीमार, हमें इस की खबर भी नहीं।

दुआशाह मुस्कराते हुए धीरे से बोले, अरे सन्त साधू फकीर आता जाता है, उस की खबर कौन रखता है। राजा नवाब जाते हैं, लोग भीड़ लगा कर देखते हैं। साधू फकीर चुपचाप चला जाता है।

रघुवीर और गंगादीन दोनों को दुःख हुआ। उन्हें शर्म आयी कि उन्होंने भी इतने दिनों से खोज खबर नहीं ली। शाह बाबा ने वहाँ घिरे हुए लोगों से कहा, तुम सब जरा दूर हट जाओ। मेरे कपड़े और बदन से बड़ी बदबू आती है।

रघुवीर ने बाबा का सिर अपनी गोद में रख लिया और गंगादीन की सहायता से उन्हें धोने पोंछने लगा। फिर नये वस्त्र पहना कर उन के चरणों में अपना माथा रख रघुवीर बोला, बाबा ! अभी आप हमें छोड़ कर नहीं जा सकते !.....

क्यो भला ?

हम आप से दुबारा सत्यपीर सत्यनारायण की कहानी सुनेंगे।

दुआशाह झीने स्वर में बोले, अब क्या करोगे सत्यपीर सत्यनारायण की कहानी सुन कर ? जब ब्राह्मण, ठाकुर अंग्रेजी हुकुमत के दास होते जा रहे हैं ! जब पढ़ा लिखा आदमी अब यह कह रहा है कि

सत्यपीर बिल्कुल अलग चीज है सत्यनारायण से ?.....अरे अब क्या होगा जब आदमी कागजी सबूत का गुलाम हो गया, स्वयं आदमी जहाँ सबूत नहीं है। अब की दुबारा इस सूखे ने तो उस अकाल को भी मात दे दिया। अन्न जो था उस का रस सूख गया। खड़े–खड़े मवेशी मर गये। सोते–सोते इन्सान खत्म हो गये।.....नहीं बेटे, अब जीना नहीं चाहता, तभी अन्न पानी छोड़ दिया ! क्यों खाऊँ पीयूँ अन्न जल ? जहाँ सत्यनारायण सत्यपीर से अलग हो गया सब हराम हो गया !.....क्यों गंगादीन तुम जीना चाहते हो।

हाँ, बाबा जीना चाहता हूँ।

क्यों बेटे ?

एक दिन रघुवीर भैया ने दिखाया कि जब लक्ष्मी बिकने–खरीदने की चीज हो जाती है तब लक्ष्मी से नारायण अलग हो जाते हैं।

क्या कहा रे ?

देवता और सत्य भी सब दौलत के देवता और दौलत के सत्य हो जाते हैं !

दुआशाह खाट पर तपाक से उठ बैठे। फिर तो मैं भी जीना चाहूंगा !

रघुवीर ने कहा, हमारा इम्तहान लेने के लिए आप इस तरह मरने जा रहे थे ?

और क्या करता ? दुआशाह गाने लगे :

मन मस्त हुआ तो क्यों बोले ?
हीरा पायो गाँठ–गँठियायो बार–बार वाको क्यों खोले ?
हलकी थी तब चढ़ी तराजू पूरी भई तब क्यों तोले ?
सुरत कलारी भई मतवारी मदवा पी गयी बिनु बोले।
हंसा पाये मानसरोवर ताल तलैया क्यों डोले ?
तेरा साहब है घर माहीं बाहर नैना क्यों खोलै ?

तेरह–चौदह दिनों में दुआशाह बिल्कुल स्वस्थ हो गये। रघुवीर से बोले, बेटी हंसगौरी ने मुझे जिलाया है। आधी रात के वक्त केसर डाला कटोरा भर दूध मुझे चुपचाप पिला जाती थी। हाँ !

गंगादीन को बताया कि गाँव के सिवान में जाख जाखिन नाचते हैं। डीह बाबा नगारा बजाते हैं। साँच कहूँ, आखिन देखी है !

बाबा, एक दिन मुझे भी दिखाओ।

ठीक है गंगादीन, जरूर दिखाऊँगा।

और सत्यपीर सत्यनारायण की कथा ?

पहले वही सुनाऊँगा। पर रघुवीर, जमीन्दार की हवेली के भीतर अपने कमरे में बेटी हँसगौरी एक अदभूत खेल खेलती है।

क्या ?

हनू से पूछना। जो बाहर नहीं निकलेगी वह भीतर खेलेगी ही !

शंकरपुर के पास गुरुबक्सगंज के बाजार में कथाबाँचू खेवट को लोगों ने घेर लिया कि कोई कथा सुनाओ ! खेवट ने सबको हल्दी की गाँठ बाँटते हुए कहा, दिन यही मंगल। आषाढ़ का पहला मंगल। शंकरपुर की पंचपुरी पर यही बाजार के समय दुआशाह सत्यपीर सत्यनारायण की कथा कहेंगे।.....

और आज आषाढ़ माह का पहला मंगल। अवध की धरती इसी दिन ऋतुमती होती है। आज पुराने किसानों के घर रसोई बनी है। ऋतुमती धरती की छाती पर आज आग नहीं जलेगी ! ब्राह्मण और विधवा आज से तीन दिनों तक उबाले या पकाये हुए पदार्थ नहीं खाएंगे।

आज शंकरपुर में बड़ा बाजार लग गया है। कहाँ–कहाँ से तो लोग दुआशाह के मुंह से सत्यवीर सत्यनारायण की कथा सुनने आये हैं। सब के बीचों–बीच दुआशाह बैठे हैं। दायीं ओर रघुवीर, बायीं ओर गंगादीन। ढोल, मजीरा शहनाई ले कर रामभजन, देवकी दबे और सुदीहल बैठें हैं। दुआशाह ने गाना शुरू किया। लोग स्वर में स्वर मिला कर गा उठे :

सुन लागै दिया बिनु मन्दिर
माग सेंधुर बिनु हो

ललना ओइसन सून तिरिया गोद,
से एक बालक बिनु हो।
सून लागै महल अटरिया अवरो खेत धरतिया जु हो।
ललना नाही नीक लागै सुखभोग से सन्तति बिनु हो।।
बड़ बड़ भइले जतनवाँ उपइया अपचरवा नु हो।
ललना जब किरपा भइले राम के गोदिया बालक खेले हो।।
मनवा में इहै अभिलाख इहै इक साध इहै इक सधियानु हो।
ललना पूत मोत होवे देस सेवक राम से विनति करो हो।
शाह बाबा के मुँह से निकला, राम ! अलख निरंजन ! अल्लाह, राम !!
फिर कहने लगे, सुनो ! सुनो भाई साधो, सत्यपीर सत्यनारायण का किस्सा !

हाँ भाई ! एक राजा था सत्यकेतु। एक दूसरा राजा था कालकेतु। सत्यकेतु और कालकेतु दोनों में बड़ा फर्क था। सत्यकेतु वह है जो अपने किन्हीं उसूलों पर कायम है। जिसके विचार से जीवन के कुछ आदर्श हैं, जिन पर यह जीवन चले। मगर कालकेतु वह है जो वक्त के हिसाब से बदलता रहता है। जो मानता है, जैसी बहे बयार पीठ पुनि तैसी कीजै। बस, जो लाभ की दुनिया में रहे। सत्यकेतु का मतलब सत्य का झण्डा। कालकेतु माने अवसर के अनुकूल झण्डा।

सत्यकेतु का पुत्र राजा प्रतापभानु। एक बार प्रतापभानु वन में शिकार करने गया। शिकार खेल कर वह घर लौट रहा था कि रास्ते में एक मृग दीख पड़ा, मतलब एक लोभ दिखाई पड़ा। कालकेतु ही मृग का रूप धर कर आया था। फिर क्या था, भानुप्रताप मृग के पीछे भागा ! इसका मतलब यह हुआ कि सत्य का पालन करने वाला भी अगर जीवन में वही लोभ, वही लाभ, वही सफलता चाहता हो जो मतलबी खोजते हैं तो वह चाहे जितना सत्यकेतु का बेटा हो, अगर वह अपने जीवन में थोड़ा भी असत्य स्वीकार करेगा तो उस का पतन होना ही है। और यही हुआ। मृग के पीछे भागता हुआ प्रतापभानु कालकेतु के ही साथ कपटमुनि के दरवाजे पर पहुँच गया। तो उस से मुनि ने पूछा, अरे तुम्हारा नाम क्या है ? राजा ने कहा, मैं प्रतापभानु का मन्त्री हूँ। कपटमुनि हँस कर बोला, अरे मैं जानता हूँ तुम कौन हो ! तब प्रतापभानु बोले, महाराज ! मैंने छिपाया था। मैं मन्त्री नहीं, मैं ही राजा प्रतापभानु हूँ। हँस कर कपट मुनि ने कहा 'तुम्हारा कपट मुझे अच्छा लगा !' मतलब यह कि जब मनुष्य अपने आपको ठगता है तब कालकेतु को लाभ का मौका मिलता है। मृग तो मिला नहीं, ऊपर से झूठ भी पकड़ा गया। फिर तो राजा का अहंकार जगा। गुस्सा आया। उसे अहंकार था कि लोग तो जानते हैं प्रतापभानु बड़ा धर्मात्मा राजा है। उस पर भला कौन शक कर सकता है ? अपने इसी अहंकार में उसने ब्राह्मणों को ऐसा भोजन खिलाना चाहा, जिस में मांस मिला हुआ था। मगर सत्य को कौन छिपा सकता है ? ब्राह्मणों ने नाराज हो कर प्रतापभानु को श्राप दे दिया कि जा तू रावण बनेगा। इस तरह सत्यकेतु का बेटा कालकेतु से हार गया। हाँ, समझ लो, यही है सत्यनारायण ? बुराई और अच्छाई के बीच एक बड़ा फर्क यह है कि बुराई को अपनी जीत के लिए कोई एक पूरी चीज नहीं चाहिए जबकि अच्छाई को अपनी जीत के लिए उस की चीज में कहीं से कोई कमी न हो, यह चाहिए। मतलब बुराई बेईमानी थोड़ी हो सकती है, मगर अच्छाई ईमानदारी अगर होगी तो पूरी ही होगी। सत्य को पूरा सत्य होना पड़ेगा पर असत्य पर कोई ऐसा बन्धन नहीं है।

तो रावण पैदा हुआ। मामूली तरीक से नहीं, बहुत बड़े वंश में एक उच्च्य ब्राह्मण के घर ! महान् बाप दादे ! मुनि ऋषि खानदान में। चारों वेदों का पण्डित था रावण। साक्षात बुद्धि और ज्ञान के देवता बृहस्पति रावण के गुरु थे। दस मुख, बीस आँखें, अथक पराक्रमी, परमवीर, महाज्ञानी ! इतना कि सारे शास्त्र, सारे बल, सारे कर्म उसकी आँखों में आँख बन गये ! मतलब रावण की आँखों में सिर्फ अपना लाभ, अपना अर्थ, अपना स्वार्थ था। लाभ अर्थ का, लाभ स्वार्थ का ! उसे ऐसा राज्य चाहिए, ऐसी हुकूमत, जो चीज वह चाहे उसे ले सके, वह चाहे जिस की हो ? हर देवता उस का गुलाम ! हर ताकत उस की कैद में ताकि एक क्षत्र राज रहे ! राज्य भी चार पैरों वाला, साम, दाम, दण्ड, भेद, यानी पशु की राजनीति ! अर्थ पशु का

राज, अर्थ पशु की राजनीति। जब तक रावण का राज है साम, दाम, दण्ड और भेद पर खड़ा हुआ, तब तक राजनीति पशुवत रहेगी, चार पैरों वाली।

सारे देवता ऐसी राजनीति के तहत राजबन्दी बना लिये गये। चारों ओर हाहाकार मच गया। रावण सीधे स्वर्ग पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनवाने लगा। धर्म और सत्य का जीवन जीना असम्भव हो गया। तब तो राम को जन्म लेना ही था।

मनु ने, मतलब मानव ने, स्मृति शास्त्र, दण्ड और भेद के हिसाब से, मतलब दण्ड और भेद इन दो पैरों वाले मनुष्य के राज और मानव राजनीति की शुरूआत की। पर उन्होंने देखा कि जब तक समाज में दण्ड और भेद की जरूरत है तब तक समाज मानव समाज नहीं है। बाहरी कायदे कानून कोई बड़ी चीज नहीं है। सत्य यह है कि इन्सान के भीतर उस के दिल में बदलाव हो। और बदलाव का सत्य बाहर नहीं, भीतर ही है !

मनु अपना राजपाट छोड़ कर अपनी पत्नी शतरूपा के साथ तपस्या करते हैं। मतलब यह कि अगर भगवान् के स्वरूप का ज्ञान हासिल करना है तो सिर्फ ज्ञान की जरूरत है। और अगर ईश्वर को अपनी जरूरत के हिसाब से बदल करना है तो भक्ति के जरिये ईश्वर को जैसे चाहो बदल दो। इस लिए मनु और शतरूपा, ज्ञान और भक्ति दोनों एक साथ तपस्या करने जाते हैं।

तपस्या में मनु के सामने पहले आये ब्रह्मा, फिर विष्णु; फिर आये शंकर। वे आ कर कहते कि मनु महाराज, वरदान माँगो। पर मनु कुछ माँगते ही नहीं। क्योंकि जब ब्रह्मा, विष्णु, महेश वरदान देने आते है तो वहाँ पहले रूप आता है और रूप के जरिये शब्द होता है कि 'तुम माँगो'। मगर मनु तो कुछ और चाहते हैं, अपने ही लिए नहीं, पूरे समाज और काल के लिए। जो अलख है, अरूप है उसे ही वह रूप देना चाहते हैं। निर्गुन को सब के लिए सगुन देखना चाहते हैं। समाज में जब तक हर एक को अपने लिए एक एक राम नहीं मिल जाते तब तक जीवन पूरा पूरा भरेगा नहीं। तो मनु माँगते हैं कि हे ईश्वर, आप ही पुत्र बन कर आ जाइए।.....आप ही की तरह एक पुत्र चाहता हूँ। इस पर प्रभु ने मुस्करा कर कहा कि अब मैं अपने समान कहां दूसरा खोजने जाऊँगा, मैं ही तुम्हारा पुत्र हो कर आ जाऊँगा।—सो मनु हुए राजा दशरथ। शतरूपा हुई कौशल्या। इन दोनों से जन्मे रमा।

राम ने समाज में क्या देखा ? देवता लोग दैत्य से हार गये हैं। देवता दुम दवा कर बैठे हैं। दैत्य सीने पर चढ़े बैठे हैं। दोनों में इतना ही फर्क है कि देवता भोगी है पर भोग को बुरा मानता है। जबकि दैत्य भोग करता है और उसे अच्छा मानता है। सोचो भला, जब भोगी और भोगवादी लड़ें तो दोनों में कौन जीतेगा ? देवता दैत्य से हारते हैं। क्योंकि देवता को मरने से उतना डर नहीं है जितना कि भोग छिन जाने से है। इसीलिए दैत्य जीत गया है। देवता अपने में ही बँटा हुआ है इसी लिए हारा है। जब हनुमान जी रावण के दरवार में गये तो उन्हें बड़ा अचरज हुआ। देखा कि जैसे राम की सभा में देवता और मुनिगण दिखाई देते हैं उसी तरह रावण के दरबार में भी वे सब मौजूद हैं। देवता चाहते हैं कि राम की जीत हो और रावण ही हार पर वे भोग नहीं छोड़ सकते। देवताओं की पूरी ताकत सिफ भोग को बचाने में ही है। इसी लिए वे लड़ने से डरते हैं, भागते हैं। दैत्यों की भी चापलूसी करते हैं। इसी लिए ब्रह्मा देवताओं से कहते हैं कि इस भोगी शरीर से तुम लोग राक्षसों को नहीं हरा पाओगे। तुम लोग पहले मृत्युलोक जाओ। बन्दर बनो और भोग के स्थान पर सेवा का जीवन जियो तभी राक्षस और रावण को लड़ाई में हरा सकते हो। और वहीं हुआ तो जीत हुई।.....

रावनु रथी विरथ रघुबीरा। देख विभषपु भयऊ अधीरा।।
अधिक प्रीति मन मा सन्देहा। बन्दि चरन कह धहित सनेहा।।
नाथ न रथु नहिं तन पद त्राना। केहि विधि जितब बीर बलवाना।।

सुनहु सखा कह कृपा निधाना। जेहि जय होय से स्यन्दनु आना।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजू जोरे।।
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म सन्तोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचण्डा। बर विज्ञान कठिन कोदण्डा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय असरथ जाऊँ। जीत न कहुँ न कतहुँ रिपु ताकें।।

तो चार पहियों के रथों पर सवार इतनी विशाल सेना समेत महापराक्रमी रावण को पैदल और सिर्फ धनुषबाण से राम ने हरा दिया। इतने बड़े दैत्य वीरों को बानर भालुओं ने मार गिराया। मतलब क्या हुआ ? मतलब यह हुआ कि जब तक राजा, राज्य और उस की राजनीति पशुवत् रहगी, उसे चार पैरों की जरूरत होगी, साम, दाम, दण्ड, विभेद की। और जब मानव राज्य होगा, मानव राजनीति होगी, तो उसे दो ही पैरों की जरूरत होगी, दण्ड और विभेद। और रामराज्य ? जब तक समाज में दण्ड और भेद की आवश्यकता है, तब तक समाज पूर्ण नहीं है। दण्ड की जरूरत तो पशु के लिए है और भेदनीति की जरूरत बुरे लोगों में फूट डालने के लिए है। तो सुनो, देखो भाई, एक है रावणराज, धन लूटने के लिए राज्य, भोग और अहंकार दिखाने के लिए राज्य; दूसरा है रामराज्य, इन्सान के दिल में, मन में बदलाव का राज।

कथाबाँचू खेवट ने हाथ उठा कर कहा, बाबा। बालि और सहस्रार्जुन ने भी तो रावण को हराया, पर हासिल क्या हुआ।

दुआशाह खिलखिला कर हँस पड़े। फिर गाने लगे :

मोह महा घन पटल प्रभंजन।
संसय बिपिन अनल सुर रंजन।।
काम क्रोध मद गज पंचानन।।
बसहु निरन्तर जन मन कानन।।

सुनो सत्यपीर सत्यनारायण को। बालि और सहस्रार्जुन से रावण उसी तरह हारा जैसे अवध के नवाबों तालुकेदारों की ताकत से अंग्रेज पूरे अवध से हार कर रेजिडेन्सी में छिप गया। अरें रामलीला और नाटक में तो रावण की मौत हो गयी, मगर इसका मतलब यह नहीं कि रावण सचमुच मर गया। जब तक हमारे दिलों में लोभ, मोह, काम, क्रोध और दुविधा है तब तक रावण कहाँ मरा ? अरे वह तो छिप गया रेजिडेन्सी में। सत्यपीर को देखो, देखो सत्यनारायण को। कि रावण को किस ने मारा ? बालि और सहस्रार्जुन ने। ठीक। मगर यह नागनाथ और साँपनाथ की लड़ाई हुई। दो बुराइयों की लड़ाई में एक बुराई का हार जाना। इसमें क्या हासिल होगा ? जैसे बालि और रावण की लड़ाई लोभ, अहंकार और मोह की लड़ाई है, उसी तरह राना बेनी माधव और अंग्रेज की लड़ाई। बड़ी बुराई से छोटी बुराई हमेशा हारती है। जो घोर लोभी होता है, वह क्रोध को जीत लेता है।

सुनो सत्यनारायण। असली लड़ाई और असली जीत बुराई पर अच्छाई की है। हाँ, यही है सत्यपीर। एक ओर रावण, दूसरी ओर राम, एक ओर रावण सेना, दूसरी ओर बन्दर सेना।

इक्कीस

राना के महल के खण्डहर में उन दो देवस्थानों पर भला कौन चिराग जलाता है ? जमीन्दार के दरबार में यह चर्चा हो रही है। मुख्तार मुन्शी घनश्याम प्रसाद ने बताया कि कलपाबुआ नियम से उन देवस्थानों में चिरागबत्ती जलाती थीं। पर जब से वह काशी अयोध्या की तीर्थयात्रा पर गयी हैं, तब से वहाँ और कौन चिराग जलाता होगा ?

टिकैतराय ने अनुमान लगाया कि शेख खुदाबक्श का लड़का चिराग जलाता है। पर हाँ, गम्भीर बात यह है कि दुआशाह सत्यपीर सत्यनारायण की कथा कहता हुआ जिस तरह राम रावण के बहाने अंग्रेज राज को सानता है, वह खतरनाक है। बरमिंघम साहब का आदमी मेरे पास आया था। सत्यपीर, सत्यनारायण की कैफियत मुझ से पूछ रहा था। कह दिया कि दुआशाह बदमाश है। पर धारूपुर के जमीन्दार हनुमन्तसिंह के पुत्र सरस्वती चन्द्र ने खुद बरमिंघम साहब से कहा है कि इसमें असली हाथ रघुवीर का है। तब से कई बार पुलिस तहकीकात करने आयी है। यह मामूली बात नहीं है।

यह सब सुन कर जमीन्दार सूरज सिंह न जाने क्यों सिहर उठे। दुआशाह यहाँ क्यों आता है ? खबरदार यदि उस ने फिर यहाँ सत्यपीर सत्यनारायण की बकवास की।.....

दरबार के पुरोहित हरीराम शास्त्री आये। बोले, दुआशाह का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। मैंने उसी दिन कह दिया था कि यह कथा यहाँ नहीं होनी चाहिए। वह भी पुचपुरी के चबूतरे से। अंग्रेज इतने गाफिल नहीं हैं। वे सब समझते हैं। सब की रग रग पहचानते हैं।

अचानक कहीं से तेज आवाज आयी, राम।

जमीन्दार ने कहा, देखो क्या बात है ?

सत्यपीर सत्यनारायण कथा के जुर्म का मुजरिम दुआशाह पुलिस कप्तान के निर्देश पर रसूलपुर थाने के दरोगा और दो सिपाहियों के बीच। गाँव का चौकीदार रमजान भी उन के साथ था। वे सब पीपल के पेड़ के पास इन्तजार कर रहे थे।

दुआशाह के मुंह से जो 'राम' निकला वह सीधे गंगादीन के कान में गया। वहाँ से रघुवीर के पास। वहाँ से पूरे गाँव में, यहाँ तक कि जमीन्दार की हवेली में दूर हंसगौरी के एकान्त कमरे में भी। वह कमरे की छत पर चढ़ कर देखने लगी।

गंगादीन कह रहे थे, यहाँ कोई फकीर साधू को गिरफ्तार नहीं कर सकता।

दरोगा बोला, मत भूलो, अंग्रेज सरकार है।

तो आये अंग्रेज सरकार सामने, दुआशाह का जुर्म बताये।

जुर्म ? अंग्रेज को रावण कहा है !

हम सब कहते हैं, अंग्रेज रावण है। चलो, हम सब को गिरफ्तार करो।

पुलिस, दुआशाह, इन सब को अपने बीच में घेर कर लोग चारों तरफ से बैठ गये थे। गंगादीन की पत्नी फूल कुमारी चिल्लाती हुई आयी।

देखो, देखो, डीहबाबा धनुषबाण ले कर आय रहे हैं। वह देखो, वह देखो।

सचमुच गंगादीन ने देखा, एक विशाल रूप। जिसकी इतनी बड़ी बड़ी भुजाएँ, मर्मभेदी विलक्षण चितवन वाली अद्भुत आँखें, चट्टान जैसा सीना, बड़ा डील–डौल, लाल वस्त्रों में सजी हुई जगमग करती हुई विशाल आकृति, झिलमिल झिलमिल झालरों से सुसज्जित केसरिया रंग के झण्डे फहराता हुआ।.....

जै हो डीहबाब की।

जै हो।

लोगों के जयजयकार से सारा आकाश गूँज उठा। दरोगा, पुलिस, चौकीदार सब भागे। दुआशाह के मुँह से फूटा :

वंशी बजी वृन्दावन में।
सखी लो सखी
कैसे रहूँ घर आँगन में।
वंशी बजी वृन्दावन में।.....

जमीन्दार सूरज सिंह ने गुस्से से पुकारा, टिकैतराय।

जी सरकार।

यह कौन गा रहा है ? यह आवाज हवेली के भीतर से आ रही है। मैंने अन्दर जा कर सब देख लिया है। हंसगौरी अपने कमरे में है।

सरकार, आवाज बेटी की ही है।.....

वंशी बजी वृन्दावन में ?
सखी लो सखी
कैसे रहूँ घर आँगन में ?
आओ श्याम
कब से खड़ी वृन्दावन में ?

सूरज सिंह ने आवेश में कहा, यही वहाँ दुआशाह गा रहा है। यही मेरी बेटी गा रही है। कुछ समझ में नहीं आता। खैर, जाओ। बाहर जा कर देखो। मैं अन्दर देखता हूँ जा कर। खुद देखना पड़ेगा।

हनू ? हनू की माँ ?

माँ सामने आ खड़ी हो गयी। साँझ का झुटपुटा अँधेरा, हवेली में और गहरा हो जाता है। ऐसे वक्त, कौन कहाँ है, यह जानना मुश्किल है। हनू की माँ ने पूछा, किस चिन्ता में हैं ?

हटो समाने से ?

सूरज सिंह चुपचाप हंसगौरी के कमरे की ओर बढ़े। कमरे में रोशनी थी। रोशनदान से रोशनी बाहर झाँक रही थी। कमरा भीतर से बन्द था। संगीत का बेहद झीना सा स्वर तार सा खिंचा हुआ था। कमरे में कुछ हो रहा था। ऊपरी मंजिल पर जा कर बड़ी कठिनाई से घुटने के बल खिसक कर सूरजसिंह ने रोशनदान से अपनी बेटी के कमरे में झाँक कर देखा। पिता तो पहले से ही अपनी उस बेटी को आश्चर्यजनक समझते आ रहे थे। आज जो उस कमरे में होते देखा विस्मय का अन्त ही नहीं रहा।

पूरा श्रृंगार किये कमरे के बीचोंबीच बैठी थी हंसगौरी। चारों ओर गोलाई में बीस दीपक जल रहे हैं। अगरू, धूप, चन्दन की सुगन्ध से कमरा भरा है। फर्श पर तरह–तरह के पुष्पों से सजावट हुई है। दायीं ओर गीली मिट्टी रखी है। बायीं ओर छोटे–छोटे रंगबिरंगे वस्त्राभूषण रखे हुए हैं। हंसगौरी बिल्कुल हल्के–हल्के न जाने किस स्वर ताल में गाती हुई मिट्टी का एक अंश उठाती है। उसे अपलक देखती है। जमीन पर रख कर कहती है, आओ, बाहर निकलो मेरी सखी ! आओ मेरे संग खेलो सखी। आओ पृथ्वी तोड़ कर बाहर निकलो, बहन ! अँधेरे से बाहर आ जाओ रोशनी में। आ जाओ मेरी बहन,.....आओ न !

मिट्टी में एक कन्या आकृति उभरती है। नवजात कन्या !

हंसगौरी उसे वस्त्र पहनाती है। श्रृंगार करती है। फिर उस से बातें करती है, कहो कैसी हो ? बोल न, डरती क्यों हो ? यहाँ और कोई नहीं है। क्या नाम है ? ओह जू जू। नहीं, नहीं जानकी, जानकी नाम है तुम्हारा ! ओह ! तुम्हारी सब हड्डियाँ टूटी हुई हैं ! दीदी, साँस लेने में बड़ी तकलीफ होती है। मेरी माई बेहोश पड़ी थी जब नौकरानी ने मुझे जमीन के नीचे पत्थर से दबाया। बताओ दीदी, मेरी माई का क्या कसर है ? और भला मेरी ही क्या गलती है, दीदी ? मुझे तो कुछ भी पता नहीं, अब तक कुछ पता नहीं कि ऐसा क्यों किया गया मेरे साथ। दीदी बताओं न ! जो जानती हो मुझे बताओ। भला ऐसे कोई मारता है ! झूठी शान और धमण्ड दिखाने के लिए अबोध अनजान निर्बल की ऐसी हत्या। कहाँ हैं आज मेरे काका ठाकुर ? मर मिट गये न ! जैसे खुद अमर हो कर आये थे ! कहीं है आज उन का नामोनिशान ?

जैसे जैसे रात घिरती जा रही है, नवजात कन्या शिशुओं की आकृतियाँ गीली मिट्टी में से बाहर निकल रही हैं।

अरे इतनी सुन्दर ! क्या है नाम ? ओह अनाम। अच्छा, पर तुम तो उमा होने के लिए आयी थीं। उमा !.....चलो उमा ! क्या सोच रही हो ? क्या कोई मार सकता है ?

नहीं तो।

क्या कोई अधिकार नहीं था मेरा ? जमीन के नीचे किस से बातें करूँ ? कीड़े मकोड़ों से ? दिन रात काटते हैं। खून चूसते हैं। हड्डी नहीं चबा सकते। मेरी धरती माँ की आहट है। इस पर चलते चलते

मेरी माँ रोती थी। क्यों मारा मेरी बेटी को ? माँ का यह सवाल जमीन के भीतर पानी बन कर चलता रहता है।

ओह, तुम ? कितनी सुन्दर आँखें हैं ? क्या देख रही हो ?

तुम्हें।

मुझे ?

हाँ, तुम्हारी तरह अगर मैं भी बच गयी होती तो क्या होता ? कोई रानाबाबा जैसा आ कर मुझे बचा लिया होता।.....मैं ऐसे चार पुत्रों की माँ बनती जा गा कर, रो कर, हँस कर पूरे अवध के क्षत्रिय राजपूतों से कहते, मुर्दाफरोशी करने वाले, हथियावन, घोड़ावन, नजरावन, पकावन, दवावन, पुजावन, लुटावन करने वाले भीतर से इतने छोटे कायर और मृत्यु से डरे हुए थे कि किसी अनजान, अनबोल की हत्या में अपनी वीरता समझते थे।

सारा कमरा कन्याओं से भर चुका था। हंसगौरी हाथ जोड़ कर रो रही थी, आओ आओ, मेरे प्रान; आओ मेरे गर्भ में। सबको मिलेगा जन्म ! जन्म और मृत्यु जिनके हाथ में नहीं था और जिन्होंने फिर भी हत्या करनी चाही, उन अक्षम्यों को क्षमा करो। क्षमा करो ! नहीं नहीं, मत दो श्राप उन्हें, जो इतने बड़े पाप को, इतने जघन्य अपराध को पुण्य समझता है, उसे और कैसा श्राप ?

ओह तुम, नन्हीं सी कली की तरह !

देखो दीदी, मेरी छाती की इस जगह से एक बनलहसुन का पौधा उग आया है ! इस में एक सफेद कली लगी हुई है। सुनो दीदी, इस पौधे की जड़ से हो कर मैं तह–दर–तह और मिट्टी के नीचे उतरती चली गयी। मिट्टी, हर मिट्टी किसी न किसी का शरीर ही है, जिन्दा शरीर !.....उसी मिट्टी ने, उसी शरीर ने ही मुझ से कहा, तुम सब के लिए मैंने जगह बना दी है, तू इस पौधे को पनपने दे !.....

तमाम नवजात शिशुओं की किलकारियों से वह कमरा गूँज उठा। देख, सूँघो मेरी नाक में गन्ध..... विवाह के दिन की गन्ध, होम की वेदी के पास.....दादा के श्राद्ध पिण्ड में, मेरे भाई के अन्नप्राशन की पायस में.....असंख्य दुधमुँहे शिशु मुखों में !.....

अरे मुझे देखो मुझे।

मेरी बात सुनो।

दीदी ; ऊँ ऊँ.....आँ।

अच्छा दीदी, बोलो तो भला, मेरे पिता कहाँ हैं ? मर गये ? अरे, हाँ, जो लोग सोच–विचार नहीं सकते, वही काम करते हैं। जो सोच सकते हैं, वही सोचना नहीं चाहते। अब मैं क्या सोचती रहती हूँ जमीन के अँधेरे में, जानती हो ? आकाश में लाल उजाला। शायद सूरज निकलने को है, लेकिन रात तो अभी बीतने को नहीं। तो फिर ? मेरे बाप ने मुझे क्यों मारा ? मारने को तो मार डाला, मगर मैं मरी क्यों नहीं ? दुश्मन को मारना ही चाहिए। कम्पनी की तोप के सामने क्या बच गये तुम ? तुम सब तो मरे ही हुए थे, बस, मर जाने का बहाना ढूँढ़ रहे थे ; सुनो दीदी ;

जिन्होंने बेकसूर हमें इतनी निर्दयता से मारा, वे समझते हैं कि अतीत के दरवाजे बन्द हैं। हम वहाँ से यहाँ नहीं पहुँच सकते। पर उन्हें पता नहीं है कि जो बीता है वह सदा आता रहेगा सामने। हम भीतर ही भीतर हर समय चलते रहते हैं। लोग समझते हैं कि अतीत सोया पड़ा है। पर यह हृदय स्पन्दन क्या हैं? देखो दीदी, यहाँ कितना अतीत है और कितना वर्तमान। तुम्हारे सामने मैं क्या हूँ दीदी ? अपने बाप के सामने मैं क्या हूँ ?

सूरज सिंह का कलेजा धक् धक् करने लगा ! उन्हें लगा जैसे कमरे भर में ताजे खून का एक गहरा धब्बा है। आह भरते हुए आँखें मूँद लीं। हंसगौरी उनसे घिरी हुई क्या रो रही है ? नहीं, वह धीरे से उठ पड़ी है। कोने में दीपदान पर जलते हुए दीपक की बाती को अंगुली से आगे बढ़ा कर उसने दरवाजे की साँकल खोली। जैसे सब को अपने साथ ले कर बाहर जा रही है ! पिछवारे आंगन में।

सहन भर में चाँदनी छिटक रही थी।

हंसगौरी ने देखा, पूजा घर के सामने से पिता जी सामने आ रहे हैं। उनके एक हाथ में मशाल है, दूसरे हाथ में मिट्टी का दीपक।

हंसगौरी डर गयी। तभी दौड़ी हुई माँ आयी।

कहाँ थी बेटी ? आ आ मेरे पास आ।
मैं कहाँ गयी थी माँ ?
माँ ने बेटी को अपने अंक में भर लिया।

दूसरे दिन अलस्सुबह गाँव में न जाने कहाँ से तुड़ही, दौरवी, दफला का संगीत उमड़ने लगा। उड़वाँ गाँव से लोग शंकरपुर आ रहे थे। उड़वाँ गाँव की लड़की मैना का, जो पंच फैसले के मुताबिक अब तक शंकरपुर की कन्या के रूप में टिकैतराय के घर रह रही थी, आज गौना है।

धौराहर से गौनहर आये हैं। शंकरपुर और उड़वाँ गाँव का अन्तर आज मिट गया है। धन्य हो राना बाबा के सपूत रघुवीर ! धन्य है तुम्हारा न्याय ! धन्य है तुम्हारा कानून ! धन्य है तुम्हारा कर्म !

टिकैतराय का पूत नन्दूराय मैना बहन की डोली उठा रहा है। शंकरपुर के सिवान, शंकरपुर के डीहबाबा, आशीष दो कि इस धरती के मनुष्य के तीनों अंश; नियम, न्याय और आचरण; सदा एक संग रहें। तीनों का तारतम्य कभी न टूटे। जिस वृक्ष के तीन पात हैं वही बेलपत्र है, वही शिव का अर्घ्य है। जो अकेला है विभक्त है, वह शिव नहीं है इस धरती के सिवान पर !.....

रघुवीर के हाथ जुड़े थे।

सब की आँखें भरी हुई थीं। मैना की डोली शंकरपुर गाँव का सिवान पार कर रही थी। सुदीहल पंचपुरी के चबूतरे पर खड़ा ढाक बजा रहा था। गंगादीन बोला, रघुवीर भैया, मुझे कभी नहीं छोड़ोगे न ?

वचन देता हूँ भैया।

आओ गंगादीन, तुम्हें एक चीज दिखाता हूँ।

दोनों चल कर टिकैतराय के दरवाजे पर आये। टिकैतराय की पत्नी, नन्दूराय की माँ, फुलकुमारी के अंक में अपना सिंर गड़ाये मैना के विछोह में रो रही थी।

यह दृश्य देखो गंगादीन; क्या कोई अलग है ?

गंगादीन एकटक देख रहा है। उसे राना बाबा की याद आ रही है। वह कहते थे, एक आदमी की बात यदि दूसरा आदमी सुन ले तो परायापन कट जाता है।

धीरे धीरे गाते हुए जगताप बाबा पास आये वे गा पड़ेः—

कीरति भनिति भूति भक्ति सोई
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

बोले, यही तो राना बाबा कहते थे कि राम बहुमत को नहीं बल्कि सर्वमत को मानते हैं। वही है पुरुषोत्तम जो सब के हित को समान महत्व देता है।

बाईस

शंकरपुर से ले कर आसपास के सारे गाँवजवार में यह बात फैल गयी थी कि जमीन्दार सूरज सिंह बिल्कुल मौन हो गये हैं। आज तेरह दिन हो गये न किसी से कुछ बोलते हैं न किसी की कुछ सुनते हैं।

गाँव गढ़ी में तरह तरह की बातें हो रही हैं। कहीं कोई कह रहा है कि जमीन्दार की जबान पर लकवा मार गया है। कहीं यह बात चलती है कि अंग्रेज कलक्टर ने जमीन्दार को डाँट दिया है कि जमीन्दारी 'कोरट' कर ली जाएगी। जमीन्दार कमजोर है, हफ्तसाला और बेदखली में जमीन्दार की ज्यादतियाँ पकड़ी गयीं हैं।

पर असल बात क्या है, कोई क्या जाने। हंसगौरी ने बाप को क्या दिखाया है, इसे कौन जान सकता है। लोग अनुमान ही लगा सकते हैं। अनुमान से सच्चाई का पता भला कौन लगा सकता है ? नवाबी तालुकेदारी इतनी खराब थी कि ऊपर न्याय देने वाला कोई नहीं था। हाँ, मगर नीचे, गाँव गढ़ी में न्याय था। पर बाप रे बाप जमीन्दारी में नीचे ऊपर दोनों तरफ से न्याय गायब। तालुकेदारी ऊपर थी। नवाबी शहरों में थी। गाँव फिर भी बचे थे। तब गाँवों में पंच परमेश्वर थे। धरती माँ थी। न जाने कैसा, किस का अदृश्य सहारा था।

पर जमीन्दारी ?

जमीन्दार तो गाँव गाँव आ कर लोगों के सिर पर बैठ गया। कायदा कानून, कर्म, आचरण सब कुछ जमीन्दार का ? डंकिनी बन्दोबस्त का डंका अवध के गाँव गाँव में बज रहा है। सिकमी और बेदखली, लगान और मालगुजारी, हथियावन, घोड़ावन से ले कर नजराना के जमीन्दार जाल से कोई ग्रामवासी, प्रजा, काश्तकार कैसे बच सकता था। नवाबी में नवाबी थी, बेदखली नहीं थी। गाँव पर गाँव का ही दखल था। दुःख सुख जो भी था अपना था, जमीन्दारी में सब कुछ बेदखल था।

जगताप बाबा गंगादीन को समझाते हैं कि तालुकेदारी में तालुकदार नवाब का या तो दोसत था या दुश्मन। मगर जमीन्दारी में जमीन्दार अंग्रेज बहादुर का कुत्ता। इसी लिए तो अब कोई काश्तकार यह नहीं समझ पाता कि वह भी आदमी है।

गंगादीन फगुनी से कहता है कि अंग्रेज के कुत्ते हैं जमीन्दार। और जमीन्दार के कुत्ते पटवारी, चौकीदार और कानूनगो हैं। अंग्रेज हाकित आता है पड़ताल के लिए तो जमीन्दार के मुख्तार, मैनेजर, सर्वाकार, जिलेदार, सिपाही और बिसरवार, इतने लोग हाकिम को ले जा कर पहले से ही एक खास चुनी हुई जगह पड़ताल कराते हैं। खसरा–खतौनी कौन देखता है ? जो पटवारी कहे उसी में जमीन्दार का सर्वकार हाँ में हाँ मिलाता है। और हाकिम जो गिड़बिड़–गिड़बिड़ करता है, तो काश्तकार की क्या हिम्मत कि वह भी कुछ बोल सके। जमीन्दार ने सीर, सिकमी और बेदखली में कितना अन्याय, अत्याचार किया है, कौन कहाँ कहे ?

फगुनी गंगादीन का मुंह देखता रह जाता है।

पौ फूटने से पहले गंगादीन बिस्तर छोड़ देता है। शंकरपुर में ज्यादातर लोग सूरज उगने के पहले ही अपनी जीवन यात्रा शुरू कर देते हैं। औरतें कुएँ से पानी भर ले आती हैं। घर दुआर बुहारती है। आँगन लीपती हैं। गंगादीन ने अपनी पत्नी फूलकुमारी से कहा, सुनो, आज आम के तले भी लीपना है। दुआशाह आएंगे ? कुछ दिन पाठशाला यहीं चलेगी।

फूलकुमारी तपाक से बोली, ई सब लीपापोती हमसे ना होई, हाँ ? हम केहुकैं टहलुआ नाहीं ना ?

पहले का गंगादीन होता तो गुस्से से चिल्ला पड़ता। गाली दे मारता। आज का गंगादीन फूलकुमारी को देखता रह जाता है। ठीक है। जैसी है फुलकुमारी वैसी ही तो बोलेगी।

रघुवीर के कमरे के बरामदे में सदा एक तख्त पड़ा रहता। नीचे चटाइयाँ बिछी रहतीं। सब तरह के लोगों का वहीं अड्डा जमता। गाँव के किशोर लड़के वहाँ आते जाते। कुछ तो वहीं पड़े ही रहते। वयस्क और बूढ़े भी आते, मनोहर कुम्हार, चैतू तेली, तिरबेनी लोहार, देवकी दुबे, खेवट, गबदू पाण्डे, जगताप बाबा, नन्दूराय, दूर गाँव के पातू सुकुल। पिछले दिनों से किशोर हनू ने उस तख्ते पर अपना अड्डा जमाया हुआ है। जमीन्दार के एकलौते पूत हनू.....मामला गम्भीर है।

आज दो दिनों के बाद दूरदराज के गाँवों में घूमघाम कर रघुवीर लौटे हैं। साथ में कितने लोग आये तो आये हैं। पूरा बरामदा भर गया है। शंकरपुर गाँव के उस छोटे से बरामदे में मानो सारा अवध रूपायित हो कर रघुवीर की आँखों में प्रकट हुआ है। वह देखते हैं कि समाज जब टूटता है तो उस के कितने छोटे टुकड़े होते चले जाते हैं।

रघुवीर के पास जा कर हनू ने धीरे से कहा, एक बात है।

क्या ?

नजरबन्दी कानून का एक कागज आया है।

हनू के हाथ से वह कागज ले कर रघुवीर ने उस में जो कुछ पढ़ा वह गम्भीर बात थी। अवध में विशेष परिस्थिति और अंग्रेज सरकार द्वारा बनाया गया नजरबन्दी कानून।

रघुवीर ने पूछा, यह कागज किसने दिया ?

टिकैतराय ने।

कहाँ मिला उन्हें ?

कक्का को बर्मिंघम साहब ने दिया है।

तभी तिरबेनी लोहार की औरत लछिमिनियाँ रोती हुई आयी। बोली, भइया, कलपा दाई के आखिरी अवस्था है।

सब कुछ वहीं छोड़ रघुवीर दौड़ कर कलपा दाई के पास पहुँचे। हाथ पैर बर्फ की तरह ठण्ढे हो रहे हैं। धुँधली आँखें और भी धुँधली हो आयी हैं। सिरहाने कई स्त्रियाँ बैठी हैं, टिकैतराय की पत्नी, गंगादीन की पत्नी फुलकुमारी। रघुवीर को देखते ही घूँघट काढ़ लिया।

रघुवीर ने कान के पास मुंह ले जा कर पुकारा, कलपा बुआ ! कई बार पुकारा, तब कलपा दाई ने जरा सी आँख खोल कर रघुवीर को निहारा। न जाने किस लोक से अपने होंठों पर मुस्कान ला कर कलपा दाई ने कहा, जुग.....जुग.....जीयो ?.....मैं अब चली भैया ?.....

अगले ही क्षण उस के दोनों होंठ पीले पड़ कर काँपने लगे। मुदी हुई आँखों से आँसू झरने लगे। बड़ी मुश्किल से बोली, बता, राना बाबा से क्या कहूँगी ? बोल, वहीं जाइ रही हूँ ?.....

रघुवीर ने बढ़ कर कलपा बुआ के चरणों पर अपना माथा रख दिया।

कलपा बुआ में न जाने कहाँ से फिर जान आ गयी। बोली, ई क्या करते हो ?.....कहीं राजा प्रजा के पैरों पर माथा रखता है ?.....

रघुवीर ने कहा, हाँ, यही सत्य है बुआ ? यही राना बाबा से कह देना ?

देखते ही देखते कलपा बुआ की आँखें मुद गयीं ? वह चली गयीं। सारी स्त्रियाँ रो रहीं थी। सारा गाँव वहाँ आ गया। रघुवीर देख रहा था। कलपा बुआ की कही हुई कहानी का अन्त उसे याद आ रहा था।

> **सारे तीरथ धाम पार कर के हिमालय की ओर चींटी सी लम्बी कतार चली आ रही थी मनुष्यों की। स्वर्ग के फाटक पर जो पहरेदार था वह बोला, अरे भाई ? घबड़ाने की कोई बात नहीं हैं। कितने रुक जाएंगे खाने पीने में। कितने मस्त हो जाएंगे सोना चाँदी में, भोग–विलास में। जो बचेंगे वे खो जाएंगे अपने अहंकार में। स्वर्ग करोड़ों में से कोई एक ही जाएगा। सब मानो भैया, मनुष्य से कदम कदम पर भूल चूक होती है ?.....**

सारा इलाका, चार दिनों बाद ही यह सुन कर सन्न रह गया कि नजरबन्दी के नये कानून के तहत रघुवीर की गिरफ्तारी होगी ?

रघुवीर से बरमिंघम साहब ने किसी कागज पर दस्तखत करने के लिए कहा। पर रघुवीर ने मना करते हुए कहा कि यहाँ हर मनुष्य को मान मर्यादा का हक है। शासन के आगे जमीन्दार, हाकिम, अफसर और धनी महाजन तथा साधारण प्रजा की मान मर्यादा में कोई फर्क नहीं है।

बरमिंघम साहब ने इस से आगे रघुवीर से कहा कि दुआशाह फकीर के जरिये जिस तरह सत्यपीर सत्यनारायण की कथा में अंग्रेजी राज को रावण राज्य कहा गया, अंग्रेज को रावण बताया गया, उस के लिए लिखित माफी माँगो और यह लिख कर दो आइन्दा दुआशाह इस तरह सत्यपीर सत्यनारायण की कहानी नहीं कहेगा। दुआशाह शंकरपुर के इलाके में आइन्दा कभी नहीं आएगा।..... इस पर रघुवीर ने जवाब

दिया–माफी अंग्रेजी हुकूमत माँगे। माफी माँगे अवध का जमीन्दार जिसने हर तरह से जीवन की मर्यादाएँ तोड़ी।.....दुआशाह हमारे भीतर हैं। हम उन्हें अपने से अलग कैसे रख सकते हैं ? सत्य की कहानी कहने वाले को कौन रोक सकता है ? जाओ नजरबन्द करो तुलसीदास को। अवध के सारे सन्तों, फकीरों, साधुओं की आवाजें बन्द करो जो तरह तरह से एक ही बात कहते हैं:–

हारिए न हिम्मत बिसारिये न राम नाम.....
जाहि विधि राखै राम, ताही विधि रहिए।.....

बड़े विनय के साथ रघुवीर ने बरमिंघम साहब से कहा, हमारे पूरखों ने सन् सत्तावन की लड़ाई अहंकार पर चोट खा कर गुस्से से लड़ी थी। वहाँ लड़ने वाला व्यक्ति था और हर व्यक्ति का अपना अलग–अलग अहंकार था। उस लड़ाई के पीछे भाव नहीं, अभाव था। भाव अंग्रेजों की तरफ था। अभाव हमारी तरफ था। पर अब सत्य बदल रहा है। भाव अब हमारी तरफ आ रहा है। अब हमने अपना अभाव देखना शुरू कर दिया है। अब लड़ाई कोई व्यक्ति नहीं लड़ेगा। व्यक्ति, जिस में कोई स्वाभिमान नहीं, भाव नहीं, बस भय और भूख यही दो प्रेरकशक्तियाँ हैं जिस में। अब वह व्यक्ति नहीं पुरुष लड़ेगा, पैदल नंगे बदन चलता हुआ पुरुष। बरमिंघम ने मेज पर डण्डा मराते हुए कहा, तुम सब को हमारा जमीन्दार ठीक करेगा।.....

रघुवीर ने हाथ जोड़ कर कहा, श्रीमान्। अंग्रेजों के बनाये हुए सनदी राजा जमीन्दार हम पर शासन नहीं कर सकते। और फिर वापस मुड़ पड़ा। चलते चलते रघुवीर ने बरमिंघम से आगे कहा, श्रीमन्, आप की जानकारी के लिए बता दूँ कि रावण कौन था ? रावण ब्राह्मण था। ज्ञानी महापण्डित था। शास्त्रमय थी उस की आँखें। उस की आँखों में सिर्फ यही शास्त्र दिखता था राज्य माध्यम है अर्थ संचय का और शोषण का। शीषकों के कन्धों पर खड़े हुए रावण राज की जैसे हार हुई, नवाबी और तालुकेदारी जैसे हारी, इसी तरह, यहाँ अंग्रेजी राज की हार होगी। याद रखना अंग्रेज साहब बहादुर, यहाँ राज्य उसी का चलेगा जो प्रजा शोषक नहीं, प्रजा पालक है। राज्य की पहचान यहाँ दण्ड है, मर्यादा से जो गिरा, जरा भी हटा जीवन के उसूलों से, उसे दण्ड मिला, वह चाहे जितना प्रतापी वीर बहादुर राजा हो। दुआशाह की सत्यपीर सत्यनारायण की इस कथा को हमारे भीतर से भला कौन मिटा सकता है ?

रायबरेली से शंकरपुर में पैर रखते ही रघुवीर के कानों में जगताप बाबा का स्वर सुनाई दिया। राना बाबा का अतिप्रिय भजन :

ऐसे कपटी श्याम कुंजन बन छाड़ि गये ऊधो।
जो मैं होती रे जमुना की मछरिया
कृश्न करत असनान चरन छुइ लेती रे ऊधो।
जो मैं होती रे बन की हिरिनियाँ
कृश्न चलाते बान प्रान तजि देती रे ऊधो।

पिता की हवेली में अपने रघुवीर के इन्तजार में बैठी थी वह हंसगौरी। इधर रघुवीर की कुटिया के द्वार पर हनू भी उसी के इन्तजार में बैठा था।

अंग्रेज अधिकारी सब कुछ सोचने समझने के बाद आखिर इसी नतीजे पर आते थे कि बैसवाड़ा, अवध के मरणासन्न समाज की बीमार सांसें यहाँ के रघुवीर, गंगादीन, खेवट, केशवचन्द्र मिश्र, जगताप, चैतू, तिरबेनी, तुरंगा और दुआशाह जैसे चन्द लोगों के हृदय में भी छूत सी फैल जाएंगी। या तो ये आत्मा–परमात्मा की खोज में लग जाएंगे या अपनी निराशा और पश्चात्तप में डूब कर यों ही मर जाएंगे। पर उनका यह सोचना गलत निकला। इसी लिए उन्होंने अपना फैसला बदल दिया। नजरबन्दी कानून उसी बदले फैसले का सबूत था। अंग्रेज बहादुर और जमीन्दार, दोनों सोचते थे कि नजरबन्दी कानून से रघुवीर डर जायेगा। लेकिन उस दिन जब कलक्टर बरमिंघम ने अपने सामने उस तरह निर्भय विनम्र रघुवीर को देखा तो उल्टे वही डर गया। उसे लगा कि रेगिस्तानी आसमान में भी अवध की प्राणशक्ति निष्फल नहीं हुई है। जैसे ऊसर मरुभूमि के कलेजे में जगह जगह हरियाली उभर रही है। डीहबाबा पर वह विश्वास; पंचपुरी के पंच फैसले का वह न्याय; दुआशाह की सत्यपीर सत्यनारायण की कथा पर जुड़ता हुआ वह ग्राम समाज, यह खतरनाक है। और जो इसकी बुनियाद में है रघुवीर; रघुवीर वल्द राना बेनीमाधव साकिन शंकरपुर थाना रसूलपुर जिला रायबरेली; वही रघुवीर सब से ज्यादा खतरनाक है।

बरमिंघम साहब के पास यह रिपोर्ट पहुंची, शंकरपुर के रमजान चौकदार से, जमीन्दार सूरजसिंह के बयान के साथ। बरमिंघम ने चालीस पेज की रिपोर्ट भेजी लखनऊ के कमिश्नर ग्रैहम के पास। ग्रैहम ने उस पर दस्तखत और मुहर लगा कर उसे ऊपर भेजी वाइसराय के पास।

मनसा परिक्रमा का दिन। आज से ठीक तेरहवें दिन दशहरा है।

प्रातःकाल ढिंढोरा पीटता हुआ रमजान चौकीदार आवाज देता है—गाँव शंकरपुर इलाका बैसवाड़ा। आम और खास सब की जानकारी के लिए। सरकार की तरफ से ढिंढोरा पीट कर यह बताने का हुक्म हुआ है। सियासी जुल्म के अन्देसे में नजरबन्दी कानून के तहत रघुवीर को गिरफ्तार किया जा रहा है।.....

दूसरी तरफ जमीन्दार सूरजसिंह के दोनों सिपाही, बुलबुली सिंह और कौआसिंह घूम—घूम कर लोगों को इत्तला दे रहे हैं कि जमीन्दार बहादुर का हुक्म है कि ऐसे मौके पर रघुवीर के आसपास कोई भीड़ नहीं जमा होगी। जो ऐसा करेगा उसे सख्त सजा दी जाएंगी। उस की जमीन बेदखल कर ली जाएगी। घर कुर्क कर लिया जाएगा। खबरदार होशियार।.....

आग के जलते ही जैसे वायु के स्तर में प्रवाह जाग उठता है, आग के आसपास की चीजों के अन्दर की दहनशक्ति आग का स्पर्श पाने के लिए तड़प उठती है, ठीक उसी तरह रघुवीर की गिरफ्तारी की खबर आग की लपट की तरह चारों ओर फैल गयी।

शंकरपुर का देवीपुरवा, फुलवारी, शिवाली गढ़ी, शंकरपुर के आसपास रसूलपुर थाना से ले कर गुरुबक्सगंज बाजार, ऊंड़वाँ गाँव से ले कर भरसी नदी, देवी पुरवा, मुड़वाँ, भीखेपुर, सिद्धौर, सेमरी, जगतपुर और ऊंआरे के जंगल तक के लोग डरे डरे छिप कर शंकरपुर में रघुवीर को देखने आ गये।

सारा सोया हुआ इलाका एक ही दिन महज कुछ घण्टों में अजब उत्तेजना से जाग उठा। जैसे आग का स्पर्श न पाने के बावजूद उत्ताप को पीते पीते छप्पर की फूस भी अचानक भक् से जल उठती है, ठीक वैसे ही हुआ। चारों तरफ से लोग रघुवीर के पास घिरते चले गये। एक ओर वायुमण्डल में पुलिस, जमीन्दार के सिपाहियों की आवाजें—खबरदार, होशियार.....दूसरी ओर दुआशाह, गंगादीन पुरोहित, केशवचन्द्र मिश्र, जगताप, खेवट, तुरंगाबाबा के स्वर हवा में लहरा रहे थे :

रावण रथी विरथ रघुवीरा.....

दोहाई डीहबाबा की।.....

आयी बदरी होइगा घाम। जै रघुवीर जै जै राम।.....

बीचोबीच रघुवीर। चारों तरफ थाना सिपाही। और चारों ओर लोग ही लोग। गंगादीन के मुंह से निकला, राम ! राम !!

और तभी वज्रपात जैसा सन्नाटा खिंच गया। सोलह श्रृंगार किये सिन्दूर से मांग भरे दीप जले आरती थाल लिये हंसगौरी भीड़ को चीरती हुई रघुवीर के सामने आ खड़ी हुई। रघुवीर के माथे पर वह जैसे ही तिलक करने चली, जमीन्दार पिता ने क्रोध से अपनी तलवार खींच ली।

यह नहीं हो सकता।

पिता जी !

पिता की नजर बेटी की सेंदुर भरी माँग पर टिक गयी। उस दिन बेटी के कमरे में जो माटी की आकृतियाँ देखी थीं, वे सब जीवित कन्याएं पिता की आँखों में आ खड़ी हुई।.....सूरजसिंह के हाथ से तलवार नीचे छूट गयी। वे हाहाकार कर उठे : आह ! इतने बड़े पाप, जघन्य अपराध और कायरता को पुण्य मानता रहा ? इतना बड़ा झूठ, भ्रम, अन्धविश्वास !.....

हंसगौरी ने रघुवीर के माथे पर तिलक किया। चरणरज माथे पर ले कर बोली, तुम सदा मेरे अन्तःपुर में हो ! असंख्य रूपों में मेरे पास हो !

अचानक शोर हुआ। पुलिस कप्तान के साथ घोड़ा दौड़ाते हुए बरमिंघम साहब ने सब को घेर लिया। पर वह यह देख कर घबरा गया कि इतने लोग चुपचाप इस धूप में नंगी जमीन पर इस तरह एक साथ बैठे हैं। सब एक साथ एक ही तरफ देख रहे हैं। किसी में कोई गुस्सा नहीं आवेश नहीं।.....

रघुवीर, हंसगौरी और सूरजसिंह की आँखों में जल रही अग्नि किसी वेदना के लिए नहीं, अपनी दृष्टि के सामने अपने समय के सत्य को देख रही थी।.....

वह अदृश्य आग सब को एक साथ स्पर्श कर रही थी, चुपचाप।.....